



॥ ॐ अहं ॥

श्री लखनगढीय शास्त्र मन्दिर, लखनगढ

# श्री उत्तराध्ययन सूत्र द्वितीय विभाग.

१ आ. (17) 17

अध्ययन २१ ( १६ थी ३६ )

( मूलगाथा-अन्वयार्थ तथा क्रथा सहित गुजराती भाषातर )

भाषातर कर्ता—शास्त्री जेठालाल हरिभाई—भावनगर

गुरुणीनी श्री शिवश्रीनी तथा गुरुणीनी श्री हेतुश्रीनी तथा गुरुणीनी श्री लाभश्रीनीना उपदेशधी विविध स्थान निवासी  
श्राविकावर्ग विगर्नी आर्थिक सहायधी प्रयत्नपूर्वक छपावी प्रसिद्ध करनार

शाह कुवरजी आणवजी श्री जैन धर्म प्रसारक समाना प्रमुख—भावनगर

पीर सख्त २४६२

विक्रम सख्त १९८२



भायनगरः—

धी आनर प्री. प्रेमसा शा. गुलाबन्द लल्लुभारिण झाप्यु.



॥ ३० अहं ॥

## प्रस्तावना

जव्हीपण आ भरतनेत्रमा आ अखतपिणीने विषे तथाप्रकारना जगतना स्वभावने अतिसुखी अष्टसुखीके पोर्वीश तीर्थपणे धया छे तेमा छेला चोवीशमा तीर्थकर श्री कर्ममान ( महावीर ) स्वामी धया छे तेमा तीर्थमा गौतमादिक अग्यार गणधरो धया छे तेमने तीर्थकर नामगोत्र कमने अनुसरी श्रीवर्धमान स्वामीए “ उष्यने वा धुवे वा विगमे गा ” आ गण पद आप्या त उपरथी ते दरेक गणधर द्वादशगणीनी रचना करी तेग नाम आ प्रमाणे छे—आचारग १, सूत्ररत्नाग २, स्थानग ३, समवायाग ४, विवाहप्रहसि पटले भगवती ५, शाताभक्त्या ६, उपासकदशा ७, अतदुत दशा ८, अनुत्तरोपपत्तिकदशा ९, प्रभल्यापरग १०, विपाकश्रुत ११ अने दृष्टिगद १२ ( आ छेला दृष्टिगदमा चौद पूवनो समावेश घाय छे ) आ सिवाय धाकीनु अगवाह श्रुत पदवाय छे तेमा पण फालिक श्रुत अने उत्फालिक श्रुत एग व विभाग छे तेमां जे श्रुत असज्झाय न होय तो दिवस अने रात्रिनी पहली अने छेली ए न पोरसीमा ज भणाय छे ते श्रुत काठ एतले काठयेलाए ज भणालु होवाधी फालिक पदमाय छे तथा जे श्रुत काठयेला अने पाच प्रका रा असज्झाय सिनाय सर्व फाळे भणाय छे, ते उत्फालिक पदमाय छे तेमा दशैकालिक १, फल्प्याकल्प २, बुद्धकल्पश्रुत ३, महाकल्पश्रुत ४, औपपातिक ५, रात्रप्रथीय ६, जीवाभिगम ७, प्रदापा ८, महाप्रसापना ९, नदी १०, अनुयोगदार ११, देवेद्वस्तव १२, तदुल्लेखारिक १३, चद्रावेच्यक १४, प्रमादाप्रमाद १५, पौरुपीमडक १६, मडअप्रवेश १७, गणिविद्या १८, विद्यापरण विनिश्चय १९,

ध्यानविभक्ति २०, भग्याविभक्ति २१, आत्मवियुद्धि २२, संलेखनाश्रुत २३, वीतरागश्रुत २४, विहारकल्प २५, चरयविधि २६, आतुरप्रत्याख्यान २७, अने महाप्रत्याख्यान २८, आ अट्टावीश अध्ययनो ( सूत्रो ) उत्कालिक कहेवाय छे. तथा उत्तराध्ययन १, दशाश्रुतसंघ २, बृहत्कल्प ३, व्यवहार ४, ऋषिभाषित ५, निशीथ ६, महानिशीथ ७, जंभूदीपप्रज्ञप्ति ८, सूरप्रज्ञप्ति ९, चंद्रप्रज्ञप्ति १०, द्वीपसागर प्रज्ञप्ति ११, बुद्रका विमानप्रविभक्ति १२, महती विमानप्रविभक्ति १३, अंगचूलिका १४, वर्गचूलिका १५, विवाहचूलिका १६, अरुणोपपात १७, वरुणोपपात १८, गरुडोपपात १९, धरुणोपपात २०, वैश्रमण्योपपात २१, वेलंघरोपपात २२, देवेन्द्रोपपात २३, इत्यानश्रुत २४, मसुत्यानश्रुत २५, नागपरिधावलिता २६, निस्यावलिता कल्पिका २७, कल्यावतंसिका २८ पुष्पिका २९, पुष्पचूलिका ३०, वृष्यादशा ३१, आशीविय भावना ३२, दृष्टिविय भावना ३३, चारण भावना ३४, महास्वप्न भावना ३५, अने तैत्रम निर्गम ३६. आ नियोगे कालिकश्रुत कहेवाय छे. तेमां आ उत्तराध्ययन सूत्र कालिकमां प्रथम ज गगाव्युं छे. आ सूत्रमा छत्रीश अध्ययनो छे. ते अर्थथी श्री वर्द्धमान स्वामीण पीताना अवसान समये सोळ पहोरनी देराना आपी ते वसते प्ररूप्या छे. ते देशनामा प्रसुर पंचावन अध्ययन पुण्यकठ विपाकनां अने पंचावन अध्ययन पापकठ विपाकनां करणं छे. त्यारपत्नी पूछ्या विना उत्तराध्ययनना छत्रीश अध्ययन प्राकारया छे तेथी ते अपुष्ट व्याकरण कहेवाय छे. छेराट मरुदेग मातानुं प्रधान नामनुं अध्ययन प्ररूपता अंतमुहूर्त्तनुं शैलेयीकरण करी प्रसु मोक्षपद पास्या छे.

आ उपरथी स्पष्ट जागी शक्य छे के भगवानना सुरथी अंत समये आ सूत्रनो अर्थ प्ररूपेजो होवाथी तेमा अनेक धर्म विगयोना तत्त्व

मा पठीना पाठ नाम निस्यावतिमाना ज विभाग्य छे.

होवा जोएर अने तेज प्रमाणे छे एम आ सूत्र साधन वाचता निश्चय थाय छे दरेक अध्ययनो सूत्ररूपे रचनार श्रीसुयर्मास्वामीए उत्तरोत्तर  
 संहतुक कइयां छे, ते पद्य दीक्षाकारे स्पष्ट रीते पताब्यु छे जो के आ सूत्र उपर वादीवेताळ श्रीशातिसुरिए मोटी टीका करेली छे, अने त्याएखी  
 पद्या आचार्योए भिन्न भिन्न टीकाओ करेली छे, वो पण आ भाषातर कारी बलते श्रीलक्ष्मीवहभ गणिकृत लक्ष्मीवहभी टीका अने महो-  
 पाध्याय श्रीभावविजयजी कृत टीकानो आधार लीथे छे वने दीक्षाकारोए मूळ सूत्रनो अय विस्तारथी समजाब्यो छे, तेमज कथाभाग पद्य  
 लक्ष्मीवहभी टीका करला भावविजयजीनी टीकामा कथारे विस्तारथी आव्यो छे आ सूत्रना भाषातरमा सामान्य बोधवाठाने अति विस्तार  
 बाना कयाओ न आवे तेम ज अति सक्ति वाचता अपेसा न रहे तटला माटे तेमनी रुचिने अनुसरी वने दीक्षामाथी जोइलो विभाग  
 लीथे छे परु मूळ सूत्रनो अर्थ तो सपूर्ण दडान्वयनी रीते सूत्रना पद मूर्धीने ज आव्यो छे कथार सरळताने माट मूळ सूत्रनी गाथाओ उपर  
 दडान्वय प्रमाणे आफडा करया छे, तेथी सामान्य बोधवाठ्या साधु साध्वी विगरेने जीवविचारादिक प्रकरणनी जेम सरळताथी आ  
 सूत्रना अर्थनु साग थद शये तेम छे, अने तथी तेओने ज आ अय विशेष उपयोगी छे सरळतना अभ्यासीओने माटे तो श्रीलक्ष्मीवहभी  
 विगार टीकाओ ज योग्य छे

आ प्रथ आवी रीतनो छपाववा माट प्रथम गुरुणीजी श्रीशिवश्रीजीए साध्वीजी श्रीलाभश्रीजीने भठामण्य करी हली, अने तेओ  
 श्रीना तथा तेमनी मुख्य शिष्या साध्वीजी श्रीतिलकश्रीजीना उपदेशथी छसो रुपीयानी सहाय प्रथमथी ज मत्री हली, तमज गुरुणीजी  
 श्रीहेतश्रीजी तथा तेमनी गुरय शिष्या साध्वीजी श्रीउत्तमश्रीजीना उपदेशथी चारसो रुपीयानी सहाय मत्री हली ते उपरथी साध्वीजी  
 लाभश्रीजीए आ सभाना शास्त्री जेठालाल हरिभाइ पासे पोतानी देउरेल नीचे आ प्रथनु काम सरु कराल्यु अने थीजी कथारे सहाय

मेळववा प्रयत्न कर्यो. जेना परिणामे धारंक्षी सहाय मळी छे. ते सहायकोना नाम ग्रंथनी पाह्लळ वताववामा आठ्या छे.

आ ग्रंथना छत्रीशे अध्ययनोमा नीचे प्रमाणो विषयो आपेला छे:—

अध्ययन १ पानुं १—धर्मनुं मूळ विनय होवाथी प्रथम विनय नामनुं अध्ययन आप्युं छे. तेमा विनीत अने अविनीतनुं स्वरूप, विनीतना गुण अने अविनीतना दोष, अश्रना दृष्टान सहित तथा कथा सहित वताववामां आवेल छे. तथा विनयना प्रसंगमा साधुनी भिक्काटनादिक क्रिया, गुरुनो विनय साचववानी रीत ए विंगेरे आपवामा आप्युं छे.

अध्ययन २ पानुं २१—विनयवंत साधुए परीपहो पणा म्हन म्हवा जोइए. तेथी धीजा अध्ययनमां वावीशे परीपहोनुं स्वरूप सविस्तर आप्युं छे. दगेक परीपह स्पष्ट रीते समजी शक्य तेदला मांटे ते उपर एक एक कथा आपी छे. उपरात प्रसंगने लीधे क्रोध उपर तथा ज्ञान उपर एम वे कथाओ अधिक आपी छे.

अध्ययन ३ पानुं ६८—परीपह सहन कर्मानुं कारण ए छे जे आ चतुर्गतिरूप संसारमां अटन रुता प्राणीओने मनुष्यभव, धर्म अर्थांनी इच्छा, धर्मपर श्रद्धा अने संयमने विपे वीर्य, आ चार वस्तु अति दुर्लभ छे. तेथी चतुंगीय नामनुं त्रीजुं अध्ययन आप्युं छे. तेमां मनुष्यभवनी दुर्लभता उपर चोल्जक विंगेरे दश दृष्टांतो अने श्रद्धाना भंश उपर आठ निह्नवोनी कथा आपी छे. ते चारे अंग जेने प्राप्त थया होय तेने स्वर्ग अने मोक्षना सुखनी प्राप्ति वतावी छे.

अध्ययन ४ पानुं १०४—चार अंगनी प्राप्ति थया छता प्रमादुनो त्याग करी अप्रमाद सेववानी आवश्यकता होवाथी प्रमादाप्रमाद नामनुं चोथुं अध्ययन कर्नुं छे. तेमा जीवित कोइ पण प्रकारे सांघी शकतुं नथी अने वृद्धावस्था आवेथी धन, स्त्री, पुत्र विंगेरे कोइ

પણ શરણમૂલ થતુ નથી તેથી મોત્તનિદ્રાનો ત્યાગ કરી અપ્રમત્તપણે ભાવ્યો જાગૃત રહતુ એ વિગેરે ઉપદેશ આપ્યો છે. અધ્યયન ૬ પાતુ ૧૨૩—મરણ પર્યંત અપ્રમાદી રહેવાનું છે તેથી આ અધ્યયનમા મરણાગ ભદ્ર થતાંયા છે તેમા મૂઠ સુત્રમા ક્ષાત્રીઓનું સંક્રામ મરણ અને અજ્ઞાનીનું અક્રામ મરણ એવા બં મુરુચ વિભાગ થતાબ્યા છે અને તેથીકાગ મહારાજે સતર પ્રકારના મરણ પણ સત્તેષથી વહ્યા છે તેમા પ્રાચીનદ્વિસા સૃષ્ટવાદ વિગેરેમા પ્રવૃત્ત થઈ, વામભોગમા આસપ થઈ, વૃદ્ધાવસ્થામા વ્યાધિમસ્ત થઈ, કરેલા ક્રમને વગરસાપ વગરનો પ્રાચી દુર્ગતિમા જાય છે, ૮ વિગેરે શાઙ્ગ મરણની વ્યાખ્યામા જણાવ્યું છે તેમા ગૃહસ્થાશ્રમમા ગૃહીને પણ જેઓ સત્રાષાર પુરુક સદગ્રત પાઙ્ગ છે તેઓ સ્વભાગિક ગતિને પામ છે, એ વિગેરે શાઙ્ગપડિત મરણની વ્યાખ્યામા યતાવ્યું છે, અને જેઓ ગૃહ, ધન, સ્ત્રી વિગેરેનો સંરંધા ત્યાગ કરી વેવઙ્ગ આત્મકાર્ય સાધવામા જ તત્પર રહ છે તેઓ મોત્તનિદ્રા ગતિને પામ છે, એ વિગેરે પડિત મરણની વ્યાખ્યામા વેવઙ્ગુ છે. ઇત્યાદિ ઉત્તમ ઉપદેશ આ અધ્યયનમા આપ્યો છે.

અધ્યયન ૬ પાતુ ૧૨૪—પડિતમરણ, વિગા અને વારિશ્રવાઙ્ગ સાધુઓનું જ થતુ હોવાથી આ અધ્યયનમા વિગરનું સ્વરૂપ યતાવ્યું છે તેમા વિગાહીન પુરુષ ધનુ દુ વ પામ છે, તેથી સ્ત્રી, પુત્ર, ધનાદિક ઉપરના મોહરૂપ અવિગાનો ત્યાગ કરવો, માતા, પિતા, સ્ત્રી, પુત્ર વિગેરે કોઈ પણ દુ રસથી મૂઙ્ગાવવા સમથ નથી, તેથી તે સવના સ્નેહપાશનો ત્યાગ કરવો, દ્વિસાદિક પાંચ આશ્રવનો ત્યાગ કરવો, વિવિધ ભાવનું વે શાસ્ત્રનું જ્ઞાન છતા તેને ત્રિયામા ૧ મૂકાય તેો તે પણ અવિગા જ છે, શરીર અને કામભોગને વિષ જે આસક્તિ તે પણ અવિગા છે, તે સંરં જાણી તેનો ત્યાગ કરી અપ્રમત્તપણે સયમનું પાલન કરી વિચરતુ એ જથી સંરં દુ સ્ત્રી મુઙ્ગ થવાય ઇત્યાદિ યતાવ્યું છે.



श्री उच-

राध्ययननी

॥ ३ ॥

अध्ययन ७ पांनुं १४०—रसगृह्णितो त्याग कर्षां विना निर्मथपणुं प्राप्त थंतुं नथी, तेथी रसगृह्णितो त्याग करवानुं स्वरूप सहस्र-  
इथी समजाववा माटे सूत्रकार महाराजे उरत्र ( घेढो ), कागणी, आप्रफळ अने वेपार ए चार दृष्टात आपी रसगृह्णितो थता दोप अने  
तेनो त्याग करवाथी थता गुण धरावर बतान्या छे, तेथी आ अध्ययननुं नाम औरभ्रीय राखुं छे. तेमां कामभोगादिकनी गृह्णितवाने  
बाळक अने तेनो त्याग करतारने पंडित कही पंडित थवानो उपदेश आप्यो छे.

अध्ययन ८ पांनुं १५१—रसगृह्णितो त्याग निर्लोभीथी थइ शके छे, तेथी निर्लोभतानुं स्वरूप वताववा माटे सूत्रकार सुधर्मा-  
स्वामी मूळसूत्रमा ज कपिल मुनिना चरित्र द्वारा उपदेश आपे छे. तेमां कपिलमुनिए पोते पांच सो चोरोने प्रतिबोध करवा माटे ध्रुवा-  
गीति छंद बोली सादी भाषामां ज धर्मनुं रहस्य समजावी तेमने प्रतिबोधी दीक्षा आपी छे. ए विगोरे हकीकत रसवाळी आपी छे.

अध्ययन ९ पांनुं १६०—लोभ रहित प्राणी इंद्रादिकथी पण पुजाय छे एंजुं जणाववा माटे नमिराजर्षिनुं चरित्र आपतां बीजा  
त्रण प्रत्येकबुद्धोनी कथा पण दीकाकार महाराजे कही छे अने त्यारपछी मूळ सूत्रमा संघ मेळववा माटे नमि राजर्षिनुं चरित्र आप्युं  
छे दीक्षा क्षीधा पछीनुं तेमनुं चरित्र सुत्रमां ज आपे छे. तेमां इंद्रे ब्राह्मणना वेपे आवी तेमनी राग द्वेषनो त्याग, धर्मनी स्थिरता अने  
संयमपरनी दृढता विगोरे संबंधी परिक्षा करी, छेवट तेमने संयममा दृढ जाथी प्रत्यक्ष थइ तेमनी स्तुति करी इंद्र स्वर्गें गया छे विगोरे

हकीकत आपी छे.

अध्ययन १० पांनुं १९८—नमि राजर्षिना चरित्रथी संयममा निश्चळता राखवानुं वसुं, ते निश्चळता उपदेशथी ज प्राप्त थइ  
शके छे. तेथी श्री महावीरस्वामीए श्री गौतम गणधरने इदेशी आ द्रुमपत्र नामनुं अध्ययन कसुं छे. तेमां वृक्षनां तवा पत्रो जूनां जूनां पत्रोनी

जीयता जोइ तेमनी हासी करे छे, तेमने जुना पत्रो शिखामण्य आपे छे के—“ अमे पण तमारी जेवा एक वसत हता, अने तमे पण काळ करीने अमारी जवा जीर्ण यरो ” विगेरे रूपक कसु छे पछी आयुष्य अने यौवननु अनित्यपणु, मनुष्यमवनी दुर्लभता, ते प्रसंगे पृथ्वीकायादिकथी आरंभी पंचेन्द्रिय तिर्यच अने देव तथा नारकीनी कायस्थितिनो मोटो काळ, मनुष्यभव मळया छता आर्योनेत्र, अविच्छ इन्द्रियपणु, धर्मश्रवण, अद्वा विगेरेनी दुर्लभता यतावी छे त्यारपछी वृद्धावस्थामा इन्द्रियोनी शिथिलता थइ पेवी स्थिति थाय छे ते सब यताव्यु छे छेवटे ससारनो त्याग करी सयम अगीकार करनारने समय मात्र पण प्रमाद नहीं करवा अने सयममा द्रढ रहेवा उपदेश आप्यो छे, तथा गौतम गणधरु मोक्षगमन कसु छे

अध्ययन ११ पानु २१३—उपदेश पण विवेकीने ज आपी शक्य छे, अने विवेक बहुश्रुतनी सेवाथी प्राप्त थाय छे, तथी आ अध्ययनमा बहुश्रुतनी सेवा करवानु कसु छे तेमा प्रथम अबहुश्रुत अने बहुश्रुतनु ज्ञापण कही पछी ते बन्नेनी प्राप्ति शाथी थाय छे ? तेना कारणो बताव्या छे, तेमा बहुश्रुतपणानु मूठ कारण विनय अने अबहुश्रुतपणानु मूठ कारण अविनय होबाथी विनय अने अविनय शाथी प्राप्त थाय छे ? तेना कारणो यताया छे तेमा अविनीतना मोधादिक चौद स्थानो अने विनीतना नम्रतादिक पदर स्थानो यताव्या छे त्यारपछी बहुश्रुतनो आचार कही तेने सुशिक्षित अन्धादिकनी उपमा आपी प्रशसा करी छे तेमां छेवटे वासुदेव, चक्रवर्ती, इन्द्र, मेरु, स्वयभूरमण समुद्र विगेरेनी उपमा आपी छे ते जायवा योग्य छे

अध्ययन १२ पानु २२२—बहुश्रुते पण तप करवामा यत्न करवानो छे, तेथी तपसशुद्धि नामना आ अध्ययनमा हरिवेरायठ मुनिनी कथा कही तपनु माहात्म्य यताव्यु छे तेमा ते मुनि पारणाने दिवसे भिषा माटे अटन करता एक ब्राह्मणना यज्ञमा गया हता

त्या ब्राह्मणोए मुनिनी हासी करी भिदानो निषेध कर्यो. ते वळते त्तिदुक नामना ते मुनिना भक्त यत्ने मुनिना शरीरमां प्रवेश करी घणी रीते समजाववा पूर्वक भिदानी याचना करी, तोपण ब्राह्मणोए भिदा आपी नहीं. परंतु उलटा ते पुरोहितना विद्यार्थीओए मुनिनी कर्दथना करी तेथी यत्ने तेमने शिक्षा करी, ते जोइ भय पामेलो पुरोहित पोतानी भार्या भद्रा के जे राजपुत्री हनी अने ते मुनिना प्रभावने सारी रीते जाणती हती तेना कहेवाथी मुनिने शरणे गयो. मुनिए तेने भावयइनुं स्वरूप बतावी उपदेश आपी धर्म पमाडयो. विगेरे हकीकत घणा विस्तारथी आपी धर्मनुं रहस्य बतावुं छे.

अध्ययन १३ पांनुं २४२—तप पण नियाया रहित करवानो छे, तेथी नियाणानो दोष बताववा माटे चित्र अने संभूत मुनिनी कथा आपी छे. तेमा संभूतमुनि तपनुं नियाणुं करी ब्रह्मदत्त नामना चक्रवर्ती थया अने चित्रमुनिए नियाणुं कर्युं नही तेथी तेणे महेश्वर पुत्र थइ जातिस्मरण ज्ञान पामी चारित्र ग्रहण कर्युं. पछी चक्रवर्तीने पण संगीत पूर्वक नाटक जोता जातिस्मरण थयुं. तेथी पोताना पूर्व जन्मना भाइनी शोध करवा दोढ श्लोकवाळी समस्या पूर्ण करवा हमेशा आघोपणा कराववा लाग्या. छेवट ते मुनि मळ्या. तेमने चक्रवर्तीए भोग भोगवा घणी विनंति करी, परंतु ते मुनिए भोग तो अंगीकार न कर्या, पण चक्रीने धर्मविषे घणो उपदेश आप्यो, समृद्धिनी लुच्छता, संसारनी अनित्यता, कर्मना उदयनी उग्रता विगेरे बतावी घणी रीते समजाव्या, तोपण चक्रवर्ती पूर्वभवना नियाणावाळा होवाने लीधे प्रतिबोध पाम्या नहीं. छेवट ते मरीने नरके गया अने मुनि मोक्षे गया. आमा बनेनो संवाद घणो बोधदायक छे.

अध्ययन १४ पांनुं २७५—आ अध्ययनमा पण नियाणा रहितनो गुण बताववा माटे नलिनीगुलम नामना विमानमाथी च्यवीने छ जीवो जूदे जूदे ठेकाणे उत्पन्न थया छे. इपुकार राजा १, तेनी राणी कमलावती २, तेनो पुरोहित भृगु ३, तेनी पत्नी यशा ४,

तथा व पुगेदितना पुत्रो ५-६ आमा प्रथम धे पुत्रोने प्रतिबोध ययो, पछी तेमना मातपिताने ययो अने त्वारपछी राजारणीने प्रतिबोध ययो त यत्तत पुरोदित तथा तेनी स्त्रीए पुत्रोने यणी गीते ससारत जोभमा नासवा प्रयत्न कर्यो, ती पण तेओए थिल्लुल कामभोगनी इच्छा करी रही न थिनेनो तमनो सवाइ पणो घोषदायक छे छेवट ते चारे जयाए दीजा खीथी, ते वलते तेमनु धन मालिनीविनानु धवाथी तेने लेवा माट राजा तैयार ययो, त्यारे राखीए राजाणे पुगेदिते वमेजा धाणे प्रदण करवानो निरिध करी धमनो नपदेश आपी प्रतिबोध पमाइयो छे आ विपय पण ययो उत्तम बोध आपनार छे छेवट राजा अने राखीए पण दीजा लीधी अते ते छण जीवो मुक्तिने याम्या

अध्ययन १५ पातु २२३ — निपाणा रहितपणु प्राये कृतिने साधुने ज सभवे छे, तेथी आ सभिल्लु यामना अध्ययामां भिल्लुना गुणो कछा छे तमा गणद्वेय रहित थइ, आमोश वधादिपने सहन करी, कोइ पण वरुपर मूर्खी न राखी, अत प्रात भोजन, शय्या, आसन विगेरेने सेवी, शीतोप्यादिक परिसहो सहन करी, निरविचार व्रतोनो पालन करी, प्रशसादिकमां आसक्ति रहित थइ, कपयादिकनो त्याग करी, पंचद्रियोना विपययी नितृत थइ, विग्रामत्रादिकवडे आभीविकाने नही करी, पूर्वना परिचयनो त्याग करी, भिष्मादिक मऊराथी अयवा न मऊवाथी हर्ष शोकनो त्याग करी, जे काइ मळे तेनाथी ज सतोष मानी, तथा ज्ञान दर्शन अन चारित्रमा ज लीन थइ जे विचर ते ज साधु कहेवाय छे ण विगेरे साधुना आचारो वताया छे

## विभाग बीजो

अध्ययन १६ पातु १ — साधुना गुणो ब्रह्मचर्यथी ज स्थिर रही शकं छे, तेथी आ ब्रह्मचर्यगुति नामनु अध्ययन फलु छे तेमा

ब्रह्मचर्यना स्थानो सांभळीने साधुना संयमनी उत्तरोत्तर वृद्धि थाय छे, आश्रवनी निरोध अने संवरनी प्राप्ति थाय छे, मन समाधिमा रहे छे, मन वचन अने कायानी गुप्ति सचवाय छे, जितेंद्रियपणुं प्राप्त थाय छे, तथा सदा अप्रमत्तपणुं प्राप्त थाय छे. ते बतावीने ब्रह्मचर्यना दश स्थानो कऱ्या छे. स्त्री पशु अने नपुंसक रहित उपाश्रयमां रहेवुं १, एकली स्त्रीनी साथे अथवा स्त्री संबंधी कथा करवी नहीं २, स्त्रीनी साथे एक आसनपर बैसवुं नहीं ३, स्त्रीना अवयवो जोवा नहीं ४, भीतविगेरेनी ओथागो रही स्त्रीना क्रीडादिकना शब्दो सामळ्वा नहीं ५, दीक्षा स्त्रीया पहेलां स्त्री साथे करेली क्रीडानुं स्मरण करवुं नहीं ६, धी विगेरे जेमाथी नीतरनुं होय एवो गरिष्ठ आहार करवो नहीं ७, खुथानी शांति थाय तेथी वधारे आहार करवो नहीं ८, शरीरनी, आभूया करवी नहीं ९, तथा शब्दादिक पांचे विपयोमा प्रवृत्ति करवी नहीं १०. आ दश स्थानोने प्रथम संक्षेपथी अने पढी विस्तारथी कही ब्रह्मचर्यमां द्रढ थवानो उपदेश करी छेवट तेनो महिमा वताव्यो छे

अध्ययन १७ पानुं १३—ब्रह्मचर्यनी समाधिनां स्थानो पापस्थानकोने वर्जवाथी ज पाळी शकाय छे, जे पापस्थानोने वर्जतो नथी ते पापश्रमण कहेवाय छे, तेथी आ अध्ययन पापश्रमणीय नामनुं कहुं छे. तेमा 'श्रुतनो अभ्यास करावनार आचार्यादिक पण भूतकाळ अने भविष्यकाळ संबंधी काइ पण जाणता नथी अने वर्तमानकाळ संबंधी तेओ जेटलुं जाणो छे तेदलुं नहीं भणोला पण जाणो छे, तेओनी जेम नहीं भणोलाने पण वसति, अन्न, पान, वस्त्र विगेरे मळे छे.' आ प्रमाणे जे प्रमादी साधु बोले छे अने मनोहर आहार करी प्रमादने स्त्रीधे निद्रादिकने सेवे छे, आचार्यादिकनी वैयावच्च करतो नथी, एकेंद्रियादिक जीवोनी विराधनामा प्रवर्ते छे, विधिप्रमाणो पडिलेहणादिक क्रिया करतो नथी, वळी चालतां ईर्यासिभिति साचवे नहीं, क्रोयाधिक कथायोनी त्याग करे नहीं, गुरुनी दोष कहेवामा

तरुण धाय, ज्ञान नही छटना जनी तेनी माथे वादविवाद करवामा प्रवर्त, कारण विना पण घी कूप विंगेरे विठ्ठति वाखार साधा करे, ज्ञान पध्दतराण करे नही, परपाखडीओ सांथे प्रसंग वधारे, रागी आवकीना घटनी भिन्ना प्रदण कर, आवा हुसीठीया अने पासत्यादिकी जेवा आचरण करनार साधुओ वेचठ वेपविडधक ज छे तेवाने कदापि साधु कही राकाय नही विंगर हकीकत विस्तारथी आवी छे

अध्ययन १८ पानु १८—पापस्थानेते त्याग पण भोगनेो त्याग करवाथी ज धाय छे भेथी आ अच्ययामा सयत राजागी कया आपी छे तेमां ते राजा मोटा सैन्यना परिवार सहित शिकार करवा गयो छे त्या एक मुनिने ध्यानमा रहेला जोइ तेने पोताना पाप सकथी भय उदपत्र ययो लेथी तेयो मुनिने वदना करी ध्यानमा रहेला मुनि फाइ पण बोल्या नही, त्यारे तो ते वधार भयभीत थइ धार वार समाववा लागयो, छेवट मुनिनु ध्यान पूर्ण पयु, त्यारे मुनिए तेने कहु के—“ हे राजा ! मागाथी तने जरा पण भय नथी, परतु आ निरपराथी मृगादिक जीवने तु अभयदान आपनार धा ” एम कही मुनि तेने ससारी अनित्यता, नीवितनी उपपत्ता, धनपुलादिकनी अशरणता, विप जेवा भोगनी परिणामे विरसता विंगेरे सन्धी पयो असकारक उपदेश आप्यो तेथी वैराग्य पानी राजाण सर्व भोगने त्याग करी दीक्षा लीथी अमुनमे गीताथ धइ गुरुनी आशाथी एकाकीपणो विचरवा लाग्या एकदा ते राजपिने कोइ चात्रिय मुनिने समा गम थयो ते वरते ते चात्रिय मुनिए ते राजपिना वैराग्यनी परीक्षा करी पछी क्रियावादी, अत्रियावादी, विनयवादी अत अज्ञानवादी ण धार एकंततानी भिव्यानाद पतावी तेनापर सारु विवेचन कर्यु, पछी ते ज चात्रिय मुनिए ते राजपिने पारिश्रमां स्थिरकरवा मांटे पोतानो ज आचार वताव्यो छे, तेमा सत्रय राजपिण कचे वेदल्लाक प्रओ कया छे अने चात्रिय मुनिए देग उत्तर आप्या छे, तेमां प्रसंगोपात भरतचवर्ती विंगेरे महापुरुषोनी कयाओ कही सजय राजपिने पारिश्रमा दए कयां छे

अध्ययन १६ पांनुं ६४—सासारिक भोगकृद्दिनो त्याग करती वखते शरीरनी शुश्रूषा पण वर्जवानी छे, ते वावत मृगापुत्रना दृष्टातथी वतावी आपेल छे. तेमा ते मृगापुत्र दोगुंडुक देवनी जेम भोग भोगवतो पोताना महेलमा रखो हतो, तेवामा एकदा मार्गमा जता मुनिने जोइ जातिस्मरण थवाथी वैराग्य पामी मातापिता पासे आवी चारिल लेवानी आझा मार्गी, ते वखते तेयो नारक तिर्यचना दुःखो, कामभोगीनी तुच्छता अने परियाभे विरसता, शुश्रूषा कर्या छता शरीरनी अपवित्रता अनित्यता अने असारता, जन्म जरादिकनां दुःखो विगोरे विपयो दृष्टात सहित समजाव्या छे तेना जवावमा तेना मातापिताए तेनापरना मोहने लीधे दीक्षानो निषेध करवा माटे चारिवनुं दुष्कर-पणुं जयावता पाचे महाव्रतो अने छठ्ठा रात्रिभोजन व्रतनी दुष्करता अने वावीश परीपहोनी दुःसहता विगोरे वतावेल छे. तथा चारित्रनुं पालन केवुं दुष्कर छे ? ते दृष्टात सहित सविस्तर समजावुं छे. तो पण कामभोगमा लुब्ध नहीं थयेला अने चारित्रना कष्टथी भय नहीं पामेला मृगापुत्रे चार गतिवाळा संसारमा अनंतीवार नारकादिक दुःखोनो पोतानो अनुभव कही देखाज्यो छे के जे वाचवाथी वांचनारने पण वैराग्य उत्पन्न थाय तेम छे. पछी तेयो दीक्षा लीया वाद भिचाचर्यानुं स्वरूप, चारित्रना आचार अने छेवट तेमनुं मोचागमन विगोरे वतावुं छे

अध्ययन २० पांनुं ११३—‘संसारमा मारो रक्षक कोइ नथी, हुं एकलो ज छुं’ एवा अनाथपणानी भावना विना शरीरनी शुश्रू-पानो त्याग थइ शकतो नथी, तेथी आ महानिर्प्रथीय नामना अध्ययनमा अनाथता सिद्ध करी छे. तेमा श्रेणिक राजा एकदा उद्यानमां गया छे, त्या तेयो युवान वयवाळा, कोमळ शरीरवाळा अने मनोहर सौंदर्यवाळा एक मुनिने जोइ दीक्षा लेवानुं कारणा पृच्छुं छे, तेना जवावमां ते मुनिए कहुं के—“मार्गे कोइ नाथ न होवाथी नाथ मेळववा माटे मे दीक्षा लीथी छे.” ते साभळी आश्रय पामेला राजाए कहुं

के—“ हू तमारी नाथ धात्र, तमो इच्छा प्रमाणे भोग भोगवो ” एतले मुनिए कहु प—“ इ राजा ! तमे तमारा ज नाथ त्थी, नो योजाना नाथ शी रीत यशो ? ” आतु अप्पू वचन साभत्री अस्यत विस्मय पामेला राजाए पोतानो सेन्य, कोय, परिवार विगेर ये भव वनावी पोतानु नाथपणु सिद्ध क्युं, त्वारे मुनिग पण पोतानी गृहस्थाश्रमनी श्रेष्ठ सयुद्धियु तथा माता, पिता, पत्नी, मित्र मिगरेतु वर्णन करी नेत्रनी असल वेदना यइ ते करले कोइ पण काम जायु नही, कोइर नाथपणु यताव्यु नही, एम कही अनाथपणु सिद्ध क्युं नेत्रे आ विषय पणो विस्तारथी असरकारक वणव्यो छे पछी नेत्रनी वेदना दूर थाय तो सबस्वलो त्याग करी चारित्र लेवानी हट धारणा करलां वेदना दूर यइ अने चारित्र क्षीयु त्वारे हवे पोताना आत्मानो तथा सर्व प्राणी मात्रनो हु नाथ थयो छु, इत्यादिक पही तथा नाथना अने आाथतानु स्वरूप समजावी राजाने सागे उपदेश क्यो छे पछी राजा प्रसन्न यइ मुनिने लभावी तेनी स्तुति करी पोताने स्थाने गया अने मुनि पण अन्यत्र विचया

अध्ययन २१ पानु १२६—अनाथपणाते विचार एकात चर्या विग थइ शकतो नथी, तथी आ अध्ययनमा समुद्रपाठना एगत वडे एकातचर्या वणवी छे तेमा ते समुद्रपाठ पालित नामना श्रावणनो पुव हतो तेनो जन्म समुद्रमा थयो हतो, तेथी ततु नाम समुद्रपाठ पाठ पाड्यु हतु ते सफळ कळामां निपुण थइ युवावस्था पाम्यो, त्वार त रुषियी नामनी कयाने परल्यो तेथीनी साथ दोगुदक देवनी जेम निस्तर ते भोगविलासमा मग्न रहेतो हतो, एयदा पोताना महेली धारीमां वठेलो ते समुद्रपाठ वच्यस्थाने जइ गवता एक चोरने जोइ देवाय पाम्यो तेथी तत तेणे माता पितानी रगा जइ चारित्र प्रहण क्युं पछी तेणे पोताना आत्माने शिषा आपी ये—“ हे जीव ! महास्लेश कारक, भयकारक अने महामोह कारक स्वजातिकना सगनो त्याग करी चारित्र्यमपर रुचि करी व्रत तथा शीलतु



पालन करी परीपहोने सहन कर. ” आ रीते अहिंसादिक पांच महाव्रतो संबंधी, समय प्रमाणे प्रतिलेखनादिक क्रिया संबंधी, विहार संबं-  
धी, भयंकर शब्दादिकथी ज्ञास नही पामवा संबंधी, रागद्वेषना त्याग साहज करवा संबंधी, उपसर्गोने साहन करवा संबंधी, कषायना त्याग संबंधी तथा  
असंयममा रति अने संयममां अरतिनो त्याग करवा संबंधी अनेक प्रकारे उपदेश आप्यो छे. छेवट निरतिचार चारिवतुं पालन करी ते  
महात्मा सद्युद्रपाळ मुनि मुक्तिपद पाम्याछे.

अध्ययन २२ पानुं १३२—एकतचर्या धीरज विना पाळी शकती नथी तेथी रथनेमिना दृष्टांतवडे चारित्रने विषे धृति राखवानो  
उपदेश आप्यो छे. तेमा प्रथम श्रीनेमिनायतुं चरित्र आपतां ते भगवाने राजीमतीने परगणा जता ज मार्गमां पशुपरनी दयाने लीधे पर-  
गावानो नियेध करी पाछा वळी वार्षीदान आपी दीया महूरण करी. पछी भगवाने केचळज्ञान पयुं ल्यारे राजीमतीए तथा प्रमुना भाइ रथ-  
नेमि विगेरे घष्या जनोए दीक्षा लीधी. एकदा प्रमुने नांदी पाछा आतां मार्गमां वृष्टि थगाधी राजीमती एक गुफामा पेठी, अने भीना  
थयेला वख सुकववा लागी. ते वरते ते ज गुफामां प्रथम आबीने गेला रथनेमिण तेणीने जोइ. एटले चारित्रना परिणामनी अष्ट थइ  
तेयो तेणीनी पासे भोगनी प्रार्थना करी. ते वरते भयगीत थयेली गजीमनीए वख पहेरी तइ धीरज राखी रथनेमिने उपदेश आप्यो के—  
“ तमे रूपमा कूनेर जेवा, नळकूर जेना के इंद्र जेवा हो पण हुं तमने कदापि इच्छीश नही. अगंधन कुळमां जन्मेला नाग अभिमां  
प्रवेश कववानुं कळूल करे छे पण वमेतुं तिय पाहुं चूसी लेता नथी. हे तामांभ ! तमारा यशने पिकार हे के जे तमे वमेलाने खावा इ-  
इच्छो हो. माटे आवा असंयम जीवित करतां पंडित मरगो मरगुं सारं छे. स्त्रीओने जोइ आवी चीच अभिलाणा करवावी तमारं चित्त  
अस्थिर थरो, अने तेथी करीने तमारं चारित्र नष्ट थरो. ” इत्यादिक उपदेशथी रथनेमिने प्रतिबोध थयो, तेथी पोताना पापनी आलोचना करी

चारित्र्यां ऋ यद्, त्र्य गुप्तिथी गुप्त धइने तेमणे शद्रियोने जीती छेवट ते वन्ने देवळी थइ मोच पास्या

अध्ययन २३ पासु १५६—सयमर्मा धृति रासतां ह्यतां फोइन तेमा शका उत्पत्र थाय, तो श्रीपार्श्वनाथना सतानीया श्रीकेशीडुमारे श्रीगौतमस्वामीने विनयथी प्रश्न पूछी पोताना शिष्योनो सदेह दूर कर्यो हतो, ते प्रमाणे अन्त्य गुमुजुए पण शकानु समाधान करी सयम मागमा प्रवर्तवु, ते सयथी आ आध्ययनमा घणी समजवा जेवी बोधदायक हकिकत आपी छे तेमा प्रथम श्रीपाश्वनाथनु चरिय आपी तेमना क्रमागत शिष्य श्रुत तथा अवधिज्ञानवाटा श्रीकेशीडुमार पोताना परिवार सहित एकदा श्रावस्ती नगरीना उद्यानमा समवसया छे, त जवरते त्या धीजा उद्यानमा श्रीगौतमस्वामी पण समवसर्थां ते वझेना शिष्यो गोचरीण गया त ववते परस्परता वेपमा तथा महाप्रतमा तफावत जोइ मनमा शका पास्या के--“अमे तथा आ मुनिओ एक ज मोक्षमार्गमा प्रवर्त्यां छीए, अमारो अने तेमनो धर्म एक ज छे, ह्यता महा प्रतमा अने वेपमा आवो तफावत होवानु शु कारण हरो ? ” आ प्रमाणे थयेली शका तेमणे पोतपोताना गुरु पासे जइने पूछी तेथी तेमने बोध करवा माटे ते वझे गण्यथरो एक ठकाणे पोतपोताना परिवार सहित एकठा थया ते ववते त्या धीजा अन्त्य तीर्थया साधुओ अने घणा गृहस्थीओ पण आव्या, तथा यत् किन्नर अने राक्षसो विगरे पण घणा आव्या, तेथी ते एक मोटी सभा थइ गइ प्रथम श्रीकेशीडुमारे श्रीगौतमस्वामीने प्रश्न कर्यो के--“ श्रीपार्श्वनाथ स्वामीण वार महाप्रतवाओ साधुधर्म कह्यो छे अने श्री वर्धमानस्वामीए पाश्महान्तवाळो साधुधर्म कह्यो छे तेम ज श्रीपार्श्वनाथ स्वामीए संचेळ एले वत्तवाओ अने श्रीवर्धमान स्वामीए अंचेळ एले वत्त रहित धर्म कह्यो छे आ वझे तीर्थकरो मोक्षरूप एक ज काय साधवा माटे प्रवर्तला छे, ह्यता तेमना मागमा आवी भिन्नता छे, तनु शु कारण ? ” तेना जवाबमा श्रीगौतमस्वामीए कह्यु के--“ मायना धावीश तीर्थकरोना साधुओ ऋजुप्राप्त होवाथी बोया अपरिग्रह महाप्रतमा ज प्रह

चर्यनो समावेश करी ले छे अने आ चोवीशमा तीर्थकरना साधुओ वक्र-जड होवाथी तेवो समावेश करी शके नहीं, तेथी तेमने ब्रह्मचर्य अने अपरिग्रह ए वे व्रत जुदा पाडी पाच महाव्रतो कइया छे. वळी ए ज रीते ऋजुप्राज्ञने सचेल धर्म कह्यो छे एटले के तेओ गमे तेवा बलादिक राखी शके छे अने वक्रजडने तो अचेल धर्म कह्यो छे एटले तेओ प्रमाणोपेत ज बलादिक राखी शके छे. ते तेमनी तथाप्रकारनी योग्यता जोइ ते ते प्रमाणे अनुज्ञा आपी छे. ” आ रीते वे प्रश्नोना उत्तरथी साधुओनी शंका दूर करी पछी केशीकुमारे आभ्यंतर शत्रुने जीतवा संबंधी, स्नेहपाशने छेदवा संबंधी, तृष्णारूपी लताने उखेडवा संबंधी, कपायरूपी अग्निने बुझववा संबंधी, मनरूपी अश्वनो निग्रह करवा संबंधी, उन्मार्गनो त्याग करी सन्मार्गमा प्रवर्तवा संबंधी, विगरे घया प्रश्नो कर्या, तेमना यथार्थ उत्तर श्रीगौतमस्वामीए आप्या. त्यारपछी श्रीकेशीकुमारे परिवार सहित श्रीगौतमस्वामी पासे पाच महाव्रतवाळो धर्म अंगीकार कर्यो. विगरे हकीकत बहु बोधदायक आपेली छे.

अध्ययन २४ पानुं ? ८६—शंकातुं निवारण करवामा भापासमितिरूप वाग्योगनी जरु छे, तेथी आ अध्ययनमां पाच समिति अने त्रय गुप्तिरूप आठ प्रवचनमातानुं स्वरूप आप्युं छे. आ आठमा ज सर्व द्वादशगुरूप प्रवचनो समावेश थाय छे तेथी ते तेनी मातारूप कहेवाय छे. अहीं आ आठेनुं स्वरूप, तेनो उपयोग अने छेवटे ते पाळवाथी थुं फळ सर्व हकीकत विस्तारथी आपी छे.

अध्ययन २५ पानुं ? ९६—जे ब्रह्मचर्यना गुणमां दृढ होय ते ज अष्ट प्रवचनमातानुं पालन करी शके छे, तेथी आ यज्ञिय नामना अध्ययनमा जयघोष अने विजयघोषनी कथाद्वारा ब्रह्मचर्यना गुण बताव्या छे. आ वन्ने ब्राह्मणो हता अने भाइओ हता, तेमा जयघोषे वैरग्य पामी दीक्षा ग्रहण करी छे. पछी केटलेक काळे पोताना भाइ विजयघोषने प्रतिबोध करवा माटे ते जयघोष मुनि वाणारसी नगरीमा पथार्या. ते बलते विजयघोषे यज्ञ प्रारंभ्यो हतो. त्या भिक्षा माटे जयघोष मुनि गया. तेमने नहीं ओळखवाथी ते विप्रे भिक्षा आपी नहीं,

अने कष्टु वे—“ जम्बो वंदने जायनाग होय, यज्ञना अर्थी होय, द्विज होय, ज्योतिष अने जगशास्त्रे जायनाग होय, धर्मना पागामी होय अने जेम्बो पोतारे तथा वीजाने ससारसुदुग्धी तारवामा समर्थ होय, तमने ज अर्धी भिन्ना आपवामा आवे छे ” ते सामाजी ज्ञयधोप मुनिप तेनो उपकार करवा माट कष्टु व—“ तु वेदना, यज्ञना, नान्नना अने धर्मना मुखने जायलो नथी, तथा स्व-परनो उद्धार करवामा कोण समथ छे ? ते पण तु जायलो नथी जो कदाच जायलो हो तो कहे ” ते सामाजी उत्तर आपवामा असमर्थ एना ते प्राहाणे व हाथ जोडी विनयथी मुनिने ज तेनो उत्तर आपवा विनति करी त्यारे मुनिप विस्तारथी ते सर्वना उत्तर आप्या तेमा प्राहाणनु जनण आपता प्रसंगे लीधे साधु, ब्राह्मण, मुनि, तापस, कात्रिय, वैश्य, शूद्र त्रिगेरेना जण्यो पण आप्या छे, सर्व ते सामाजी विज्ञयधोपे वैराग्य पामी चयधोप मुनि पासे दीक्षा लीधी । अतुज्जे घने मोच पाय्या

अध्ययन २६ पानु २०५—ब्रह्मचर्यना गुण यतिमा ज होय छे अने यतिप अवश्य साधु सामाचारी पाठवानी छे, तेथी आ अध्ययनमा साधु सामाचारी घतानी छे ते दश प्रकारनी छे—आवश्यक्री १, अपृच्छना २, अपृच्छना ३, अपृच्छना ४, छदना ५, इच्छाकार ६, मिथ्याकार ७, तथाकार ८, अम्युत्थान ९ अने उपसपदा १० आ दर्शने अर्थ तथा तेनो उपयोग करवाना स्थानो घताया छे त्यारपठ्ठी ओषसामाचारी कही छे तेमा प्रथम पोरसी अने पादोनयोगसी विगेर पाठमा जाणवानो उपाय तथा रात्रिना काठमा जाणवानो उपाय घतावी गत्रि दिवसनी आठ पोरसीमां कइ कइ पोरसीप क्यु क्यु काय कलु ? ने घावल पतावना पडिलेक्षण, स्वाध्याय, गोचरी विगेरे क्रियाओनो नियमित काळ घतायो छे पछी विस्तारथी दिवस अने रात्रिनु पृत्य घतावता पडिले हण, स्वाध्याय, आहार, कायोत्सर्ग अने प्रतिनमणनो विधि सविस्तर कर्यो छे

अध्ययन २७ पातुं २१६—साधुनी सामाचारी अशठपणाथी ज पाळी शक्य छे, तेथी आ अध्ययनमा ते वात दड करवा माटे गर्ग नामना आचार्यनुं दृष्टात आप्तुं छे. तेमा ते सूरि विचारे छे के—“ जेम कोइ पुरुष गाडीमा वृषभादिकने जोडी परगाम जवा नीकळे, तेनी गाडीने जोडेला बळद जो गळीया होय तो ते पुरुष ते बळदने मारकूट ऋषी छेवट वेदने ज पामे छे, ए ज रीते अविनीत शिष्योने वारंवार शिला आपता दृतां ते कदापि विनीत थता नथी अने उलटा असमाधिनुं कारण थाय छे. तेथी मारे आ अविनीत शिष्योने छोडी अन्यत्र जइ आत्मकार्य साधनुं सारं छे. ” एम विचारी गर्ग गुनि अविनीत शिष्योनी त्याग ऋषी अन्यत्र जइ समाधिपूर्वक संगममार्गमां विचरवा लाग्या. अहीं गळीया बळद विपेनुं दृष्टात वणुं विस्तार्थी आप्तुं छे अने पछी अविनीत शिष्य उपर तेनी उपनय पया ए ज प्रमायो उतार्यो छे.

अध्ययन २८ पातुं २२३—शठतानी त्याग करवाथी मोक्ष सुलभ थाय छे, एम जयाववा माटे आ ' मोक्षमार्ग गति ' नामतुं अध्ययन कलुं छे. तेमा मोक्षमार्गना ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप ए चार कारयो कला छे तेमां पया मति, श्रुत, अवधि, मन पर्यव अने केवल ए पाच प्रकारे ज्ञान कलुं छे, ज्ञाननी विषय द्रव्य, गुण अने पर्याय तथा ते द्रव्यादिकना ज्ञायो, अने तेना भेद प्रभेद विगेरे आप्या छे. ए ज रीते दर्शननी व्याख्यामा जीव, अजीव, बंध, पुण्य, पाप विगेरे नव तत्त्वोनुं श्रद्धानरूप स्वरूप, निसर्गरुचि, उपदेशरुचि विगेरे समकितना दश भेदो, ते दशेनी विस्तारपूर्वक व्याख्या, परमार्थसंस्तव विगेरे समकितनां सिंग, समकितनुं माहात्म्यं, निःशंकितादिक समकितना आठ आचार, ए विगेरे विषयो वर्णव्या छे. चारित्रनी व्याख्यामा सामायिक विगेरे चारित्रना पाच प्रकार, तेनुं स्वरूप अने तेनी अर्थ विगेरे बतावुं छे. तथा तपनी व्याख्यामा छ प्रकारनी व्याख्यामा छ प्रकांतो आभ्यंतर एम बार प्रकारनी

तप यत्नाव्यो छे

आययन २६ पातु २३२—वीतराग यया विना मोक्षमार्गनी प्राप्ति थइ शकती नथी, तेथी सम्यक्त्वपराम नामनु आ आययन आय्यु छे तेमां सवेग, निर्वेद, धर्मश्रद्धा विगरे तौतेर ( ७३ ) द्वारो ढह्या छे ते दरेकनो शब्दार्थं, विस्तरार्थं अने फळ विगरे विस्तारथी आपन्न छे तेनां गाम मात्र जलवाथी पण्य अही वधारे विस्तार थइ जाय तेम छे तेथी वाचनारने त्याथी ज वाचवानी भल्लामण्य करवी योग्य ज्ञानो छे तमा वीची पण्य पय्णी थाकतो बर्णवी छे

आययन ३० पातु २६३—तप विना वीतराग ण्टले कमरहित यवातु नथी तेथी आ आययन तपोमार्गगति नामे आय्यु छे तेमा कर्म सपाववा माने आश्रयरहित थनु जोइए जेम फोइ तठावमाथी पाथी काढी नाम्तु होय तो प्रथम तेमा जठ अवावना द्वारो कय करवा जोइए, अने त्यारपछी अदर रहेला जळने शोषण करवानो उपाय करवो जोइए, तेम जीवरूपी सळाबमां जठनी जेम भरेला कर्मा सपाववा माने प्रथम महाप्रतादिकबडे हिसादिक द्वारो रुधवा अने पछी तपवडे अदरना कर्मोनु शोषण करी शकय छे आ प्रमाणे आययननो आरभ करी पछी अनशनदिक छ प्रकारनो थाह्य तप आय्यो छे तथा तेना प्रतिभदो पण्य सविस्तर आय्या छे, अने त्यारपछी प्रायश्चित्तादिक छ प्रकारनो आय्यत्तर तप आय्यो छे छेवट तपनु फळ यत्ताव्यु छे

आययन ३१ पातु २७५—चारित्र विना तप सकळ थतो नथी, तथी आ चरक्यविधि नामना अध्ययत्तां समयमा प्रवृत्ति अने असयमथी निवृत्ति करवा उपदेश आय्यो छे ते प्रसंगे त्रण दढ, त्रण गाख अने त्रण शल्यनो त्याग, दिव्य, तिर्यच अने मनुष्ये करेला उपसर्गोनु सदन, चार विकथा, चार कणय, चार सत्ता अने थे दुर्च्यार्तनो त्याग, याच महाप्रत, पाच इद्रियोना विषय, काथिकयादिक पाप

क्रिया, छ लेख्या, पृथिव्यादिक छ काय अने आहार करवाना छ कारणने विपे यतना, ससृष्टादिक सात प्रकारना पिडाप्रह ने सात भय, आठ मद, नव ब्रह्मचर्यगुप्ति, दश प्रकारनो साधुधर्म, आवकनी अग्यार प्रतिमा, भिचुनी चार प्रतिमा, तेर प्रकारनी क्रिया, चौद प्रकारना जीव, पंदर प्रकारना परमाधार्मिक, सूर्यकृतागना मोळ अध्ययन, सत्तर प्रकारे संयम, अठार प्रकारनुं ब्रह्मचर्य, ओगणीश ज्ञाताध्ययन, असमाधिना वीश स्थानो, एकवीश प्रकारनी शबळक्रिया, वावीश परीपह, त्रेवीश अध्ययनवाळुं सुयगडाग, चोवीश देवो, पचीश भावना, दशाकल्पव्यवहारना छव्वीश उद्देशा, साधुना सत्तावीश गुणा, आचारांगना अठुवीश अध्ययन, पापश्रुतना ओगणीशीश प्रसंगो, मोहना त्रीश स्थानको, सिद्धना एकत्रीश अतिशयो, ववीश योगनो संग्रह तथा तेत्रीश आशातना, आटला विपयो लीधा छे. 'तेमा उपादेयनुं ग्रहण अने हेयनो त्याग करवा उपदेश आप्यो छे, तथा ते प्रमाणो वर्तनार मोचने पामे छे एम तेनुं फळ पण यताब्यु छे.

अध्ययन ३२ पानुं २८७—प्रमादनो त्याग करवाथी ज चारित्र पाळी सकाय छे. तेथी आ प्रमादस्थान नामनुं अध्ययन आप्युं छे. तेमा अवरिति, कपाय विगेरे प्रमादना स्थानो तजवा लायक छे, ज्ञान, दर्शन अने चारित्र आदरवा लायक छे. तेनो उपाय सद्गुरुवाँदिकनी सेवा, पासत्यादिकनो त्याग, स्वाध्याय अने धृति विगेरे छे. आवो उपाय प्राप्त करवा माटे गपणीय आहार, तत्त्वज्ञ शिष्य अने रुयादिक रहित उपाश्रय सेवानी जरूर छे. ज्ञानादिकनो प्रतिबंध करनाग अने दुःखना हेतुरूप मोहादिकनी उत्पत्ति अने तेनो क्षय शी गीते थाय ? ए विगेरेनो विस्तारथी उपदेश आप्यो छे. राग, द्वेष अने मोहनो नाश करवाना उपाय यतावता दुग्धादिक विकृतिना त्यागपूर्वक अल्पाहार करवानो उपदेश आप्यो छे. स्त्रीमंगथी थता दोष अने ते वर्जवाथी थता गुण वेत्ताड्या छे, इंद्रियोना विपयोनो त्याग यताववा माटे पाचे विपयोनुं पृथक् पृथक् स्वरूप अने तेथी थता दोषो विस्तारथी आप्या छे. आ विपयना उपदेशमा राग, द्वेष, मोह अने कपायनुं स्वरूप

અને તેથી યતા દોષો યતાયા છે છેવટ આ સર્વ પ્રમાદના સ્યાનોથી રહિત થયેલો જીવ મોક્ષને પામે છે એમ કહી અધ્યયનાની સમાપ્તિ કરી છે

અધ્યયન ૩૩ પાનુ ૩૧૦—પ્રમાદ સેવકથી કર્મવપ યાય છે, તેથી આ કર્મપ્રકૃતિ નામના અધ્યયમા પર્મનુ સ્વરૂપ યતાવ્યુ છે તેમા પ્રથમ જ્ઞાનાવસ્થીયાવિક્ર આઠ કર્મ અને તે દરકની ઉત્તપ્રકૃતિ પ્રભેદ સહિત કહી છે પછી કર્મના પ્રવેશાપ, સોત્ર, કાઠ અને ભાવ વિસ્તારથી વણવ્યા છે

અધ્યયન ૩૪ પાનુ ૩૧૬—કર્મની સ્થિતિ લેશ્યાને આપીન દોષાથી આ અધ્યયનમા લેશ્યાનુ સ્વરૂપ ક્યુ છે તેમા પ્રથમ લેશ્યાના નામ કહી પત્રી અનુભવે તેના વળા, રસ, ગય, સ્પર્શ, પરિચામ, જાણ, સ્થાન, ગતિ અને આયુષ્ય યતાવ્યા છે તેમા ચારે ગતિના નીચેને આશ્રી લેશ્યાની સ્થિતિ વિસ્તારથી કહી છે

અધ્યયન ૩૫ પાનુ ૩૨૮—શુભ લેશ્યા ગુણવાન સાધુને જ હોદ શકે છે તેથી આ અનગારમાર્ગગતિ નામના અધ્યયનમા સાધુના ગુણો યતાયા છે તેમા પ્રથમ પચ મહાત્તો પાઠયાનુ ક્યુ છે પછી કામરાગને જાગૃત કરનાર મનોહર ઉપાશ્રયમા રહેવાનો નિષેધ કર્યો છે, અને સ્મશાન તથા શૂન્યગૃહ જેવા સ્થાનમા રહેવાનુ ક્યુ છે ઘર કરાવવા વિગેરે કાર્યમાં ત્રસ અને સ્થાવર જીવોની હિંસા દોષથી ત્રિજાયુજ પ્રવૃત્તિ કરવી નહીં જીવહિંસાના કારણથી જ પચન—પાચન ત્રિયામા, અગ્નિ મઠગાવવામાં અને ત્રય—વિત્રય કરવામા નહીં પ્રવર્તી શુદ્ધ મિથા-પર્યાથી જ ત્રિવાહ કરવો, ગામ્વની વાહાનો ત્યાગ કરી શુક્લધ્યામા જ રહેવુ, વિગેરે ઉપદેશ આપ્યો છે

અધ્યયન ૩૬ પાનુ ૩૩૩—સાધુગુણ સેવવામા જીવાતીવતુ સ્વરૂપ જાણવુ આનરક છે, તેથી આ જીવાતીવત્રિમત્તિ નામના



अध्ययनमा जीव अने अजीव एवा वे विभाग बतावता प्रथम लोक अने अलोक नामना वे विभाग बताव्या छे. पछी अजीवनी द्रव्य  
क्षैल, काळ अने भावथी प्ररूपणा करी छे. तेमा द्रव्यथी अजीवनी प्ररूपणा करता रूपी अजीव द्रव्यना चार प्रकार अने अरूपी अजीव  
द्रव्यना दश प्रकार सविस्तर बताव्या छे. तथा भावथी प्ररूपणा करता स्कंध अने परमाणुना वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने संस्थान ए पाच  
प्रकारना परिणाम प्रभेद सहित कक्षा छे. त्यारपछी जीवनी प्ररूपणा करी छे. तेमां प्रथम संसारी अने सिद्ध एम जीवना वे प्रकार कही पछी सिद्धना  
पंदर भेद, तेमनी अवगाहना, क्षेत्र, तेमने रहेवांनुं स्वरूप, सिद्धोनी अवगाहना विगेरे बताव्युं छे. पछी संसारी जीवनुं स्वरूप  
कहेतां तेमना त्रस अने स्थावर एम वे भेद बताव्या छे. पछी सूक्ष्म अने वादर, तेमज पर्याप्त अने अप्काय अने वनस्पति-  
काय ए त्रया भेद स्थावरना बतावी तेमना पण भेद प्रभेद विगेरे बताव्या छे. तेमा ते दरेकनी द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावथी प्ररूपणा करी  
छे. त्यारपछी तेजस्काय, वायुकाय (गतित्रस) अने उदार एटले स्थूल एम त्रया प्रकारना त्रस बताव्या छे. तेउवाउना पण सूक्ष्म वादर, पर्याप्त  
अने अपर्याप्त भेदो बतावी तेमना पण भेद, प्रभेद बतावतां द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावथी प्ररूपणा करी छे. ते प्रसंगे तेमनुं दरेकनुं आयुष्य,  
कायस्थिति, अंतर अने वर्णादिक पृथक् पृथक् स्वरूप बताव्युं छे. पछी द्वीन्द्रिय विगेरे उदार त्रसकाय सूक्ष्म नहीं होवाथी तेमना पर्याप्त  
अने अपर्याप्त ए वे ज भेद बताव्या छे. तेमा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अने चतुरिन्द्रियनुं आयुष्य, स्थिति, अंतर विगेरे बताव्युं छे. पंचेन्द्रियनी  
प्ररूपणामा तारकी तिर्यच मनुष्य अने देव ए चारेना भेद, प्रभेद, आयुष्य, कायस्थिति अने वर्णादिक पृथक् पृथक् बताव्युं छे. आ सर्व  
जीवाजीवनुं स्वरूप बतावी उपदेश आप्यो छे के-आ स्वरूप जाणीने मुनि ए संयमने विपे रति करवी, अने घणा वर्षो सुधी चारित्र पर्यायनुं  
पालन करी छेवट संलेखना कर्गी.” इत्यादिक उपदेश आपी प्रसंगने लीधे संलेखनानो विधि बताव्यो छे, त्यारपछी कंदर्पादिक पाच अशुभ

भावतानો ત્યાગ કરવા કહ્યું છે, છેલ્લટ આ છત્રીશ અધ્યયનની પ્રરૂપણા કરી શ્રીકર્ણમાન સ્વામી મોને ગયા એમ વહી આ પ્રથની સમાપ્તિ કરી છે  
 આ સૂત્રમા ચારિત્ર્યમં સવધી પળા તત્ત્વો વતાવ્યા છે, પળા દેશવિરતિ ધર્મ વતાયો નથી તથી આ સૂત્ર ચારિત્રવાન મુનિને જ  
 મળવા ગળવા યોગ્ય છે આ સૂત્રનો સમાવેશ કયાયુોગમા હોવાથી રસિક કયાઓ સહિત ધર્મોપદેશ આપ્યો છે ટીકાકાર  
 મહારાગે પળ પ્રસંગેપાત રસિક કયાઓ સહેલી ભાપામા આપી છે, તેથી વાચનાર તથા સામઝનારને આનંદ સાથે ધર્મનું જ્ઞા  
 આપે ણુ આ સૂત્ર છે

આ સૂત્રમા ઓમે વે વિભાગ કર્યા છે પહેલામા ૧૫ અને વીજામા ૨૧ અધ્યયન આવેલા છે ધીજો વિભાગ પહેલા કરતા મોટો  
 થયો છે છેલ્લેટ આ સૂત્રના છત્રીશ અધ્યયનો ઉપર છત્રીશ સજ્ઞાયો છે, તે પળ આપી છે તે દરેકે કઠ કરવા જેવી છે ત્યારપછી મદ્દ  
 કતારના નામ અમર રાહી આ વિભાગ સપૂર્ણ કર્યો છે આશા છે કે ઉત્તમ જીવો આનું પઠન પાઠનાદિક કરી આ સૂત્ર હપવાવનાો અમારો  
 પ્રયાસ સફટ કરશે અને આવા જ્ઞાનોદ્ધારના કાયમા વ્યય કરીને ચવલ જલ્મીનુ પઠ પ્રહળ્ય કરશે

વને વિભાગના પુને સુધારવામા યથાશક્તિ પ્રયાસ કર્યો છે છતા દષ્ટિદોષ કે મતિમાગદિકના કારણથી કાદ સ્તરજના જોવામા આવે,  
 તે શિટજનોપ સુધારીને વાચવા અને ઓમને જાટી જણાવવા નમ્ર વિશ્વતિ છે

इति शम्

સવત ૧૯૮૧ વીપોત્સવી

શ્રી મહાવીર નિવાળ વલ્યાથક

શ્રી જૈન ધર્મ પ્રસારક સમા

માવનગર

## बंने विभागसां आवेली कथाओनी अनुक्रमणिका.

अध्ययन १ जुं.	पाठुं.	अध्ययन २ जुं.	पाठुं.
१ अविनीत कूलवालक मुनिनी कथा. ....	२	१० शीत परीषह उपर भद्रबाहुस्वामीना शिष्योनी कथा	२७
२ चंडरुद्राचार्यनी कथा. ....	७	११ उष्ण परीषह उपर अरहन्तक मुनिनी कथा.	२८
३ क्रोधने निष्फळ करवा उपर कुलपुत्रनी कथा. ....	८	१२ दंशमशक परीषह उपर श्रमणभद्र मुनिनी कथा.	३०
४ प्रियाप्रिय उपर रागेद्वेष न करवा विषे त्रण मात्रिकोनी कथा	८	१३ अचेल परिषह उपर सोमदेव ऋषिनी कथा.	३१
५ आत्मदमन उपर वे चोरनायकनी कथा. ....	९	१४ अरति परीषह उपर पुरोहितपुत्र अने राजपुत्रनी कथा	३४
६ आत्मदमन उपर सेचनक हाथीनी कथा. ....	११	१५ स्त्री परीषह उपर श्रीस्थूलभद्रनी कथा ....	३८
७ गुरुनो उपघात करनार कुशिष्यनी कथा. ....	१८	१६ चर्या परीषह उपर संगमाचार्यनी कथा . .	४२
		१७ नैषेधिकी परीषह उपर कुरुदत्त साधुनी कथा.	४४
		१८ शय्या परीषह उपर सोमदत्त अने सोमदेव मुनिनी कथा .	४५
		१९ क्रोध उपर क्षपक साधुनी कथा	४६
८ क्षुधा परीषह उपर पिता पुत्र साधुनी कथा. ....	२४	२० आक्रोश परीषह उपर अर्जुनमाळी मुनिनी कथा.	४७
९ तृषा परीषह उपर धनशर्मा साधुनी कथा. ....	२६	२१ वध परीषह उपर स्कंदकाचार्यना शिष्योनी कथा.	४८



४६	श्रद्धानी दुर्लभता उपर आठमा निह्व दिगंबर शिवभ्रतिनी कथा. .... ६८
५०	जरावस्था पामेलाने कांइपण शरण नथी ते उपर अट्टन- मछनी कथा .... १०४
५१	द्रव्यना लोभ उपर चोरनी कथा .... १०६
५२	पापकर्मनी प्रशंसा उपर चोरनी कथा ... १०७
५३	बधुमोहना त्याग उपर आभीरीवंचक श्रेष्ठीनी कथा. ... १०८
५४	धन आ भवमा रक्षणकर्ता नथी ते उपर पुरोहितपुत्रनी कथा १०९
५५	नष्टदीपक धातुवादीनी कथा ... ११०
५६	द्रव्यथी जागता उपर अगडदत्त राजपुत्रनी कथा ... ११०
५७	लाम थाय त्यांसुधी देह धारण करवा उपर मडिक चोरनी कथा .... ११८
५८	शिक्षित अने अशिक्षित एवा बे अधोनी कथा .. १२०
५९	शीघ्रपणे विवेक पामी न शकाय ते उपर ब्राह्मणीनी कथा. १२१

६०	प्रमाद अने अप्रमाद उपर वणिकनी-बे स्त्रीओनी कथा. १२२
६१	अर्थदंड अने अनर्थदंड उपर पशुपालनी कथा अध्ययन ५ मुं. .... १२६
६२	दुःशीळीया उपर द्रमकनी कथा .. १३१
६३	विद्या रहित द्रमक पुरुषनी कथा .... १३४
६४	घेटातुं दृष्टात ... .. १४०
६५	कागिणी तथा आत्रनुं दृष्टात ... १४३
६६	त्रण वणिकपुत्रनी कथा .... १४५
६७	कपिलमुनिनी कथा .... १५१
६८	प्रत्येकबुद्ध करकंडुनी कथा .... १६०

बीजो विभाग—अध्ययन १८

१६५	७७ संयतयुनि अने क्षत्रिययुनिनी कयामां अतर्गत भरत चक्रीनी कया	२७
१६८	७८ सगर एकपर्वतीनी कया	२८
१९०	७९ मयवा चक्रवर्तीनी कया	३३
	८० सात्कुमार चक्रीनी कया	३३
	८१ श्री दांतिनाथनी कया	४३
२२२	८२ श्री कुमुनाथनी कया	६५
	८३ श्री अरनाथनी कया	६६
२४३	८४ महापद्म चक्रीनी कया	६७
	८५ हरिपेण चक्रीनी कया	७४
२६७	८६ मयचक्रीनी कया	७९
	८७ दशार्णभद्र रागाणी कया	७९
२७७	८८ उदायन रागाणी कया	८१

१९	नीना प्रत्येकबुद्ध द्वियुत्तरागाणी कया	
७०	त्रीना प्रत्येकबुद्ध नभिरागाणी कया	
७१	चोणा प्रत्येकबुद्ध नगतिरागाणी कया	
७२	गौतमस्वामीनी कया	अध्ययन १० सु
		..
७३	दरिकेगबळ मुनिनी कया	अध्ययन १२ सु
		अध्ययन १३ सु
७४	निर समूत गुिनी कया	
७५	अल्हारोने भाररूप कसेवा माटे भेडीपुत्रनी बहुउदरति	
७६	इमुकार रागा विगरे छ जीवनी कया	अध्ययन १४ सु

८६ काशीराजनी कथा	....	...	...	अध्ययन २३ मुं.	....
९० विजयराजानी कथा	....	...	...	९६ श्री पार्श्वनाथनी कथा.	.... १९९
९१ महाबळ राजानी कथा	....	...	...	९७ श्री केशिकुमार अने गौतमस्वामीना प्रश्नोत्तर	.... १७२
९२ मृगापुत्रनी कथा.	....	...	...	अध्ययन २५ मुं.	...
९३ अनाथ मुनिनी कथा.	....	...	...	९८ जयघोप तथा विजयघोपनी कथा.	... १६६
९४ समुद्रपाळनी कथा.	....	...	...	अध्ययन २७ मुं.	.... २१९
९५ श्रीनिमिनाथनी कथा.	....	...	...	९९ गर्ग आचार्यनी कथा.	.... २१९

अध्ययन ११-१५-१७-२४-२६-२८-२९-३०-३१-३२-३३  
३४-३५-३६ आ पदर अध्ययनमां कथा भाग विक्रुक नथी.



# श्री उत्तराध्ययनसूत्र प्राप्तांतर.

विभाग बीजो

—५(०)३५—

अथ नक्षत्र्यगुप्ति नामनु सोळमु अध्ययन १६

पंदरमा अध्ययनमा साधुना गुणो कक्षा. ते गुणो तो जे नक्षत्र्यमा स्थिर होय तेने ज तत्पथी समये छे अने नक्षत्र्य पण नक्षत्रगुप्तिने जाणवापी ज पाळी शक्या छे तेथी आ अध्ययनमा ते नक्षत्रगुप्तिथोनु ज स्वरूप कहे छे. ए तपधधी आनेला आ अध्ययननु प्रथम द्यत्र आ प्रमाणे—

सुअ मे आउस तेण भगवया एवमकखाय, इह खलु थेरेहिं भगवतेहिं दस वभचेरसमाहि  
ट्टाणा पणुत्ता, जे भिम्बू सोद्या निसम्म सजमनहुले सनरवहुले समाहिवहुले गुत्ते गुत्तिदिष्ट गुत्त  
वभयारी सया अप्पमत्ते विहरिजा ॥ १ ॥



अर्थ—श्री सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे के—( आउसं ) हे आयुष्मान् ! ( मे ) में ( सुअं ) सांभळुं छे, के ( तेणं ) भगवया ) ते एटले ज्ञातकुळरूथी ममूद्रने विकास करवामां चंद्र समान भगवान श्री वर्धमान जिनेश्वरे ( एवं ) आ प्रमाणे ( अक्खाण ) कहुं छे. शुं कहुं छे ? ते ज कहे छे—( इह ) आ जिनप्रवचने विपे ( खलु ) निश्चे ( थेरेहिं भगवं-तेहिं ) भगवत एटले पूज्य एवा स्थविर एटले गणधरादिके ( दस ) दश ( बंभचेरसमाहिट्टाणा ) ब्रह्मचर्यनी समाधिनां स्थानो ( पणत्ता ) कहां छे. तात्पर्य ए छे के—आ चावत स्थविरो पोतानी बुद्धिथी कहे छे एम नथी, परंतु भगवान श्री वर्धमानस्वामीए पण आ ज प्रमाणे कहुं छे ते में सांभळुं छे. तेथी आ चावतमां अनास्था-अश्रद्धा करीश नहीं.

हवे ब्रह्मचर्यनां स्थानो केवां छे ? ते कहे छे—( जे ) जे ब्रह्मचर्यनां स्थानोने ( भिक्खू ) साधु जे ते ( सोच्चा ) सूत्रथी सांभळीने तथा ( निसम्म ) अर्थथी धारीने ( संजमवहुले ) बहुल एटले उत्तरोत्तर स्थाननी प्राप्तिवडे घणो छे संयम जेने एवो थाय छे, तेथी करीने ज ( संवरवहुले ) घणो छे संवर एटले आश्रवदारनो निरोध जेने एवो थाय छे, तेथी करीने ज ( समाहिवहुले ) घणी छे समाधि एटले मननी स्वस्थता लेने एवो थाय छे, तथा ( गुत्ते ) मन, वचन अने कायावडे गुप्त थाय छे, तेथी करीने ज ( गुत्तिंदिए ) गुप्त छे-वश छे इंद्रियो जेनी एवो थाय छे, अने तेथी करीने ज ( गुत्तंब-यारी ) नव गुप्तिने सेववाथी गुप्त एवा ब्रह्मचर्यनुं आचरण करवाना स्वभांवाळो थइने ( सया ) सदा ( अप्पमत्ते ) प्रमाद रहित थयो सतो ( विहरिज्जा ) विहार करे छे-विचरे छे.

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिट्टाणा पणत्ता ? जे भिक्खू सोच्चा निसम्म

सजमवहुले सवरवहुले समाहिवहुले गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तवभयारी सया अप्पमत्ते विहरिजा ॥ २ ॥

अर्थ—जयस्वामी गुरु महाराज सुधर्मास्वामीने पूछे छे के—हे स्वामी ! ( थेरोहि भगवतेहि ) स्थविर भगवतोए ( कयरे एलु ते ) कया निशे ते ( दस ) दश ( वभचेरसमाहिट्टाणा ) ब्रह्मचर्यनी समाधिना स्थानो ( पणत्ता ) कहेला छे ? के ( ने ) जे स्थानोने ( भिववू ) साधु ( सोद्या ) ब्रह्मचर्यनी सांभळीने तथा ( निसम्म ) अर्थथी अवधारीने ( सजम वहुले ) घणा समयवाळो ( सवरवहुले ) घणा सवरवाळो ( समाहिवहुले ) घणी समाधिवाळो ( गुत्ते ) ऋण गुत्तिथी गुत्त ( गुत्तिदिए ) इन्द्रियोनी गुत्तिनाळो तथा ( गुत्तवभयारी ) नव गुत्ति युक्त ब्रह्मचर्यनु आचरण करवाना स्वभाववाळो थइने ( सया ) सदा ( अप्पमत्ते ) प्रमाद रहित ( विहरिजा ) विचरे छे २

श्री सुधर्मास्वामी जयस्वामीने उत्तर आपे छे के—

इमे खलु ते थेरोहि भगवतेहि दस वभचेरसमाहिट्टाणा पणत्ता, जे भिववू सोच्चा निसम्म सजमवहुले सवरवहुले समाहिवहुले गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तवभयारी सया अप्पमत्ते विहरिजा ॥ ३ ॥

अर्थ—स्थविर भगवतोए आ निशे ते दश ब्रह्मचर्यनी समाधिनां स्थानो यहाँ छे, के जे स्थानोने सांभळीने साधु सदा अप्रमत्तपणे विचरे छे ( मध्यना शब्दोको अर्थ उपर प्रमाणे समजी लेवो ) ३

हवे ते ब्रह्मचर्यनी समाधिनां दश स्थानो यवावे छे.

तं जहा-विवित्ताइं सयणासणाइं सेविजा से निगंथे, नो इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेविता हवइ से निगंथे । तं कहमिति चे ? आयरिआह-निगंथस्स खलु इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्स बंभयारिस्स बंभचरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेअं वा लभेजा, उअ्मायं वा पाउणिजा, दीहकालिअं वा रोगायकं हविजा, केवल्लिपणत्ताओ वा धम्मआओ भंसिजा, तम्हा नो इत्थिपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेविता इवइ से निगंथे ॥ ४ ॥

अर्थ—( तं जहा ) ते आ प्रमाणे—( विविचाइं ) विविक्त एटले स्त्री, पशु अने नपुंसक रहित एवां ( सयणासणाइं ) शय्या, आसन अने उपलक्षणथी स्थानोने ( सेविजा ) जे सेवे, ( से ) ते ( निगंथे ) निर्ग्रथ एटले साधु कहेवाय छे. आ प्रमाणे अन्वयवडे कहुं. हवे अल्पसतिवाळा शिष्यने सारी रीते नोध थवा माटे आ ज अर्थने व्यतिरेकवडे कहे छे.—( इत्थी-पसुपंडगसंसत्ताइं ) स्त्री, पशु अने नपुंसक सहित एवां ( सयणासणाइं ) शय्या, आसन अने स्थानने ( सेविता ) जे सेव-नार होय ( से ) ते ( निगंथे ) निर्ग्रथ ( नो हवइ ) न होय एटले न कहेवाय. आ प्रमाणे गुरुनुं वचन सांभळी शिष्य कहे छे के—( तं कहं ) आ तमे कहुं ते शी रीते ? ( इति चे ) आ प्रमाणे जो शिष्य शंका करे तो ( त्रायरिआह ) आचार्य कहे छे के—( खलु ) निश्च ( इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं ) स्त्री, पशु अने नपुंसक सहित एवां शयन, आसन अने स्थानने ( सेवमाणस्स ) सेवता एवा ( बंभयारिस्स ) अने ब्रह्मचारी एवा पण ( निगंथस्स ) निर्ग्रथना ( बंभचरे )

ब्रह्मचर्यने विषे वीना मनुष्योने ( सका वा ) शका थाय, एटले के आवा प्रकारना शयन, आसनने सेनार आ साधु ब्रह्मगारी हशे क नहीं होय ? एम वीनाओने शका थाय छे अथवा तो साधुने पोताने ज पोताना ब्रह्मचर्यने विषे शका थाय छे एटले के स्त्री विगेरेना दर्शनथी तेनापर गाढ अनुराग-प्रीति उत्पन्न थाय छे अने तेथी करीने समग्र विनेश्वरनो उपदेश वीसरी जइ आची भावना थाय छे के—

“ सत्य वच्मि हित वच्मि, सार वच्मि पुन पुन' । अस्मिन्नसारे ससारे, सार सारङ्गलोचना ॥ ”

“ हु सत्य रूहु छु, हित रूहु छु अने वारवार सारने एटले तत्तने कहु छु के आ असार ससारमां मृगलोचना (स्त्री) ज सारभूत छे ”

आना रागीचनोनां वाननी भावना भावतां मिथ्यात्वना उदयथी कदाच “ स्त्रीसेवनमां जे दोष तीर्थकरोए कस्यो छे ते दोष सत्य नहीं होय ” ए प्रमाणे तेने पोताने ज शका उत्पन्न थाय अथवा ( कसा वा ) कांवा उत्पन्न थाय एटले स्त्रीविषयनी इच्छा उत्पन्न थाय ते आ प्रमाणे —

“ प्रियादर्शनमेनास्तु, किमन्यैर्दर्शानन्तरै । निर्वाण प्राप्यते येन, सरागेणापि चेतसा ॥ ”

“ अमार प्रियानु दर्शन ज हो, वीजां ( बोद्धादिक ) दर्शनोए करीने शु फळ छे ? कारण के जे प्रियाना दर्शनवडे करीने सरागी विने पण निर्वाणे पमाय छे ”

१ मोक्ष वीना पणमां सुख

आर्वा नास्तिकोनां दर्शननी अभिलाषा थवाथी स्त्रीनी इच्छा थाय छे. ( वितिगिच्छा वा ) अथवा “आवी चारित्रनी कष्टकारी क्रिया करवाथी तेनुं कांइ फल मळशे के नहीं ?” आवी फल आश्री शंका थाय छे. तेथी आ “स्त्री विगेरेनुं सेवतुं ज सारुं छे.” एम धारे छे. ए प्रमाणे विचिकित्सा एटले फलनो संदेह (समुपपञ्जिजा) उत्पन्न थाय छे. ( भेअं वा लभेजा ) अथवा भेद एटले चारित्रना विनाशने पामे छे. ( उम्मायं वा पाउणिजा ) अथवा उन्मादने एटले कामनी आतुरताने-पराधीनताने पामे छे. ( दीहकालिअं वा रोगायकं हविजा ) अथवा लांगो काळ पहाँचे एवा रोग एटले दाहज्वरादिक अने आतंक एटले तत्काळ मरण करनारा शूल विगेरे व्याधिओ शरीरने विपे उत्पन्न थाय छे. कामी मनुष्योना शरीरमां कामनी दश अवस्थाओ थाय छे ते आ प्रमाणे.—

“ प्रथमे जायते चिन्ता, द्वितीये द्रष्टुमिच्छति । तृतीये दीर्घनिःश्वासः, चतुर्थे ज्वरमादिशेत् ॥

पञ्चमे दह्यते गात्रं, षष्ठे भक्तं न रोचते । सप्तमे च भवेत्कम्प, उन्मादश्चाष्टमे तथा ॥

नवमे प्राणसंदेहो, दशमे जीवितं त्यजेत् । कामिनां मदनोद्वेगा, दश संजायन्ते ह्यमी ॥ ”

“ कामीजनोने स्त्रीना दर्शनथी आ दश कामनी अवस्थाओ उत्पन्न थाय छे.—प्रथम तेने मळवा विपेनी चिन्ता-विचार थाय छे १, पछी ते स्त्रीने जोवानी इच्छा थाय छे २, पछी तेना विरहने लीधे दीर्घ निःश्वास मूके छे ३, पछी तेने परिणामे ज्वर आवे छे ४, पछी शरीर चळवा लागे छे ५, पछी भोजनपर अरुचि थाय छे ६, पछी शरीरे कंप थाय छे ७, पछी उन्माद थाय छे ८, पछी प्राणना संदेहमां आवी पडे छे ९ अने छेवट जीवितनो त्याग पण कोइक करे छे १०.”

( केवलपणुत्ताओ वा धम्माओ भसिजा ) अथवा तो केवळी भगवाने प्ररूपेला चारित्र्यर्म थकी अष्ट थाय छे केमके कोइक जीव छिट कर्मना उदयथी धर्मअष्ट पण थाय छे ( तम्हा ) तेथी करीने ( इरियपसुपडगससत्ताइ ) स्त्री, पशु अने नपुसकना समथवाळां (सयणासणाइ) शयन, आसन अने स्थानने ( सेवित्ता ) जे सेवनार होय ( से ) ते ( निग्गये ) निर्ग्रथ ( नो हवइ ) न होय-न कहेवाय आ ब्रह्मचर्यनु पहेलु समाधिस्थान कशु १. ४

हवे वीजु समाधिस्थान कहे छे —

णो इरथीण कह कहित्ता हवइ से निग्गथे, त कहमिति चे ? आयरियाह-निग्गथस्स खलु इरथीण कह कहेमाणस्स बभयारिस्स बभचेरे सक्का वा कल्ला वा वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेअ वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिअ वा रोगायक हविज्जा केवलपणुत्ताओ वा धम्माओ भसिजा, तम्हा खलु निग्गथे नो इरथीण कह कहिज्जा ॥ २-५ ॥

अर्थ—( इरथीण ) एकली स्त्रीओनी पासे अथवा स्त्री सबधी ( कह ) कथाने ( कहित्ता ) जे कहेनार होय ( से ) ते ( निग्गये ) निर्ग्रथ ( यो हवइ ) न होय, एटले के केवळ स्त्रीओनी पासे ज धर्मोपदेश करवो नहीं अथवा स्त्रीओनी जाति कुळ, वेप अने रूप विगरे सबधी, तथा पद्मिनी, चित्रणी, हस्तिनी अने शखिनी तथा मुग्धा, मध्या अने प्रौढा तथा कर्णाटक आदि देशमां उत्पन्न थयेली स्त्रीओ आवी होय छे इत्यादिक स्त्री सबधी कथा करवी नहीं जो करे तो ते साधु न

कहेवाय. ( तं कहं ) तमे कहंते ते शी रीते ? ( इति चे ) एम जो शिष्य शंका करे तो ( आयरियाह ) आचार्ये कहे छे के—  
 ( खलु ) निश्चे ( इत्थीणं ) एकली सीयो पासे कथा करतां अथवा सी संवंधी ( कहं कहेमाणस्स ) कथाने कहेता एवा  
 ( निगंथस्स ) साधुने ( बंभयारिस्स ) ब्रह्मचारी छतां पण ( बंभेचरे ) ब्रह्मचर्येने विषे ( संका वा ) हुं आ सीने सेतुं के  
 न सेतुं ? इत्यादिक शंका उत्पन्न थाय छे. इत्यादिक सर्व उपर वताव्या प्रमाणे हानि थाय छे. ते पाठनो अर्थ उपर प्रमाणे  
 अहीं पण करनो. छेवटमां ( तम्हा खलु निगंथे ) ते कारण माटे निश्चे साधुए ( नो इत्थीणं कहं कहिजा ) एकली सी-  
 योनी पासे कथा करवी नहीं अथवा सी संवंधी कथा कहेवी नहीं. प्रा ब्रह्मचर्यतुं बीजुं समाधिस्थान कहं. २. ५.

हवे त्रीजुं समाधिस्थान कहे छे.—  
 यो इत्थीहिं सद्धिं सन्निसिजागए विहरित्ता हवइ से निगंथे । तं कहमिति चे ? आयरि-  
 आह—निगंथस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसिजागयस्स बंभयारिस्स बंभेचरे संका वा कंखा वा  
 वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेअं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगा-  
 यंकं हविज्जा, केवल्लिपणत्ताओ वा धम्मओ भंसिज्जा, तम्हा खलु नो निगंथे इत्थीहिं सद्धिं सन्नि-  
 सिजागए विहरिज्जा ॥ ३-६ ॥

अर्थ—( इत्थीहिं सद्धिं ) सीओनी साथे ( सन्निसिजागए ) एक आसन पर रह्यो थको ( विहरित्ता ) स्थिति करनार

—साथे वेमनार जे होय ( से ) ते ( निगथे ) साधु ( णो हवइ ) न होय-न कहेनाय, अर्ही सप्रदाय एवो छे के—जे आसन उपर प्रथम स्त्री येठली होय, ते आसन उपरथी ते स्त्रीना उठ्या पछी वे घडी जाय त्यारे ज ते साधुने येसवा योग्य थाय छे ( त कह ) ते शी रीते ? ( इति चे ) एम जो शिष्य शका करे तो ( आयरिआह ) आचार्य कहे छे ( खलु ) निथे ( इत्थी हिं सद्धि ) स्त्रीओनी साथे ( सन्निसिजागयस्स ) एक आसन पर रहेला-येठेला ( निगथस्स ) साधुने ( वभयारिस्स ) ब्रह्मचारी छतां पण ( वभंचेरे सका वा ) ब्रह्मचर्येने विपे शका उत्पन्न थाय विगेरे आळावानो अर्थ पूर्वनी जेम जाणी लेवो छेन्ट ( तम्हा खनु ) ते कारण मांटे निथे ( निगथे ) साधु ( इत्थीहिं सद्धि ) स्त्रीओनी साथे ( सन्निसिजागण ) एक आसन पर रहो थको ( नो विहरिजा ) न विचरे-न वेसे आ नीजुं समाधि स्थान वणु ३-६

हवे चोथु समाधिस्थान कहे छे—

णो इत्थीण इदिआइ मणोरमाइ अलोपत्ता निज्जाएत्ता भवति से निगथे । त कट्ठमिति चे ? आयरिआह—निगथस्स खलु इत्थीण इदिआइ मणोरमाइ अलोपमा णस्स निज्जाएमाणस्स वभयारिस्स वभंचेरे सका वा कखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा वाव केवल्लिपणत्ताओ वा धम्माओ भसिजा, तम्हा खलु नो निगथे इत्थीण इदिआइ जाव निज्जाएजा ॥ ४-७ ॥



अर्थ—( इत्थीणं ) सीओनां ( इंदिआइं ) नेत्रादिक इंद्रियोने. केवां इंद्रियोने ? ( मणोहराइं ) मनोहर एटले जोवा मात्रथी ज मनने आकर्षण करनारां तथा ( मणोरमाइं ) मनोरम एटले दर्शन कर्या पछी चिंतव्या थका मनने आनंद आप-  
नारां एवां इंद्रियोने ( आलोएत्ता ) कांइक जोइने तथा ( निज्जाएत्ता ) अत्यंत जोइने अथवा निध्याता एटले जोया पछी  
“ अहो ! ते स्त्रीना नेत्रनी सुंदरता अने नासिकानी सरळता केवी छे ? इत्यादिक विचार करनार जे होय ( से ) ते  
( निगंथे ) साधु ( णो भवति ) न होय ( तं कंहं ) ते केवी रीते ? ( इति चे ) एम जो शिष्य शंका करे तो ( आयरि-  
आह ) आचार्ये कहे छे—( खलु ) निश्चे ( इत्थीणं ) सीओनां ( इंदिआइं मणोरमाइं ) जोवाथी मननुं आक-  
र्षण करनार अने जोया पछी मनने आनंद आपनार इंद्रियोने ( आलोएमाणस्स ) कांइक जोता एवा अने ( निज्जाए-  
माणस्स ) अत्यंत जोता एवा अथवा ध्यान करता एवा ( निगंथस्स ) साधुने ( वंभयारिस्स ) ब्रह्मचारी छतां पण ( वंभ-  
चेरे संका वा ) ब्रह्मचर्येने विषे शंकादिक दोष उत्पन्न थाय इत्यादिक पूर्वनी जेम जाणुं. छेवट ( तम्हा खलु ) ते कारण  
माटे निश्चे ( निगंधे ) साधु ( इत्थीणं ) सीओनां ( इंदिआइं जाव ) मनोहर अने मनोरम एवां इंद्रियोने यावत् ( नो नि-  
ज्जाएज्जा ) न जुए-न ध्यान करे. आ चोथुं समाधिस्थान थयुं. ४-७.

हवे पांचसुं समाधिस्थान कहे छे.—

णो निगंधे इत्थीणं कुहुंतरंसि वा, दूसंतरंसि वा, भित्तिंतरंसि वा, कुइअसइं वा, रुइअसइं

वा, गीअसद् वा, हसिअसद् वा, थणिअसद् वा, कदिअसद् वा, विलविअसद् वा सुणिता हवइ  
से निग्गथे । त कहमिति चे ? आयरिआह-निग्गथस्स खलु इत्थीण कुडुतरसि वा जाव विलवि-  
असद् वा सुणमाणस्स वभयारिस्स वभंचेरे सका वा कला वा जाव केवल्लिपणत्ताओ वा धम्माओ  
भसिज्जा, तम्हा खलु निग्गथे नो इत्थीण कुडुतरसि वा जाव सुणमाणो विहरेज्जा ॥ ५-८ ॥

अर्थ—( निग्गथे ) साधु ( कुडुतरसि वा ) पथ्यर अने माटी विगेरेथी वनावेला बुद्ध्य-भीतने अंतरे-ओथे रहीने,  
अथवा ( दुसतरसि वा ) दूष्य एटले वसना पडदाने अंतरे रहीने अथवा ( भित्तितरसि वा ) पाकी इट अने चूना विगेरेथी  
वनावेली भीतने अंतरे रहीने ( इत्थीण ) स्त्रीओना ( कुइअसद् वा ) कूजित शब्द एटले सभोग समये कोयल विगेरे पचीनी  
जेवा यता शब्दने अथवा ( रुइअसद् वा ) रतिकलहादिकर्मा यता रुदित शब्दने अथवा ( गीअसद् वा ) पचम विगेरे गीतना  
शब्दने अथवा ( हसिअसद् वा ) हसवाना शब्दने अथवा ( थणिअसद् वा ) रति समयमां थयेला मेयनी गर्जना जेवा  
शब्दने अथवा ( कदिअसद् वा ) पतिगा विरहने लीषे करेला आक्रदना शब्दने अथवा ( विलविअसद् वा ) भर्ताना  
गुणो समारी सभारीने करेला विलापना शब्दने ( सुणिचा ) सांभळनार जे होय ( से ) ते ( निग्गथे ) साधु ( नो  
इवइ ) न होय-न कहेवाय ( त कह ) ते वेधी रीते ? ( इति चे ) एम जो शिष्य शका करे तो ( आयरिआह ) आचार्य  
कहे छे—( खलु ) निग्गथे ( कुडुतरसि वा ) प्रथम कहेला बुद्ध्य विगेरेने अंतरे रहाने ( इत्थीण ) स्त्रीओना पूर्वे कहेला कूजित

विगेरे यावत् ( विलिखितसङ्घं वा ) विलापना शब्दने ( सुणमाणस्स ) सांभळता ( निगंथस्स ) साधुने ( बंभयारिस्स ) ब्रह्मचारी छतां पण ( बंभचेरे ) ब्रह्मचर्यने विपे ( संका वा ) शंका विगेरे दोषो उत्पन्न थाय, यावत् केवळीए प्ररूपेला धर्मथकी अष्ट थाय. ( तम्हा ) ते कारण माटे ( खलु ) निश्चे ( निगंथे ) साधु ( कुटुंतरंसि वा ) कुड्य विगेरेने आंतरे रहीने ( इत्थीणं ) सीओना कूजित विगेरे शब्दने यावत् विलापना शब्दने ( सुणमाणो ) सांभळतो थको ( नो विहेरजा ) न विचरे-न रहे. कारण के सीओना कामोदीपक शब्दने जे सांभळे ते साधु कहेवाय नहीं. आ पांचमुं समाधिस्थान कलुं. ५-८.

हवे छट्टु समाधिस्थान कहे छे.—

नो निगंथे इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलिअं अणुसरित्ता भवइ, तं कहमिति चे? आयरिआह-  
निगंथस्स खलु इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलिअं अणुसरेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा जाव धम्मआओ भंसिज्जा, तम्हा खलु नो निगंथे इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलिअं अणुसरेज्जा ॥ ६-९ ॥

अर्थ—( निगंथे ) साधु ( इत्थीणं ) सीओ संबंधी एटले सीओनी साथे ( पुव्वरयं ) पूर्वे एटले गृहस्थावस्थाने विपे जे रत एटले संभोग कर्यो होय तेने तथा ( पुव्वकीलिअं ) पूर्वे-गृहस्थावस्थाने विपे सीओ साथे जे द्यूतादिक क्रीडा करी होय तेने ( अणुसरित्ता ) स्मरण करनार ( नो भवइ ) न थाय अर्थात् जो ते स्मरण करे तो ते साधु न कहेनाय.

( त कह ) ते केषी रीते ? ( इति चे ) एम जो शिष्य शका करे तो ( आयरिआह ) आचार्य करे छे - ( खलु ) निधे ( इत्थीण ) स्त्रीओ सचधी ( पुंवरय ) पूर्वे रत कर्युं होय-काम सेवन कर्युं होय तेने तथा ( पुंवरकीलिथ ) पूर्वे काम क्रीडा फती होय तेने ( अणुसरेमणस्स ) स्मरण फरनार ( निग्गथस्स ) साधुने ( धमयारिस्स ) ब्रह्मचारी छर्ता पण ( धमचरे ) ब्रह्मचर्येने चिपे ( सका वा ) शका विगेरे दोपो थाय यावत् ( धम्मओ भसिज्जा ) धर्मथी अट थाय ( तम्हा खलु ) ते कारण माटे निधे ( निग्गथे ) साधु ( इत्थीण ) स्त्रीओ समधी ( पुंवरय ) पूर्वे करेला समोगने तथा ( पुंवर कीलिथ ) पूर्वे करेली घृतादिक क्रीडाने ( नो अणुसरज्जा ) स्मरण न करे आ छटु समाधिस्थान कखु ६-६

हवे सातसु समाधिस्थान कहे छे --

णो पणीअ आहारमाहारित्ता हवइ से निग्गथे, त कहमिति चे ? आयरिआह-निग्गथस्स खलु पणीअ पाणभोअण आहारमाणस्स धमयारिस्स धमचरे सका वा कखा वा जाव केअलिप णत्ताओ वा धम्मओ भसिज्जा, तम्हा खलु नो निग्गथे पणीअ आहारमाहरेज्जा ॥ ७-१० ॥

अर्थ--( पणीअ ) प्रणीत पटले जेमांधी धी विंगेरेना विंदु शरता होय तेवा ओ उपलक्षणधी शरीरना धातुओने पुट करे तेवा ( आहार ) आहारने ( आहारित्ता ) शहार करनार-भोजन करनार ( णो हवइ ) जे न होय ( से ) ते ( निग्गथे ) निग्रथ कहेवाय, शेष घननो अर्थ प्रसिद्ध छे आ सातसु समाधिस्थान कखु ७-१०

हवे आठमुं समाधिस्थान कहे छे—

नो अइमायाए पाणभोअणं आहारइत्ता हवइ से निगंथे, तं कहमिति चे ? आयरिआह—नि-  
गंथस्स खलु अइमायाए पाणभोअणं आहारेमाणस्स वंभचेरे संकावा कंखा वा जाव  
धम्मआओ भंसिज्जा, तस्सा खलु नो निगंथे अइमायाए पाणभोअणं भुजिज्जा ॥ ८-१३ ॥

अर्थ—( अइमायाए ) अतिमात्रा वडे एटले पुरुषनो आहार वत्रीश कवळ प्रमाण अने स्त्रीनो अट्टावीश कवळ प्रमा-  
ण कखो छे, तेथी अधिक प्रमाणवडे ( पाणभोअणं ) पान भोजनने ( आहारइत्ता ) आहार करनार ( नो हवइ ) जे न  
होय ( से ) ते ( निगंथे ) निर्ग्रथ कहेवाय छे. शेष सूत्रनो अर्थ प्रसिद्ध छे. आ आठमुं समाधिस्थान थयुं ८-११.

हवे नवमुं समाधिस्थान कहे छे,—

नो विभूसाणुवाई हवई से निगंथे, तं कहमिति चे ? आयरिआह—विभूसावत्तिए खलु वि-  
भूसियस्सरीरे इत्थिजणस्स अहिलसणिजे हवइ, तओ णं तस्स इत्थिजणेणं अभिलासिजमाणस्स  
वंभयारिस्स वंभचेरे संका वा कंखा वा जाव धम्मआओ भंसिज्जा, तस्सा खलु नो निगंथे विभूसा-  
णुवाई सिञ्जा ॥ ९-१२ ॥

अर्थ—( विभूसाणुवाई ) विभूसानुपाती एटले शरीरने साफ राखी शोभा करनार ( नो हवाई ) जे न होय ( से ) ते ( निर्गमये ) निर्ग्रय कहेवाय छे ( त कह ) ते एम केम ? ( इति चे ) एम जो शिल्प सका करे तो ( आयरिआह ) आचार्य महाराज कहे छे के—( विभूसावत्तिण ) विभूषा करवाना स्वभाववाळो ( खलु ) निधे ( विभूसिअसरीरे ) स्नानादिक वडे विभूषित कयुं छे शरीर जेणे एवो साधु ( इत्थिजणस्स ) स्त्रीजनने ( अहिलसण्णिजे ) अभिलाप करवा लायक एटले प्रार्थना करवा लायक ( हवाई ) थाय छे ( तओ ण ) तेथी करीने ( इत्थिनण्ण ) स्त्रीजने ( अभिलसिजमाणस्स ) अभिलाप कराता ( वभयारिस्स ) ब्रह्मचारी एवा ( तस्स ) तेना ( वभचेरे ) ब्रह्मचर्यने विपे ( सका वा ) सका थाय, अथवा ( वटा वा ) कांढा थाय, इत्यादि ( जाय ) यावत् ( धम्माओ भसिआ ) धर्मधी भ्रष्ट थाय, ( तग्हा ) ते कारण माटे ( खलु ) निधे ( निर्गमथे ) निर्ग्रय ( विभूसाणुवाई ) शरीरनी विभूषा करनार ( नो सिआ ) न थाय आ नवमु समाधिस्थान कहु ६-१०

हवे दशमु समाधिस्थान वहे छे —

नो सदरूवरसगधफासाणुवाई हवाई से निर्गमथे, त कहमिति चे ? आयरिआह—निर्गमथस्स खलु सदरूवरसगधफासाणुवाईस्स वभयारिस्स वभचेरे सका वा कला वा वित्तिगिच्छा वा समुत्पज्जिआ, भेअ वा लभेआ, उम्माद वा पाउणिआ, दीहवालिअ वा रोगायक हविआ, केवलि

पशुत्ताओ वा धम्माओ भंसिजा, तम्हा खलु नो निगंथे सदरूवरसगंधफासाणुवाई हवइ से निगंथे, दसमे बंभचेरसमाहिट्टाणे हवइ ॥ १०-१३ ॥

अर्थ—( सदरूवरसगंधफासाणुवाई ) शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श तेने अनुसरनार ( नो हवइ ) जे न होय ( से ) ते ( निगंथे ) निर्ग्रथ कहेवाय छे. अर्थात् हसतुं आवे तेवा शब्द, स्वीतुं स्वरूप, मधुरादिक रस, चंदनादिकनो गंध अने सुखकारक कोमल शरीरनो स्पर्श ए पांचे विषयोनो उपभोग करे नहीं. ( तं कंहं ) ते केवी रीते ? ( इति चे ) एम जो शिष्य शंका करे तो ( आयरिआह ) आचार्य कहे छे के—( खलु ) निश्चे ( सदरूवरसगंधफासाणुवाइस्स ) शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्शनो उपभोग करनार ( बंभयारिस्स ) ब्रह्मचारी एवा ( निगंधस्स ) निर्ग्रथने ( बंभचेरे ) ब्रह्मचर्यने विषे ( संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पजिजा ) शंका, के कांचा के विचिकित्सा उत्पन्न थवानो संभव छे. ( भेअ वा लभेजा ) अथवा चारित्रना विनाशने पामे. ( उम्मादं वा पाउण्णिजा ) अथवा उन्मादने पामे. ( दीहकालिअं वा रोगायकं हविजा ) अथवा दीर्घकाळ सुधी पहोचे तेवा ज्वरादिक रोगो अने तत्काळ मृत्यु करनारा शूळादिक आंतको तेने उत्पन्न थाय छे. ( केवल्लिपणत्ताओ वा धम्माओ भंसिजा ) अथवा केवली भगवाने प्ररूपेला धर्मथी अट थाय छे. ( तम्हा खलु : ते कारण माटे निश्चे ( निगंथे ) जे साधु ( सदरूवरसगंधफासाणुवाई ) शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्शने भोगव-नार ( नो हवइ ) न होय ( से ) ते ( निगंथे ) निर्ग्रथ कहेवाय छे. ( दसमे बंभचेरसमाहिट्टाणे हवइ ) आ दशसुं ब्रह्म-चर्यनुं समाधिस्थान कहुं. १०-१३.

भवति इत्थ सिलोगा, त जहा—

अर्थ—(इत्थ) अहीं एटले उपर कहेला विषय उपर (सिलोगा) श्लोको (भवति) छे (त जहा) ते आ प्रमाणे —  
ज विविक्तमणाईए, रहिअं थीजणेण ये । बभंचेरस्स रेखड्डा, आलय तु नित्सेवण ॥ १ ॥

अर्थ—(ज) जे उपाश्रय (त्रिविक्त) विविक्त एटले एकात्मं रहेलो होय अर्थात् स्त्री आदिकना रहेवासथी रहित होय, तथा जे (अण्डाण) अनाकीर्ण एटले काइ पण प्रयोननवडे ज्या स्त्री विगरे आवता न होय अथवा जे उपाश्रय गृहस्थीओना घरथी दूर होय, तथा (थीजणेण य) समय विना वदन श्रवणादिक निमित्ते जता आवता स्त्रीजनवडे अने च शब्द छे माटे पशु अने नपुंसकवडे (रहिअ) रहित होय तेवा (आलय तु) आलयने एटले उपाश्रयने साधु (वभंचेरस्स) ब्रह्मचर्यना (रेखड्डा) रचयने माटे (नित्सेवण) सेवे एटले तेवा उपाश्रयमां साधुए रहेयु योग्य छे ?

मैणपल्हायजणणि, कामरागविजड्डुणि । बभंचेरओ भिंस्खू, थीकह तु निर्वजण ॥ २ ॥

अर्थ—(वभंचेरस्सो) ब्रह्मचर्यने विषे रक्त-आसक्त एवो (भिंस्खू) साधु (मणपल्हायजणणि) चित्तने आद लाद उत्पन्न करतारी तथा (कामरागविजड्डुणि) कामरागने एटले विषयाभिलापने वधारनारी (थीकह तु) एवी स्त्री-कथाने (विजणए) वन-त्याग करे २



\*संसं च संर्थवं धीहिं, संकहं च अंभिक्खणं । वंभेचेरओ भिक्खू, निच्चसो धंरिवज्जए ॥ ३ ॥

अर्थ—(वंभेचेरओ भिक्खू) ब्रह्मचर्यने विषे रक्त एवो साधु (धीहिं) सीओनी (संसं च) साथे (संथं) संस्त-  
वने एटले एक आसन पर बेसीने परिचय करवो तेने (च) तथा (अभिक्खणं) चारंवार (संकहं) ते सीओनी साथे  
कथाने (निच्चसो) सर्वदा (परिवज्जए) वर्जे. ३.

अंगंपच्चंगसंठाणं, चारुत्थिअपेहिअं । वंभेचेरओ थोणं, चंत्तुगिज्झं विव्वज्जए ॥ ४ ॥

अर्थ—(वंभेचेरओ) ब्रह्मचर्यने विषे रक्त एवो साधु (धीणं) सीओ संघी (अंगंपच्चंगसंठाणं) मस्ततादिक  
अंगो अने स्तनादिक उपांगोना संस्थानने एटले आराने तथा (चारुत्थिअपेहिअं) मनोहर उद्घपित-वचन अने प्रेक्षित  
एटले षट्छपूर्वक जोतुं तेने (चंत्तुगिज्झं) चञ्चुए ग्रहण करुं सतुं एटले नेत्राडे जोयामां आगे तो तेने (विव्वज्जए)  
वर्जे. एटले के नेत्र होयाने लीधे रूपसुं जोतुं प्रवश्य याय ज छे. परंतु नजरे पडे के तरत त्यांथी दृष्टि खेची लेवी, पण  
रागना वशथी चारंवार तेनी सन्मुख जोया करतुं नहीं. कहुं छे के—

“अशक्यं रूपमद्रष्टुं, चञ्चुर्गीचरमागतम् । रागद्वेषौ तु यो तत्र, तौ गुधः परिजर्जयेत् ॥

“नेत्रना विषयमां आनेलुं रूप न जोतुं ए तो अशक्य छे, परंतु ते जोयामां जे राग के रूप थाय छे, तेनो पांडिते  
त्याग करवानो छे.” ४.

कुइअ रेइअ गीअ, हैसिअं थणिअकदिअं । वंभचेरओ थीण, सोअगिज्ज विवञ्जाए ॥ ५ ॥

अर्थ—( वभचेरओ ) ब्रह्मचर्यने विपे रक्त एवो साधु ( थीण ) स्त्री सयधी ( कुइअं ) कृत शब्दने, तथा ( रुइअ ) रुदितना शब्दने, तथा ( गीअं ) गीतना शब्दने, तथा ( हैसिअ ) हसवाना शब्दने, तथा ( थणिअ ) स्तनित शब्दने, तथा ( कदिअ ) कदित शब्दने ( सोअगिज्ज ) श्रोत्रवडे ग्रहण थाय-समळाय तो तेने ( विवञ्जाए ) वर्जे षहीं कृतित विगेरेओ अर्थे उपर आठमा वृत्तमा वखो छे ते ज जाणवो ५

हास किंठु रेइ दप्प, सँहसावत्तासिआणि अ । वंभचेरओ थ्रीण, नोणुचिंते कयाइवि ॥ ६ ॥

अर्थ—( वभचेरओ ) ब्रह्मचर्यमां रक्त एवो साधु ( थीण ) स्त्री सयधी पूर्वें करेला ( हास ) हास्यने ( किंठु ) घृतादिक क्रीडाने, ( रेइ ) स्त्रीना अगना सगधी उत्पन्न थयेली प्रीतिने, ( दप्प ) मानधी उत्पन्न थयेला गर्बने ( सहसावत्तासिआणि अ ) तथा सहसा एटले एकदम पाळळी आधीने पोताना हाथवडे स्त्रीनां नेत्रो टांकी दीधां होय ए विगेरे स्त्रीने त्रास पमाहनारी चेष्टाओने ( कयाइवि ) कदापि ( न अणुचिंते ) चित्तये नहीं-समारे नहीं ६

पैणिअ भँत्तपाण चँ, खिंप्प भँयविवड्डुण । वंभचेरओ भिर्वेखू, निर्द्धंसो पैरिवञ्जाए ॥ ७ ॥

अर्थ—( वभचेरओ ) ब्रह्मचर्यने विपे रक्त एवो ( गिरखू ) साधु ( थणिअ ) प्रस्थित एटले जेमांथी घृतादिक रस धरतो होय एया ( भत्तपाण ) भत्तने एटले आहारने तथा पानने एटले द्राच, एखुर अने साकर मिगेरेथी मिश्रित पाणीने

( च ) तथा ( खिप्यं ) शीघ्रपणे ( गयत्रिपट्टण ) हाप्तने वृद्धि पमाडनार नीजा कोइ पण पदार्थने ( निजसो ) निरंतर ( परिखण्ण ) बर्जे. ७.

धम्मलद्धं भिअं काले, जत्तत्थं पणिहाणवं । नाईमत्तं तु भुंजिज्जा, वंभचेरओ संया ॥ ८ ॥  
 अर्थ—( पणिहाणवं ) प्रणिधानान एटले चित्तनी स्वस्यताए करीने युक्त एवो साधु ( जत्तत्थं ) यादाने माटे एटले संयमना निर्वाहने माटे ज-परंतु रूपादिकने माटे नहीं तथा ( काले ) समये ( धम्मलद्धं ) धर्मना हेतुथी ज प्राप्त थयेलो परंतु कपटादिक करीने ग्रहण करेलो न होय तेवो तथा ( मिअं ) प्रमाणोपेत एवो ज आहार करे. ( तु ) परंतु ( वंभचेरओ ) ब्रह्मचर्यमां रक्त एवो साधु ( संया ) निरंतर ( अइमत्त ) अधिक प्रमाणवाळा आवागनुं ( न भुंजिज्जा ) भोजन करे नहीं. ८.  
 त्रिभूसं परित्रज्जिजा, सरिरपरिमंडणं । वंभचेरओ भिइस्सू, सिंगौरत्थं न धारए ॥ ९ ॥

अर्थ—( वंभचेरओ ) ब्रह्मचर्यने विपे रक्त एवो ( भिइस्सू ) साधु ( त्रिभूसं ) ब्रह्मादिकमाटे शरीरनी शोभाने ( परि-त्रज्जिजा ) बर्जे. तथा ( सिंगारत्थं ) शोभाने माटे ( सरिरपरिमंडणं ) नख केशादिकना संस्कार रूप शरीरना मंडनने-शोभाने ( न धारए ) धारण न करे. ९.

सेइ रेवे अ गंधे अ, रसे फासे तेहेव य । पंचविहे कामगुणे, निच्चसो परिवज्जए ॥ १० ॥  
 अर्थ—ब्रह्मचर्यमां रक्त एवो साधु ( रसे ) कर्णने सुए आपनारा शब्द, ( रेवे अ ) नेत्रने प्रीति उपजावनार रूप तथा ( गंधे अ ) नासिकाने गुशस्कारक गंध तथा ( रसे ) मधुरादिक रस ( तेहेव य ) तथा बळी ( फासे ) स्वचाने प्रीति

करनार स्पर्श ( पचनिहे ) ए पांच प्रकारना ( कामगुणे ) इच्छाकाम अने मदनकामने उपकार करनार होवार्थी कामगुणेने ( निचसो ) निरतर ( परिवर्जण ) वर्जे १०

प्रथम ब्रह्मार्पणा दरेक समाधिस्थानमां “ शमा वाय अथवा कांचा थाय ” इत्यादि क्यु ह्यु, तेने ज दृष्टांतवडे स्पष्ट करे छे —

आताओ थीजंगाइणो, थीकहा ये मणोरमा । सर्थओ चेत्रे नारीण, तौसि इदिअंदरिसण ॥ ११ ॥  
 कुइअ रुइअ गौअ, हंसिअ भुत्तासिआणि अ । पणिअ भत्तपाण च, अइमाय पाणभोअण ॥ १२ ॥  
 गौत्तभूसणमिट्टु च, कामभोगा ये टुज्जया । नरस्तत्तर्गवेसिस्त, विस तालउड जेहा ॥ १३ ॥

अर्थ—( थीजखाइणो ) स्त्रीजनवडे व्याप्त-सहित एवो ( आलओ ) उपाश्रय, ( य ) तथा ( मणोरमा ) मनने रमणीय लागे तेमी ( थीरुहा ) स्त्री सनधी कया अथवा स्त्रीनी साये कया करवी ते, ( चेत्र ) तथा निशे ( नारीण ) स्त्रीओनो ( सवओ ) सस्तन एटले तेमनी साथे एक आसनपर बेसी परिचय करवो ते, तथा ( तासि ) ते स्त्रीओनां ( इदियदरिमण ) नेर स्तन विगेरे इद्रियोने-अगोपांगने रागधी जोयां ते, तथा ते स्त्री सनधी पूर्वे करेलां ( रुइअ ) कूजित, ( रुइअ ) रुदित, ( गीअ ) गीत, ( हसिअ ) हास्य अने ( युत्तासिआणि अ ) स्त्री साये भोगनेलां [ भोगनां ] आसनो ए सर्वनु स्मरण करवु ते, तथा ( पणिअ ) प्रणीत एवु ( मत्तपाण च ) भक्त पान, तथा ( अइमाय पाणभोअण ) प्रमाणधी

अधिक पान भोजन लेबुं ते, तथा ( इहं च ) इष्ट एवं पण ( गत्तभूषणं ) गात्रभूषण एटले शरीरनी शोभा करवी ते, ( य ) तथा ( दुज्या ) दुःखे करीने जीती शकाय एवा ( कामभोगा ) काम एटले रूप अने शब्द तथा भोग एटले रस, गंध अने स्पर्श, आ रवे ( अत्तगवेसिस्स ) आत्मानी एटले ब्रह्मचर्यरूप जीवितनी गवेपणा करनार ( नरस्स ) पुरुषने तथा उपलक्षणथी ह्मीने पण ( तालउडं विसं जहा ) तालपुट विप समान छे, एटले के आ सर्वे ब्रह्मचर्यनो घात करनारा छे तेथी त्याग करवा योग्य छे. जेम तालपुट विप मुखमां नांखवाथी ताळवानो स्पर्श थाय के तरत ज ते मनुष्यना जीवितने हरे छे, तेम आ सर्वे पण सेव्याथका ब्रह्मचर्यरूपी जीवितने शंका कांलादिक दोषो उत्पन्न करीने तत्काळ हणो छे. ११-१२-१३.

हवे आ विपयने समाप्त करे छे.—

दुज्जए कामभोगे अं, निच्चसो परिवज्जए । संकट्टाणाणि संव्वाणि, वैज्जिजा पैणिहाणवं ॥ १४ ॥

अर्थ—( परिहाणवं ) प्रणिधानवान एटले चिचनी एकाम्रतावाळो साधु ( दुज्जए ) दुःखे करीने जीती शकाय एवा ( कामभोगे ) काम तथा भोगने ( निच्चसो ) निरंतर ( परिवज्जए ) वर्जे. ( अ ) तथा ( संव्वाणि ) सर्वे एटले दशे ( संकट्टाणाणि ) पूर्वे कहेलां शंकानां स्थानोने ( वैज्जिजा ) वर्जे. १४.

वळी तेने वर्जनारी शुं करे ? ते कहे छे.—

धम्मारामे चरे भिंसू, धितिम धम्मसारही । धम्मारासरए दते, वभंचेरसमाहिए ॥ १५ ॥

अर्थ—( धितिम ) धृतिमान एटले धैर्यवडे युक्त, तथा ( धम्मसारही ) धर्मसारथि एटले वीजाओने पण धर्ममार्गमा प्रवर्तवना, तथा ( धम्मारासरए ) धर्मने विषे सर्वथा रमण करना साधुओने विषे रक्त एटलेतेवा साधुओनी साथे रहेनार, तथा ( दते ) इद्रियोनु दमन करना, तथा ( वभंचेरसमाहिए ) ब्रह्मचर्यने विषे सावधान एवो ( भिंसू ) साधु ( धम्मा रामे ) धर्मरूप आराम-उद्यानने विषे ( चरे ) विचरे दु खना सतापथी तपेला प्राणीओने धर्म ज सुखना हेतुरूप छे, माटे अही धर्मने आराम जेवो कळो छे १५

हवे ब्रह्मचर्यनो महिमा बतावे छे—

‘देवदाणवगधव्वा, जेक्खरमखसकिन्नरा । वभयारि नमसति, दुक्कर जे करति ते ॥ १६ ॥

अर्थ—( दुक्कर ) दु ले करीने आचरी शकाय एवा ब्रह्मचर्यने ( जे ) जे ( करति ) करे छे-पाळे छे, ( ते ) ते ( वभयारि ) ब्रह्मचारी मुनिने ( देवदाणवगधव्वा ) देव, दानव, गार्घ्य, ( जयखरखसकिन्नरा ) यक्ष, राक्षस अने किन्नर तथा उपलक्षणथी सर्व जातिना देवो ( नमसति ) नमस्कार करे छे १६

हवे आ अध्ययनना अर्थने समाप्त करे छे—

इस धर्मसे ध्रुवे गिँतए, सासए जिणदेसिए ।

सिद्धा सिद्धिंति चाणिणं, सिद्धिंस्संति तेहविरे ति<sup>३\*</sup> वेमि ॥ १७ ॥

अर्थ—( जिणदेसिए ) जिनेश्वरे कहेलो ( एस ) आ ( धम्मे ) ब्रह्मचर्यरूप धर्म ( ध्रुवे ) ध्रुव छे, एटले परतीर्थि-  
कोए खंडन न करी शक्य तेवो होवाथी प्रमाणवडे प्रतिष्ठा पामेलो छे, तथा आ ब्रह्मचर्य धर्म ( णितए ) नित्य छे  
एटले त्रणे कालमां अविनश्वर छे, तथा ( सासए ) शाश्वतो छे एटले त्रणे कालमां फळ आपनार छे. अथवा आ त्रणे  
विशेषणोनो अर्थ एक ज करवो. ( च ) तथा ( अणेरणं ) आ ब्रह्मचर्यरूप धर्मवडे ( सिद्धा ) प्रतीत कालमां घणा-  
अनंत जीवो सिद्धिपदने पाम्या छे, तथा ( सिद्धंति ) वर्तमान काले पण महाविदेहमां घणा जीवो सिद्ध थाय छे अथवा  
आ अध्ययननी प्ररूपणा करवाना अवसरनी अपेक्षाए वर्तमान काले आ क्षेत्रमां पण सिद्ध थाय छे, ( तथा ) तथा ( अनरे )  
त्रीजा घणा जीवो ( सिद्धिंस्संति ) अनंत एवा आगामी कालमां सिद्धिपद पामशे. ( ति वेमि ) ए प्रमाणे हुं कहुं छुं.  
एटले हे जंतु ! जे प्रमाणे भगवान् वर्धमानस्वामी पासे में सांभळ्युं छे ते प्रमाणे हुं कहुं छुं एम सुधमस्सामए  
जंतुस्वामीने कहुं. १७.

॥ इति षोडशमध्ययनम् १६ ॥

## अथ पापश्रमणीय नामानु सत्तरसु अध्ययन १७

सोळमा अध्ययनमा ब्रह्मचर्यना समाधिस्थानो कक्षां, ते तो पापस्थानो वर्णवाधी ज पाळी शकाय छे, अने पापस्थानो सेववाधी पापश्रमण कहेवाय छे, तेधी पापश्रमणनु स्वरूप आ अध्ययनमा वतावु छे. आ सवधधी प्राप्त थयेला आ अध्ययननु प्रथम घर कहे छे

'जे' केइ उ पंढरईए निअठे, धम्म सुंणित्ता विंणओववणे ।

सुंदुल्लह लेहिउ बोहिलाभ, विंहरिज पेंच्छा य जैहासुह तु ॥ १ ॥

अर्थ—( जे केइ उ ) जे कोइ ( निअठे ) निर्ग्रथे प्रथम ( धम्म सुंणित्ता ) चारित्ररूप धर्मने सामळीने (विणश्रोववणे) ज्ञानादिक-विनयने पाम्या सता ( सुंदुल्लह ) अत्यंत दुर्लभ एवा ( बोहिलाभ ) जिनधर्मनी प्राप्तिरूप बोधिलाभने एटले समकितने ( लहिउ ) पाभीने ( पंढरईए ) प्रवज्या लीधी होय, अने ( पच्छा य ) पछीथी ( जहासुह तु ) जेम सुख उपजे तेम ज ( विहरिज ) विचरे एटले के प्रथम सिंहपणे प्रवज्या लह पछीथी शियाळनी जेम निद्रादिक प्रमादने यश यइ विचरे ?

तेवा प्रमादी साधुने गुरु विंगरे भणवानी प्रेरणा करे त्वारे ते शु बोले ? ते बतावे छे —



सिंजा देढा पाँउरणं मे अत्थि, उप्पज्जइ भोत्तुं तहेव पाँउं ।  
जाणामि "जं वेट्टइ आँउसो त्ति," किं नाम काहामि सुएणं भंते ॥ २ ॥

अर्थ—“ ( मे ) मारे ( देढा ) दृढ एटले वायु, आतप अने जलादिकना उपद्रव रहित ( सिंजा ) वसति-उपाश्रय अने ( पाउरणं ) शीत विगरेना उपद्रवनी नाश करनार प्रावरण-वस्त्रादिक पण ( अत्थि ) छे, ( तहेव ) तथा ( भोत्तुं ) खावा माटे अशन अने ( पाँउं ) पीवाने माटे पाणी पण ( उप्पज्जइ ) उत्पन्न थाय छे एटले मळे छे. तथा ( आउसो ) हे आशुष्यमान् गुरु ! ( जं ) जे वर्तमान काले ( वेट्टइ ) वर्ते छे, ते वधुं ( जाणामि ) हुं जाणुं छुं. ( त्ति ) तेथी करीने ( भंते ) हे भगवान् ! ( सुएण ) श्रुत भणवावडे करीने ( किं नाम ) शं ( काहामि ) करुं ? शामाटे प्रयास करुं ? ” अहीं ते प्रमादी शिष्यनो एवो अभिप्राय छे के—“ तमे पण श्रुतनो अभ्यास करो छो, ने तमे पण अतीत के भावी काँइ पण जाणता नथी, परंतु मात्र वर्तमान काले वर्तता पदार्थने ज जाणो छो, एटलुं तो अमे पण भय्या विना ज जाणीए छीए. तथा वसति, वस्त्र, अशन अने पाणी विगरे तमारी ज जेम अमे पण सुखे करीने पाणीए छीए. तो हृदय, कंठ अने ताळ-वाने शोषण करनारा अभ्यासवडे शं फळ छे ? ” आ प्रमाणे जे बोले ते पापश्रमण कहेवाय छे. एवो पछीनी गाथानो संबंध अहीं पण सिंहावलोकनना न्यायथी जाणवो. २.

‘जं केँइ पैठवईए, निँदासीले पैगामसो । भोच्चा पैच्चा सुहं सुँअइ, पाँवसमणे त्ति तुँच्चई ॥ ३ ॥

अर्थ—( जे केई ) जे कोइ ( पचईए ) प्रग्रज्या लीघेलो साधु ( निहासल्ले ) निद्रा लेवाना स्वभाववाळो होय अने ( पगामसो ) अत्यंत ( मोक्षा ) दर्हीं मात विगेरेनो आहार करी तथा ( पेक्षा ) तक्रादिकसु पान करी ( सुह ) सुखे करीने ( सुअइ ) कांइ पण क्रियानी अपेक्षा रहित यद्दने सुखे छे, ते ( पावसमणे सि ) पापश्रमण छे एम ( चुचई ) कहेवाय छे ३  
 आयरिअउवज्झापहिं, सुअ विर्येय चं गाहए । ते चैव खिमेईं व्वाल्ले, पांवसमणे सि बुच्चई ॥ ४ ॥

अर्थ—( आयरिअउवज्झापहिं ) जे आचार्य के उपाध्याये ( सुअ ) श्रुत एटले आगम ( च ) अने ( विखय ) विनय ( गाहए ) ग्रहण कराव्यो होय एटले शीसव्यो होय ( ते चैव ) तेमनी ज ( वाल्ले ) जे विवेक रहित वाळक ( खिसई ) खिसा-निंदा करे छे, ते ( पावसमणे सि ) पापश्रमण छे एम ( चुचई ) कहेवाय छे. ४

आयरिअउवज्झायाण, सम्म नो परितप्पई । अप्पडिपूअए थंद्धे, पांवसमणे सि बुच्चई ॥ ५ ॥

अर्थ—जे साधु ( आयरिअउवज्झायाण ) आचार्य के उपाध्यायनी ( सम्म ) सम्यक् प्रकारे ( नो परितप्पई ) वैया वध विगेरेनी चिंता न करे, तथा जे साधु ( अप्पडिपूअए ) अप्रतिपूजक एटले जिनेंद्रादिकनी यथायोग्य [ भाव ] पूजा करवामां विमुख होय, अथवा कोइ सुनिए उपकार कर्णो होय तोपण तेनो प्रत्युपकार करवायी विमुख होय, तथा जे साधु ( थंद्धे ) स्तन्य एटले गर्विष्ठ होय, ते ( पावसमणे सि बुच्चई ) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे ५

आ रीते विनय रहितने पापश्रमण कसो हवे चारिउ रहितने पापश्रमण कहे छे —

संस्मदसमणे पांणाणि, बीआणि हरिआणि अँ । असंजए संजयमन्नमाणे, पाँवसमणे त्ति बुँच्चई ॥ ६ ॥  
अर्थ—( पाणाणि ) द्वीन्द्रियादिक प्राणीओनुं, तथा ( बीआणि ) शाल्यादिक बीजोनुं ( अ ) तथा ( हरिआणि ) धरो विगेरे तृण-वनस्पतिनुं तथा उपलक्षणीथी सर्व एकेन्द्रियोनुं ( संमदमाणे ) मर्देन करतो अने तेथी करीने ( असंजए ) संयम-चारित्र रहित एवो छतां पण जे ( संजयमन्नमाणे ) पोताने 'हुं साधु छुं' एम मानतो होथ, ते ( पावसमणे त्ति बुँच्चई ) पाप-श्रमण छे एम कहेवाय छे. आवो साधु संविग्न पाक्षिक पण कहेवातो नथी. ६.

संथारं फँलगं पीढं, निसिँजं पाँयंकवलं । अप्पमज्जिअ आरुँहइ, पाँवसमणे त्ति बुँच्चई ॥ ७ ॥

अर्थ—जे साधु ( संथारं ) कंचलादिक संथाराने, ( फलगं ) काष्ठमय पाटपाटलाने, ( पीढं ) पीठने एटले आसनने, ( निसिँजं ) निपद्याने एटले स्वाध्याय भूमिने तथा ( पायंकवलं ) पादकंबल एटले पादप्रौछनने ( अप्पमज्जिअ ) प्रमार्जन कर्या विना तथा उपलक्षणीथी पडिलेहण कर्या विना ( आरुँहइ ) ते पर आरूढ थाय एटले ते वस्तुओने वापरे, तो ते ( पावसमणे त्ति बुँच्चई ) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. ७.

दँवदवस्स चरई, पँमत्ते अँ अँभिवखणं । उँह्वघणे अँ चँडे अँ, पाँवसमणे त्ति बुँच्चई ॥ ८ ॥

अर्थ—आहारदिकने माटे ज्यारे जाय त्यारे जे साधु ( दवदवस्स ) शीघ्र एटले पृथ्वीपर धवधव करतो ( चरई ) चाले एटले इर्यासमितिने साचवे नहीं, ( अ ) तथा जे ( मभिवखणं ) वारंवार ( पमत्ते ) प्रमादी थाय एटले

पांच समिति रहित थाय, ( अ ) तथा जे ( उल्लघणे ) अज्ञानीओने उल्लपन करे एटले तेमनो तिरस्कार करे, अथवा हास्यादिक अविनय करनारा बाळकोन बीवडाची पोताना आचारतु उल्लघन करे, ( अ ) तथा जे ( चडे ) मनमां क्रोधवडे धमघमतो रहे, ते ( पावसमणे ति बुचई ) पापथ्रमण छे एम कहेवाय छे ८

पंडिलेहेइ पंमत्ते, अवंउज्झइ पायकवल । पंडिलेहणाअणाउत्ते, पांवसमणे ति बुचई ॥ ९ ॥

अर्थ—वस्त्र पात्रादिक पोताना उपकरणे जे साधु ( पमत्ते ) प्रमादी सतो ( पंडिलेहेइ ) पंडिलेहे एटले चित्त विना तेनी प्रतिलेएना करे, तथा जे साधु ( पायकवल ) पादत्रोछनने अथवा पात्र अने कवलने ( अवंउज्झइ ) ज्यां त्यां तजे एटले प्रमार्जन अने प्रतिलेएन कर्मा रिगाना स्थानमां मूके अर्धी पात्र अने कवलना ग्रहणवडे सर्वे उपधितु ग्रहण करी लेतु तथा जे साधु ( पंडिलेहणाअणाउत्ते ) पोतानी सर्वे उपधिनी पंडिलेहणने विषे अनायुक्त एटले आळसु-उपयोग रहित होय, ते ( पावसमणे ति बुचई ) पापथ्रमण छे एम कहेवाय छे ९

पंडिलेहेइ पंमत्ते, जे किंचि हु णिसामिआ । ँगुरुपरिभावए निंच, पांवसमणे ति बुचई ॥१०॥

अर्थ—( पमत्ते ) प्रमादी एवो जे साधु ( जे किंचि हु ) जे कांइ विकथादिकने ( णिसामिआ ) सांभळीने एटले सांभळतो सांभळतो ( पंडिलेहेइ ) पंडिलेहणा करे, एटले पंडिलेहण करती वलते जो कोइ वात करतु होय तो तेमां चित्त राखे, पण

\* “ गुरु परिभवई ” इति प्रत्य तर पाठ

पडिलेहणमां चित्त राखे नहीं. तथा ( निचं ) निरंतर ( गुरुपरिभावए ) गुरुनो पराभव करनार होय अथवा ( गुरुं परि-  
भवई ) गुरुनो पराभव करे, एटले के दोषयुक्त पडिलेहणादिक करता तेने जोइ गुरुमहाराज तेने शिचा आपे त्यारे ते  
सासुं बोले के—“ त्यारे तमे ज करो. ” अथवा “ तमे ज अमने आवी रीते शीखवुं छे, तेथी ते तमारो ज दोष छे. ”  
एवो जवाब आपे, ते ( पावसमणे ति बुच्चई ) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १०.

**बहुमाई पैमुहरी, थैछे लुंछे अँणिगहे । असंविभागी अँचिअत्ते, पाँवसमणे ति बुच्चई ॥ ११ ॥**

अर्थ—तथा जे साधु ( बहुमाई ) घणो माया-कपटवाळो होय, तथा जे ( पमुहरी ) वाचाळ होय तथा ( थैछे )  
गविष्ठ होय, तथा ( लुंछे ) लोभी होय, तथा ( अँणिगहे ) मन तथा इंद्रियोने वश राखनार न होय-तेने वश होय तथा  
( असंविभागी ) गुरु, ग्लान विगेरेनो संविभाग करनार न होय, तथा जे ( अचिअत्ते ) गुर्वादिकने विषे प्रीतिवाळो न होय,  
ते ( पावसमणे ति बुच्चई ) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. ११.

**विवायं च उदीरेइ, अँधम्मे अँत्तपसुहा । वुँगहे कँलहे रँत्ते, पाँवसमणे ति बुच्चई ॥ १२ ॥**

अर्थ—( च ) तथा जे ( विवायं ) विवादने एटले वाणीना कलहने ( उदीरेइ ) उदीरणा करे एटले सामो माणस  
शांत होय तोपण तेना मर्मने प्रगट करी कलहनी वृद्धि करे, तथा जे ( अँधम्मे ) अंधमी एटले असदाचारमां रक्त होय,  
तथा जे ( अत्तपसुहा ) आसप्रज्ञाहा—आस एटले सद्बोध करनार होवाथी आलोक अने परलोकने विषे हितकारक एवी

प्रज्ञाने एटले स्वपरनी सवुद्धिने कुतर्कवडे हणनार होय अर्थात् तस्वबुद्धिने हणनार होय, तथा जे ( बुग्गहे ) व्युद्ग्रहने निपे एटले दडादिक युद्धने विप रक्त होय तथा जे ( कलहे ) वाणी सवधी न्नेशने विपे ( रत्ते ) रक्त होय, ते ( पावसमणे चि बुर्चई ) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे १२

अथिरासणे कुकुइए, जंत्य तत्य निर्सीअई । अंसणम्मि अंणाउत्ते, पाँवसमणे त्ति बुर्चई ॥ १३ ॥

अर्थ—तथा जे साधु ( अथिरासणे ) आसनपर स्थिर रहे नहीं, तथा जे ( कुक्कुइए ) हास्य विकथादिक करी भांडनी जेवी चेष्टा करे, तथा जे ( जंत्य तत्य ) ज्यां त्यां सचिच पृथ्व्यादिक उपर ( निर्सीअई ) बेसे, तथा जे ( आसणम्मि ) आसनने विपे ( अणाउत्ते ) उपयोगवालो न होय, ते ( पावसमणे छे एम कहेवाय छे १३

संसरमखपाओ सुंअइ, सिंज नें पंडिलेहइ । संथारए अंणाउत्ते, पाँवसमणे त्ति बुर्चई ॥ १४ ॥

अर्थ—तथा जे ( संसरमखपाओ ) सरजस्कपाद एटले धूळथी खरडायेला पगवालो ज—पगनी प्रमार्जना कर्या विना ज ( सुअइ ) सथारामां शयन करे, तथा जे ( सिज ) शय्याने एटले वसति-उपाश्रयने ( न पडिलेहइ ) सम्यक् प्रकारे न पडिलेहे, तथा जे ( सथारए ) कबलादिक सथारामां सुतो सतो ( अणाउत्ते ) अनायुक्त होय एटले “ कुकुडिपायपसारण ” “ बुकडीनी जेम पग उचो राखी सुनु ” इत्यादि आगमना अर्थनो उपयोग न राते अथवा पोरसी भणाव्या विना अविधिए शयन करे, ते ( पावसमणे चि बुर्चई ) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे १४

हवे तपना विषयमां पापश्रमण केवा होय ? ते कहे छे.—

दुष्टरही विंगईओ, आँहारेइ अँभिवखणं । अँरण् अँ तँवोकम्मे, पार्वसमणे त्ति वुच्चई ॥ १५ ॥

अर्थ—तथा जे (दुष्टदही) दूध,दहीं अने उपलक्षणथी बीजी पण (विगईओ)विकार करनार होयाथी विकृतिओने (अभिवखणं) वारंवार कारण विना पण (आहारेइ) आहार करे-खाय (अ) अने तेथी करीने ज (तवोकम्मे) अनशनादिक तपक्रियाने विषे (अरण्) प्रीतिवाळो न होय-आसक्त न होय, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १५.

अँत्थंतम्मि अँ सूँरम्मि, आँहारेइ अँभिवखणं । चौइओ पँडिचोएइ, पँवसमणे त्ति वुच्चई ॥ १६ ॥

अर्थ—(अ) तथा जे साधु (सूरम्मि) सूर्य (अत्थंतम्मि) अस्त पामे सते-अस्त समय लगभग (अभिवखणं) वारंवार (आहारेइ) आहार करे, तथा (चौइओ) जो कोइ गीतार्थ गुर्वादिक तेने प्रेरणा करे के-“हे आयुष्मान् ! केम आ प्रमाणे केवल आहारमांज तत्पर रहो छो ? फरीथी आवी धर्मसामग्री मळवी दुर्लभ छे, माटे आवी सामग्री पामीने तो तपमां उद्यम करवो योग्य छे.” आ प्रमाणे प्रेरणा कर्थो सतो (पडिचोएइ) सामी प्रेरणा करे-सासुं बोले के-“तमे उपदेश आपवामांज डाहा छो, परंतु पोते तो करता नथी, नहीं तो आबुं जाणता छतां तमे केम उत्कृष्ट तप करता नथी ?” आ प्रमाणे सामो जवाब आपे, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १६.

आँयरिअपरिच्चाई, पँरपासंडसेवए । गँणंगणिए दुँब्भूए, पँवसमणे त्ति वुच्चई ॥ १७ ॥

अर्थ—तथा ने ( आयरिअपरिचार्ड ) आगर्पनो त्याग करनार होय, एटले “ आ गुरु तो तप ज कराये छे अने रुई सारो आहार आययो होय तो ते पण ग्लानादिक साधुओने अपाधी दे छे. ” आ प्रमाणे विचारी आहारपरनी अति लोउपताने लीधे आगर्पनो त्याग करे छे, तथा ( परपासडसेवए ) पर पाखडीओनी सेवा करे छे एटले निरतर आहा रमा न आसक रहेनारा पौद्धादिकनो सेवक थाय छे, तथा जे ( गाणगणिए ) गाणगणिक-छ मासनी अदर ज एक गच्छर्माधी बीना गच्छर्मां जाय छे, अने तेधी करीने ज ( दुग्धूए ) दुग्धूत-दुराचारे करीने निदाने पात्र धयो होय छे ते ( पावसमणे ति चुर्चई ) पापश्रमण छे एम कहेबाय छे १७

संय गेहं धरिच्चज्ज, परगेहसि धावरे । निमित्तेण थं धवहरइ, पावसमणे ति चुर्चई ॥ १८ ॥

अर्थ—तथा जे साधु ( संय गेह ) दीक्षा समये पोताना घरनो ( परिच्चज्ज ) त्याग करीने पछी ( परगेहसि ) आहा रादिकना लोभधी चीनाना-गृहस्थीओना घरने विषे ( धावरे ) व्यापार करे-तेना घरना कामकाज करे, ( य ) तथा ( निभिचेण ) शुभाशुभ निमित्तशास्त्र कहेबावडे ( धवहरइ ) व्यवहार करे-द्रव्य उपार्जन करे, ते ( पावसमणे ति चुर्चई ) पापश्रमण छे एम कहेबाय छे. १८

संण्डिपिंड जेमेइ, नेच्छई सामुदाणिश्र । गिंहिनिसिज्ज चं वाहेइ, पावसमणे ति, चुर्चई ॥ १९ ॥

अर्थ—तथा जे ( संण्डिपिंड ) धधु विगरे पोताना सबधीओओ प्रीतिधी आपेला पिंडने-आहारने ( जेमेइ ) जमे, तथा



( सामुदायिञ्चं ) घर घरथी आयेली सामुदायिक भिन्नाने ( नेच्छइ ) इच्छे नहीं, ( च ) तथा ( गिहिनिसिञ्जं ) गृहस्थीना पलंग विगेरे आसनपर ( वाहेइ ) सुखशीळीयापण्याथी वेसे, ते ( पावसमणे चि बुच्चई ) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे, १६.  
हवे आ अध्ययननो उपसंहार करतां उपर कहेला दोषने सेववाथी अने त्याग करवाथी जे फळ थाय छे ते वतावे छे.—

एआरिसे पंचकुसीलसंबुडे, रूबंधरे मुण्णिववराण हिट्टिमे ।

अयंसि लोए विसमेव गरहिए, ने<sup>२२</sup> से इहं नेव<sup>२३</sup> परत्थलोए ॥ २० ॥

अर्थ— ( एआरिसे ) आवा प्रकारनो ( पंचकुसीलसंबुडे ) ओसनो, पासत्थो, कुशीळीयो, संसत्तो अने महाच्छंदो ए पांच प्रकारना कुशीळीयानी जेवा असंवृत एटले संवर रहित—अजितेंद्रिय, तथा ( रूबंधरे ) साधुना रूपने—वेपने धारण करनार तथा ( मुण्णिववराण ) उत्तम मुनिओनी ( हिट्टिमे ) नीचे वर्तनार एटले अत्यंत जघन्य एवा संयमस्थानने विपे रहेला, तथा ( अयंसि लोए ) आलोकने विपे ( विसमेव ) विपनी जेम ( गरहिए ) गर्हा करवा लायक एटले विपनी जेम निंद्य होवाथी त्याग करवा लायक छे, ( से ) तेवा साधु ( इहं ) आलोकने विपे सामान्य जनोए पण ( न ) वखाणवा लायक नथी, अने ( परत्थलोए ) परलोकने विषे पण ( नेव ) वखाणवा लायक नथी. २०.

जो वैज्जए एए सैया उ दौसे, से सुव्वए होइ मुणीण मज्जे ।

अयंसि लोए अमयं व पूइए, आराहए लोर्गमिणं तहाँ परं ति<sup>२०</sup> वेमि ॥ २१ ॥

अर्थ—(जो) जे साधु (सया उ) सदैव-हमेशां ( एए ) आ पूर्वे कहेला ( दोसि ) दोपोने ( वजए ) वर्जे छे, ( से ) ते ( मृणीण मज्जे ) मुनिओ मध्ये ( सुब्बए ) सुव्रत एटले वसणवा लापक व्रतवाळा ( होई ) होय छे एटले वसणाय छे. तथा ते ( अयसि लोए ) आ लोकने विषे ( अमय व ) अमृतनी जेम ( पूर्ईए ) लोकोए पूजित एया छला ( इण ) आलोक ( तथा ) तथा ( परं लोग ) परलोकने ( आराहए ) आराधे छे-साधे छे. ( चि वेमि ) ए प्रमाणे इ कहु छु. २१.

इति सप्तदशमध्ययनम्. १७

## अथ सयतीय नामनु अठारसु अध्ययन. १८

सत्तरमा अध्ययनमा पापस्थानको वर्जवानु कहु, ते वर्जवु सचय राजानी जेम भोग-समृद्धिनो त्याग करवाथी याय छे ए सवथपी प्राप्त थयेला आ अठारमा अध्ययननु प्रथम वृत्त कहे छे—

कंपिछे नैयरे रैया, उदिणवलवाहणे । नामेण सर्जए नाम, निर्गठव उेवनिगए ॥ १ ॥

अर्थ—( कपिछे ) कापीन्य नामना ( नयरे ) नगरमां ( उदिणवलवाहणे ) वळ एटले चतुरग सैन्य अने शिविका विनेरे वाहन जेना उदय पामेला छे एटले पुग्ळ छे एवो ( राया ) राजा ( सचए ) सजय ( नामेण ) नामे ( नाम ) प्रसिद्ध हतो, ते एकदा ( मिगव ) मृगया करवा माटे ( उवनिगए ) नगरमांथी बहार नीकव्यो ?

ते राजा केवी रीते नीकळ्यो ? अने तेणे शुं क्युं ? ते कहे छे.--

हैयाणीए गैयाणीए, रैहाणीए तेहेव य । पायत्ताणीए मंहया, संवओ परिवारिए ॥ २ ॥

अर्थ—ते राजा ( महया ) मोटा ( हयाणीए ) अश्वना सैन्यमडे ( गयाणीए ) हाथीना सैन्यमडे ( रहाणीए ) रथना सैन्यमडे ( तेहेव य ) तथा चळी ( पायत्ताणीए ) पदातिना सैन्यमडे ( संवओ ) चोतरफथी ( परिवारिए ) परिवारेलो नगर बहार नीकळ्यो. २.

मिंए छुभिन्ता हैयगओ, कंपिल्लुजाणकेसरे । भींए संते मिंए तंत्य, वंहेइ रंसमुच्छिए ॥ ३ ॥

अर्थ—( रसमुच्छिए ) मांसना रसमां लुब्ध ययेलो ते राजा ( हैयगओ ) अश्वपर आरूढ थयो थको ( कंपिल्लुजाणकेसरे ) कांपील्य नगरना केसर नामना उद्यानमां रहेला ( मिंए ) मृगोने ( छुभिन्ता ) प्रेरणा करीने एटले ते मृगोनी पाळळ पोतानो अश्व दोडावीने ( तंत्य ) त्यां ( भींए ) भय पासेला एटले त्रास पासेला अने ( संते ) श्राव थयेला एटले ग्लानि पापेला ( मिंए ) ते मृगोने ( वंहेइ ) हणतो हयो. ३.

ते वखते त्यां शुं थयुं ? ते कहे छे.--

अह केसरम्मि उजाणे, अणगारे तेवोधणे । संज्जायज्जाणसंजुत्ते, धम्मज्जाणं द्विंयायइ ॥ ४ ॥

अर्थ—( अह ) ते वखते ( केसरम्मि ) ते केसर नामना ( उजाणे ) उद्यानमां ( संज्जायज्जाणसंजुत्ते ) स्वाध्याय

ध्यानमां तत्पर थयेला अने ( तपोधणे ) तपरुषी धननाळा ( अणगारे ) एरु अणगार-धुनि ( धम्मज्जाणं ) धर्मध्यानने ( शिष्याएइ ) ध्याये छे-ध्यान करता हवा ४

अरुफोनमडगसि, झायइ इविआसवे । तस्सागए मिंए पास, वंहेइ से नेराहिवे ॥ ५ ॥

अर्थ—( झविआसने ) छय कर्पां छे हिंसादिक आश्रयो जेणे एवा ते धुनि ( अफ्फोवमडवसि ) अफोव एटले वृवा दिरुवडे ब्यास एवा नागवल्ली विगेरेना मडपने विपे ( झायइ ) धर्मध्यान करता हवा ( तस्म ) ते धुनिनी ( पास ) पासे ( आगए ) आनीने रहेला ( मिए ) मृगोने ( से ) ते ( नेराहिवे ) राजा ( वंहेइ ) हयतो हतो ५

अह आसगओ रॉया, विंप्पमंगम्म सो तेहि । हेए मिंए उ पासित्ता, अणगार तंत्य पौसई ॥६॥

अर्थ—( अह ) त्पारपत्री ( आसगओ ) अश्वपर चढेलो ( सो ) ते सत्रय नामनो ( राया ) राजा ( विणं ) यीध-पणे ( तदि ) ते लवामडवर्मा ( आगम्म ) आनीने ( हए ) हयेला ( मिए उ ) मृगोने ( पासित्ता ) जोरने ( तत्य ) त्यां रहेला ( अणगार ) एरु धुनिने पण ( पासई ) जोतो हवो ६.

ते वएते ते राजाए शु रुं ? ते कने छे —

अह रॉया तंत्य सभनो, अणेगारो मंणाहओ । मंए उ मर्दपुणेण, रंसगिद्वेण धण्णुणा ॥ ७ ॥

अर्थ—( अह ) हवे ( तत्य ) ते धुनिने जोमाधी ( सभनो ) मयांत थयेलो एटले मय पामेलो ( राया ) राजा विचार

करवा लाण्यो के—( रसगिद्धेण ) मांसना रसमां लुब्ध थयेला अने ( घण्णुणा ) घात-हिंसा करवाना स्वभाववाळा ( मए उ ) में ( मंदपुषेणं ) मंद पुण्यवाळाए-पापीए ( अणगारो ) आ मुनि ( मणाहओ ) मनाक् अहतः—जराक न हएया, एटले हमणांज माराथी तेओ हणाइ जात. कारण के तेनी पासे ज रहेलो आ मृग हणायो छे, तेथी आ मुनिने हणायामां जराक ज छेडूं रही गयुं छे. ७.

आसं विसज्जइत्ता णं, अणगारस्स सो निवो । विणएणं वंदए पाए, भगवं एत्थ<sup>१३</sup> मे खेमे ॥८॥

अर्थ—एग विचार करीने पछी ( आसं ) अश्वने ( विसज्जइत्ता णं ) तजीने एटले अश्वपरथी नीचे उतरनीने ( सो निवो ) ते राजाए ( विणएणं ) विनयवडे ( अणगारस्स ) ते मुनिना ( पाए ) पादने ( वंदए ) वंदना करी अने कछुं के ( भगवं ) हे भगवान ! ( एत्थ ) आ मृगना वधने विपे ( मे ) मने एटले मारा अपराधने ( खेमे ) आप क्षमा करो. ८.  
अह मोणेणं सो भयवं, अणगारो ज्ञाणमस्सिओ । रायाणं न पंडिमंतेइ, तंओ राया भयहुओ ॥९॥

अर्थ—( अह ) त्यारपछी एटले राजाए मुनिने वंदना कर्या पछी ( मोणेण ) मौनवडे करीने ( ज्ञाणमस्सिओ ) धर्मध्यानने आश्रित थयेला ( सो ) ते ( भयवं ) ज्ञानना अतिशयवाळा भगवान ( अणगारो ) मुनिए ( रायाणं ) राजाने ( न पंडिमंतेइ ) कांइ पण प्रत्युत्तर आप्यो नहीं, ( तओ ) तेथी करीने ( राया ) राजा ( भयहुओ ) भयद्रुत एटले अत्यंत भयभीत थयो. ९.

एटले फरीथी राजा आ प्रमाणे बोळ्यो —

सजओ अहमस्सीति, भयव वाहराहि मे । कुद्धो तेषण अणगारे, दहिज्ज नरकोडिओ ॥ १० ॥

अर्थ—( भयव ) हे भगवान ! ( अह ) हु ( सजओ ) सजय नामनो राजा ( अस्सि ) हु, कोइ नीच जातिनो मनुष्य नथी, ( इति ) ए कारण माटे ( मे ) मारी साथे ( वाहराहि ) तमे बोळो कारण के ( कुद्धो ) क्रोध पामेला ( अणगारे ) मुनि ( तेषण ) तेजवडे एटले पोतानी तेजोलेश्यावडे ( नरकोडिओ ) करोडो मनुष्योने ( दहिज्ज ) वाळी शके छे तेथी हु भयमीत थयो छु १०.

आ प्रमाणे राचाए कहु, त्वारे मुनि ध्यानथी निवृत्त थइने बोळ्या के —

अभओ परिथवा तुब्भ, अभयदाया भेवाहिअ । अणिच्चे जीवलोगग्ग्मि, किं हिंसाए पंसज्जसि ? ॥११॥

अर्थ—( परिथवा ) “ हे राजा ! ( तुब्भ ) तने ( अभओ ) अभय छे ” अर्थात् तने कोइ वाळतु नथी आ प्रमाणे राजाने धीरज आपीने पछी मुनि तेने उपदेश आपे छे के—“ हे राजा ! ( अभयदाया ) तु अभयदान आप नार ( भवाहिअ ) था नेम तने मृत्युनो भय लागे छे तेम सर्व प्राणीओने मृत्युनो भय होय छे, तेथी ( अणिच्चे ) आ अनित्य एवा ( जीवलोगग्ग्मि ) जीवलोकने विचे ( हिंसाए ) प्राणीओनी हिंसा करवामा तु ( किं ) केम ( पंसज्जसि ) आसक्त थाय छे ? आ हिंसा नरकनो हेतु होवाथी करवा योग्य नथी ११

जया सवत्रं पैरिच्चज, गंतव्यमर्थसस्स 'ते । अनिच्चै जीवलोगस्मि, 'किं रेज्जस्मि पैसज्जसि ? ॥१२॥  
 अर्थ—( जया ) ज्यारे ( सवत्रं ) सजानो, अंतःपुर विगरे सर्मानो ( परिचज्ज ) न्याग करीने ( अयमस्स ) अयरा  
 एटले परार्थीन एवा ( ते ) तारे प्रवश्य ( गंतव्यं ) परमममां गनानुं ज छे, तो ( अनिच्चै ) आ अनित्य एवा ( जीवलोगस्मि )  
 जीवलोकने विपे ( रज्जस्मि ) राज्य उपर ( किं ) केम तुं ( पसज्जामि ) आसक्त थाय छे ? १२.

वकी संसारनी अनित्यताने ज वताने छे.—

'जीविअं चैव रूत्रं च, विज्जुसंपायचंचलं । जत्थ तं मुज्झसी रायं, पेच्चैत्थं नावबुद्धसे ॥ १३ ॥  
 अर्थ—( राय ) हे राजा ! ( जत्थ ) जे जीवित अने रूपने विपे ( तं ) तुं ( मुज्झसी ) मोह पाये छे, ते ( जीविअं  
 चैव ) जीवित-आयुष्य अने ( रूत्रं च ) रूप एटले शरीरनुं मूर्धर्य ( विज्जुसंपायचंचलं ) वीजकीना चमत्कारा जेवुं चंचल  
 छे, तथा तुं ( पेच्चैत्थं ) परलोकना रूपने ( नावबुद्धसे ) जाणतो नयो. १३.

द्वाराणि अ सुआ चैव, मिता य त्थ वंधेवा । जीवंतमणुं जीवंति, मयं नाणुच्चयंति अ ॥ १४ ॥

अर्थ—हे राजा ! ( द्वाराणि य ) स्त्रीओ, तथा ( गुआ नेव ) पुतो, तथा ( मिता य ) भिओ, ( त्थ ) तथा ( वंधेवा )  
 वंधु विगरे जातिजनो ए सर्वे ( जीवंतं ) जीवतानी ( अणुजीवति ) पाच्छ जीपे छे एटले जीवता एवा धनवाननी पाच्छ  
 पोताना उदरनिर्माहने करे छे-तेनुं धन तेओ भोगये छे, परंतु ( मयं ) ने पुष्प ज्यारे मरी जाय छे त्यारे ( नाणुच-

यति अ) तेनी पाछळ मरता नधी-चता नधी, तो सहायभूत तो क्याथी ज थाय, माटे तेरा कृतातीश्रोने निणे आदर करतो योग्य १धी १४

निहंरति मैथ पुत्ता, पिअर पैरमटुमिलआ । पिअरोऽवि तंहा पुत्ते, वधूं रांय तंव चरे ॥ १५ ॥

अर्थ—( पुत्ता ) पुत्रो ( परमटुमिलआ ) अत्यंत दु खी यया छता पण ( मय ) मरी गयेला ( पिअर ) पिताने ( निहंरति ) पर वहार काढ छ, ( तंहा ) तथा ( पिअरोऽवि ) पिताश्रो पण ( पुत्ते ) मरी गयेला पुत्रोने घर वहार काढे छे, तथा ( वधू ) वधुओ पण मरी गयेला वधुओने घर वहार काढे छे-घरमां रागता नधी तेथी करीने ( राय ) हे राजा । तु ( तय ) तपतु ( चरे ) आरण कर-सेवन कर १५

'तंजो तेणऽज्जेण देवणे, दारे अं पेरिरात्रिलए । 'कीलतंजे नेरा रांय, हंटुतुट्टा अलकिआ ॥ १६ ॥

अर्थ—( तंजो ) तयारपछी एटले घरनी वहार काढया पछी ( राय ) हे राजा ! ( तेण ) ते पितादिके के पुत्रादिके ( अज्जिए ) उपार्जन करेला अन ( पेरिरात्रिलए ) समस्त प्रकारे चोर अने आग्नि निगरे थकी रचण करेला ( देवणे ) द्रव्ये करीने, पाछळ रहेला आनद करे छे ( अ ) तथा ( दारे ) तेनी स्त्री साथे ( अने नरा ) बीजा मनुष्यो ( हंटुतुट्टा ) हट्ट एटले वहारथी रोमांजित थयेला, तथा तुष्ट एटले हृदयमां आनद पामेला, तथा ( अलकिआ ) अलकारीयडे विभूषित थया थया ( कीलति ) क्रीडा करे छ पोते ज्यासुधी जीवे छे, त्यांसुधी धन उपार्जन करी तेनु प्राणनी नेम रचण करे छे,



तथा सीतुं पण तेवीज रीते रक्षण करे छे, परंतु मरी गया पछी तेना धन अने लीवडे बीजाओ ज क्रीडा करीने आनंद मेळवे छे. १६.

मरेला माणसनुं शुं थाय छे ? ते कहे छे.—

तेणावि जं कैयं कम्मं, सुहं वा जइ वा सुहं । कम्मणा तेणं संजुत्तो, गच्छइ उं परं भवं ॥ १७ ॥

अर्थ—( तेणावि ) ते मरनार माणसे पण ( जं ) जे ( सुहं वा ) शुभ ( जइ वा ) अथवा ( असुहं ) अशुभ ( कम्मं ) कर्म ( कयं ) कर्तुं होय, ( तेण उ ) ते ज ( कम्मणा ) कर्म करीने ( संजुत्तो ) युक्त एवो ते ( परं भवं ) पर भवने विपे ( गच्छइ ) जाय छे. अर्थात् जीवनी साथे वीजुं कांइ पण जतुं नथी. मात्र एक पोते करेलुं शुभाशुभ कर्म ज जाय छे, तेथी हे राजा ! तपनुं आचरण कर. ” १७.

“सोऊण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अंतिए । महयासवेगनिब्बेअं, समावणो नराहिवो ॥ १८ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे ( तस्स ) ते ( अणगारस्स ) पुनिनी ( अंतिए ) समीपे ( धम्मं ) धर्मने ( सोऊण ) सांगळीने ( सो ) ते ( नराहिवो ) संजय राजा ( महयासवेगनिब्बेअं ) मोटा संवेगने एटले मोक्षना अभिलापने अने निर्वेदने एटले सत्सारी उद्वेगपणाने ( समावणो ) पाम्यो. १८.

संजओ चइउं रज्जं, निर्बलंतो जिणसासणे । गइभालिस्स भगवओ, अणगारस्स अंतिए ॥ १९ ॥

अर्थ—त्यारपछी ( सज्यो ) ते सजय नामना राजाए तरतन ( राज ) राज्यनो ( चहउ ) त्याग करीने ( भगवओ ) भगवान ( गद्भालिस्स ) श्री गर्दमालि नामना ( अणगारस्स ) मुनिनी ( अतिए ) पासे ( जिणसासणे ) जिणशासनने विपे एटले वीतरागना धर्मने विपे ज ( निक्खतो ) दीक्षा ग्रहण करी १६

अही वृद्धसप्रदाय आ प्रमाणे छे—ते सजय नामना राजर्षि गर्दमालि नामना आचार्यना शिष्य थया, पछी आगमनो अभ्यास करी ते भीतार्थ थया, अने साधुना समग्र आचार विचारमां निपुण थया, एटले गुरुनी आज्ञाथी ते रात्रिपि एकाकी विहार करता कोइ गाममां आव्या ते गाममां तेने एक क्षत्रिय मुनि मज्या ते क्षत्रिय मुनि पूर्व जन्ममां वैमानिक देव हता, त्याथी चवीने कोइ क्षत्रियना कुळमां उत्पन्न थयेला हता त्यां कोइ निमित्तने लइने तेने जातिस्मरण ज्ञान थयु हतु, तेथी वैराग्य उत्पन्न थवाने लीधे राज्यनो त्याग करी तेणे दीक्षा ग्रहण करी हती तेनु नाम ठरावेनु न होवाथी क्षत्रिय मुनिना नामथी ते प्रसिद्ध थया हता ते जातिस्मरण ज्ञानवाळा क्षत्रिय मुनिए सजय नामना राजर्षिने जोइ तेमना ज्ञाननी परीक्षा करवा मांटे आ प्रमाणे कहु —

चिञ्चा रंठु० पैव्वइए, सत्तिए परिभासई । जहा ते दीसई रूव, पैसन्न ते तंहा मंणो ॥ २० ॥

अर्थ—( रंठु ) राष्ट्रनो एटले देशनो अथवा राज्यनो ( चिञ्चा ) त्याग करीने ( पव्वइए ) प्रज्याने पामेला ( सत्तिए )

क्षत्रिय मुनि ( परिभासई ) संजय राजपिने कहुं के—( जहा ) “ जेम ( ते ) तमारुं ( रुत्रं ) बाहा रूप-आकार प्रसन्न-सुंदर ( दीसई ) देसाय छे, ( तहा ) तेम ( ते ) तमारुं ( मणो ) मन पण ( पसन्नं ) प्रसन्न छे एम जणाय छे. कारण के अंदर कलुपता वर्तती होय तो बहारथी आवा प्रफारनी चित्तप्रसन्नता देसाय नहीं. २०.

किंनामे किंगोत्ते, कस्सट्टाए वै माहणे । कंहं पडिअरसी बुद्धे, कंहं विणीए सि बुच्चसी ॥ २१ ॥

अर्थ—( किंनामे ) तमारुं नाम शुं छे ? तथा ( किंगोत्ते ) तमारुं गोत्र शुं छे ? ( व ) अथवा ( कस्सट्टाए ) क्या प्रयोजनने माटे ( माहणे ) तमे माहण थया छो एटने प्रवज्ज। लीधी छे ? तथा ( बुद्धे ) आचार्यादिरुनी ( कंहं ) केवी रीते ( पडिअरसी ) सेवा करो छो ? तथा ( कंहं ) केवी रीते ( विणीए सि ) ‘तमे निर्नीत छो’ एम ( बुच्चसी ) कहैवाओ छो ?” २१.

आ प्रमाणे क्षत्रिय मुनि ए पूअरुं, तगारे संजय राजपिं तंमने प्रत्युत्तर आपे छे के—

संजयो नैस नैसिणं, तहा गोत्तेण गौअसो । गइभाली संगार्थरिआ, विज्जाचरणपारगा ॥ २२ ॥

अर्थ—“ ( नैसिणं ) नागे करीने हुं ( संजयो नाग ) संजय नामनो हुं, ( तहा ) तथा ( गोत्तेण ) गोत्रवडे हुं ( गोअसो ) गौतम गोत्री हुं, तथा ( विज्जाचरणपारगा ) विद्या एटले श्रुत अने चरण एटले चारिना पारगामी एवा ( गइभाली ) गर्दभालि नामना ( मम ) मारा ( आयरिआ ) आचार्य एटले गुरु छे. भावार्थ आ प्रमाणे छे.—गर्दभालि नामना आचार्ये मने जीवहिंसाथी निवृत्त कर्यो, तेनी निवृत्तिमां मने तेओए मुक्तिरूप फळ बतावुं, तेथी मुक्ति मेळवनाने

माटे हु माहण-साधु थयो छु, जे प्रमाणे ते गुरए माने उपदेश आप्यो छे-समजाव्यो छे ते प्रमाणे हु तेमनी सेरा कर छु, अने तेमना उपदेशनु सेवन करवाथी हु विनीत कहेवाउ छु २२”

आ प्रमाणे सजय राजर्षिनु वचन सांभळी ते चत्रिय मुनिनु चित तेमनापर आकर्षायु, तेथी ते चत्रिय मुनि बोल्या के-  
किरिअ अकिरिअ विणय, आणण चं महामुणी। एएहिं चउहि ठाणेहिं, मेअण्णे किंवेभासति ॥२३॥

अर्थ—( महामुणी ) हे महामुनि सजय ! ( किरिअ ) क्रिया, ( अकिरिअ ) अक्रिया, ( विणय ) विनय ( च ) अने ( अणण ) अज्ञान ( एएहिं ) ए ( चउहिं ) चार ( ठाणेहिं ) स्थानोवडे ( मेअण्णे ) मेयनु—मेय एटले जीवादि ज्ञेय वस्तुने जाणनाराओ ( किंपभासति ) बुत्तिसत एटले असत्य-मिथ्या बोले छे अहीं केटलारु अन्यमतिओ अस्तिक्रिया सहित जीवनु लक्षण माने छे एटले के वस्तुनी जे सचा तेज जीव एम माने छे, ते क्रियावादी कहेवाय छे ? केटलाक अक्रियावादी छे, तेओ जीवादिक पदाथाने नास्तिरूपे एटले नथीज ए प्रमाणे माने छे २. केटलाएक विनयवादी छे, तेओ नाना, मोटा, उच, नीच सर्वने नमस्कारादिक विनय करवो तेने ज धर्म माने छे ३ तथा केटलाएक अज्ञानवादी छे, तेओ सर्व पदार्थोने नहीं जाणवा तेज सार माने छे ४. आ चारे मतवाळा एकांतवादी होवाथी मिथ्यात्वी छे. तेओनु एवु एकांतपणे मानवु युक्तियुक्त नथी, तेथी तेमनु भाषित मिथ्या छे कारणके अस्तिक्रिया एटले सचा अर्थात् वस्तुनु होवापणु, ते वो दरेक वस्तुमां छे, तेथी अजीव पण जीव कहेवाशे ? एकांतपणे नास्तिपणु मानवाथी आत्मानु पण नास्तिपणु थशे, अने तेथी करीने जीव, अनीच विगेरे सर्व पदार्थो नास्तिपणाए करीने सररा ज रूहेवाशे २ गर्व ठेकाणे तुल्य विनय फ

रवाथी निर्गुणनो पण विनय करवो पडशे अने निर्गुणना विनयनुं तो अशुभ फळ कणुं छे, गुणीने विपेज विनय करवाथी शुभ फळ प्राप्त थाय छे, तेथी एकान्त विनय पण सारो नथी. ३. तथा अज्ञान तो मुक्तिना साधनभूत छे ज नहीं, केमके मुक्तिनुं कारण तो ज्ञान ज कणुं छे, हेय अने उपादेय पदार्थो ज्ञानथी ज जाणी शक्या छे, अने ज्ञानविना हिताहित पण जाणी शकतुं नथी. तेथी अज्ञानवादीओ पण मिथ्याभापी ज छे. ४. आ चारे प्रकारना पाखंडीओना कुल त्रणसो ने त्रेसठ भेदो थाय छे. तेमां क्रियावादीओना १८० भेदो छे, अक्रियावादीओना ८४ छे, विनयवादीओना ३२ छे अने अज्ञानवादीओना ६७ भेदो छे. आनो विस्तार अन्य ग्रंथमांथी जाणी लेवो. २३.

ए चारे प्रकारना वादीओनुं मिथ्याभाषित हुं मारी बुद्धिथी ज कहेंतो नथी, परंतु भगवानना वचनथी कहुं छुं.

ईइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुडे । विजाचरणसंपन्ने, संचे सच्चपरकमे ॥ २४ ॥

अर्थ—( इइ ) आ क्रियावादी विगेरेने ( बुद्धे ) तत्त्वेने जाणनारा, ( परिनिव्वुडे ) कपायरूपी आनि बुद्धावाथी शीतळ थयेला, ( विजाचरणसंपन्ने ) चायिक ज्ञान अने चायिक चारित्रवडे युक्त, ( संचे ) सत्य वचनवाळा अने ( सच्चपरकमे ) सत्य वीर्यवाळा ( नायए ) ज्ञातक एटले ज्ञातपुत्र श्री महावीरस्वामीए मिथ्याभापीपणे ( पाउकरे ) प्रगट कर्या छे—कहा छे. २४.

ते क्रियावादी विगेरेनुं फळ कहे छे,—

पंडति नेरए धीरे, जे नेरा पैवकारिणो । दिव्वं च गेइं गैच्छंति, चरित्ता धेस्सममारिअं ॥२५॥

अर्थ—( जे नरा ) जे मनुष्यो ( पावकारिणो ) अर्ही प्रस्तावने लीधे पाप एटले असत्प्ररूपणा, तेने करवाना स्वमा ववाढा होय छे, तेओ ( घोर ) भयकर एवा ( नरए ) नरकमां ( पडाति ) पडे छे ( च ) अने ( आरिअ ) आर्य एटले सत्प्ररूपणारूप उत्तम ( धर्म ) आचरण फरीने एटले आचरण करनारा मनुष्यो ( दिव्य ) देव सवधी अथवा सर्व गतिमां प्रधान एवी सिद्धि नामनी ( गइ ) गतिने ( गच्छति ) पामे छे तेथी हे राजर्षि ! तमारे असत्प्ररूपणानो त्याग करी सत्प्ररूपणामां ज प्रवर्तवु २५

ते क्रियावादी विंगेरे पापकारी केम कहेवाय ? ते उपर कहे छे —

मांयाबुइअमेअ तु, मुंसाभासा निरैरिअ । सजेममाणो वि अह, वसामि इरिआमि अं ॥२६॥

अर्थ—( एअ ) आ क्रियावादी विंगेरेनु वचन ( मायाबुइअ तु ) मायाबडे एटले शठताबडे ज कहेलु होय छे, तेथी तेओनी ( मुसाभासा ) मृषा भाषा ( निरिअ ) निरर्थक-अर्थ विनानी छे ते कारण माटे हे सजय मुनि ! ( सजममाणो वि ) ते पारडीओनी असत्प्ररूपणारूप पापयकी निवृत्ति पाम्यो सतो ज ( अह ) हु ( वसामि ) निरवध-दोपरहित वपा अथादिकमा वरु लु अर्ही सजय राचपेन स्थिर करवा माटे “ हु वसु लु ” एम पोतानु ज दटाव आपर्षिने वरु छे एटले के जम हु असत्प्ररूपणाथी निवृत्त थयो लु तेम तमारे पण निवृत्त थनु कारण के जे साधु पोते साधुमार्गमां रहेलो होय ते चीजाने पण साधुमार्गमां स्थापन करी शरु छे. (अ) तथा वळी हु (इरिअ.मि) गोचर्यादिकने विषे श्यासमितिवडे चालु लु २६

हवे संजय राजर्षिं क्षत्रियमुनिने पूछे छे के—“ तमे ते पाखंडीओना वचनथी केवी रीते निवृत्त थया ? ” तेनो ते जवाब आपे छे.—

संवे 'ते विद्वा मंजं, मिच्छादिद्वी अणारिआ । विज्जमाणे परे लोए, संसं जाणामि अप्पयं ॥२७॥

अर्थ—( ते सबे ) ते सर्वे पाखंडीओ ( मंजं ) मारा ( विद्वा ) जाणेशा छे, के तेओ ( मिच्छादिद्वी ) मिथ्या-दृष्टि छे अने तेथी करिने ( अणारिआ ) अनार्य एटले पशुहिसादिक अनार्य कर्म करनारा छे. तेवा प्रकारना तेमने शी रीते जाएया ? ते उपर कहे छे.—( परे लोए ) परलोक ( विज्जमाणे ) विद्यमान सते ( अप्पयं ) मारा आत्माने ( संसं जाणामि ) हुं सम्यक् प्रकार जाणुं छुं. मारो आत्मा परलोकथी एटले बीजा भवमाथी अहीं आव्यो छे एम हुं जातिस्मरण ज्ञानथी जाणुं छुं. तेथी परलोक पण छे अने आत्मा पण छे एम सारी रीते जाणवाथी तेनी ना पाडनारा पाखंडीओना मिथ्यावचनथी हुं निवृत्त थयो छुं; माटे तमे पण निवृत्त थाओ. २७.

तमारो आत्मा परभवथी अहीं आव्यो छे एम तमे शी रीते जाणो छो ? ते उपर कहे छे.—

अहंभासि महापाणे, जुइमं वरिससओवमे । जा सां पाली महापाली, दिंवा वरिससओवमा ॥ २८ ॥

अर्थ—( अहं ) हुं ( महापाणे ) महाप्राण नामना पांचमा ब्रह्मदेवलोकना एरु विमानने विणे ( जुइमं ) हुतिमान एटले तेजस्वी अने ( वरिससओवमे ) सो वर्षनी आयुष्यवाळा मनुष्यनी उपमावाळो ( आसि ) हतो. एटले के जेम

वर्तमान काले अर्हो सो र्पनी आयुष्यवाळो मनुष्य पूर्णे आयुष्यवाळो कहेवाय छे, तेम हु पण त्या पूर्णे आयुष्यवाळो देव हतो तेमां ( या ) जे ( पाली ) पालि अने ( महापाली ) महापालि एवी ( वरिससओवमा ) सो सो र्पे एक एक केसनो उद्धार करीए एवी उपमावाळी वे प्रकारनी ( दिव्या ) दीव्य—देवभव सवधो स्थिति छे, तेमांथी ( सा ) ते महा पालि नामनी मारी दीव्य स्थिति हती. एटले दश सागरोपमनी स्थिति हती अर्ही पालि एटले पाळना जेवी पाळ जेम पाळ जळने धारण करी राखे छे तेम आ पालि पण जीवित रूपी जळने धारण करी राखे छे अर्थात् पालि एटले भवस्थिति कहेवाय छे. तेमां पालि एटले पन्योपमनी स्थिति अने महापालि एटले सागरोपमनी स्थिति जाणवी. २८. ( पालाना दृष्टते पन्योपमनी स्थिति कही छे ते पालि समजवी )

से नैए वभेलोआओ, भाणुस्स भवमार्गओ । अप्पणो अपरोसिं च, आउ जाणे जंहा तंहा ॥ २९ ॥

अर्थ—( से ) ते हु ( वमलोआओ ) ब्रह्मदेवलोक थकी ( नुए ) चव्यो थको ( माणुस्स ) मनुष्य सवधी ( भव ) भवने ( आगओ ) पाम्यो छु तथा ( अप्पणो ) पोतानु ( च ) अने ( अपरोसिं ) चीना जीवोनु ( जहा ) जे प्रकार ( आउ ) आयुष्य होय ( तहा ) ते प्रकारे ( जाणे ) हु जाणु छु जेनु जे प्रकारे—जेटलु आयुष्य होय तेनु तेज प्रकारे—जेटलु हु जाणु छु, पण विपरीतपणे चाणता नथी २९

आ प्रमाणे चत्रिय मुनिए पूछया विना पण प्रसगधी पोतानो घुजांत कसो, हवे उपदेश आपवाने माटे कहे छे —



नाणारुहं च छंदं च, परिविज्जि संज्ञेए । अणुहा जे अ संवत्था, ईइ विजांमणुसंचरे ॥ ३० ॥  
 अर्थ—( संज्ञे ) साधु ( नाणारुहं च ) अनेक प्रकारनी रुचिने एटले क्रियावादी विगेरेना मतवाळी इच्छाने वजे, तथा ( छंदं च ) अनेक प्रकारना पोतानी मतिए कल्पना करेला अभिप्रायने ( परिविज्जि ) वजे, तथा ( जे ) जे ( अणुहा ) प्रयोजन विनाना व्यापारो होय ( अ ) अने जे ( संवत्था ) हिसादिक बीजा सर्व कार्यो होय ते सर्वने पण वजे. अथवा ( संवत्था ) सर्वत्र एटले सर्व क्षेत्रादिकने विषे जे प्रयोजन विनाना व्यापारो होय तेने वजे. ( ईइ ) आ प्रकारनी ( विजां ) सम्यक् ज्ञान रूप विधाने ( अणुसंचरे ) लक्ष्य करीने एटले आश्रीने हे राजपिं ! तमारे संयममार्गमां चालवुं. हुं पण आवी विधाने ज अंगीकार करी संयममार्गमां चालुं छुं, माटे तमारे पण ते ज प्रमाणे चालवुं. ३०.

फरिथी चत्रिययुनि पोतानो ज आचार वताने छे.—

पैडिक्कमामि पैसिणाणं, पैरमंतेहिं वा पुणो । अहो उट्टिए अहोरायं, ईइ विजां तंवं चरे ॥ ३१ ॥

अर्थ—हे राजपिं ! हुं ( पसियाणं ) शुभाशुभने जणवनारा अंगुष्ठप्रश्नादिकथी ( पैडिक्कमामि ) निवृत्ति पाम्यो छुं, ( वा पुणो ) तथा वळी ( परमंतेहिं ) परना एटले गृहस्थीओना मंत्रोथकी एटले गृहकार्योना विचारोथी पण हुं निवृत्ति पाम्यो छुं. ( अहो ) आथर्य छे के आ प्रमाणे ( अहोरायं ) दिवसने रात ( उट्टिए ) धर्म प्रत्ये उद्यमवाळा कोइक ज महारत्मा होय छे. ( ईइ ) ए प्रमाणे ( विजा ) जाणता एवा तमे ( तंवं चरे ) तपनुं ज आचरण करो. पण प्रश्नादिकनुं

सेसन न करो ३१

हृये सनय नामना राजर्षिण पूछ्यु के—“ तमे आयुष्यने शी रीते जाणो छो ? ” तेनो उत्तर चप्रियमृनि आपे छे—  
‘ज च मे’ पुच्छसी काले, संम्म सुद्धेण चेअसा । ताइ पाउकरे बुद्धे, त’ नौण जिणैसासणे ॥३२॥  
अर्थ—( संम्म ) सम्यक् प्रकारे ( सुद्धेण ) शुद्ध-निर्मल ( चेअसा ) चिचवाळा तमे ( मे ) मने ( ज च ) जे  
( काले ) कालना विपयवाळ आयुष्य ( पुच्छसी ) पूछो छो, ( ताइ ) ते आयुष्यने ( बुद्धे ) श्री महावीरस्वामीए अथवा  
श्रुतज्ञानीए ( पाउकरे ) प्रगट कर्यु छे, तेथी करीने हु जाणु छु ( त ) ते ( नाण ) ज्ञान ( जिणसासणे ) जिनशासनने विपे ज  
छे, बीजा वीद्वादिकना शासनमां नथी तेथी तमारें चिनशासनने विपे ज उधम करवो, के जेथी हु जिनशासनमां रलो थको  
तेना प्रसादथी जेम जाणु छु तेम तमे पण जाणी शकयो ३२

फरीथी उपदेश आपे छे.—

किरिअ रोअए धीरो, अकिरिअ परिवज्जए । दिट्ठीए दिट्ठिसपंने, धम्म चंर सुदुच्चर ॥ ३३ ॥

अर्थ—( धीरो ) धीर एवो साधु ( किरिअ ) क्रियाने एटले जीवसचाने-जीवना होवापणाने ( रोअए ) पोताना  
आत्मा प्रत्ये रूपावे-सूत्री कराने, तथा बीजाद्योने पण तेनी रुचि उपजावे अथवा क्रिया एटले मोचमार्गनी साधनभूत

१ सनयने बदले सयत नाम पण केटलीक वार आवे छे

प्रतिक्रमण, प्रतिलेखना आदि सम्यक् ज्ञानसहित सम्यक् अनुष्ठानरूप क्रियाने रुचावे-तेनापर रुचि करावे, तथा (आकिरिञ्च) जीवना नास्तित्पणारूप आक्रियाने इथवा मिथ्यात्वीओए कल्पेली अज्ञानकरूप आक्रियाने (परिव्रजए) सर्वथा वर्जे, तेथी धीर एवा साधु (दिड्डीए) सम्यग्दर्शनवडे करीने (दिडिसंपन्ने) सम्यक् ज्ञान सहित थाय. हे राजर्षि ! तमे पण सम्यग्दर्शने करीने सम्यक् ज्ञान सहित थइने (सुदुचरं) अत्यंत दुष्कर एवा (धम्मं) चारित्र धर्मेने (चर) अंगीकार करो. २३.

फरीथी चत्रियमुनि ज संजय राजर्षिने महापुरुषना दृष्टांतवडे स्थिर कावा साटे कहे छे.—

एअं पुण्णपयं सोच्चा, अतथधम्मोवसोहिअं । भरहो वि भारहं वासं, चिच्चा कामाई पंव्वए ॥३४॥

अर्थ—(अतथधम्मोवसोहिअं) जे प्रार्थना कराय ते अर्थ एटले स्वर्ग अने मोक्ष, तथा धर्म एटले ते स्वर्ग अने मोक्ष मेळववाना कारणभूत जिनभापित धर्म, ते वनेनेडे शोभतुं एवुं (एअं) आ (पुण्णपयं) पुण्यपद-उत्तम उपदेश (सोच्चा) सांभळीने (भरहो वि) भरतचक्रीए पण (भारहं वासं) भरतचेवने तथा (कामाई) कामभोगने (चिच्चा) तजीने (पव्वए) प्रवज्या लीधी हती. अहीं “पुण्णपयं” ना अर्थ आ प्रमाणे करवा.—पुण्य एटले पवित्र-कलंक रहित-दुष्ण रहित एवुं पद एटले जिनेधरे कहेलुं सूत्र, अथवा पुण्य एटले पुण्यना कारणभूत पद एटले क्रियावादी विगेरे मत उपर रुचिनो त्याग करी शुद्ध धर्मनो प्ररूपणा करनार सूत्र. अथवा पूर्ण एटले संपूर्ण एवुं पद एटले ज्ञान, तेने सांभळीने भरत चक्री के जे सर्व राजाओमां मुख्य हता, तेणे पण आ चारित्रधर्मरूपी मार्गनो ज आश्रय कर्षो हतो, तेथी करीने तमारि पण

आ विनाशपित मार्गनो न आश्रय करवो योग्य छे

भरत चक्रीनी सच्चिद कथा

इदानी आत्माधी दुबेरे अयोध्या नामनी नगरी बनाधी तेमा श्रीऋषभदेव स्वामी रहेता हता तेमणे चारित्र ग्रहण कयुं, त्वारे तेमना ज्येष्ठ पुा श्रीभरत चक्रवर्ती तेमां रहेता हता ते चक्रीने चौद रत्नो अने नव निधिओ हता, पत्नीश हजार राजाओ तेनी सेना करता हता, चौराशी लाख अध, रथ अने हाथीओ तेना सैन्यमां हता, छत्रु करोड पत्तिओ (पदाति) हता अने छत्रु करोड गामोना ते अधिपति हता, ते पत्राश हजार देशोनु पालन करता हता, अडतालीश हजार पत्तोना स्वामी हता, बहोतेर हजार पुरना अधीधर हता, नव्याणु हजार द्रोगमुएनु ते रक्षण करता हता अने सोळ हजार यवो निरतर तेनी सेना करता हता आ प्रमाणे छे खड भरतवेत्रनु ते अखड रीते राज्य करता हता, तथा चोसठ हजार अत पुरनी स्त्रीओ साथे क्रीडा करता ते पूर्वना पुण्यरूपी दृचना पुण्यसदृश सुरने भागवता हता अष्टापद पर्वत उपर श्री ऋषभदेव स्वामीना निर्माणे स्थाने तेमणे एरु चेत्य कराधी तेनी अदर नोवीशे तीर्थकरोनी पोतपोताना शरीरना प्रमाण अने तर्षयात्री प्रतिमाओ स्थापन करी हती तथा निरतर तेमनी वदना अर्पो करता हता तेमज अति प्रीतिधी निरतर साधार्भिरुमात्सज्य करता हता आ रीते ते भरतचक्रीए छे लाख पूर्ण व्यतीत कर्पो

एरुदा प्रात काळे अभ्यगन, उदलते अने स्नात करी भरतचक्री सर्व वस्त्र अलकार धारण करी आदर्शभजनमां गया त्या अरिसामां पोतानु शरीर जोतां तेणे एक आंगळी मुद्रिका रहित होवाधी शोभा निनानी जोद, तेथी तेणे बीजी आंग-

ळीमांथी पण मुद्रिका काढी नांखी त्यारे ते पण शोभा रहित जोइ. पळी धीमे धीमे एक एक अलंकार उतारतां छेवटे तेणे समग्र अलंकारो उतार्या. त्यारे तेणे पोतांजुं शरीर कमळ विनाना सरोवरनी जेजुं तदन शोभा रहित जोयुं. ते जोइ चक्रीए विचार्युं के—“ अहो ! आ शरीर मात्र आंगंतुक पदार्थो वडेज शोभे छे, परंतु ते स्वभावथी तो कांइ पण सुंदर नथी. आ शरीरने स्नानादिक वडे संस्कार करी वरा आभूषणो विंगेरे पहिरावीए तोज ते शोभे छे, आवा असार देहने मूढ लोको सुंदर माने छे. वळी मनोहर अन्न, जळ, पुष्प, गंध, वस्त्र विंगेरे उत्तम वस्तुओ पण सीना संगथी त्रयचर्यनी जेम आ अशुचि शरीरना संगथी नाश पामे छे—अपवित्र धाय छे. तो मोटुं आर्थ्ये छे के पंडितो पण चालरुनी जेम वि-  
वेक रहित थइ आवा असार शरीरने मोटे अनेक प्रकारनां पाप कर्मो करे छे ! परंतु मोचने आपनारुं आ मनुष्यपणुं पामीने द्यूतवेडे चिंतामणिनी जेम शरीरने अर्थे कराता पापो वडे मारे तो आ मनुष्यपणुं हारी जवुं योग्य नथी. ” इत्यादि शुभ ध्यान करतां अधिक अधिक संवेगने पामेला ते चक्री मोचरुपी महलनी नीसरणी समान चपकथोणपर आरूढ थया. तरत ज चार घातीकर्मनो द्यय करी भाव चारित्रने पामी अज्ञानरुपी अंधकारनो नाश करवामां सूर्यसमान केवळज्ञानने पाम्या. ते वसते शक्र इंद्रे आवी चक्रीने कणुं के—“ हे पूज्य ! द्रव्यलिंगने पंगीकार करो, जेथी अमे दीचामहोत्सव तथा केवळज्ञाननो महोत्सव करीए. ” ते सांभळी तेमणे पोताना मस्तकपर पंचमुष्टि लोच करी शासनदेवताए आपलो साधुवेप अंगीकार कर्यो. पळी वादळांमांथी सुर्यनी जेम ते राजर्षि घर बहार नीकळ्या. तेमने व्रत अंगीकार करेला जोइ

१ इंद्रे पोतेज साधु वेप आप्यो एग पण प्रत्यंतरगा छे.

बीजा दश हजार राजाओए पण ससारनी वासना क्षीण थवाथी तेमनी साथे ज दीक्षा गहण करी पछी इन्द्रादिक देवो तेमनो ज्ञान सपथी महोत्सव करी पोतपोताने स्थाने गया भगवान राजर्षि भव्यप्राणीओने बोध कत्वा पृथ्वीपर विचरवा लाग्या

भरतराजा कुमार अथस्थामा सीचोतेर लाख पूर्व रहा, एक हजार वर्ष मांडलिक राजापणे रहा, एक हजार ओछा एवा छ लाख पूर्व चक्रवर्तीपणामां रहा अने एक लाख पूर्व केवळीपणायुक्त दीक्षापर्यायमां रहा ए रीते कुल चोराशी लाख पूर्वतु आयुष्य भोगवी भरतराजर्षि सर्व कर्मनो क्षय करी मोक्षपद पाग्या

इति भरतचक्री कथा

संगरो वि' साँगरत, भरहवास नैराहिवो । इस्सरिअ केवँल हिर्चा, देयाए परिनिब्बुए ॥ ३५ ।

अर्थ—तथा ( सगरो ) सगर नामना ( नराहिवो ) नराधिप एटले चक्रवर्ती ( वि ) पण ( सागरत ) पूर्वोदिक त्रण दिशामां सागर पर्यंत अने उत्तरदिशामां हिमवानपर्यंत पर्यंत ( भरहवास ) छ खड भरतचेतने तथा ( केवल ) परिपूर्ण ( इस्सरिष्ण ) अर्थने ( हिचा ) तजीने ( दयाए ) दयार्थमवड ( परिनिब्बुए ) निर्धृति-मोक्ष पाग्या ३५

सगर चक्रीनी सक्षिप्त कथा

अयोध्या न.मनी नगरीमां इच्चाए वशमां जितशत्रु नामे राजा हवा तेने विजया नामनी राणी हती ते राजाने

सुमित्र नामे नानो भाइ युवराज हतो, तेने यशोमती नामनी पत्नी हती. जितशत्रु राजानी राणी विजयाने एकदा चौद स्वप्नथी छचित पुत्र उत्पन्न थयो, तेनुं अजित नाम पाड्युं. ते तीर्थकर थया. सुमित्र युवराजनी पत्नी यशोमतीए पण चौद स्वप्नथी छचित पुत्र प्रसव्यो. तेनुं सगर नाम पाड्युं, ते चक्रवर्ती थया. ते वने कुमार युवावस्थाने पाम्या त्यारे तेमना मातापिताए महोत्सवपूर्वक तेमने राजवन्थाओ परणावी. केटलेक काळे जितशत्रुराजाए पोताना राज्यपर अजितने स्थापन कर्यो अने सगरने युवराज पदनी प्रापी. पछी जितशत्रु राजाए नाना भाइ सुमित्र सहित दीक्षा अंगीकार करी.

अजित राजाए केटलोक काळ राज्यनुं पालन करी धर्मतीर्थ प्रवर्तविवा माटे सगरने राज्यपर स्थापन करी पोते चारित्र ग्रहण कर्नु. अनुक्रमे सगर राजाने राज्य करता तेना राज्यमां चौद रत्नो उत्पन्न थयां, ते वडे छ संड भरतक्षेत्रने साधी ते चक्रवर्ती थया. ते चक्रीने साठ हजार पुत्रो थया. तेओमां सर्वथी मोटो पुत्र जन्हु नामे हतो. एकदा जन्हुकुमार सगर चक्रीने कोइक प्रकारे संतुष्ट कर्यो, तेथी चक्रीए जन्हुकुमारने क्युं के-“जे तारी इच्छा होय ते माग.” जन्हुए माग्युं के-“हे पिता ! आपनी आज्ञार्थी सर्व भाइओ महित हुं चौदे रत्नो अने सर्व सैन्य साथे लइ पृथ्वीपर पर्यटन करुं एवी मारी इच्छा छे.” ते तेनी इच्छा सगरचक्रीए मान्य करी. शुभ सुहूर्ते भाइओ सहित जन्हुकुमार रत्नो अने सैन्य-साथे लइ प्रयाण शरु कर्नु. अनुक्रमे अनेक देशोमां फरतो फरतो ते अष्टापद पर्यंत पासे आव्यो. त्यां पर्यंतनी नीचे सर्व सैन्य सूकी पोते भाइओ अने परिवार सहित पर्यंतपर चड्यो. त्यां भरतचक्रीए करावेलुं, मणिसुवर्णमय झने

तो लक्ष्मणी परिवारेतु चैत्य चोगु, तेनी अदर रहेली चावशिणे तीर्थसरोनी प्रतिमाआने जोइ तेने विधिपूर्वक चदना करी पद्मी जडुमारो मन्त्रीआने पृष्टुके—“कया पुण्यवत पुरुषे आ अतिरमणीय निनभना कराव्यु छे ?” मन्त्रीए कष्टु के—“हे इमार ! तमार पुरात भारत नामना चक्रपतीए आ चैत्य कराव्यु छे ” ते सांभळी जडुमारो कष्टु हे—“आवो षष्ठापद जेरो चीरो जोइ पर्वत होय तो त्या आपणे पण आयु चैत्य करावीए ” एम कही ते कुमारे तेवो पर्वत शोपना माटे तारे दिशामां पोताना पुरुषो मोरुल्या तेथो तामा पृथ्वीपर अमण करी पाछा आव्या अने कुमारेने कष्टु के—“हे स्वामी ! आसो पर्वत जोइ पण ठेहाणे नवी ”

त्यारे जडुमारो कष्टु के—“जो आवो चीरो पर्वत ज होय तो आपणे आ तीर्थनी च रचा करीए कारण के आ चेत्रमां हाळता प्रमे करीने भविष्यमां लोको लोभी ओ शठ धरो, तेथी तओ आ तीर्थनो मिनाश करनारा थरो माटे ननु करामना करतां जूनाउ पालन करु एज मोडु धेयकारक छे ” एम कही सर्वे माइथो सहित जडुमार दडरत लइ ते वडे पर्वतनी चोतरक साइ रोदवा लाग्यो ते वराते ते दडरले हजार योचन पृथ्वीने भेदी पाताळमां ज्यां नागकुमार नां भवनो हलां तेमने पण भेदी नारन्यां ते उपद्रवधी भय पामेला सर्वे नागकुमारो शरणीनी गनेपणा करतां नागरान ज्यरानप्रभ पामे गया, अने तेनी पासे पोताना भवनना उपद्रवयो पुचांत वदो. ते सांभळी जलनप्रभ पण एकदम सभ्रांत थइ उमो वयो ओ अवधिगानवडे ते स्वरूप जाणी फोपधी घमघमतो सगर रानाना पुत्रो पासे आव्यो तेणे तेओने ऱगु के—“हे राजपुत्रो ! तमे दडरतनवडे पृथ्वीने विदारतां भगारा भवनोमां उपद्रव कर्या, ते तमे अथि



चार्यु काम कर्तुं छे." ते सांभळी नागराजना कोपने शांत करवा माटे जन्हुकुमारि तेने कर्तुं के— " हे नागराज ! अमारा पर प्रसन्न थाओ, कोपने संहरी ल्यो, अने अमारो आ एक अपराध क्षमा करो. अमोए आ कार्य तमारा भवनेने उपद्रव करवा माटे कर्तुं नथी, परंतु आ अष्टापद तीर्थनी रखा करवा माटे तेनी फरती साइ खोदी छे. हवे फरीथी अमे आबुं कार्य नहीं करीए. " ते सांभळी शांत थयेलो ज्वलनप्रभ पोताने स्थाने गयो.

पत्नी जन्हुकुमारे पोताना भाइओने कर्तुं के— " जो के आ साइने कोइ ओळगे तेम नथी, तो पण ते पाणी विना शोभती नथी, तेथी आ साइने जळथी भरी दइए. " एम कही दंडरत्नवडे गंगानदीना प्रवाहने वाळी ते खाइमां नांख्यो अने जळवडे ते साइ भरी दीधी. ते जळ नागकुमारना भवनेमां पण पर्वोच्युं. ते जळना प्रवाहथी त्रास पामेला नागकुमारना देवो अने देवीओ आमतेम नासवा लायां. तेमने तेची स्थितिवाळा जोइ जालनप्रभ अवाधिज्ञानना उपयोगथी सगरना पुत्रोतुं आ कार्य जाणी अति क्रोध पाम्यो, तेथी तेणे विचार कर्चो के— " अहो ! आ जन्हु विगेरे कुमारो महापापी छे, तेमनो एकवार अपराध तो में माफ कर्चो, तोपण तेओए फरीथी आ मोटो उपद्रव कर्चो, माटे हवे तेमना अविनयनुं फळ देखाडुं. " एम विचारी ज्वलनप्रभे तेमनो विनाश करवा माटे मोटा दृष्टिनिप सर्पो मोकल्या. तेओए खाइना जळमांथी बहार नीकळी ते कुमारो सांभुं जोशुं एदले तरत ज ते सर्वे सगर राजाना पुत्रो भस्मसात् थइ गया. ते जोइ समग्र सैन्यमां हाहाकार थइ रघो. तेमनो शोक दूर करवा माटे मुख्य मंत्रीए तेमने कर्तुं के— " आ कुमारो तीर्थनी रखा करता हता, तेमां अवश्य भातिपणाने लीधे तेओनी आनी मरण अयस्था थइ छे. परंतु तेओ सदृगतने ज पाम्या हशे, तो हवे शोक

शामाट करो छो ? हचे तो आपणे शीघ्रपणे आपणा स्वामी पासे जतु योग्य छे ' आ प्रमाणे मत्रीनु यचन सर्व सैये अगीकार कर्तुं पछी त्यांथी शीघ्र प्रयाग करी अनुक्रमे ते सैन्य अयोध्यापुरीनी समीपे आयी पहरेंच्यु त्यां सामत राजा ओए अने मर्गओए परस्पर विचार कर्पा के—“ सर्व कुमारोना अकस्मात् विनाशनो पृचात आपणे चत्री पासे शी रीते कही शकतुं ? ते सर्व कुमारो पळी सुवा अने आपणे अघत शरीरवाळा पाछा आब्या, ए वात पण आपखने अत्यंत लज्जा उपजावे तेथी छे तेथी आपणे सर्वे अग्निमांज प्रवेश करीए ” आ प्रमाणे तेओ विचार करता हता, तेवामां तेमनी पासे एक वृद्ध ब्राह्मण आर्यो, तेणे ते सामतो अने मत्रीओ विंगेरेने कर्तुं के—“ हे धीर पुरुषो ! तमे शा माटे आम आकुळ -व्यारुळ थया छो ? रोदने मूकी घो आ ससारमां सुख के दुःख प्राप्त थतुं ते कांइ अद्भुत एटले नपाइनु नथी. आ ससारमां कर्मने वद थपेला जीवा अनादिकाळधी सुख दुःख पाभ्याज करे छे मांटे तमे शोचनो त्याग करो सगर राजा पाते कुमारोना विनाशनो पृचात हु ज कहीश ” ते सांभळी सामतादिके ते ब्राह्मणु यचन अर्गाकार कर्तुं

त्यारपछी ते ब्राह्मण पांइ मरी गयेला पाळकनु मडदु उपाडी “ हा हा ! हु जुदायो ” एम बोलतो चक्रवर्तीना रामाद्वार पागे गयो चक्रीए तेना विलापनो शब्द सांभळी तेने सगामां बोलाब्यो, अने पृच्छतुं के—“ हे ब्राह्मण ! तारु शु अन् कोणे सुटतु छे ? ” ब्राह्मण बोल्यो के—“ हे देव ! मारे एफ न पुत्र हतो, ते सर्पडश थवायी मरण पाभ्यो. ते दू एथी हु विलाप करुं छु मांटे हे दयाना सागर ! तमे एने जीवाडो ” त्यार चक्रवर्तीए तंघो अने मांत्रिकोने बोलावी ते वाटने साचो करवा पटु तेओए सचपुत्रोनु मरण सांभळ्यु हतु तेथी तेमांथी एफ वेंचे कटु के—“ हे देव ! नेना घरमां

आज सुधी एक पण मनुष्यनुं मरण थयुं न होय तेने घेरथी राख मंगावा, एटले आ बाळकने अमे जीवतो करीशुं. ” ते सांभळी राजाए पोताना सेवकाने नगरीमां तेवी राख लाववा मोकल्या. तेप्रो आखी नगरीमां घेर घेर फरी फरीने पाछा आव्या अने तेसणे राजाने कळुं के—“ हे स्वामी ! अमे दरेक घेर जइ तेवी राख मागी, त्यारे दरेक घरना माणसोए जवान आप्यो के—आ घरमां अमारी माता मरी गइ छे, पिता मरी गयो छे, बंधु मरी गयो छे, बहेन मरी गइ छे, स्त्री मरी गइ छे, भर्तार मरी गयो छे, विगरे अनेकना मरण थयातुं जगावुं. कोइ पण एतुं घर न नीकळ्युं के ज्यां मनुष्योनां मरण थयां न होय. ” ते सांभळी राजाए ब्राह्मणने कळुं के—“ हे विप्र ! आ प्रमाणे ज्यारे दरेक घेर अनेकनां मरण नीपजे छे त्यारे कोनो शोक करवो ? माटे हे ब्राह्मण ! तुं शोक मूकी दे, रुदन न कर, आत्महितनुं चिंतवन कर, तुं पण काळे करीने मरण पामीश. ” त्यारे विप्र फरीथी बोल्यो के—“ हे देव ! आप जे कहो छो ते हुं पण जाणुं छे, परंतु हमणां तो पुत्र रहित थवाथी सारा कुळनो चय थयो छे, तेथी हुं अति दुःखी छु. आप अनाथना नाथ छो अने दुःखीना वत्सल छो तथा आपनो प्रताप अस्खलित छे, तेथी मारा पुत्रने जीवाडी मने मनुष्यनी भिच्चा आपो. ” राजाए कळुं—“ हे भद्र ! आनो प्रतिकार अशक्य छे, जेमां मंत्र तंत्र, औपध के पराक्रम चाली शक्तां नथी एवा अदृश्य विधातारूप शत्रु उपर कयो विद्वान पराक्रम करी शके ? माटे हे विप्र ! तुं शोक मूकी दे. परलोकनुं हित कर. जे मूर्ख होय ते ज मरेलानो के नष्ट थयेलानो शोक करे. ” ब्राह्मण बोल्यो—“ हे महाराजा ! आप कहो छो ते सत्य छे, के पुत्रना मरणथी पण तेना पिताए शोक करवो नहीं, तो आपने पण असंभवित एना शोकनुं कारण थयुं छे, तेथी आप पण शोक करशो

नहीं " ते सांमळी सभांत चिंचे राजाए पूछ्णु के— " हे विप्र ! मारे केवा प्रकारु शोकनु कारण थयु छे ? " त्राळणे वट्टु के— " हे देव ! आपना साठ हजार कुमारे एकी वखते काळधर्म पाम्या छे "

आ वचन सांमळी चक्री जाणे वज्रथी हणायो होय तेम तत्काळ चेतना रहित थद सिंहासनपरथी पृथ्वीपर पडी मूर्छित थया सेवकोए शीतोपचार करी चक्रीनी मूर्छी दूर करी, त्यारे चक्री सुभ्रें कठे रुदन करी आ प्रमाणे विलाप करवा लाग्या के— " हा पुत्रो ! हा हृदयवल्लभो ! हा वधुओने वहाला ! हा शुभ स्वभाववाळा ! हा विनयवत पुत्रो ! हा समग्र गुणोना निधान पुत्रो ! मने अनाथने मूकी तमे केम गया ? तमारा विरहथी पीडायेला मने एकवार तमारु दर्शन आपो हा निर्दय पापी विधाता ! एकी वखते सर्व पुत्रो सो सहार करता तारा शा मनोरथ पूर्ण थया ? हा कठोर हृदय ! पुत्रोना मरखना दसह्य दुःसथी ताप पाम्या छतां तारा सेंकडो ककडा केम नर्था थता ? " आ प्रमाणे विलाप करता चक्रीने ते ज ब्राह्मणे वट्टु के— " हे स्वामी ! तमे हमणां ज मने उपदेश करता हता थने तमे ज केम शोक करो छो ? वट्टु छे के— वीनानु दु ए जोइ ससारनी असारता सुखे करीने कही शकाय छे, परतु ज्यारे पोताना ज वधुचनोना विनाशनु दु ए पोताने प्राप्त थाय त्यारे तेनी सर्व धीरता चाली जाय छे हे देव ! एक पुत्रनु मरण पण दु सह छे, तो एकी साथे साठ हजार पुत्रोना मरणनु शु कहेवु ? तोपण सत्पुत्रो ज व्यसनने—दुःखने सहन करे छे, पृथ्वी न वज्रपातने महन करे छे माटे धैर्यनु अवलचन करी शोकने दूर करो विलाप करवाथी शु फळ छे ? कणु छे के—

शोक करवाथी काँइ रचण थतुं नथी, परंतु उलटो कर्मबंध थाय छे, तेथी करीने संसारतुं स्वरूप जाणनार पंडितो कदापि शोक करता नथी. ” आवां वचनोवडे ते ब्राह्मणे राजाने शांत कर्यो. ते वखते पेला मंत्री अने सामंतोए पण शोक करता करता राजसभामां प्रवेश कर्यो. तेमने राजाए पुत्रोनो वृत्तांत पूछ्यो, एटले तेओए जे रीते वन्युं हतुं तेवी रीते सर्व स्वरूप यथार्थ कही वताव्युं अने प्रधान पुरुषोए राजाने धीरज आपी, एटले राजा अनुक्रमे उचित कार्यमां प्रवृत्त थया.

एकदा अष्टापद पासेना गाममां वसनारा लोकोए आवी चक्रीने प्रणाम करी विज्ञप्ति करी के—“ हे देव ! आपना कुमारोए अष्टापदनी रत्ना मांटे जे गंगानो प्रवाह आण्यो छे ते प्रवाह खाइथी बहार नीकळी वर्धने नर्जिकना गामोने उपद्रव करे छे. तेथी आप ते उपद्रवतुं निवारण करो. कारण के आप सिवाय बीजा कोइनी तेवी शक्ति नथी. ” ते सांभळी चक्रीए पोताना यौत्र भगीरथने कहुं के—“ हे वत्स ! नागराजनी आज्ञा लइ दंडरत्नवडे खेंचीने गंगाना प्रवाहने समुद्रमां लइ जा. ” आ प्रमाणे पितामहनी आज्ञा अंगीकार करी भगीरथ अष्टापद पासे गयो. त्यां तेणे अठम तप करी नागराजनी आराधना करी. त्यारे ते नागराजे प्रत्यक्ष थइ तेने कहुं के—“ हे वत्स ! हुं तने शुं करी आपुं ? ” भगीरथे प्रणामपूर्वक विज्ञप्ति करी के—“ आपनी अनुज्ञा होय तो हुं आ गंगाना प्रवाहने समुद्रमां लइ जाऊं. कारण के अहींना लोकाने तेनो महा उपद्रव छे. ” ते सांभळी नागराजे तेने कहुं के—“ निर्भयपणे तुं तारुं इच्छित कर. हुं भरतखंडमां रहे- नारा नागोने तने उपद्रव करतां अटकावीश. ” एम कही ते नागराज पोताने स्थाने गया. भगीरथे बळिदान अने पुष्पा-

दिकवडे सर्व नागोनी पूजा करी त्यारथी लोकमां नागपूजा करवानी प्रवृत्ति थइ पछी भगीरथे दडरत्नवडे गगाने खेची घणा पर्वतो अने अरण्योने ओळगी पूर्व समुद्रमां उतारी जे ठेकाणे गगा अने सागरनो सगम थयो ते स्थळे गगासागर नामनु तीर्थ थयु प्रथम जन्हुकुमारे गगा नदी आणी तेथी तेनु नाम जान्हवी कहेवाय छे अने पछी भगीरथे समुद्रमां पर्वोचाडी तेथी तेनु नाम भागीरथी पण कहेवाय छे पछी नागोधी पूजातो भगीरथ अयोध्यामां आच्यो तेना कार्यथी प्रसन्न थयेला चक्रीए तेनु बहुमान करी तेने राज्यपर स्थापन कर्यो, अने पाते श्री अजितनाथ स्वामी पासे दीक्षा ग्रहण करी सत्य प्रतिज्ञावाळा सगर राजर्षिए दुस्तप तप करी केवळज्ञान प्राप्त कर्यु, अन अनुक्रमे योंतेर लाख पूर्वनु कुल आयुष्य भोगवी छेवट कर्मनो क्षय करी मोचे गया

एकदा भगरिथ राजाए कीइ शानी मुनिने पूछयु के—“ हे भगवान ! जन्हु विगेरे साठ हजार भाइथो एकी वखते मरण पाम्या तेनु शु कारण ? ते ठपा करीने कहो ” त्पार मुनि बोल्या के—“ हे राजा सांभळो —

एकदा कोइ मोटो सघ समेतशिखरनी यात्रा करवा जतो हतो, ते मार्गमां मोटा अरण्यने ओळगी पासेना गाममां आब्यो ते गाममा सर्वे अनार्य लोको रहेता हता, तेथी तेओए सघने घणो उपद्रव कर्यो अने दुर्वचनो बोली तेमनां वद्ध, अन्न अने धन विगर सर्व लूटी लीधु. आवु महापाप करी ते गामना सर्व लोकोए ते सघी अशुभ कर्म बांध्यु ते वरते त्यां एक भद्रिक परिणामवाळो कुमार रहेतो हतो, तेणे गामना सर्व लोकोने वधु के—“ आ यात्राळ लोकोने तमे उपद्रव

न करो. वीजा कोइ पण निरपराधी जनने उपद्रव करवामां महा पाप छे तो आ धार्मिक जनोने उपद्रव करवामां केटलुं वधुं पाप लागे ? तेथी करीने जो कदाच आ संघनी योग्य भक्ति करवानी तमारी शक्ति न होय तो भले भक्ति न करो, पण उपद्रव शा मोटे करो छो ? ” आ प्रमाणे कही ते कुंभारे गामलोकोने वार्या, तोपण तेओए संघने लुंढ्यो. पछी संघ महाकष्टवडे त्यांथी छूटीने आगळ गयो. एकदा ते गामना रहींश कोइ माणसे पासेना नगरमां जइ चोरी करी. तेनी शोध करतो कोटवाल तेने पगले ते गाम सुधी आव्यो. पछी राजानी आज्ञाथी ते कोटवाल ते गामना दरवाजा बंध करी चोतरफ अग्नि मूकी ते आखुं गाम वाली नांखुं. तेमां साठ हजार माणसो बळी गया. मात्र ते एक कुंभार ज ते दिवसे बहारगाम गयो हतो तेथी ते बच्यो. ते साठ हजार जीवो विराट देशना अंतिम (छेडे रहेला) गाममां कीद्रव नामना धान्यरूपे उत्पन्न थया. ते कोद्रानो एक मोटो ढग कर्यो हतो, तेटलामां त्यां एक मोटो हाथी आव्यो, तेना चरणना मर्दनथी ते सर्वे एकी वखते मरण पाम्या. पछी विविध प्रकारनी अति दुःखवाली योनित्रोमां चिरकाळ सुधी तेमणे परिअमण कर्यु. छेवटे कांइक सुकृत उपार्जन कर्यु तेथी ते सर्वे सगर चक्रीना पुत्रोपणे उत्पन्न थया. ते साठे हजार पुत्रो पूर्वतुं कर्म कांइक वाकी रहेलुं होवाथी तेवा प्रकारनु आकस्मिक मरण पाम्या.

पेलो कुंभार पण ते भवतुं आयुष्य पूर्ण थये मरीने कोइ नगरमां समृद्धिवाळो वणिक थयो. त्यां सुकृत करी मरण पामीने वीजा भवमां राजा थयो. त्यां राज्य भोगवी शुभकर्मना उदयथी मुनिधर्म अंगीकार करी शुद्ध चारित्र पाळी स्वर्गे

१ अरण्यमा मातृवाहक जातिना जीवपणे उत्पन्न थया. एम प्रत्यंतरमा छे.

गयो त्यांथी आपुव्य पूर्णे थये चवीन हे मगीरथ राजा ! तमे अहीं जहुना पुत्र थया छो " आ प्रमाथे शानी मुनिना मुसथी सर्व वृत्तांत सांभळी मगीरथ राजा श्रावक धर्म अगीकार करी पोताने स्थाने गयो

इति सगर चक्री कथा

चइत्ता भारह वास, चकवट्टी महिड्डिओ । पंत्वज्जमट्ठुंगओ, मघव नाम महायसो ॥ ३६ ॥

अर्थ—( महिड्डिओ ) चौद रत्नो, नच निधान, वैक्रिय लब्धि विगेरे मोटी श्रद्धिवाळा अने ( महायसो ) मोटा यशवाळा ( मघव नाम ) मघवा नामना ( चकवट्टी ) त्रीजा चक्रवर्तीए ( भारह वास ) छ एड भरतचेतनो ( चइत्ता ) त्याग करी ( पवज्ज ) प्रज्याने ( अन्धुवगओ ) अगीकार करी ३६.

मघवा चक्रीनी साक्षित कथा —

आ ज भरतचेतनमा श्रावस्ती नामनी नगरीमा लक्ष्मीवडे समुद्रनो विजय करनार समुद्रविजय नामे राजा हतो. तेने भद्रा नामनी राणी हती. एकदा रात्रिने हेल्ले पहेरे ते राणीए चौद महास्वप्नो जोया जोइने तरत ज जागी गयेली राणीए हर्षधी ते वृत्तात राजाने वक्षो राजाए कहू के—“ हे देवी ! आ स्वप्नोधी तु चक्रवर्ती पुत्रने प्रसवीश ” अनुक्रमे गर्भ समय पूर्णे थये राणीए पुत्र प्रसव्यो राजाए मोटा उत्सर्गपूर्वक तेसु मघवा नाम पाडपु ते अनुक्रमे युवापस्था पाम्पो त्यारे समुद्रविजय राजाए तन राज्यपर स्थापन कर्यो ते मघवा राजा राज्य करता हवा तेवामां तेनी आयुधशाळांमां



चक्ररत्न उत्पन्न थयुं. तेवडे ते छ खंड भरतचेत्र साधी त्रीजा चक्रवर्ती थया. पछी घणा काल सुधी राज्यच्छद्धिने भोगवता तेने एकदा संसारपरथी वैराग्य उत्पन्न थयो. तेथी तेणे विचार कर्यो के—“ आ सर्वे रमणीय पदार्थो कर्म-बंधना हेतु छे तथा आस्थिर छे. विद्युत्तना विलासनी जेम क्षणमां नाश पामनारा छे. तेथी मारे हवे आत्मकार्य साधवामां उद्यम करवो योग्य छे. ” इत्यादि विचार करी पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी मघवा चक्रीए प्रव्रज्या ग्रहण करी. अनुक्रमे चारित्र्यनुं पालन करी उग्र तप तपी कुल पांच लाख वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी ते राजपि सनत्कुमार नामना त्रीजा देवलोकमां देव थया.

इति मघवा चक्रीनी कथा.

सैणकुमारो मणुस्सिदो, चक्रवट्टी महिद्धिओ । पुत्तं र्ज्जे ठंवित्ता णं, सो वि राया तंवं चरे ॥३७॥

अर्थ—( महिद्धिओ ) मोटी च्छद्धिवालो अने ( मणुस्सिदो ) मनुष्योनो इंद्र एवो ( सणकुमारो ) सनत्कुमार नामनो ( चक्रवट्टी ) चक्रवर्ती थयो हतो. ( सो वि राया ) ते चक्रीए पण ( पुत्तं ) पुत्रने ( रजे ) राज्यपर ( ठंवित्ता णं ) स्थापन करी ( तवं ) तपनुं-चारित्र्यनुं ( चरे ) आचरण कर्युं हतुं. ३७.

सनत्कुमार चक्रीनी संक्षिप्त कथा.

आ ज भरतचेत्रमां कुस्संगल नामना देशमां हस्तिनापुर नामनुं नगर छे. तेमां अश्वसेन नामे राजा हतो. तेने

सहदेवी नामनी राणी हती तेणीए एकदा रात्रिने छेले पहोरे चौद महास्वप्नो जोयां. ते जोइ राणीए राजाने कलुं, त्यारे राजाए तेणीने चक्रवर्ती पुत्रनो जन्म थशे एम कही आनदित करी. अनुक्रमे सगय पूर्ण थये राणीए श्रेष्ठ पुत्र प्रसव्यो राजाए महोत्सवपूर्वक तेनु सनत्कुमार नाम पाड्यु ते कुमार अनुक्रमे कल्पवृक्षना अकुरानी जेम वृद्धि पामवा लाग्यो ते कुमारानी साथे रमनारो महेंद्रसिंह नामनो तेने मित्र हतो ते वने कलाचार्य पासे साथे ज सर्व कळाओ शीरया अनुक्रमे सनत्कुमार युवावस्था पाम्यो

एकदा वसव ऋतुमां अनेक राजपुत्रो अने नगरना जनो सहित सनत्कुमार क्रीडा करवा माटे उद्यानमां गयो त्यां अश्वक्रीडा करती वखते सर्व राजपुत्रो पोतपोताना अश्वपर आरूढ थइ अश्वक्रीडा करवा लाग्या. ते वखते सनत्कुमार पण पोताना जलधिकसोल नामना अश्वपर आरूढ थयो पछी सर्व कुमारोए पोतपोताना अश्वो दोडाल्या तेमां चिपरीत शिबायाबो सनत्कुमारनो अश्व एटलो वधो वेगधी दोड्यो के जेथी बीजा सर्व कुमारोना अश्वो पाछळ रही गया थोडा समयमां ज कुमार अश्व सहित अदृश्य थयो ते वृक्षांत सांभळी राजा परिवार सहित तेनी पाछळ चाल्यो परतु ते वखते ससत वायु वावा लाग्यो, तेथी अत्यंत धूळ उडयाने लीधे मार्गमां कुमारना अश्वना पगलां पण लोपाइ गयां. तेथी राजा थाकीने निराश थइ पाछो वळ्या

त्यारपछी सनत्कुमारनी शोध माटे राजानी आज्ञा लइ महेंद्रसिंह एकलो ज चाल्यो उन्मांगे चालतां एक मोटा अरण्यमां आय्यो त्यां एक वर्ष सुधी ते चोतरफ भम्यो तेवामां एकदा तेणे एक मोडु सरोवर जोयु तेमा रहेला कमळोना

सुगंधथी ते आनंद पाम्यो. ते वखते थोडेक दूर मधुर गीत अने वेणुनो शब्द तेना सांभळवामां आव्यो. तेथी महेंद्रसिंह ते शब्दने अनुसारे आगळ गयो. तो त्यां केटलीक तरुण स्त्रीओनी मध्यमां रहेला सनत्कुमारने तेणे जोयो. ते जोइ मनमां आर्थ्य पाभी महेंद्रसिंहे विचार कर्यो के—“ शुं आ हुं जोउं छुं ते आंति छे के सत्य छे ? ” आ प्रमाणे ते विचार करतो हतो, तेटलामां तेणे बंदीजनोनी आ प्रमाणे वाणी सांभळी.—“ हे कुरुवंशना अलंकार ! सौभाग्यवडे कामदेवने जीतनार ! अश्वसेन राजाना पुत्र ! हे सनत्कुमार ! तमे चिरकाळ जय पासो. ” आ प्रमाणे सांभळी महेंद्रसिंहे निश्चय कर्यो के—“ आ सनत्कुमार ज छे. ” पछी ते महेंद्रसिंह धीमे धीमे सनत्कुमारनी सन्मुख चाल्यो. पोताना मित्रने सामे आवतो जोइ सनत्कुमार पण हर्पथी तत्काळ उभो थइ तेनी सन्मुख चाल्यो. पासे आवतां महेंद्रसिंह कुमारना पगसां पळ्यो, सनत्कुमारने तेने उभो करी गाढ आलिंगन कर्नु. बन्ने मित्रो अत्यंत हर्षित थया. पछी विद्याधरे आपेला आसन उपर ते बन्ने बेठा, अने विद्याधरो तेमनी पासे सन्मुख बेठा. पछी जेनां नेत्रोमांथी आनंदनां अशु झरतां हतां एवा सनत्कुमारने मित्रने पूछ्युं के—“ हे मित्र ! तुं एकलो आ अटवीसां शी रीते आव्यो ? अने हुं अहीं छुं एम तें शी रीते जाण्यु ? मारा विरहमां मारा मातापिता शुं करे छे ? ” आ प्रमाणे कुमारना पूछवाथी महेंद्रसिंहे सर्व वृत्तांत कुमारने कळ्यो. पछी खान भोजन करी बन्ने मित्रो आनंदथी बेठा.

ते वखते महेंद्रसिंहे कुमारने पूछ्युं के—“ हे कुमार ! ज्यारे तमने ते अश्व हरी गयो त्यारे तमे क्यां गया ? क्यां रखा ? अने आवी समृद्धि शी रीते पाम्या ? ” ते कहो. ते सांभळी सनत्कुमार विचार्युं के—“ मारे मारा मुखथी ज मारुं

चरित्र कहेतु योग्य नथी ” एम विचारी पोते परखेली विद्याधरनी पुत्री चिपुलमती नामनी प्रियाने तेणे सज्ञा करी ‘ ते कहेणे ’ एम मित्रने कळु अने पोते सुइ गयो

त्यारपळी विपुलमती प्रज्ञप्ति विद्याना बळथी कुमारनु वृत्तात जाणी महेंद्रसिंहने कहेवा लागी के—“ ते वरते तमारा देखतां न कुमारने ते अश्व एरु मोटा वनमां लइ गयो रात दिवस निरतर चालतो ते अश्व वीजे दिवसे मध्यान्ह समय सुधी चाब्यो ते वरते भूस अने तरसने लीधे तथा थाकने लीधे ते अश्वना मुखमांथी जिन्हा यहार नीकळी गइ तरत ज ते पृथ्वीपर पळ्यो अने मृत्यु पांम्यो त्यारपळी कुमार तेनापरथी उतरी पगवडे ज चालवा लाग्या अत्यत वृषा लागवाथी जळने मांटे चोतरफ भमवा लाग्या लावा मार्गना श्रमथी तेम ज शरीरना कोमळपण्याथी चालवामा पण ते अशक्त थया तेवामां थोडे दूर एक सप्तच्छद पृथ्व तेना जोवामा थाब्यो त्यां महाकष्टथी पडोची तेनी छायामां बेठा, अने आंते अधारा आववाथी त्यां ज पडो गया आ अवसरे कुमारना पुण्यप्रभावथी वनमां रहेनारा कोइ यचे शीतळ जळ लावी कुमारना सर्व अगे जळ छांटी तेने सचेतन कर्या, पळी कुमार ते जळतु पान करी यचने पूछतु के—“तमे कोण छो ? अने आ जळ तमे क्यांथी लाव्या ?” यचे जवाव आप्यो के—“ हु आ वनमां रहेनार यच छु आ जळ हु मानस सरोवरमांथी लाब्यो छु ” कुमारे कळु—“ जो तमे मने ते सरोवर देखाडो तो हु तेमां खान करी शांत थाड, ” ते सांभळी ते यच कुमारेने पोताना हस्ततळमां राखी मानस सरोवरे लइ गयो त्यां असिताच नामे एक यच रहतो हतो ते कुमारनो पूर्वभवनो वैरी हतो तेथी कुमारेने जोइ ते यच

१ भावविजयजीनी टीकामा बकुलमती नाम आवे छे

क्रोध पाम्यो. तेणे कुमारने कष्टमां नांखवा माटे प्रथम मोटा वृत्ताने पण उखेडी नांखे एवो वायु विकुर्व्यो, अने कुमार उपर एक मोटुं वृत्त उपाडीने नांख्युं, ते वृत्तने कुमारे आवतां ज मुठी मारीने दूर फेंकी दीधुं. पछी यचे धूळवडे आलुं विश्व अंधकारमय करी दीधुं, भयंकर अड्डहासने मूकता, धूमाडा जेवा श्याम शरीरवाळा, जाज्वल्यमान ज्वाळावडे विकराळ मुखवाळा अने भयंकर आकृतिवाळा पिशाचो विकुर्व्यो. तेनाथी पण कुमार भय पाम्या नहीं, त्यारे ते अधम यचे नाग-पाशथी तमारा मित्रने बांधी लीधा. ते नागपाशने तरत ज कुमारे जीर्ण रज्जुने जेम हाथी तोडी नांखे तेम तोडी नांख्या. पछी यच हाथना प्रहारवडे कुमारने मारवा आव्यो, तेने कुमारे एक मुठी मारी पाडी दीधो. तरत ज यचे सावधान थइ अत्यंत क्रोधथी कुमारने लोहना मुद्गरवडे प्रहार कर्गो. ते प्रहारथी छेदायेला वृत्तनी जेम आर्धपुत्र पृथ्वीपर पडी गया. तेनापर ते पापी यचे मोटो पर्वत उपाडीने नांख्यो. तेनाथी कुमारनुं शरीर अत्यंत पीडावाथी ते मूर्छी पाम्या. थोडा वखत पछी सावधान थइ कुमार ते यचनी साथे बाहुयुद्ध करवा लाग्या. तेमां कुमारे हाथरूपी मुद्गरथी ते यचने एवो प्रहार कर्गो के ते यच तत्काळ प्रचंड वायुथी हणायेला वृत्तनी जेम पृथ्वीपर पडी गयो अने जाणे मृत्यु पाम्यो होय तेम चेष्टा रहित थइ गयो, परंतु देव होवाथी ते मरण पाम्यो नहीं. पछी ब्रूम पाडीने ते यच एवी रीते नाशी गयो के फरीथी कोइ पण वखत ते देखायो ज नहीं.

ते वखते जे विद्याधरो कौतुकथी तेमनुं युद्ध जाता हता. तेओए कुमारना मस्तक उपर पुष्पवृष्टि करी अने बोल्या के-  
“आ कुमारे यचनो पराभव कर्गो.” त्यारपछी कुमारे इच्छा प्रमाणे ते सरोवरमां क्रीडापूर्वक खान कर्गुं. त्यांथी बहार

नीकळी कुमार आगळ चान्या तेटलामां धोंडे दूर जर्ता ते ज वनमां रहेली विद्याधरोनी आठ पुत्रीओ तेना जोवामां आवी. ते कन्याओए पण कुमारने स्नेहयुक्त दृष्टिवळे जोया ते वसुते कुमारे विचार्युं के—“ आ कयाओ अही कयाथी आवी हयो ? तेमनो वृत्तांत हु पृथ्वी जोड ” एम विचारी कुमार तेमनी पासे गया अने मधुर वाणीथी तेमने पूछ्यु के—“ हे बाळओ ! तमे कयांथी आवी छो ? अने आ शून्य अरण्यमां केम रही छो ? ” तेओ बोली के—“ हे भाग्यशाळी ! अही पासे ज प्रियसगमा नामनी अमारी नगरी छे तमे पण त्यां चालो ” एम वही दासीए कुमारने मार्ग बताव्यो, ते मार्गे कुमार नगरीमां गया. त्यां कचुकी पुरपो हुमारने राजमदिरमां लइ गया ते नगरीमां भानुवेग नामे राजा छे तेणे कुमारने जोइ उभा थइ आसन आपी तेनो सत्कार कर्यो पछी राचाए कुमारने कछु के—“ हे भाग्यवत ! तमे आ मारी आठ कन्याना पति थाओ कारण के पहेला अही एक अर्चिमाळी नामना मुनि आब्या हता तेमणे मने कछु हतु के—“ असिताच नामना यवनो जे पराभव वश्ये ते आ आठे कयाओनो स्वामी थये. माटे तमे आ कन्याओने परखो ” ते सांभळी कुमारे तेनु वचन अगीकार कर्युं एटले राजाए मोटा उत्सवपूर्वक पोतानी आठे पुत्रीओ साथे तेनां लग्न कर्यां. ते ज रात्रिण हाथे बांधिला ककण सहित कुमार ते आठे प्रियाओनी साथे शयनगृहमां पर्यक उपर सुता हता त्यांथी तेने उपाडी पेली यत्ने दूर फेंकी दीधा यात काळे कुमार जागीने जुए छे तो तेणे पोताने अरण्यमां पृथ्वीपर पडेलो जोयो तेथी आश्चर्य पामी कुमारे विचार्युं के—“ आ सर्व विवाहादिक सत्य के असत्य छे ? ” एम विचारतां हाथपर दृष्टि गांखी तो हाथे ककण बांधेलु जोयु पछी खेद पामी कुमार ते ज अरण्यमा आगळ चान्या केटलेक दूर गया त्यारे तेणे एरु पर्वतना

शिखरपर माण्डिमय स्तंभवाळी एक मनोहर प्रासाद जोयो. ते जोइ कुमारे निचार्युं के—“ आ पण कोइ माया ज हशे. ” एम विचारी कुमार ते तरफ चाल्या. पासे जतां कुमारे ते महेलमां कण्णखरे रोती कोइ स्त्रीने शब्द सांभळ्यो. पछ्वा कुमार ते महेलमां पेठा, अने अनुकमे सातमे माळ पर्होच्या. त्यां तेणे एक कन्याने रोती जोइ. ते कन्या रोती रोती वोलती हती के—“ कुरुवंशरूपी आताशतळमां चंद्र समान हे सनत्कुमार ! आ भवमां तमे मारा पति न थया तो आजता भवमां मारा भर्ता थजो. ” एम वारंवार वोलती ते रुदन करती हती. कुमारने जोइ तेणीए रोतां रोतां ज तेने आसन आप्णुं. कुमारे तेनी उपर व्रेसी ते कन्याने पूछ्युं के—“ हे भद्रे ! सनत्कुमारनी साथे तारे शो संबंध छे के जेथी तुं तेनुं आ प्रमाणे खरण करे छे ? ” त्यारे ते बोली के—“ ते कुमार मारा मनोरथ मात्रथी ज भर्ता छे. ते एवी रीते के—“ सांकेतपुरमां सुरथ नामे राजा छे अने तेने चंद्रयशा नामनी राणी छे. तेनी कुक्षिथी उत्पन्न थयेली हुं सुनंदा नामनी तेमनी पुत्री छुं. हुं युवावस्थाने पामी त्यारे मारा पिताए मारे माटे अनेक राजपुत्रीनां चित्रो दूतो मारफत मंगावी मने देसाड्यां. परंतु कोइ पण राजपुत्र तरफ मारुं मन आकर्षायुं नही. एरुदा सनत्कुमारनुं चित्र दूते लावीने मने देसाड्युं. ते जोइ मारुं चित्त आनंद पाम्युं. मने तेनापर अत्यंत मोह थवाथी तेनुं ज ध्यान धरती हुं मारे घेर रहेली हती. तेटलामां मने कोइ विद्याधर कुमार हरीने अहीं लाव्यो, अने मने अहीं विद्याथी निकुर्वेला महेलमां मूकी पोते कोइक ठेकाणे गयो छे. ” आ प्रमाणे ते कन्याए पोतानो वृत्तांत कळो, तेटलामां तेने उपाडी लाननार अशनिवेग निद्याधरनो पुन वञ्चनेग त्यां आव्यो. तेणे कुमारने जोइ क्रोध पाभी तेने आकाशमां उछाळ्या. ते जोइ ते कन्या हाहाकार करती मूर्छा साइ पृथ्वीपर पडी, तेटलामां

सनत्कुमारे आकाशमांधी पाछा आवी ते विद्याधर कुमाराने एक सुठीना प्रहारथी ज मरणने शरण कयों पछी कुमारे ते कन्याने पोतानो घृचांत कही तेनु पाणियग्रहण कयुं ते सुनदा आगळ जतां सनत्कुमारनु खीरत्न थइ

त्यारपछी त्यां ते चद्रवेगनी बहेन सध्याचळी आवी तेथी प्रथम तो पोताना भाइने भारेलो जोइ कुमारपर अत्यंत कोप पामी, पण पछी तरत ज तेने निमित्तियानु कहेलु वचन याद आब्यु के—“ तारा भाइनो जे वध करशो, ते तारो पति थरो. ” आ वचन स्मरणमां आववाथी शांत थयेली तेथीए कुमारने विज्ञप्ति करी के—“ हे स्वामी ! हु अर्ही तमारी साये लग्न करवा आवी हु, मांटे मने अगीकार करो ” त्यारे कुमार तेथीने पण त्याज परएया था अवसरे कुमारेनी पासे वे विद्याधर राजाचो आब्या तेचोच्रे कुमारने प्रणाम करी कलु के—“ हे देव ! अशानिनेग विद्याधरे विद्याना चळयी पोताना पुत्रनु मरण जाण्यु छे तेथी ते तमारी साथे युद्ध करवा आवे छे. था घृचांत तमने जणाववा मांटे चद्रवेग अने भानुवेग नामना विद्याधरोच्रे पोताना पुत्रो हरिश्चंद्र अने चद्रवेग नामना अमने वेने तमारी पासे मोकळ्या छे अने था कचच तथा रथ तेमणे मोकळ्या छे तथा ते वने भाइचो चद्रवेग अने भानुवेग के जे तमारा ससरा थाय छे तेचो पण मोटा सैय सहित हमयां ज तमारी सेवा करया मांटे अर्ही आवे छे ” आ प्रमाणे तेचो वात करता हता तेदलासां ते चद्रवेग अने भानुवेग पण सैय सहित आवी पडोब्या पछी सध्याचळीए पोताना पति सनत्कुमाराने प्रज्ञप्ति नामनी महाविद्या आपी त्यारपछी चद्रवेग अने भानुवेग सहित सनत्कुमार सग्राम करवा चाब्यो,



तेटलासां ते अशनिवेग मोडुं सैन्य लइ तेनी सन्मुख आव्यो. तेनी साथे प्रथम चंद्रवेग अने भानुवेग युद्ध करवा लाग्या. तेमणे चिरकाळ युद्ध करी अशनिवेगनु सैन्य भांगुं, त्यारे अशनिवेग पोते युद्ध करवा लाग्यो. तेनी सामे सनत्कुमारें पोते युद्ध कर्युं. तेमां अशनिवेगे प्रथम कुमार उपर महारग शस्त्र मूक्युं, तेने कुमारें गरुडास्र वडे कापी नांख्युं. फरीथी अशनिवेगे आग्नेय शस्त्र मूक्युं, तेने कुमारें वारुणास्र वडे कापी नांख्युं. फरीथी तेणे वायवास्र मूक्युं तेने कुमारें शैलास्र वडे कापी नांख्युं. पक्षी अशनिवेग घनुप लइ कुमार उपर वायोनी वृष्टि करवा लाग्यो, त्यारे कुमारें अर्धचंद्र वाण मूकी तेना घनुपनी प्रत्यंचा ज कापी नांखी. त्यारपक्षी हाथमां खड्ग लइ ते अशनिवेग कुमार तरफ दोडयो, तेना आवतांनी साथे ज तमारा मित्रे तेनो हाथ कापी नांख्यो. तोपण क्रोधथी अंध थयेलो ते अशनिवेग कुमार सामे दोडयो त्यारे विद्याए आपेला चक्रवडे आर्यपुत्रे तेनुं मस्तक छेदी नांख्युं. ते वखते ते विद्याधर राजानी सर्व राज्यलक्ष्मी प्रतिवासुदेवनी लक्ष्मी जेम वासुदेव पासे जाय तेम मारा पतिने प्राप्त थइ.

आ प्रमाणे अशनिवेगने हत्थी चंद्रवेग अने भानुवेग सहित सनत्कुमार आकाश मार्गे रथमां वेसी ते महलमां आव्या. त्यां जय मेळवीने आवेला पोताना पतिने जोइ हर्षित थयेली सुनंदा अने संध्यावलीजे तेनुं स्वागत कर्युं. पक्षी ते वने प्रियाओने साथे लइ मारा पति चंद्रवेगादिक सहित चैताढ्य पर्वतपर आव्या. त्यां सर्व विद्याधरोए मळी कुमारनो महा-राज्याभिषेक कर्यो. त्यां विद्याधर राजाओथी सेवाता तमारा मित्र केटलोक वरात सुले रला.

एकदा मारा पिता चंद्रवेगे कुमारने विज्ञप्ति करी के—“ हे स्वामी सनत्कुमार ! पहिलां अर्चिमाळी नामना ज्ञानी

मुनिए मने कहु हतु के-तारी सो कन्याने तथा मानुवेगनी आठ कन्याने जे परणशे ते सनत्कुमार अवरय चौथा चक्र वर्ती थशे ते आजथी एक महिने मानससरोवर आवशे, तापथी अने श्रमथी व्याकुळ थयेला तेने असिताछ नामनो पूर्व भवनो वैरी यच्च जोशे " आटलु सामळी कुमारे चद्रवेगने पूछ्यु के— " ते यच्च मारो पूर्व भवनो वैरी शी रीते थयो छे ? ते तमे जायता हो तो कहे, " त्यारे चद्रवेगे मुनिना मुखथी तेनो पूर्व भत्र सांभळ्यो हतो, तेथी तेये आ प्रमाणे तेनो पूर्व भव कळो

आ भरत चेत्रमा काचनपुर नामनु नगर छे, तेमां पराक्रमवडे पृथ्वीनु आक्रमण करनार विक्रमयथा नामे राजा हतो ते राजाने विश्वमां मनोहर एवी पांच सो राणीओ हती, ते नगरमां नागदत्त नामे एक धनवान सार्थवाह हतो तेने रूप, लावण्य, सौभाग्य अने यौवनना गुणोवंड देवांगनानो पण परामव करनारी विष्णुश्री नामनी भार्या हती एकदा राजाए ते मनोहर स्त्रीने जोइ कामातुर यवाथी तेणीनु हरण करी तेणीने पोताना अत पुरमा राखी पोतानी प्रियानु हरण कर्युं जापी वियोगथी व्याकुळ थयेलो नागदत्त रात्रिदिवस चिंता करवाथी उमत्त थइ प्रलाप करवा लाग्यो के— " हा चद्रमुखी ! तु कयां गइ ? मने दर्शन आप " इत्यादिक बोलतो ते नगरमां गमवा लाग्यो विक्रमयथा राजा समग्र लोकापवादनो त्याग करी निर्लज पये ते विष्णुश्रीनी साथे क्रीडा करवा लाग्यो तेमां एवो लीन थइ गयो के पोताना अत पुरमां रहेली पाचसो राणीओमांथी कोइनु नाम पण लेतो नहोतो एकदा ते सर्व राणीओए विचार करी काइ कामे यादिक करी ते विष्णुश्रीने मारी नाखी तेणीना भरण्या राजा अत्यंत शोकातुर थयो, ते पण नागदत्तनी जेम उमत्त

थयो, तेथी विष्णुश्रीना शरीरने अग्निदाह करवा दीधो नहीं. तेथी मंत्रीओए विचार करी राजानी दृष्टि चूकावी ते विष्णु-  
श्रीतुं शरीर त्यांथी उपडावी एक अरण्यमां मूकाव्युं. तेतुं शरीर नहीं जोवाथी राजाए अन्न जळनो त्याग कर्यो. ते जोह  
मंत्रीओए विचार्युं के— “आ राजा ! विष्णुश्रीतुं शरीर जोया विना मरण पामशे.” एम विचारी राजाने वनमां लइ जइ  
तेओए तेतुं शरीर नतान्युं. ते वखते ते शरीरमांथी दुर्गधी पाणी नीकळतुं हतुं, आखा शरीरमां कीडा पडी गया हता, गीध  
पक्षीओए तेना स्तन ठोली नांख्या हता, कागडाओए तेनां नेत्रो काढा नांख्यां हतां, शीयाळोए तेनां आंतरडां खेची  
काढयां हतां, अने आखे शरीरे माखीओ बणवणती हती. आतुं विष्णुश्रीतुं वीभत्स शरीर जोइ राजाए विचार कर्यो के  
“अहो ! आ असार संसारमां कांइ पण सारवाळी वस्तु देखाती नथी. में आ विष्णुश्रीना शरीरने चिरकाळ सुधी सार-  
रूप मान्युं हतुं ते मारी मूढताने धिकार छे. रे जीव ! जेने मांटे तें कुळ, शीळ, यश, लज्जा ए सर्वनो त्याग कर्यो, तेनी  
आज आवी दशा थइ, ते हे उन्मत्त ! तुं जो. प्रिया मानीने जेने एक क्षणवार पण में मारा शरीरथी दूर करी नहोती  
तेने पण जोइने अत्यारे मारुं शरीर जाणे टाढ चडी होय तेम कंपे छे. हवे आ पापरूपी पंकथी मलिन थयेला मारा आ-  
त्माने धर्मक्रियारूपी जळवडे मारे निर्मळ करवो योग्य छे.” आ प्रमाणे विचार करी वैराग्य पामी राजाए राज्य, देश,  
अंतःपुर अने स्वजनवर्ग ए सर्वनो त्याग करी सुव्रत नामना आचार्य पासे जैनी दीक्षा ग्रहण करी. पक्षी उपवास, छड्ड,  
अष्टम विगेरे विचित्र तपवडे आत्माने भावता ते राजपिं छेवंटे संलेखना करी आयुष्यने चये सनत्कुमार नामना त्रीजा देव-  
लोकमां देव थया. त्यांथी आयुष्य पूर्ण थये चवीने रत्नपुर नामना नगरमां जिनधर्म नामे श्रेष्ठीपुत्र थयो. ते वाल्या-

वस्थायीज श्रावकधर्मनु पालन करतो हतो

अहीं नागदत्त सार्धवाहे विष्णुश्री पत्नीना विरहथी दुःख पामी आर्तिध्यानथी मरण पामी अनेक वार तिर्यंच योनिमा भ्रमण कर्षुं पछी सिद्धपुर नामना नगरमां ते अग्निशर्मा नामनो ब्राह्मण थयो एकदा पुण्यनी आशायी ते त्रिदडी थयो पछी द्विमासादिकनो तप करतो ते फरतो एकदा रत्नपुर नगरे आव्यो त्या ते वखते नरवाहन नामे राजा हतो, ते त्रिदडीनो भक्त हतो तेथी आ तपस्वी छे एम जाणी राजा पोताने घेर तेने पारणु करवा लइ गयो ते चखते त्यां देवयोगे जिनधर्म आवेलो हतो तेने ते त्रिदडीए जोयो तेने जोतां ज तत्काळ पूर्वभवना वेत्ने लीघे ते त्रिदडी तेना पर अत्यत क्रोध पाम्यो पछी त्रिदडीए राजाने कहु के—“ हे राजा ! अत्यत उष्ण पायसनो भरेलो थाळ आ श्रेष्ठीनी पीठपर मूकी मने जमाडो तो हु जसु ” ते सांमळी राजाए कहु—“ हे पूज्य ! वीजा कोइ माणसनी पीठपर थाळ मूकीने तमने हु जमाडु, पण आ श्रेष्ठीने मांटे तमे आग्रह न करो ” ते सांमळी क्रोध पामेला त्रिदडीए फरीथी फणु के— “ आनी ज पीठपर थाळ मूकीने जर्माश, नहीं तो अही जर्माश नहीं, बीजे ठेकाणे जइश ” ते सांमळी राजा तेनो भक्त हतो, तेथी तेणे तेनु वचन अगीकार कयुं पछी राचानी आज्ञा थवाथी श्रेष्ठीए पोतानी पीठ तेनी पासे घरी, एटले ते तापम तेनापर अत्यत उष्ण पायसनो थाळ मूकी खावा लाग्यो ते विशुद्ध युद्धिवाळा श्रावके पण ते थाळनो ताप शांतिथी सहन कर्यो, अने ‘ आ पोताना ज कर्मनो विपाक—उदय छे ’ एम विचारी पोते समभावमां रसो ज्यारे ते त्रिदडी जमी रखा त्यारे राजाना सेवकोए श्रेष्ठीनी पीठपरथी ते थाळ लइ लीघो—उपाडयो, तेनी साथे ते श्रेष्ठीनी पीठनी

त्वचा, रुधिर अने मांस पण उखळी ग्यां. त्यारपछी शेठ पोताने घेर गयो. त्यां स्वजनो तथा नगरजनो नो गथायोग्य सत्कार करी ते सर्वने समावी जिनधर्मे तत्काळ गुरुपासे जइ जैनी दीक्षा ग्रहण करी. पछी नगर बहार जइ पर्वतना शिखर-पर चडी ते मुनि अनशन करी पंदर दिवस सुधी पूर्वदिशा सन्मुख कार्योत्सर्गे उभा रखा. ए रीते एक एक पखवाडीयुं अनुक्रमे वीजी त्रय दिशामां कार्योत्सर्गे रखा. ते वखते तेनी पीठनुं मांस कागडा, शीयाळ विगेरे खावा लाग्या, तेनी तीव्र वेदना सहन करी मरण पामिने सौधर्म देवलोकमां इंद्र थया. ते तापस पण मरण पामी पोते करेला आभियोग्य कर्मवडे ते ज इंद्रनुं वाहन ऐरावण हाथी थयो. त्यांथी चवीने ते त्रिदंडीनो जीव मनुष्य अने तिर्यचोमां भ्रमण करी हाल आसिताच नामनो यत्न थयो छे, अने इंद्र पण त्यांथी चवी हस्तिनापुरमां सनत्कुमार नामे चक्री थया छे. आ प्रमाणे ते मुनिना कहेवार्थी में तमारो पूर्वभव तमने कळो. तथा असिताच यचना वरनुं कारण पण कळुं.

तो हे स्वामी सनत्कुमार ! मानुवेगनी आठ कन्या तमे परण्या छो. हवे मारी सो कन्याओने परणी मने कृतार्थ करो. ” आ प्रमाणे चंद्रवेगनुं वचन सांभळी कुमारे तेनी मागणी अंगीकार करी. एटले मारा पिता चंद्रवेग कुमारने लइ पोताना नगरमां आव्या. त्यां तमारा मित्र हुं विगेरे सो कन्याओने परण्या. त्यांथी कुमार सो पत्नीओने लइ अर्हीं आव्या अने कुल एक सो ने दश प्रियाओ साथे भोग भोगववा लाग्या. त्यारपछी आजे कुमारे कणुं के—“ अमे यत्ने जे ठेकाणे जीत्यो हतो त्यां आजे जनुं छे. ” एम कही ते अमने सर्वने लइ अर्हीं आव्या. अर्हीं रहेला कुमार नाटक जोता हता तेटलामां हे महेंद्रसिंह ! तमे अर्हीं आवी प्होंन्च्या एटले तमने कुमारनो तथा अमारो मेळाप थयो. ”

आ प्रमाणे विपुलमतीए महेंद्रसिंहने कुमारनो सर्व वृत्तांत कसो, वेदलामां सनत्कुमार जागृत थया पछी महेंद्रसिंहने साथे लइ कुमार सर्व विद्याधरो अने परिवार सहित वैताल्य पर्यंतपर गया. त्यां अयसर पामीने महेंद्रसिंहे कुमारने विज्ञप्ति करी के-  
 “ हे कुमार ! तमारा मातपिता तमारा विरहथी महाकष्टे काळ निर्गमन करे छे माटे तेमना दर्शन माटे प्रसन्न थइने त्यां पधारो ” आ प्रमाणे मित्रनुं वचन सामळ्तां ज कुमार मातापितानां दर्शन करवामां उत्कण्ठित थयो तेथी तरत ज सर्व प्रियाओ अने मित्र सहित कुमार अनेक विद्याधरोने साथे लइ सरयाधय विमानोचडे आकाशमां सेंकडो घरोने देसाडवो चाब्यो आकाश मार्ग अनेक हस्ती अने अश्वदिकपर आरूढ थइ इदनी फरता देवोनी जेम अनेक विद्याधर राजाओ पोतपोताना सैन्य सहित कुमारनो फरता चालता हता ते वरते वाजित्रीना शब्दवडे आकाश शब्दमय थइ रलुं हतु आ रीते मोटा उत्सव सहित कुमार हस्तिनापुरमां आब्या त्यां पोताना दर्शनथी कुमार मातापिताने तथा पुरजनोने अत्यंत आनंद आप्यो कुमारनी आवी असाधारण समृद्धि जोइ अश्वसेन राजा वाणीधी कही न शकय तवो हर्ष अने विस्मय पाम्या. पछी राजाना पूछवाथी महेंद्रसिंहे कुमारना अने पोतानो सर्व वृत्तांत कही राजा विगेरे मर्वने आनर्घ्ये पमाट्या त्यारपछी अश्वसेन राजाए कुमारने पोताना राज्यपर स्थापन कर्या अने महेंद्रसिंहने तेना सेनापतिनुं पद आप्यु पछी राजाए पोते श्री धर्मनाथ स्वामीना तीर्थना स्थधिर मुनिनी पासे वैराग्यथी चारित्र ग्रहण करी पोतानो जन्म ठुतार्थ कर्यो

अनुक्रमे सनत्कुमार राजा राज्य करता हता ते वरते तेने चक्र विगेरे चौद रत्नो प्राप्त थयां त्यारपछी चक्रना मार्गने अनुसरीने भरतचेरना छ एउ साधी तथा नव नियान प्राप्त करी एक हजार वर्षे सनत्कुमार पोताना पुरमां पाछा आब्या

पछी ज्यारे ते राजा पुरप्रवेश करता हता ते वसते सौधर्म इंद्रे अवाधिज्ञानथी जाणुं के—“ पूर्वं भवमां आ राजा अर्हाज मारे स्थाने मारी जेवा ज इंद्र हता. ” एम विचारी तेमनापर अत्यंत स्नेह अवाथी इंद्रे कुचेरने आज्ञा करी के—“ आ चोथा चक्रवर्ती मारा मित्र छे, तेथी त्यां जइने तेनो राज्याभिषेक करो. ” आ प्रमाणे कही इंद्रे चक्रवर्तीने आपवा माटे धनदने वे चामर, छत्र, हार, मुगट, वे कुंडळ, सिंहासन, पादपीठ, वे देवदूष्य वस्त्रो अने वे पादुका एटली चीजो आपी, तथा रंभा अने तिलोत्तमा धिगेरे अप्सराओने धनदनी साथे मोकली. ते सर्व लइ धनद हस्तिनापुर गयो, अने चक्रीनी पामे पोताने इंद्रे करेली आज्ञा निवेदन करी. पछी चक्रीनी अनुमति लइ धनदे एक योजन विस्तारवाळी माणिक्यनी पीठ विकुर्ची, तेना-पर मणिमय मंडप कर्चो, तेनी वच्चे मणिना पादपीठ सहित भिंहासन मूक्युं, देवो पासे वीरसागरनुं जळ मंगाव्युं, पछी बहुमान पूर्वक चक्रीने ते सिंहासनपर वेसाडी इंद्रे मोकलेली सर्व वस्तु तेनी पासे भेट मूकी, अने वीरसागरना जळवडे सर्व देवोए तेनो चक्रवर्तीपणानो अभिषेक कर्चो. ते वसते देवताओ मंगळयाजित्रीना शब्द करवा लाग्या, किन्नरनां भियुनो मंगळ गीतो गावा लाग्या अने रंभा तथा तिलोत्तमा धिगेरे अप्सराओ नाटक हरवा लागी. पछी चक्रीने दीव्य वस्त, आभू-पण अने विलेपनादिकवडे शयगारी हस्तीपर वेसाडी नगरमां प्रवेश कराव्यो. पछी रत्नादिकनी दृष्टिवडे पोतानी अलका-नगरी जेवुं ते पुर करी धनद चक्रीनी रजा लइ सर्गं गयो. त्यारपछी सर्व राजाओए चार वर्ष सुधी तेनो चक्रवर्तीपणानो महोत्सव कर्चो. सनत्कुमार चक्री न्यायने प्रजांचुं पालन करवा लाग्या अने मनोहर प्रियाओ साथे पांच इंद्रियोना सुस भोगवता तेणे घणा वर्षेनि दिवसनी जेम व्यतीत कर्चो.

एकदा सुधर्मा सभामा रहेला इद्र सौदामिन नामनु नाटक करावता हता, ते वसते ईशान देवलोकमाथी सगम नामनो देव सुधर्मा सभामां आव्यो तेनी रूपकातिवडे सर्व देवोनी काति ढकाइ जइ झांखी पडी गइ पखी ज्यारे ते देव त्याथी गयो त्यारे सर्व देवोए आश्चर्य पामी शक्र इद्रेने पूछु के—“ हे स्वामी ! आ देवनु रूप अने तेज सर्व देवोना रूप अने तेजना गर्वने हरण करे तेनु केम छे ? ” इद्रे कछु के—“ आ देवे पूर्वमवमां आचान्तवर्धमान नामनो तप कयो हतो, तेथी तेनु रूप अने तेज उत्कृष्ट छे ” फरी देतोए पूछु के—“ त्रण भुवनमां बीजो पण कोइ उत्कृष्ट रूप अने तेनवाळो छे ? ” इद्रे कछु—“ भरतचेत्रमा हस्तनापुरने विपे सनत्कुमार चक्री छे, तेनु रूप अने तेज देवोथी पण अधिक छे ”

आवा इद्रेना वचनपर श्रद्धा नहीं थवाथी विजय अने वैजयत नामना बे देवो तेना रूपने जोवा माटे विग्रनु रूप लइ चक्रीना महेल पासे आव्या ते वसते चक्रीए स्नान करवानु प्रारभ्यु हतु, तोपण द्वारपाळनी विनतिथी राजाए ते परदेशी ब्राह्मणेने पोतानी पासे बोलाव्या ते वखते इद्रेना वक्षा कर्ता पण तेनु अधिक रूप जोइ ते देवो विस्मय पाम्या, अने बोल्या के—“ अहो ! आ राजानु तेज सूर्यथी पण अधिक छे, आना जे जे अग उपर दृष्टि स्थापन करीए छीए ते ते अगमां जाणे चोटी गइ होय तेम ते दृष्टि महाकष्टे रोंची शकाय छे, इद्रे आना रूपनु जे वर्णन कर्तुं ते जरा पण मिथ्या नथी आपणे तेना वचनपर अश्रद्धा करी हती पण आजे आनु रूप जोवाथी आपणे कृतार्थ थया छीए अने इद्रेना वचनो सत्य हता एवी प्रतीति थइ छे ” पखी चक्रीए तेमने पूछु के—“ हे त्रिप्रो ! तमे शा कारणथी अहीं आव्या छो ? ” त्यारे तेथो बोल्या के—“ हे महाराजा ! जगतमां आपना रूप अने तेननी प्रशसा सांभळी अमे ते जोवा माटे ज अहीं



आव्या छीए, अने अमे तमारुं रूप जेहुं सांभळ्युं छे तेहुं ज नलके तेथी पण अधिक अत्यारे प्रत्यक्ष जोइए छीए. ” ते सांभळी राजाए रूपना गर्वथी कयुं के—“ हे उत्तम ब्राह्मणो ! अत्यारे स्नान वखते तमे मारुं रूप जुओ छो तेमां शी शोभा होय ? परंतु स्नानादिक करी वल्ल आभूषण धारण करी जे वखते हुं सभामां वेठो होउं ते वखते तमारे मारुं रूप वरावर जोहुं. ” एम कही ते विप्राने बीजे ठेकारे मोकली पोते स्नान करी वसालंकारवडे शरीर शणगारी सभामां जइ सिंहासनपर वेठा. पछी राजाए ते विप्राने बोलाव्या. तेओए आची राजानुं रूप जोयुं तो प्रथमना करतां घणुं ज निस्तेज जोयुं, तेथी तेओ खेद पामी विचारवा लाग्या के—“ अहो मनुष्यनुं रूपादिक सर्व अति चंचल छे. ” तेमने खेदयुक्त जोइ राजाए पूछ्युं के—“ पहलां मने जोइने तमे हर्ष पाम्या हुता अने अत्यारे तमारुं मुख श्याम केम देसाय छे ? ” त्यारे तेओ बोल्या के—“ हे राजा ! अमे देवो छीए. इंद्रे वर्णन करेला तमारा रूप उपर अद्वा नहीं थवाथी तेनी परीचा करवा माटे आव्या छीए. पहलां स्नान करती वखते तमारुं रूप इंद्रे कहेलाथी पण अधिक जोइ अमे हर्ष पाम्या हुता, परंतु अत्यारे तेहुं नथी तेथी रोदयुक्त थया छीए. आटला अल्प कालमां ज तमारा शरीरमां व्याधिओरूपी राक्षसो उत्पन्न थया छे, तेथी तमारुं रूप, लावण्य अने कांति विगेरे झांसां पडी गयां छे. ” आ प्रमाणे कही ते देवो तत्काल अदृश्य थइ गया.

चक्रीए पोताना शरीरपर दृष्टि नांसी तो धूळथी ढंकायेला स्वर्णनी जेम तेणे पोतानुं शरीर निस्तेज जोयुं. ते वखते तेणे विचार कर्यो के—“ जे शरीरने विविध प्रकारना व्याधिओ वाधा करे छे, तेवा शरीर उपर पंडितोए शी अद्वा

राखी ? जे रूपादिक गुणो व्याधिथी मय पाम्या होय तेम नाशी जाय छे, ते रूपादिकनो गर्व डालो माणस केम करे ? जे विषयो निरतर सेवाता छतां पण चणवारमां जाणे रोप पाम्या होय तेम नष्ट घई जाय छे, ते विषयोपर बुद्धिमान जनो शो मोह राखे ? जे परिग्रहथी वैराग्य अने विनय विगेरे गुणो नाश पामे छे तेवा परिग्रह उपर पडितो नो आग्रह क्यांथी होय ? तेंथी करीने आज काल नाश पामनारा आ शरीरादिक उपरनी ममत्वानो त्याग करी शाश्वत सुख आपनार चारित्रनो हु स्वीकार करू ” इत्यादिक विचार करी चक्रीए पोताना राज्यपर पोताना पुत्रने स्थापन करी विनयधर दुरिनी पासै दीक्षा ग्रहण करी

चक्रीउपरना गाढ खेहने लीधे सर्वे रत्नो, सर्वे राणीओ, सर्वे राजाओ, सर्वे निधिओ, सर्वे यज्ञो अने सर्वे प्रधानो तेनी पाछळ छ मास सुधी फर्यो अने कहेवा लाग्या के—“ हे स्वामी अपराध विना तमे अमने केम तजो छो ? ” ते सो भळीने राजर्षिए सिंहावलोकननी जेम पाछळ दृष्टि करीने तेमनी ससुख जोशु पण नहीं छेचट थाकीने ते सर्वे पोतपोताने स्थाने गया उग्र तपस्या करता एवा ते राजर्षि छहने पारणे गोचरी गया. त्यांथी चणा अने धकरीना दूधनी छाश तेमने मळी ए रीते निरतर छहने पारणे अतप्रात-नीरस आहार करवाथी तेमना शरीरमां-फइ १, कुचिपीडा २, नेत्रपीडा ३, कास ४, श्वास ५, ज्वर ६ अने अरचि ७ ए सात व्याधिओ उत्पन्न थया तेने तेणे सातसो वर्ष सुधी सहन कर्यो ए रीते चीना पण सर्वे परीपहोने सहन करता, तीत्र तप करता अने कोइ साथ वार्ता मात्र पण नहीं करता ते राजर्षिने मलौपधि १, आमर्षापधि २, शकृदौपधि ३, मृत्रापधि ४, कफापधि ५, सर्वपधि ६ अने सभिन्नश्रोत ७ ए नामनी सात लब्धिओ प्राप्त

थइ. तोपण ते महर्षिंए पोताना व्याधिनी कांडपण चिकित्सा करी नहीं.

एकदा शक्र इंद्रे सुधर्मा सभामां सर्व देवो समक्ष कर्तुं के—“ अहो ! आ सनत्कुमार महर्षिंतु धैर्य मेरुपर्वतथी पण अधिक छे के जे चक्रवर्त्तीनी लक्ष्मीनो त्याग करी उग्र तप करे छे. रोगरूपी अग्निने बुझववामां मेघनी माळा समान अनेक लब्धिओ पाम्या छतां पण कायाने विपे तहन निस्पृह थयेंला ते मुनि पोताना व्याधिनी चिकित्सा पण करता नथी. ” आवा इंद्रना वचनपर श्रद्धा नहीं थवाथी प्रथमना ज बे देवो वैधनुं रूप करी ते राजर्षिं पासे आव्या अने बोल्या के—“ हे साधु ! जो आपनी अनुज्ञा होय तो अमे धर्मवैद्यो छीए ते तमारा व्याधिनी चिकित्सा करीए. ” आ प्रमाणे तेमणे मुनिनी सन्मुख आर्वांने वारंवार कहुं, त्यारे मुनिए कहुं के—“ तमे कर्मरोगनी चिकित्सा करो छो के शरीरना रोगनी चिकित्सा करो छो ? ” त्यारे तेओ बोल्या के—“ हे मुनिराज ! अमे शरीरना रोगनी चिकित्सा करीए छीए. ” ते सांभळी मुनिए पामा ( खरज-खस ) थी सडी गयेली पोतानी एक आंगळीने पोतातुं थुक चोपडी सुवर्ण जेवा वर्णवाळी वनावी तेमने देखाडी कहुं के—“ शरीरना रोगने तो हुं पोते पण आ प्रमाणे चिकित्सा करी शकुं छुं, पण ते करवानी मारी इच्छा नथी. तेथी जो तमे कर्मरोगनी चिकित्सा करी शकता हो तो ते करो. ” ते जेइ आश्चर्य पामी तेओ बोल्या के—“ कर्मरूपी व्याधिनी नाश करवामां तो हे मुनि ! तमे ज समर्थ छो. ” एम कही चक्रीमुनिने नमस्कार करी तेओ फरीथी बोल्या के—“ लब्धि पाम्या छतां धीर एवा सनत्कुमार राजर्षिं पोताना व्याधिनी पण चिकित्सा करता नथी. इत्यादिक इंद्रे करेली आपनी प्रशंसा सांभळीने अमे के जे प्रथम तमारुं रूप जेवा आव्या हता ते ज देवो आपना सत्त्वनी परीचा करवा अत्यारे

पण आज्या छीए अने अमे तमारु धर्य मेरुपरवत जेवु अचल स्पष्टपणे जोयु छे ” आ प्रमाणे कही तेमनी स्तुति करी ते देवो अदरय थया

सनत्कुमार रात्रिपि कुमार अयस्थामो पचास हजार वर्ष रखा, मांडलिकपथामो पचास हजार वर्ष रखा, लाख वर्ष चक्रवर्तीपथामा रखा अने लाख वर्ष चारित्रपर्यायामा रखा ए प्रमाणे कुल त्रय लाख वर्षनु आयुष्य पूर्ण करी छेवट समेतशिलरपर जइ अनशन ग्रहण करी आयुष्यने दये ते महर्षि, सनत्कुमार नामना श्रीजा देवलोकमां देव थया त्वांथी चवी महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्य जम धारण करी मोचे जशे

इति सनत्कुमार चक्री कथा

चइत्ता भारह धास, चैकवद्दी मेहिङ्गिओ । सती सतिकरो लोए, पंतो गंडमंशुत्तर ॥ ३८ ॥

अर्थ—( महिङ्गिओ ) मोटी समृद्धिवाळा, ( चकवद्दी ) चक्रवर्ती, ( लोए ) लोकने विषे ( सतिकरो ) शांतिने करनार ( सती ) शांतिनाथ स्वामी ( भारह वास ) भरतचेत्रनो-वेना राज्यनो ( चइत्ता ) त्याग करी ( मंशुत्तर गइ ) अशुत्तर गतिने एटले मुक्तिने ( पचो ) पाम्या छे

श्री शातिनाथनी कथा

आ ज जयद्वीपना भरतचेत्रने विषे रत्नपुर नामनु पुर छे त्यां श्रीपेण नामे राजा हतो ते समग्र गुणोनो निधि

हतो. ते राजाने अभिनंदिता अने शिखिनंदिता नामनी बे राणीओ हती. तेमां अभिनंदितानी कुचिमांथी उत्पन्न थयेला इदुषेण अने बिंदुषेण नामना तेने बे पुत्रो हता. ते श्रंपिण राजाए विमळबोध नामना गुरु पासे धर्मोपदेश सांभळी समर्कित सहित श्राव ० धर्म अंगीकार कर्यो हतो.

ते रत्नपुर नगरमां सत्यबुद्धिवाळा सत्यकि नामे एक उपाध्याय हता. तेने जंबुका नामनी प्रिया हती अने तेमने सत्यभामा नामनी पुत्री हती.

आ अवसरें मगध देशमां अचळ नामना गाममां वेद अने वेदांगना पारने पामेलो धरणिजट नामनो प्रसिद्ध ब्राह्मण हतो. तेने यशोभद्रा नामनी पत्नी हती अने तेनी कुचिथी उत्पन्न थयेला नंदीभूति अने श्रीभूति नामना बे पुत्रो हता. तथा ते ब्राह्मणने कपिला नामनी दासी साथे चिरकाळ क्रीडा करतां तेणीनी कुचिथी उत्पन्न थयेलो कपिल नामे श्रीजो पुत्र पण हतो. ते हीन बुळनो होवाथी धरणिजट विप्र पोताना कुळवंत बे पुत्रोने ज निरंतर वेदाभ्यास करावतो हतो. परंतु कपिन बुद्धिमान हतो तेथी तेमने भयतां सांभळीने ज पोते पण सर्व भणी जतो हतो. ए रीते सांभळी सांभळीने ज ते कपिल सर्व विद्यामां कुशळ थयो. पछी ते गाममां दासीपुत्र होवाथी पोताने मान मळशे नहीं एम धारी ते कपिल ते गाममांथी नकळी बे द्वापर्वतने धारण करी उत्तम ब्राह्मण तरीकं पोतानी ओढखाण आपतो पृथ्वीपर विचरवा लाग्यो. अनुक्रमे ते रत्नपुरमां गयो, त्यां फरतां फरतां सत्यकि ब्राह्मणनी पासे गयो. सत्यकिए तेने पूछ्युं के—“तुं कोण छे ? अने क्यांथी आवे छे ?” ते बाल्यां के—“अचळ गाममां धरणिजट नामे ब्राह्मण छे, तेनो हुं कपिल नामनो पुत्र छुं. कौतुकथी पृथ्वीने जोतो जोतो

हु अहीं आव्यो छु ” यही ते सत्यकि पासे भएनारा विद्यार्थीओ वेदना विषयनी शकाओ सत्यकिने पूछरा लाग्या ते सर्वना जबाब कपिले आपी तंमना सशयो दूर कर्यो ते सांभळी तेनी उत्तम विद्वत्ताथी खुशी वयेला सत्यकिए पोतानी पुत्री सत्यभामाने तेनी साथे परणावी अने छात्रोन भयाववानु काम पण तेने ज सोंप्यु ते कपिल पण सत्यभामानी साथे निरतर सुख भागवथा लाग्यो अने लोकोमा मान्य थवाथी तेओए आपेला द्रव्यवडे ते थोडा काळमां ज समृद्धिवाळो थयो

एकदा वर्षाश्रुतुमां कपिल कोइ ठेकाणे नाटक जोइ त्याथी पाछो घर तरफ वळ्यो ते वरते वरसाद वरसवा लाग्यो मार्गमां दया अधकार होवाथी तथा निर्जनपणु होवाथी ते कपिल वस्रोने काखमां नांखी नम्र थइ पोताने घेर गयो घरना द्वार पास आवी लुगडां पंहेरी ते घरमां गयो तेनां वस्रो भीजायां हशे एम धारी सत्यभामा र्जीजां वस्रो लावी तेणीने कपिले कहु क—“ हे प्रिया ! विद्याशक्तिथी मारां वस्रो भीजायां नथी, तेथी बीजां वस्रोनी जरूर नथी ”

त वलते विजळीना प्रकाशथी सत्यभामाए तेनां वस्रो सुकां जोयां पण शरीर मीनु जोयु तथी तेणीए विचाणुं के— “विद्यावडे जे वस्रोनु रक्षण करे, ते शरीरनु रक्षण केम न करे ? तेथी खेरतर आ मार्गमां नम्र ज आव्या छे आ उपरथी ते शुद्ध ब्राह्मण होवा न जोइए कारण के कुलिननी आवी बुद्धि कदापि थाय ज नहो वळी आ वेद भणेलो छे, ते तो सारी बुद्धिने लीघे सांभळी सांभळीने भएया जणाय छे ” आ प्रमाणे विचार थवाथी ते सत्यभामानो स्नेह तेनापरथी उतरी गयो. तथी मन बिना मात्र यवहारथी तेनी साथे सरसाइथी वर्तया लागी

एरुदा धरणिजट ब्राह्मण दैवयोगे दरिद्रताने पाम्यो, ते कपिलनी समृद्धिसांभळी धननी आशाथी त्यां आव्यो. कपिले स्नान, भोजन विंगेरेवडे तेनी भक्ति करी. “अन्य अतिथि पण पंडितोने पूजवा योग्य छे, तो पितानी भक्ति करवी तेमां शुं आश्चर्य ?” भोजन वखते कांइ भिप करीने कपिल पितानी साथे भोजन करवा वेठो नहीं, तेथी तेमज बीजा पण आचार विचारमां पिता अने पुत्र वच्चे मोटो तफावत जोवाथी शंका पामेली सत्यभामाए एकांतमां अशुरने पूछ्थुं के—“हे पूज्य पिता ! तमने ब्रह्महत्याना सोगन आपीने हुं पूछ्छुं के—आ तमारा पुत्रना माता अने पिता ए वने पच शुद्ध छे के केम ? ते सत्य कहा.” ते सांभळी सोगनथी भय पामता तेणे सत्य हकिकत कही. पळी कपिले पितानो सत्कार करी तेने विदाय कर्यो एटले ते पोताने गामे गया.

त्यारपळी सत्यभामाए श्रीपेण राजा पासे जइने कहुं के—“हे देव ! मारा स्वामी दैवयोगे अकुलीन जणया छे, तेथी मने तेनाथी मुक्त करावो, के जेथी हुं दीक्षा ग्रहण करूं.” ते सांभळी राजाए कपिलने बोलावी कहुं के—“आ तारी खी ताराथी विरक्त थइ छे अने ते धर्मकर्म करवा इच्छे छे, तेथी तेने तुं छोडी दे. आ विरक्त थयेलीथी तने शुं भोगनुं सुख मळे तेम छे ?” त्यार कपिल बोच्यो के—“हे देव ! ते मारी भार्यो छे, तेने हुं छोडीश नहीं. तेना विना हुं जीवित धारण करवा समर्थ नथी.” ते सांभळी सत्यभामा बोली के—“जो ते मने नहीं छोडे तो हुं आपघात करीश.” त्यार राजाए कपिलने कहुं के—“हे कपिल ! आनुं फोगट मरण न थाओ, एटलां माटे केटलोक समय धर्मक्रियामां तत्पर थइ मारे घेर तेने मारी पुत्री तरिके रहेवा दे.” ते सांभळी बळात्कारे लइ जवामां असमर्थ एवा कपिले राजानुं वचन

माय कर्तुं राजाए सत्यहृदयवाळी मत्यभामाने पोतानी यन्त्रे राखीओ पासे राखीं त्या स्वच्छ मनवाळीं ते दुस्तप तप करती रही एकदा अनतमत्तिका नामनी मनोहर वेश्याने जोइ राजाना वन्त्रे पुत्रो इदुपेण अणे त्रिदुपेण तेथीने विपे आसक्त थया ते वरयानी इच्छा राखता ते वन्त्रे भाइओ छत्रां पण परस्पर इर्ह्यांयी युद्ध करवा लाग्या तेमनु युद्ध जोवाने के तेमने युद्धथी निवर्तन करवाने असमर्थ थयलो श्रीपेण राजा लज्जाने लीधे विपमिश्रित कमळने सुधी मरण पाम्यो तेच प्रमाणे अभिनदिता अने शिखिनदिताए पण पोताना प्राणनो त्याग कर्यो, एटले कपिलथी भय पामती सत्यभामाए पण तेमना ज मार्गनो आश्रय कर्यो आ रीत चार जणा मरण पामीने तओ अत्यंत सरळ आशयवाळा होवाथी आ जवूदीपना उत्तरकुरु क्षेत्रने विपे युगलीया थया. तेमां श्रीपेण राजा अने अभिनदितानु एक युगल थयु, तथा शिखिनदिता अने सत्यभामानु बीजु युगल थयु ( शिखिनदितानो जीव पुरुष थयो ) ते सर्वेनु शरीर नण कोश उनु हतु, तेओ नण पल्योपमना आयुष्यवाळा हता, अने चोथे दिासे आहार करनारा हता तेओए त्या केवळ सुखमय समय निर्गमन कर्यो ( भय बीजो )

अहीं श्रीपेण राजाना वन्त्रे कुमारो युद्ध करता हता, तेचामां त्यां विमानमां बेसीने कोइ विधाधर आव्यो, तेणे तेमने कटु के—हे राजपुत्रो ! तमा अज्ञानपण्याने लीधे तमारो बंदेनन ज भोगववा तैयार थइ फोगट युद्ध न करो, हु तमारो हितेच्छु छु, माटे हु कहु ते तमे सांभळो —

आ ज जवूदीपमां महाविदह क्षेत्रने विपे पुष्कलायती नामे विजय छे तेमां रहेला वैताढ्य पर्वतनी उत्तरश्रेणिमां आदित्याभ नामनु श्रेष्ठ पुर छे तेमां सुकुडली नामे राजा छे, तेने अजितसेना नामनी प्रिया छे तेमनो हु मणिकु



डली नामनो पुत्र छुं. एकदा हुं आकाश मार्गें थइने पुंडरीकिणी नगरीमां गयो. त्यां अमितयशा नामना तीर्थकरने में भक्तिथी वंदना करी. पत्नी में प्रभुने पूछयुं के—“ हुं विद्याधर शा पुण्यथी थयो ? ” त्योरे तीर्थकर महाराज अमृत जेवी मधुर वाणीधी बोल्या के—

पुष्करवद्दीपना पश्चिम अर्ध भागमां शीतोदा नदीने दक्षिण कांठे सलिलावती नामना विजयमां वीतशोका नामनी श्रेष्ठ नगरी छे. त्यां कामदेवनी जेवा रूपवाळो रत्नध्वज नामे चक्रवर्ती हतो. तेने हेममालिनी अने कनकश्री नामनी बे प्रियाओ हती. तेमां पहेलीए पद्मा नामनी पुत्री प्रसवी अने बीजीए कनकलता तथा पट्टमलता नामनी बे पुत्रीने जन्म आप्यो. लक्ष्मीनी जेवा अद्वितीय रूपवाळी पद्माए युवावस्थामां पण अजितसेना नामनी आर्यो पासे दीक्षा ग्रहण करी. ते पद्मा साध्वी उपवास विगोरे दुष्कर तप करवा लागी. तेणीए एकदा कोई वेश्याने मांटे युद्ध करता बे राजपुत्रोने जोइ विचार कर्यो के—“ अहो ! आ वेश्यानुं सौभाग्य अद्भूत छे, के जेने मांटे आवा कामदेव जेवा रूपवाळा बे राजकुमारो युद्ध करे छे. तो जो आ मारा तपनुं कांइ फळ होय तो तेना प्रभावथी आवता जन्ममां हुं पण आवा ज सौभाग्यवाळी थाउं ” आ प्रमाणे ते पद्मा साध्वीए नियाणुं कर्युं. पत्नी आयुष्यने छेडे ते नियाणानी आलोचना कर्यो विना अनशन करी काळधर्म पापी सौधर्म देवलोकमां देवी थइ. ते भवमां तेनी जे कनकश्री नामनी विमाता हती, तेणे त्यांथी मरी संसारमां केटलाक भव करी आ जन्मथी पूर्वना जन्ममां कांइक दानपुण्य कर्युं. तेना प्रभावथी तुं आ भवमां मणिकुंडली नामनो विद्याधर थयो छे. हवे ते कनकश्रीनी बे पुत्रीओ जे कनकलता अने पद्मलता हती ते संसारमां केटलाक भवो भमी पूर्वभवमां विविध प्रकारनुं शुभ-

कर्म करी आ जवूदीपना भरतचेंत्रमां रत्नपुट नामना नगरमां श्रीपेण राजाना इडपेण अने विंदुपेण नामना वे पुत्रो थया छे ते अवसरे पव्मा साप्तीनो जीव सौधर्म देवलोकथी चरीने ते न रत्नपुरमां गणिका थयो छे, अने तेणीने ज माटे हमणां इंदुपेण अने विंदुपेण परस्पर युद्ध करे छे. ”

आ प्रमाणे तीर्थहरना मुखथी आपणा सर्वेना पूर्वभयोने सांगळी हु तमने युद्धथी निवर्तन करवा अही आव्यो हु माटे तमे चोथ पामो अन चंहेनने माटे थइने युद्ध न करो हु तमारा पूर्वभरनी माता हु अने आ वेरया तमारी पूर्वभवनी वंहेन छे नो मोहनो त्याग करो अने तमारा आ दुष्कृत्यथी लक्षा पामी तमारा मातापिता पण विपप्रयोगथी मृत्यु पाम्या छे तेना रपाल करी आ पापनी गुडि नाटे तमे चारित्र नत ग्रहण करो ”

आ प्रमाणे ते मण्डिहुडली नामना विद्याधरना मुखथी पोताना पूर्वभव्योनु वृचाव सांगळी इंदुपेण अने विंदुपेण चोल्या के—“ हे विद्याधर मित्र ! तमे अमने ठीक प्रतिबोध कर्यो ” एम कही ते वने भाइथोए चार हचार राजाओ सहित धर्मरुचि गुरनी पासो चारित्र ग्रहण कर्युं त्यां निरतिचार चारित्र पाळी उग्र तप करी ते वने बुद्धिमान मोचपद पाम्या षष्ठां श्रीपेण विंगेरे चारे युगलीयाओ आयुष्य पूर्ण करी सौधर्म देवलोकमां गया ( ए त्रीजो मय )

आ न जवूदीपना भरतचेंत्रमां वैताढ्य पर्वत उपर श्री रथनूपुरचक्रचाल नामनु नगर छे तेमां महा बळवान अर्ककीर्ति नामनो सेचर राजा हतो तने चद्रो रोहिणीना जेवी ज्योतिर्माला नामनी प्रिया हतो ते अर्ककीर्ति राजाने स्वयम्रभा नामनी वहेन हती तेणीने पोतनपुरनो राजा अचळनो नानो माइ त्रिष्टुठ नामनो पहिलो वामुदेव परणयो हतो एकदा

श्रीपेण राजानो जीव प्रथम स्वर्गथी चवीने छीपने विपे मुक्ताफळनी जेम ज्योतिर्मालानी कुचिमां अवतर्यो. ते वखते तेणीए स्वप्नमां अमित ( वया ) तेजवाळो सूर्य जोयो. अनुक्रमे समय पूर्ण थये तेणीए श्रेष्ठ लक्षणवाळा पुत्रने जन्म आप्यो. उगता सूर्यनी जेवा तेजवाळा ते पुत्रचुं नाम राजाए स्वप्नने अनुसारे अभिततेजा पाड्युं, पछी सत्यभामानो जीव स्वर्गथी चवीने अर्ककीर्तिनी प्रिया ज्योतिर्मालानी कुचिथी सुतारा नामनी पुत्री थइ. अभिनंदितानो जीव स्वर्गथी चवी त्रिष्टुठ वासुदेवनी राणी स्वयंप्रभानी कुचिमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो. तेचुं नाम श्रीविजय पाड्युं, तथा शिखिनंदितानो जीव स्वर्गथी चवीने स्वयंप्रभानी कुचिमां पुत्रीपणे उत्पन्न थयो. तेचुं नाम त्रिष्टुठ वासुदेवे ज्योतिष्प्रभा पाड्युं, ते कपिलनो जीव संसारमां भमीने चमरचंचा नामनी नगरीमां अशनिघोष नामनो विद्याधर राजा थयो. अर्ककीर्तिए पोतानी सुतारा पुत्रीने त्रिष्टुठना पुत्र श्रीविजयनी साथे परणावी. तथा त्रिष्टुठे पण पोतानी पुत्री ज्योतिष्प्रभाने आनंदथी अभिततेजा साथे परणावी.

एरुदा अभिनंदन अने जगन्नंदन नामना चारणमुनिनी पासे धर्मदेशना सांमळी अर्ककीर्ति राजाए पोताना राज्यपर अभिततेजाने स्थापन करी मुक्तिना सरल मार्गरूप प्रत्रज्याने अंगीकार करी. त्यारपछी विद्याधर राजाच्योना मुगट-वडे नमस्कार करातो महावळवान अभिततेजा राज्यचुं पालन करवा लाग्यो. अर्हो पोतनपुरना राजा त्रिष्टुठ वासुदेव पण मरण पाम्या, त्यारे वळभद्र अचळे वैराग्य पापी राज्यपर श्रीविजयने स्थापन करी पोते प्रत्रज्या ग्रहण करी.

एकदा पोतानी बहेन सुतारा अने श्रीविजयने जोवानी उत्कंठा थवाथी अभिततेजा पोतनपुर गयो. ते वखते ते

पुरमां उचां तोरणो अने ध्वजो बधिलां हतां, तथा आलु नगर आनदमय देखातु हतु, तेमज राजकुळ विशेषे करीने हर्षे पामेलु देखातु हतु, ते जोइ अमिततेजा विस्मय पाम्या तेने आकाशमाथी उतरतो जोइ श्रीविजय राजा हर्षेथी तेनी सन्धुल उभो थयो परस्पर साळा बनेवी एवा ते बभेए अन्योय गाढ आलिगन कयुं पछी ते बने सिंहासनपर बेठा त्यारे अमि तेतेनाए श्रीविजयने पूळ्यु के—“ आज्ञे शा निमित्ते उरसवः छे ? ” त्यारे श्रीविजय बोन्यो के—

आज्यथी आठमा दिवस उपर अहीं एक नैमित्तिक आव्यो हतो तेने में आववानु कारण पूळ्यु, त्यारे ते बोन्यो के—  
 “ हे प्रभु ! हु निमित्त कहेवा माटे आव्यो छु ” ते तमे सावधाग चित्ते सांभळो—आज्यथी सातमे दिवसे मध्यान्ह समये पोतनपुरना राजा उपर उग्र वीजळीनो पात थशे ” आयु तेनु कडुक वचन सांभळी क्रोध पामेला मुख्य मत्रीए तेने कटु के—“ ते बखते तारा माथापर शु पडशे ? ” त्यारे दैवज्ञ बोन्यो के—“ हे मत्रीथर ! शास्त्रदृष्टिए में जेवु जोयुं वेवु कहु छे, तेमां मारापर शा माटे कोप करो छो ? ते दिवसे मारा मस्तक उपर तो सुवर्ण अने रत्ननी वृष्टि पडशे ” आ प्रमाणे त दैवज्ञ कहु, त्यारे में तेने पूळ्यु के—“ ह दैवज्ञ ! आयु निमित्त तमे वयाथी शीलया छो ? ” त्यारे ते बोन्यो के—“ ज्यारे अचळ स्वामीए दीघा ग्रहण करी त्यारे मारा पिता साथे में पण बाल्यावसा छातां दीघा लीधी हती. त्यां में अष्टांग महानिमित्तनो अभ्यास कर्षो हतो पछी हु युवान थयो त्यारे विहारना क्रमे हु पद्मिनीखड नामना पुरमां गयो त्यां धिरण्यलौमिका नामनी मारी फुद रहे छे वेणीए बाल्यावसामां ज तेनी पुत्री चद्रयशा मने आपी हती परतु में तो प्रवज्या लीधी तेथी वेणीने हु परणयो नहेतो अत्यारे वेणीने युवावस्यावाळी जोइ हु अत्यत मोह पाम्यो अने

तेषीना भाइना कहेवाथी हुं व्रतनो त्याग करी तेषीने परणयो. पछी धननी इच्छाथी में निमित्त निद्यावडे जोयुं तो आ महा वृत्तांत मारा जाणवामां आव्युं. तेसां मने घणो द्रव्यलाभ थशे एम जाणी हुं आ वृत्तांत आपने कहेवा अहीं आव्यो छु. हवे जेम उचित लागे तेम करो.”

आ प्रमाणे निमित्तियानुं वचन सांभळी सर्व जनो विचारमां पड्या के ‘आ बावत शो उपाय करचो ?’ तेसां एक मंत्री बोल्यो के—“समुद्रमां वीजळी पडती नथी, तेथी सात दिवस सुधी स्वामी नाचमां आरूढ थइ समुद्रमां ज रहे तो विघ्न दूर थाय.” ते सांभळी बीजो मंत्री बोल्यो के—“जो के समुद्रना जळमां वीजळी पडे नहीं, परंतु वहाणमां कदाच वीजळी पडे तो तेने कोण रोकी शके ? तेथी वैताढ्य पर्वतनी गुफामां जइने सात दिवस स्वामीए रहेबुं, एम मने ठीक लागे छे.” ते सांभळी मंत्री बोल्यो के—“आ उपाय पण मने सारो लागतो नथी. कारण के जे अवश्य थवानुं होय ते गमे ते स्थाने पण थइ शके छे. तेथी हुं तो एम धारुं छुं के—आपणे सर्वेए सर्व उपद्रवोने नाश करनार तप करवो योग्य छे, कारण के तपवडे निकाचित कर्म पण चीण थाय छे.” ते सांभळी चोथो मंत्री बोल्यो के—“आ नैमित्तिके पोतनपुरना स्वामी उपर वीजळीनो पात कह्यो छे, परंतु श्रीविजय स्वामीना उपर कह्यो नथी. तेथी सात दिवस सुधी आपणे पोतनपुरनो स्वामी बीजो करीए, तेम करवाथी वीजळी तेना पर पडशे अने श्रीविजय स्वामी अक्षत रहेशे.” आवुं तेनुं वचन सांभळी दैवज्ञे अने बीजा सर्व मंत्रीओए तेम करवानुं पसंद कर्युं. अने तेना मतिज्ञाननी प्रशंसा करी. त्यारे में कहुं के—“मारा प्राण बचाववानी खातर हुं बीजाना प्राणनो घात करावीश नहीं. कारण के सर्वेने पोताना प्राण प्रिय होय छे.”

ते सांभळी विचार करी मंत्रीओ बोल्या के—“ हे स्वामी ! ए विचार आप मूकी घो अमे घनद यच्चनी प्रतिमानो राज्या-  
 भिपक करशु तेम करवार्था देवना माहात्म्यने लीघे जो उपद्रव नहीं थाय तो सर्व सारु ज छे, अने जो तेनापर र्चानळी  
 पढये तो पण आपने जीवहिसानु पाप लागश नहीं, अने यच्चनी प्रतिमा चीनी सारी पण करावी शकाये ”  
 आ प्रमाणे तेमनु युक्तियुक्त वचन सांभळी में ते अगीकार कर्यु पछी हु ( अतःपुर सहित ) जिनचैत्यमां  
 जइ पौपघ ग्रहण करी दर्भना सथारा पर शुभघ्याने रखो. अने राज्यपर अभिपक कोला यच्चनी प्रतिमाने सर्व  
 पुरननो सेववा लाग्या अनुक्रमे दिवसो जतां सातमे दिवसे मध्यान्ह वरते आकाशमां गर्जना कारतो मेघ  
 चढी आब्यो, अने वडवाप्रि जेवो प्रचड विद्युत्तदड तत्काळ यच्चनी मूर्तिपर पढयो ते वरते प्रसन्न थयेला सर्व जनाए  
 दैवज्ञना मस्तकपर राननी दृष्टि करी पछी हु पण पौपघ पारी चैत्य वहार नकळ्यो एटले प्रजाजनाए मने फगीथी  
 राज्यभिपेक कर्यो में पण प्रसन्न थइ ते नैमित्तिकने पद्मिनीखड नामनु पुर इनाममां आपी विदाय कर्यो कारणके तेणे  
 मागपर घणो उपकार कर्यो हतो पछी में घनदयच्चनी नवी उत्तम प्रतिमा कारागी रथापन करी आ रीते मारी उपरनु विम  
 शात द्यु, ते प्रसंगने ल्हने पुरजनो आ उत्तम वरे छ ”

आ प्रमाणे उत्सगनु घृष्टांत सांभळी अभितेजा पण आनद पाम्यो. पछी पोतानी वहेन हुतारानो दिव्य वस्त्र तथा  
 आभूषणोथी सत्कार करी त पोताने घेर गया

एकदा श्रीविजय राजा रुतरा देवी र हित क्रीडा करया मांटे उद्योतिर्घन नामना उद्यानमां गयो, ते वरते कपिलनो

जीव के जे अशानिघोष नामनो विद्याधर राजा थयो हतो, ते आकाश मार्गे जतो हतो, तेणे पोताना पूर्वभवनी स्त्री सुताराने जाइ. पूर्वभवना संस्कारने लीधं तेणीपर ते अत्यंत आसक्त थयो, तेथी तेणीनुं हरण करवा माटे तेणे तेनी पासे विद्यावडे सुवर्णनो मृग विकुर्णने मूढयो. तेने अति मनोहर जाइ सुताराए प्रियने कणुं के—“ हे स्वामी ! मने क्रीडा करवा माटे आ मृग लावी आपो.” ते सांभळी तेने पफुड्या माटे दोडतो राजा दूर गयो, त्यारे एकली पडेली सुताराने ते अधम अशानिघोष हरी गयो. तथा श्रीविजय राजाने हणवा माटे तेणे प्रतारणी नामनी विद्याने आदेश कर्यो, एदले तेणे सुतारानुं रूप धारण करी उंचे स्वरे न्रुम पाडी के—“ हे प्रिय ! मने कुकुट सर्प डस्यो छे. जलदी आवीने माहं रत्नय करो.” ते सांभळी अत्यंत आकुळ व्याकुळ थयेलो राजा तेणीनी पासे आव्यो, तेदलामां तो ते पृथ्वीपर पडी राजाना देखतां ज मरण पायी. ते जाइ राजा पण मूर्च्छा साइ पृथ्वीपर पडथो. तेवामां तेना सेवकोए आनी तेने चंदनरस छांटी सावधान कर्यो.

राजा चेतना पायी विलाप करवा लाग्यो के—“ हा प्रिया ! तारी आ शी दशा थइ ? हुं आजे सुवर्णना हरणथी ठगायो, अन्यथा हुं समीपे होउं तो शेषनाग पण तने करडवा समर्थ नथी. हे प्रिया ! तारा धिना हुं वयधार पण जीवी शकुं तेम नथी. शुं पाणी निना माखलुं जीवी शके ? तारा वियोगथी उत्पन्न थयेला दुःखने हुं सहन करवा शक्तिपान नथी, तेथी हे जीवितेश्वरी ! शीघ्रपणे तारी पाछळ आ मारा प्राणो चान्या जाओ.” आ प्रमाणे कही सेवको पासे चिता करावी मोहथी मूढ थयेलो राजा प्रिया सहित ते चितामां पेठो. तेमां जेटलामां अग्नि सळगाव्यो, तेवामां त्यां वे विद्याधरो

आब्या. तेमांथी एक जबाए पाणी मत्री चिठामां धांटयु, एटले तरत ज ते प्रतारणी विद्या अट्टहास करी शीघ्र नाशी गइ ते जोइ राजाए विचार कर्यो के—“आ स्त्री कोण ? मारी कांता कयां गइ ? अने ते अप्रि कयां गयो ?” ए प्रमाणे विचारी राजाए ते विद्याधर पुरुषोने पूछ्यु के—“आ शु ?” त्यारे तेओए राजाने नमस्कार करी कळु के—“अमे अभि तवेजा राजाना सेवको छीए अमे अरिहतने नमवा मांटे नीकळ्या छीए आ तरफ आवतां मार्गमां अमे आ प्रमाणे चाणी सांभळी के—“हा ! बंधु अभितवेजा ! हा ! प्राणनाथ श्रीविजय ! मने सुताराने आ विद्याधर यकी मूकावो ” आबी चाणी सांभळतां ज अमे ते तरफ दोळ्या, तो अमे तमारी प्रिया अने अमारा स्वामीनी बहेन सुताराने अशनिधोबे हरण कराती जोइ तेणीने मूकाववा मांटे अमे युद्ध करवा सज थइ चोल्या के—“हे दुष्ट ! उभो रहे, उभो रहे ” तेटलामां सुताराए अमने कळु के—“तमे इमणां श्योतिर्वनमां जाओ तयां प्रतारणी विद्याधी छेतराता मारा पति श्रीविजय राजानु रषण करो ” ते सांभळी तरत ज अमे अहीं आब्या, चिठामां मत्रलु पाणी छांटी अप्रि पुसाब्यो अन प्रतारणी विद्याने नसाडी दीधी.”

आ प्रमाणे सुताराने हरण करेली जाणी श्रीविजय राजा खेद पाग्यो पछी तेने धीरन आपी वेला विद्याधरो तेने आप्रह पूर्वक वैताढच पर्वतपर लइ गया तेने जोइ अभितवेजा एकदम उभो थयो, अने तनो आदरसत्कार करी गाववानु कारण पूछ्यु त्यार श्रीविजयना कहेवाधी ते पन्ने विद्याधरोए सुताराना हरण सपधी सर्व घृत्तांत रही समळाव्या ते सांभळी अभितवेजा अत्यंत क्रोध पापी चोच्यो के—“तमारी प्रिया अने मारी बहेनने हरी जइने ते अशनिपाप केन्लु नीधरो ? ”



एम कही तेणे श्रीविजयने शस्त्रावरणी, बंधनी अने मोचनी ए ग्रण महाविद्याओ आपी. पछी सैन्य सहित पोताना पांचसो पुत्रोथी परित्रेला श्रीविजयने अमिततेजाए सुताराने लावना माटे अशनिघोष साथे लडाइ करवा मोकल्या. श्रीविजय राजा विद्याधरना संन्योपटे प्राप्ताशने आच्छादन करता शीघ्रपणे चमरचंचा नगरी पासे जइ पहोच्या. अहीं अमिततेजा अशनिघोषने घणी विद्यावालो जागी परिधाना वळने नाश करनारी महाज्वाळा नामनी महाविद्या साधवा माटे पोताना सहस्त्ररश्मि नामना पुत्रने साथे लड हिमवंत गिरि उपर गयो. त्यां सहस्त्ररश्मिथी रक्ष्य करालो ते महा पराक्रमी अमित-तेजा एक मासना उपामनो नियम लइ विद्या साधना वेठो.

अहीं चमरचंचा नगरी पासे आर्.ने श्रीविजय राजाए पोताना दूतने अशनिघोष पासे मोकल्यो. तेणे जइ तेने कळुं के—' हे राजा ! प्रतारणी विद्यापडे श्रीविजय राजाने छेत्री तेनी प्रिया सुताराने हरण करतां वीरमानी एवा तने शुं कांडपण लडाआ आपी नहीं ? अथवा तो हीन पराक्रमवालाने छळ ज मळ होग छे. परंतु अर्थ समान श्रीविजय राजा छतां अंधकार जेना तारी शक्ति शी रीतें स्फुरायमान थवानी छे ? माटे हवे श्रीविजय राजाने नमस्कार करी तेनी प्रिया सुतारा तेने पाझी सोंप. अन्यथा तारा प्राण सहित ते राजा पोतानी प्रियाने ग्रहण करसो. " ते सांभळी क्रोध पापी अशनिघोष वोल्यो के—“ रे दूत ! तुं अत्यंत धृष्ट अने उद्धत छे, तें ऋणुं ते जाण्युं. जो मंदबुद्धिवालो श्रीविजय अहीं आन्धो छे तो तेथी शुं थयुं ? ते विचारो मारा पराक्रमना एक अंशने पण सहन करी शकवानो नहीं. शुं अर्थना प्रकाशनो एक लेश पण ध्रुवड सहन करी शके ? माटे ते श्रीविजय जेम आब्यो तेम ज पाळ्यो चाब्यो जाय तो ठीक छे, अन्यथा सुताराने तो पामरो

नहीं, पण उलट्टी विशेष विगोपना पामयो." आ प्रमाणे तेनां वचन समळी ते दूत श्रीविजय राजा पासे आव्यो, अने तेणे सर्व घृत्तात तेने कळा

ते सांभळी अत्यंत क्रोध पामेला श्रीविजय राजाए युद्धने माटे सर्व सैन्य सज्ज कर्युं ते जाणी अशानियोये सैन्य सहित पोताना अश्वघोष विगरे पुत्रोने युद्ध करवा भोकच्या रणसंग्रामना वाजिरोना शब्दधी आकाश पूर्ण थपु, अने वने सैन्यो वच्चे महा घोर युद्ध प्रारत्युं ते वखते ते युद्ध जोवा माटे देवताओ आकाशमां आवी उभा रहा, तेमने केटलाक वीरोए वाखोनो मडप करी जोवामां विघ्न कर्युं केटलाक वीरोए वडांनी जेम शत्रुओने भालामां परोवी उचा कर्या, केटलाक सुमटोए दडगडे पर्वतनी जेवा हाथीओना दांत भांगी नांल्या, केटलाक योद्धाओए घडानी जेम रथोने सुदुगरवडे मर्दन कर्या, केटलाके परिघगडे शत्रुओने चणानी जेम कुड्या, केटलाके रङ्गवडे कोळानी जेम शत्रुओने फाडी नाल्या, केटलाके गदावडे नाळायेरनी जेम शत्रुना मस्तको भेदी नारया, केटलाक वीरो आयुध खूटी जवाथी शत्रुना हाथीना दांत उरोडी तेवडे प्रहार करवा लाग्या, अने केटलाक महायळमान योद्धाओ उडयुद्ध करवा लाग्या, ए रीते हमेशां शस्त्र, अस्त्र, मत्र अने मायावडे युद्ध करतां ते वने सैन्योनो लगमग एक मास थवा आव्यो, ते वरते श्रीविजयना सुमटोए अशानिघोपना पुत्रोना परानय कर्यो त्यारे अशानिघोप राजा पोते युद्ध करवा आव्यो अने इछुने जेम वळद भांगी नांये तेम तेणे अमितेजाना पुत्रोने भागी नारया-हराव्या, त्यारे श्रीविजय राजा पोते युद्धमां उतर्यो त वने महा पराकमी परस्परना प्रहारोने छतरता चिरकाळ सुधी युद्ध करवा लाग्या ते जोइ देवो पण आश्रय पाम्या छेगटे श्रीविजय राजाए खड्ड वडे

शत्रुना चे ककडा कर्या, त्यारे ते चे अशानिघोपरूप थया. श्रीविजये ते बनेना चार ककडा कर्या. त्यारे चार अशानिघोप थया. फरीथी ते चारेना श्रीविजये बने ककडा कर्या, त्यारे आठ अशानिघोप थया. आ प्रमाणे श्रीविजय अशानिघोपना जेटला ककडा करतो तेदला अशानिघोप थवा लाग्या. तेथी श्रीविजय राजा हवे शुं करबुं? एम विचारमां मूढबनी गयो. तेदलामां विद्या सिद्ध करीने अमिततेजा पोते आबी पहोंच्यो.

सिंहनी जेवो तेने आवतो जोइ हार्थीनी जेम अशानिघोप तत्काळ नाशी गयो. तेने पकडी लाववा माटे अमिततेजाए महाज्वाळा नामनी विद्याने हुकम कर्यो, एदले आखा विश्वने जीतनारी ते विद्या अशानिघोपनी पाळ्ळ दोडी. नासता अशानिघोपे कोइ पण ठेकारे शरण जोयुं नहीं, तेथी ते अत्यंत आकुळ व्याकुळ थइ दक्षिण भरतार्धमां गयो. त्यां भमता तेणे सीमनग पर्वत उपर बळदेव मुनिने जोया. ते मुनिने तत्काळ केवळज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं अने तेनी चोतरफ देवताओ परिवरेला हता. अदले ते अशानिघोपे ते केमळीनुं ज शरण कर्यु, त्यारे महाज्वाळा विद्या तेनो त्याग करी पाळी आबी अने तेणीए सर्व श्रुतांत अमिततेजाने कव्यो. ते सांभळी अमिततेजा अने श्रीविजय ए बने अत्यंत हर्ष पाय्या. त्यारपळी सुताराने लाववा माटे मारीच नामना दूतने मोकली ते बने राजा सैन्य सहित विमानमां बेसी सीमनग पर्वत उपर गया, अने त्यां बनेए भक्तिथी अचळ बळदेव केवळीने वंदना करी. मारीच विद्याधर पण चमरचंचा नगरीमां गयो, अने तेणे अशानिघोपनी माने कहुं के—“ सुताराने लइ जवा माटे मने अमिततेजा राजाए अहीं मोकल्यो छे.” पळी तेनी माना कहेवाथी सुताराने लइ ते मारीच पण सीमनग पर्वतपर आब्यो, अने तेणे श्रीविजय तथा अमिततेजाने सुतारा सोंपी. ते बसते

अशनिघोषे हर्षयी श्रीविजय अने अमिततेजाने खमाव्या पळी तेमनी पासे अचळ केवळीए धर्मदेशना आपी देशानाने अते अशनिघोष राजाए महर्षिने कष्टु क—“हे प्रभु ! में दुष्ट अभिप्रायथी आ सुतारातु हरण करुं न होतु, परतु प्रतारणी नामनी विद्याने साथी हु धर तरफ जतां हतो, तेजामां ज्योतिर्वनने विषे आ सुताराने में श्री विजय राचानी पासे रहेली जोइ, ते वखते कोइ पण कारणथी तेंणीना उपर मारो अत्यत राग थयो के जेथी तेंणीने छोडीने हु आगळ जवा असमर्थे बन्यो परतु श्रीविजयनी पासे रहेली होवाथी हु तेंणीने हरी शक्यो नहीं. तेथी प्रतारणी विधावडे श्रीविजयने छेतरा तेने छुटो पाडी दूर मोकलीने में तेंणीनु हरण करुं. पळी पाप रहित अने आकुळ व्याबुळ थयेली तेने में मारी मातानी पासे मूकी वाणीथी पण में तेने अनुचित वचन कष्टु नथी तो हे भगवान ! आने विषे मारो प्रेम शाथी थयो ? ते कहे ”

त्यारे मुनि तेमनी पासे तेमना पूर्वभवनी श्रीयेण निगरे सर्वनी कथा कह्निने बोल्या के—“श्रीयेण, सत्यभामा, अभिनदिता अने शिखिनदिता मरीने युगलिया थया, त्यांथी मरीने देव थया, अने त्यांथी चवीने श्रीयेणनो जीव आ अभिततजा थयो छे अने शिखिनदितानो जीव आनी पत्नी ज्योतिप्रमा थयो छे, जे अभिनदीतानो जीव हवा ते चवीने आ श्रीवि जय थयो छे अने सत्यभामानो जीव चवीने तेनी भार्या सुतारा थयो छे तथा कपिलनो जीव चिरकाळ सुधी तिर्यंच यो निर्मा ममी कोइ तापसनो पुत्र धर्मिल नामे धर्मिष्ठ थयो ते बाल्यावस्थाथी ज तीव्र अज्ञानतप करतो हतो. एकदा आ काशमां जवा मोटी समृद्धिवाळा कोइ विधाधरने जोइ तेणे नियाणु करुं के—“आ मारा तपनो जो प्रभाव होय तो हु

आश्रो विद्याधर थांडं. ” आ प्रमाणे नियाणुं करवाथी ते तापस कुमार मरीने तुं अशानिधोप थयो छे. पूर्वभवना संबंधथी सुताराने विपे तारो स्नेह थयो छे, कारण के स्नेह अने वैरनां संस्कार सेंकडो भव सुधी चाले छे.”

आ प्रमाणे केवलीना मुखथी पोताना पूर्वभवनो वृत्तांत सांभळी अभिततेजा विगरे सर्वे मनसां विस्मय पास्या. पछी अभिततेजाए भगवानने पूछधुं के—“ हे पूज्य ! हुं भव्य छुं के नही ? ” मुनि बोल्या के—“ आ भवथी नवमे भवे आ ज भरतचेव्रमां तमे शांतिनाथ नामना पांचमा चक्रवर्ती अने सोळमा तीर्थकर थयो. ते भवे आ श्रीविजय तमारो मोटो पुत्र तथा प्रथम गणधर थयो. ” ते सांभळीने ते नबे राजाओए श्रावकधर्म अंगीकार कयो त्यापछी अशानिधोपे मुनिने कहुं के—“ सन्मार्गने देखाडनार सद्गुरु विना मूढ पथिक अरण्यमां जेम भटके तेम हुं आ संसारमां चिरकाळ सुधी भटकयो छुं. मोटा भाग्ये आज सिद्धिपुरीना मार्गने देखाडनारा तमने में जाया छे. तो हे प्रभु ! मारापर प्रसन्न थइ मने साधुधर्म आपो. ” ते सांभळी मुनिए तेने चारित्र आपाना अनुज्ञा आपी, एटजे ते बुद्धिमान अशानिधोपे पोताना पुत्र अश्वघोपने अभिततेजाना उत्संगमां स्थापन करी कहुं के—“ आ मारा पुत्रने तमे पोताना पुत्रनी जेम राखजो. ” ए प्रमाणे कही अचळ स्वामीनी पांमे तेणे दीक्षा ग्रहण करी. पछी श्रीविजय अने अभिततेजा ऋषिने चंदना करी परिवार सहित पोताने स्थाने गया. बीजा जनो पण हर्ष पासी पांतपोताने स्थाने गया. खेचरेंद्र अभिततेजाए तथा नरेंद्र श्रीविजये श्राद्धधर्मनुं पालन करता अने जिनशासननी प्रभावना करता घणो काळ निर्गमन कयो.

एरुदा श्रीविजय अने पभिततेजा साथे मळीने मेरुपर्वतपर शाश्वत जिनेश्वरने चांदवा गया. त्यां जिनप्रतिमाओने-

वादी एक सुवर्णनी शिलापर ध्यानमां पेंठला विपुलासति अने महामसति नामना बे चारण मुनिअने नम्या ते वरते ते महर्षिओए देशनामां सर्व अनित्यता देउाही ते सामळी ते बसे राचाओए पूछ्यु के—“ हे प्रभु ! अमाकं आयुष्य केटलु श्य छे ? ” मुनिओए तेमने कलु के—“ तमारु आयुष्य आजयी छयीश दिवसनु शेप छे ” ते सामळी ते बसे धर्मठत्वामा उतुतुक थइ पोतपोताने पर गया त्या तिनचैत्योमां अष्टाहिक महेत्सव करी, दीनादिऊने दान आपी, पोतपोताना पुत्रोने राज्यपर स्थापन करी, अभिनन्दन अने जगद्वदन नामना युक्त याले दीक्षा प्रदण करी, हर्षधी पादपोपगमन नामनु अनशन प्रदण कर्यु त वरत श्रीरिचये पोताथी अधिक श्रद्धिवाळा पोताना पितानु स्मरण करी नियाणु कर्यु के—“ आ तपना प्रभावधी आरता भरमां हु मारा पिता जेवा थाउ ” पळी आयुष्य पूर्ण यये अमिततेजा अने श्रीविजय मुनि काळधर्म पाभी प्राणत नामना स्वर्गमां वीश गागरोपमना आयुष्यवाळा उचम देवो थया

आ न चरुणीपना पूर्ण महापिदेह क्षेत्रने विपे रमणीय नामना रिनयमां शुभा नामनी श्रेष्ठ पुरी छे तेमां गुणरूपी रत्नेपडे परिपूर्ण स्तिमितसागर नामनो राचा हतो. तने सुदर रूपयाळी वस्तुधरा अने अनुद्वरा नामनी रे प्रियाओ हवी प्राणत नामना स्वर्गधी अमिततेजानो नीच चरिने वसुधरा देवीनी कृधिमां पुत्रपणे अवतर्यां ते वरते सुते मुतेली ते कम्बचना सररा मुगवाळी वसुधराए स्नानमां पोताना मुगमां प्रवेश करता हाथी, धूपम, चद्र अने सरोवर ० चार पदार्थां जोया वरत न चागुा थयली तेणीए तेनु फळ राचान पूछ्यु, त्यारे राजाए कटु के—“ हे प्रिया ! आ स्वप्नोवड तारो पुत्र वच्छेव यशे ” त मामात्री हर्षे पांमेली राणीए गभ धारण कर्यो अनुक्रमे समय पूर्ण यये तेणीए शुभलक्षणवाळा

अने श्वेतवर्णवाळा पुत्रने जन्म आण्यो. राजाए महोत्सवपूर्वक तेनुं अपरराजित नाम पाड्युं. पछी श्रीविजयनो जीव पण प्राणतकल्पमांथी चवी अनुद्धरा राणीनी कुचिमां अवतर्यो. ते वखते सिंह, लक्ष्मी, सूर्य, कुंभ, समुद्र, रत्नराशि अने निर्धूम अग्नि ए सात पदार्थो राणीए स्वप्नमां पोताना मुखमां प्रवेश करता जोया. तरत ज जागृत थइने राणीए राजाने स्वप्नोनुं फळ पूछ्युं, त्यारे राजाए कहुं के — “ हे प्रिया ! आ स्वप्नोथी तारो पुत्र वासुदेव थशे.” पछी अनुक्रमे समय पूर्ण थये राणीए श्याम वर्णवाळो मनोहर पुत्र प्रसव्यो. तेनुं नाम राजाए महोत्सव पूर्वक अनंतवीर्य पाड्युं.

ते बन्ने भाइओ अनुक्रमे वृद्धि पामता निरंतर प्रेमपूर्वक साथे ज क्रीडा करवा लाग्या. योग्य समये गुरु पासेथी सर्व कलाओ शीख्या. पछी वसंतऋतुवडे आत्रवृत्तनी जेम यौवनवडे भूपित थयेला ते बन्ने भाइओ भमरीनी जेम युवतिओनी दृष्टिने मोह पमाडवा लाग्या.

एकदा स्तिमितसागर राजा अश्रक्रीडा करवा नगरीनी बहार गयो. त्यां उद्यानमां रहेला स्वयंप्रभ नामना मुनिने जोइ तेणे तेमने वंदना करी. पछी मुनिनी पासे बेसी तेमनी देशना सांभली राजा प्रतिबोध पाम्यो. एटले पोताना राज्यपर अनंतवीर्यने स्थापन करी ते मुनिनी पासे तेणे दीक्षा ग्रहण करी. ते राजाए मनोहर चारित्र्युं पालन कर्तुं. परंतु छेवट व्रतनी कांइक विराधना करी, तेथी ते कालधर्म पामी चमर नामनो असुरेंद्र थयो.

उत्तम पराक्रमवाळो अनंतवीर्य राजा पोताना मोटाभाइ सहित इंद्रनी जेम साम्राज्य भोगववा लाग्यो. एकदा कोइ

विद्याधरनी सांघे ते बन्ने भाइअोन मित्राइ थइ तेमने ते विद्याधरे सर्व विद्याओ आपी, पछी ते विद्याधर वैताढ्य पर्वतपर गयो. अनतवीर्यनी पासे किराती अने बर्बरी नामनी बे दासीओ हती, ते गीत नाट्यादिकनी कळावडे जगतना चित्तने हरथ करती हती, एकदा समामां ते बन्ने भाइओ पासे त दासीओ नाट्य करती हती, ते पखते नारद त्या आची चढ्या. परतु ते बन्न भाइओनु चित्त नाटक जोवामां तन्मय थयु हतु, तेथी तेमणे नारदनु समान कयुं न्हों एटले नारद मनमां क्रोध पामी त्याथी नीकळी वैताढ्य पर्वतपर गया त्यां सर्व विद्याधरानो राजा दमितारि नामे प्रतिवासुदेव हतो, तेनी पासे नारद गया तेने जोइ दमितारि राजाए उभा थइ आदरपूर्वक सिंहासनपर बेसाढ्या नारदे सिंहासनपर बेसी तेने आशीर्वाद आप्यो तेने राजाए पूछ्यु के—“ हे पूज्य ! तमे समग्र पृथ्वीपर स्वेच्छाए अटन करो छो, तेथी कांइपण अद्भुत जोयु होय तो ते कहो ” ते सांभळी नारदे हर्ष पामी वहु के—“ हे राजा ! हु शुभापुरीमां अनतवीर्य राजानी पासे गयो हतो त्यां किराती अने बर्बरी नामनी बे दासीओनु नाटक में जोयु, तेनु नाटक देवोने पण दुर्लभ छे, ते दासीओ विना हे राजा ! आ तमारु समग्र राज्य धी विनाना भोजननी जेयु तुच्छ लागे छे ” आ प्रमाणे कही कलिप्रिय नारद आकाशमार्गे पोताने स्थाने गया

त्यारपछी दमितारि राजाए पोतानो दूत अनतवीर्य राजा पासे मोकच्यो ते दूते शुभापुरीमा जइ मोटामाइ सहित अनतवीर्यने नमस्कार करी कयु के—“ हे राजा ! आ अर्ध विजयमां जे बांइ उत्तम पदार्थ होय ते सर्व दमितारि राजाने ज योग्य छे तेथी तमारी पासे जे बे दासीओ नाट्य करयामां कुशळ छे, तेमने दमितारि राजा पासे मोकलो ” ते



सांभळी राजाए कहुं के—“ हे दूत ! तुं हमणां जा. हुं कांइक विचार करीने ते बन्ने दासीओने शीघ्रपणे मोकलीश. ” ते सांभळी दूत त्यांथी गयो, त्यारे ते बन्ने भाइओए विचार कर्यो के—“आ दमितारि राजा विद्याशक्तिथी आपणापर हुकूम चलावे छे, तेथी आपणे पण विद्याधर मित्रे आपेली सर्व विद्याओ साधी तेवा बळवान थइए. ” आ प्रमाणे ते बन्ने भाइओ विचार करता हता, ते ज बखते प्रज्ञप्ति विगेरे सर्व विद्यादेवीओ तमनी पासे आचीने बोली के—“ तमे जेने साधवा इच्छो छो ते अमे सर्व विद्यादेवीओ जाते ज तमारी पासे आवी छीए. पूर्वभवमां तमे अमने साधी छे, तेथी अत्यारे साधवानी जरूर नथी. मात्र अमने तमारा शरीरमां प्रवेश करवानी अनुज्ञा आपो.” ते सांभळी ते बन्ने भाइओए तेमने अनुज्ञा आपी, एटले ते सर्व विद्यादेवीओए तेमना शरीरमां प्रवेश कर्यो, पछी ते बन्ने भाइओए हर्ष पामी तेमनी श्रेष्ठ पूजा करी.

एवा अवसरे दमितारि राजाए फरीथी दूत मोकल्यो, तेणे आधी ते बन्ने भाइओने कहुं के—“ दासीओने मोकलवानु कहीने पण तमे मोकली नहीं. तेथी एम जणाय छे के—तमने तमारा प्राणो करतां पण ते दासीओ वधारे प्रिय छे. हजु पण जो तमने तमारा प्राण बहाला होय तो ते दासीओने शीघ्र मोकलो, नहीं तो क्रोध पामेला स्वामी तमारा प्राणोने हरण करशे. ” ते सांभळी ते बन्ने भाइओ बोल्या के—“ स्वामीने तो घणा धनवडे पण संतुष्ट करवा जोइए, तो जो मात्र आ बे दासीओथी ज तेने संतोप थतो होय, तो ते दासीओने काले सवारे ज तमे लइने जाओ. ” आ प्रमाणे कही तेमणे दूतने प्रसन्न कर्यो. पछी ते दूत तेमणे आपेला उतारामां गयो. पछी बुद्धिमान ते बन्ने भाइओ राज्यनो भार मंत्रीओने सौपी प्रातःकाले विद्यावडे ते दासीओनुं रूप धारण करी दूतनी पासे गया, अने तेने कहुं के—“ अमने अनंतवीर्य अने

तेना मोटाभाइए तमारी पामे मोकली छे " पछी ते दूत तेमने लइ हर्प सहित वैताढ्य पर्वतपर गयो अन दमितारि रानाने ते बनेनी भेट करी हाथ जोडी बान्यो के— " हे स्वामी ! अपराजित अने अनतवीर्य ए बने आपनी आपाने आधीन ज छे तेथी तेमये आ बे दासीओ आपने भेट तरीके मोरुली छे " ते सांभळी प्रसन्न थइ दमितारि रानाए ते बनेने नाट्य परवानी आवा करी एटले तेमये पूर्व्वरग विगेरेना अनुक्रमे समग्र विश्वने मोह पमांड तेनु रसिक नाट्य करी यताब्यु तमनु अद्भुत नाट्य जोइ दमितारि रानाए ते बने दासीओने त्रण जगतना साररूप मानी पछी दमितारि रानाए रूपलक्ष्मीबडे समग्र विश्वने जीतनारी पोतानी कनकश्री नामनी पुत्रीने नाट्य शीरववा भाटे ते बन्न दासीओने सौपी, त्वारे ते मायावी दामीओ अननवीर्यना रूपादिक गुणोनु अद्भुत गायन गती सती ते कनकश्रीने नाट्य शीरववा लागी एरुदा ते राजकन्याए तेमने पूछ्यु के— " तमे हेमशां जेना गुणो गाथो छो ते कोण छे ? " ते सांभळी मायाधी चेंदी थपेला अपराजिते कनु के— " ते शुभापुरीनो राजा छे, तेनु रूप कामदेयना रूपनो तिरस्कार करे तेनु छे, कोइपण शशुयी पराभव न पामे तेवो महा पराक्रमी छे, ते अपराजितनो नानो भाइ छे, तेनु नाम अनतवीर्य छे, ययमां पण ते पुवान छे, तेना गुण अमे गाइए छीए, बे युवतिए तेने जोयो नथी, तेनो जय थया ज छे, " ते सांभळी कनकश्रीनु शरीर रोमांथी उल्लास पाम्यु, ते मनथी अनतवीर्यपर आसक्त थइ अने ' ते प्रियने हु क्यारे जोइश ? ' एम ते चिररूढ गुयो विचामां न रही तेणीना इगिताकारथी तेपीनु मन जाणी अपराजिते पूछ्यु के— " हे मृगाधी ! विश्वना अलंकाररूप ते अनतवीर्यने शु तु जोयाने इच्छे छे ? " कनकश्री बोली के— " मने तेनु दर्शन क्यार्थी थाय ? मद माग्गवाळा प्राणी

आने चिंतामणि रत्न दुर्लभ ज होय छे. " अपराजिते कुंगुं— " हे कमलना सरखा नेत्रवाळी ! तुं शोक न कर. तारे माटे हुं विद्याथी ते युवाने तेना मोटाभाइ सहित अही लावी आपुं. " ते सांभळीने हर्षथी गद्गद् वाणीए कनकश्री बोली के— " हे कळावाळी ! तारुं वचन सफळ कर. " ते सांभळी ते वने विद्यावडे पोतपोतातुं मूळ स्वरूप धारण करी प्रगट थया. पळी अपराजिते तेथीने कहुं के— " हे पुण्यशाळी ! आ ज अनंतवीर्ये छे. में तने तेना रूपादिक जेवां कळां छे, तेवां ज छे के नहीं ? तेनी तुं पोते ज सत्री कर. " ते सांभळी ते चतुर कन्या पण निमेष रहित दृष्टिवडे अनंतवीर्यनी सांगुं जोइ ज रही. त्यापछी ते दमितारिनी पुत्री कामदेवथी पीडा पामी, तेथी लज्जानो त्याग करी तथा मानने दूर करी बोली के— " हे मनोहर ! आजसुधी में घणा युवानो जोया छे, परंतु तमारा विना कोइने विषे मारुं मन आनंद पायुं नथी. तो हवे मारापर प्रसन्न थइने शीघ्रपणे मारुं पाणिग्रहण करो अने मारापर अनुग्रह करो. तमारी जेवा सत्पुरुषो अनुरागी जननी उपेक्षा करे ज नहीं. " ते सांभळी अनंतवीर्ये कहुं के— " हे सुंदरी ! जो तारी तेवी इच्छा छे तो चाल. आपणे शुभापुरीमां जइए. " त्यारे ते बोली के— " हे कांत ! हुं तमारी साथे आवीश ज. परंतु मारो पिता तमने अनर्थ करशे. " अनंतवीर्ये कहुं— " हे भीरु ! तेनाथी तारे जरापण भय राखवो नहीं. " एम कही तेणे तरत ज विद्यावडे विमान विकुवुं, तेमां ते वने भाइओ साथे कनकश्री हर्षथी बेठी. पळी विमानने चलावी अनंतवीर्ये उंचे स्वरे आ प्रमाणे बोल्थो के— " हुं अनंतवीर्ये दमितारिनी आ पुत्रीने हरी जाउं छुं. जे कोइ शूरमानी होय तेणे पोतातुं वळ देसाडुं. "

ते सांभळी क्रोध पामेला दमितारि राजाअे तेने हणवा माटे पोताना सुभटो मोकल्या. ते वखते ते वने भाइओ

पासे एक चक्ररत्न सिमाय वीजां सर्व रत्नो प्रगट ( उत्पन्न ) यथा पद्मी महारथा एवा ते वळदेव अने वासुदेवे क्रोधाधी  
 शस्त्रानी दृष्टि करनारा ते दमितारिना सुभटोनी शीघ्र परान्य कर्यो त्पारे सैन्यवडे आकाशने डांकतो अने तेजस्वी शस्त्रो  
 चड वीनळीना उद्योतने करतो दमितारि राचा पोते युद्ध करवा पाछा वळया पद्मी वासुदेवे तेना सैन्यधी उमणु मैन्य  
 तेने धीरज थापी वळदेव सहित वासुदेव तेनी साथे युद्ध करवा पाछा वळया पद्मी वासुदेवे तेना सैन्यधी उमणु मैन्य  
 विद्यामडे विकुर्माने ते दमितारिना सुभटो साथे युद्ध शरु कर्यु अनुक्रमे दमितारिना सैन्ये अनतवीर्यना सैन्यनो पराभव  
 कर्या, ते जोइ वासुदेवे युद्धरूपी नाटकनी नांदीनो जाणे नाद होय एवो पचजय शरुनो नाद कर्यो ते नाद सांभळतां ज  
 दमितारिना सर्व सुभटो मय पामी नाशी गया. त्पारे दमितारिए पोते आतवीर्य साथे चिरकाळ युद्ध कर्यु छेगट अनत-  
 वीर्यने दुर्जेय जाणी दमितारिए चक्ररत्नयु स्मरण कर्यु, एटले जाणे वीजो धर्य होय एवु तेजस्वी ते चक्र दमितारिना  
 हाथमां प्राप्त थयु तरत ज तेणे ते चक्र अनतवीर्य उपर मूरुयु तेथी अनतवीर्य छातीमां ते चक्रना तुमनो आघात थवाधी  
 मूरुओ खाइ पृथ्वीपर पळ्यो, परतु एक वखनारमा ज पाछो स्वस्थ थइ ते ज चक्र हाथमां लइ तेणे दमितारि उपर मूरुयु,  
 तेनाथी ते प्रतिवासुदेव प्राण रहित थइ गयो ते वखते आकाशमां रहेला देवोए वासुदेवना मस्तक उपर पुण्यवृष्टि करीने  
 कसु के—“ हे जनो ! आ अनतवीर्य वासुदेव छे अने तेना मोटा माइ वळदेव छे, तेमनी तुमे सर्वे सेवा करो ” ते  
 सांभळी सर्व विद्याधरो वासुदेवने नम्या

त्यारपक्षी विद्याधर राजाश्रोथी परिवरेला वासुदेव अने चळदेव पोतानी पुरी तरफ चाल्या. मार्गमां कनकगिरि नामनो पर्वत आव्यो, त्यारे खेचरेंद्रोए वासुदेवने कहुं के—“ हे स्वामी ! आ पर्वतपर जिनेश्वरोनां चैत्यो छे, तेमने वां-दीने आगळ चालो.” ते सांभळी वासुदेव सर्व परिवार सहित ते पर्वतपर उतर्या, त्यां चैत्योमां जिनप्रतिमाओने नंदन करी ते सर्व वहार नीकळ्या. तेवामां कोइ स्थाने तत्काळ उत्पन्न थयेला केवळज्ञानवाळा कीर्तिधर नामना मुनिने जोया. ते केवळीने नमस्कार करी वासुदेवे परिवार सहित धर्मदेशना सांभळी. देशनाने अंते कनकश्रीए केवळीने पूछ्युं के—“ हे प्रभु ! मारे बंधुओनो धिरह अने मारा पितानो घात कया कर्मने लीधे थयो ? ते कृपा कर्मने कहे. ” त्यारे मुनिराज बोल्या के—

घातकीखंडना भरतक्षेत्रमांशख नामनुं गाम छे, तेमां श्रीदत्ता नामनी अति दुःखी, गरीब अने अन्यना घरमां कामकाज करीने आजीविका करनारी एरु स्त्री हती. एरुदा ते श्रीपर्वतन उपर गइ. त्यां सत्ययशा नामना मुनिने जोइ तेमने नंदना करी. मुनिए तेणीने धर्माशिप आपी. पछी तेणोए मुनिने कहुं के—“ हे पूज्य ! हुं अत्यंत दुःखी स्थितिवाळी हुं, तो एवो धर्म वतावो के जेथी आलोक अने परलोकमां हुं सुखी थाडं. ” त्यारे साधुए तेणीने धर्मचक्रवाळ नामनो तप करना

१ आ तपमा प्रथम अहुम करी, पारणुं करी, पछी एकरातर साड्नीग उपवास करना अने छोट अहुम करवो. आ तपमा कुल वागी दिवस थाय छे. बीजी रीत एवी छे के प्रथम छठ करी पछी एकरातर साठ उपवास करवा आ रीते हरवाथी कुल १२३ दिवस थाय छे.

कायु. ते तप अगीकार करीने ते पोताने घेर गइ ते तपना प्रभावधी तेणीने पारणा नेदियमे सारु भोजन मळया लाग्यु एकदा पोताना घरनी भित्तोनो थोडो भाग पडी गयो, तेमाधी घणु सुमर्णे नीरुळ्यु, ते जोइ श्रीदत्ता आनद पामी पळी तपने छेडे तेणीए पेला द्रव्यगडे मोटा उलय पूर्वक उत्तम उद्यापन कयु, ते दिवसे मासलपमयने प रणे के इ मुनि त्या आवो उड्या, तमने तेणीए भक्तियो आहार पाणी वहोराव्यां, पळी मुनि आहार करी रखा त्यारे त श्रीदत्ता ते मुनिनी पासे गइ तेमना मुयधी धर्मोपदेश मांमळी तेणीए आद्वधर्म अगीकार कयो त्यारपळी एकदा तेणीए निरार कयो के—“ आ धर्मयो मने रुंइ फळ यशे के नही ? ” आ रीते धर्मने विये विनिक्रिसा करी तेनी आलोतना कयो विना त मरण पामीने हे वरसा कनरुश्री ! ते श्रीदत्ता तु त मारा पुत्र दमितारिनी पुत्री थइ छे ते विनिक्रिसानु आ फळ तरे प्राप्त थयु छे कारण के धर्मनी थोडी पय निराधना घणु दु ए आपे छे ”

आ प्रमाणे केरळीना मुयधी पोतानो पूर्वमन सांमळी कनरुश्री वैराग्य पामी, तेथी तेणे वायुदेवने करु फ—“ हे महाभाग्यमान ! इ ससारथी भय पासु छु, मांटे मने त्रत गहण करवानी आा आपो ” ते सांमळी विस्मय पामी अनत वीर्य कयु के—“ हे कन्याणी ! हमणां तो तु तुमापुरीमां चाल पळी त्यां श्रीस्वयम्भ निनेधरनी पासे मोटा उरताच पूर्वक दीक्षा ग्रहण करणे ” आ प्रमाणे कही ते वायुदेव तेणीने साथे लइ मुनिने भक्तिधी प्रणाम करी परिवार सहित तुमापुरीण गया ते वरते त्यां प्रथमधी प्रतियायुदेवे भोक्लेला विघाघर राताओनी साये वायुदेवना पुत्रने युद्ध करता जोइ महा बळवान बळभद्र वेमनी तामुए दोट्या, अने पोताना सीर ( हळ ) नामना हथियारने चोतरफ भमाडवा लाग्या

तेनाथी भय पामेला दभितारिना सुभटो तत्काळ ज्ददी ज्ददी दिशाओमां नाशी गया. पछी अनंतवीर्य पोताने घेर गया. त्यां सर्व राजाओए मळी वासुदेवनो राज्याभिषेक कर्यो.

एकदा श्रीस्वयंभ्रम जिनेश्वर शुभापुरीए पधार्यो. ते सांभळी वासुदेव मोटा भाई सहित कनकश्रीने साथे लइ तीर्थकरने वांदचा गया. त्यां जइ प्रभुने वांदी तेणे धर्मदेशना सांभळी. पछी हरिनी आज्ञा लइ कनकश्रीए महोत्सव पूर्वक जिनेश्वर पासे दीक्षा ग्रहण करी, अने अनुक्रमे निरतिवार चारित्र्यं पालन करी तथा उग्र तप करी सर्व कर्मनो जय करी मोक्षे गइ.

समकित्तवडे शासननो उद्योत करता ते वासुदेव अने चळदेवे चिरकाळ सुधी राज्य भोगव्युं. चोराशी लाख पूर्णतुं आयुष्य पूर्ण करी वासुदेव उग्रकर्मने योगे पहली नरक पृथ्वीमां उत्पन्न थया. त्यां तेनुं आयुष्य त्रैताळीश हजार वर्षतुं हंतुं. तेटलो काळ छेदन भेदनादिक दुःसह पीडा तेणे भोगवी. ते वखते तेना पूर्वभवना पिता के जे चमरेंद्र थया हता, तेणे तेनी पासे आवी कर्मतुं फळ शांतिथी भोगववा उपदेश आप्यो.

वासुदेवना मरणथी शोकमग्न थयेला चळदेवे पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी सोळ हजार राजाओ सहित जय-धर नामना गणधरनी पासे दीक्षा ग्रहण करी, अने अनुक्रमे दीक्षातुं पालन करी उग्र तप करी ते चळदेव मुनि आयुष्यने अंते काळधर्म पामी अच्युतेंद्र थया.

आ नवद्वीपना भरतचेतने विपे वैताल्य पर्वत उपर गगनवह्म नामनु नगर छे तेमां ऐचर राजा मेघवाहन राज्य करतो इतो तेनी प्रियानी कुक्षिमा अनतवैर्येनो जीव नरकमाथी पुत्रपये उत्पन्न ययो तेनु नाम मेघनाद पाड्यु ते युगस्थाने पाम्यो त्यारे मेघवाहने ठेने राज्यपर स्थापन कर्यो मेघनाद राजाए अतुकमे वैताल्यनी चने श्रेणिओ साधीने पोताने आधीन करी पळी तेये देशोना विभाग करीने पोताना पुत्रोने ते वहेची आप्पा एकदा ते मेघनाद मेरुपर्वतपर नदनवनमां रहेला शाश्वत चैत्योने यादवा गया त्यां अच्युतेंद्र पण आब्या इता तेणे अवधिज्ञानथी मेघनादने ओळखी हर्षथी प्रतिगोध कर्यो ते वरत त्यां अमरगुरु नामना चारण्यशुनि पधार्यो तेमनी पासे ते ऐचराधीश मेघनादे त्यांज दीवा ग्रहण करी ते मेघनाद शुनि तीव्र व्रतनु पालन करी परीपहो सहन करी अते अनशनवडे काळधर्म पामी अच्युत देवलोकमा इद्रना सामानिक देव थया

आ ज जवूद्वीपना पूर्वे महाविदेहदेशना भूपणरूप मगलावती नामनी विनयमां रत्नसचया नामनी नगरी छे तेमां विश्वना जीवोनु चेमकुशळ करनार जेमकर नामे राजा इतो तेने सदगुणोवडे शोभवी रत्नमाळा नामनी प्रिया इती अयदा वागीश सागरोपमनु आयुष्य पूर्ण करी अच्युत देवलोकथी चवीने अपराजितनो जीव रत्नमाळानी कुक्षिमां अवतर्यो ते वज्रते रात्रिमा सुरे सुतेली तेथीए चौद महास्यना जोया, तथा पदरघु वज्रनु स्वप्न जोयु तरत ज जागृत येतेली राथीए ते वृत्तांत राजाने कळो राजाए तेथीने कटु के—“ हे प्रिया ! तारे चक्रवर्ती पुत्र थशे ” ते सामळी राणी हर्ष पामी, अने ते दिवसथी तेथीए गर्भ धारण कर्यो अतुकमे समय पूर्ण यये रत्नमाळाए नथ जगतने मनोहर एवा पुत्रने



प्रसव्यो. राजाए महोत्सवपूर्वक तेनुं पंदरमा स्वप्नने अनुसारे वज्रायुध नाम पाड्युं. अनुक्रमे ते युवावस्थाने पाम्यो त्यारे मोटा उत्सवथी लक्ष्मीवती नामनी राजपुत्रीने परण्यो. त्यारपछी अनंतवीर्यिनो जीव अच्युत कल्पथी चवीने लक्ष्मीवती देवीनी कुक्षिमां अवतर्यो, अने समय पूर्ण थये तेषीए पुत्ररत्नने जन्म आप्यो. पिताए तेनुं नाम महोत्सवपूर्वक सहस्रायुध पाड्युं. ते कुमार पण अनुक्रमे वृद्धि पामी समग्र कळाओनो अभ्यास करी कामदेवना क्रीडोद्यान समान यौवनने पाम्यो.

एकदा क्षेमंकर राजा पुत्र सहित सभामां बेठा हता, ते समये ईशानकल्पना इंद्रे पोतानी सभामां वज्रायुधना समकितनी अति श्लाघा करी, ते उपर श्रद्धा न थवाथी चित्रचूल नामनो एक मिथ्यात्वी देव विवाद करवा माटे क्षेमंकर राजानी सभामां आव्यो. त्यां ते देव मिथ्यात्वनो आश्रय करी बोल्यो के—“ पुण्य, पाप, परभव, आत्मा विगरे कांइपण छे नहीं. ” ते सांभळी अवधिज्ञानवाळा वज्रायुधे तेने हर्षथी कथुं के—“ हे देव ! तुं ज अवधिज्ञानवडे तारो पूर्वभव जो. ते भवमां तें आवा देवसंपत्तिना कारणरूप धर्मकर्म कर्तुं हतुं, तेनुं ज फळ तने मळ्युं छे, ते तुं ज प्रत्यक्ष जो. आ प्रमाणे पुण्य अने पूर्वभव सिद्ध थवाथी जीव तो सिद्ध थाय ज छे. केमके ते विना परभगमां कोण जाय ? अने सुखदुःख कोण पामे ? आम छतां तुं पुण्य पापादिकनो अभाव केम कहे छे ? ” आ प्रमाणे वज्रायुधनुं वचन सांभळी चित्रचूल देव बोल्यो के—“ हे कुमार ! मने कोइ प्रकारे बोध थाय तेम नहोतुं, छतां तमे श्रेष्ठ युक्तिपूर्वक मने तरानो बोध पमाळ्यो ते बहु सारं कर्तुं. तो हवे मारापर प्रसन्न थइने मने मिथ्यामतिये शीघ्र बोधिरत्न आपो. केमके इर्ष्याथी पण सत्पुरुषनुं करेलुं दर्शन

निष्कल धतु नथी " त्तारे वज्रायुधे ते देवने समकितनो बोध कर्यो तेथी प्रसन्न थइ ते देवे नि स्पृह एवा पण ते वज्रायुधने दिव्य आभूषणे आप्यां, पछी ईशानेंद्रनी समामां जइ तेणे इद्रने कणु के—“ हे स्वामी ! तमे वज्रायुधना समकितनी श्लाघा करी ते युक्त ज छे ”

एकदा लोकातिक देवोए आवी क्षेमकर प्रभुने तीर्थ प्रवर्तावयानो बोध कर्यो, एटले ते प्रभुए वार्षिक दान आप्यु, तथा वज्रायुधने राज्य आप्यु. पछी वज्रायुधे तथा देवोण प्रभुनो दीचामक्षेत्सव कर्यो प्रभु पण चारित्र ग्रहण करी अनुक्रमे केवळवान पाम्या प्रभुना केवळज्ञाननी वार्ता सामळी वज्रायुध राजा सर्व परिवार सहित प्रभु पासे जइ देशना सामळी घेर आल्या ते वरुते आयुधशाळाना रवके राजनी पासे आवी चक्ररत्ननी उत्पत्ति कही तथा ते ज वरुते वीजां पण सर्व रत्नो उत्पन्न थयां. पछी वज्रायुध राजाए मोटा उत्सवपूर्वक चक्ररत्ननी पूजा करी त्तारपछी चक्ररत्नने अनुसरी तेणे मगलावती विनयना छए खड साध्या अने अएड धान्नावाळा ते चक्रीए चिरकाळ सुधी छ खडनु राज्य भोगव्यु

एकदा क्षेमकर जिनेश्वर रत्नसचया नगरीना उद्यानमां समवसर्था तेना एनर उद्यानपाळोए चक्रीने आप्या ते सामळी चक्रीए तेसोने हर्षथी साडावार करोड सुवर्णनु प्रीतिदान आप्यु पछी ते चक्री परिवार सहित जिनेश्वर पासे जइ तेमने वांदी तेमना मुखथी धर्मदेशना सामळी वैराग्य पामी तत्काळ घेर आल्या अने तेणे आदरपूर्वक सहस्रायुधने राज्यपर स्थापन कर्यो पछी चार हजार पोतानी राणीओ, चार हजार राजाओ अने सातसो पुत्रो सहिए लोकोए पूनेला वज्रायुधे क्षेमकर प्रभुनी पासे जइ चारित्र ग्रहण कर्यु, अने तीत्र तप करता पृथ्वीपर विचरवा लाग्या केटलो रु काळ गया

पत्नी सहस्रायुध राजाए पण पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी पिहित्ताअच नामना गणधरनी पासे चारित्र ग्रहण कयुं. ते सहस्रायुध राजर्षि श्रुतना पारगामी थइ पृथ्वीपर विचरता एकदा वज्रायुध राजर्षिने मळ्या. त्वारपत्नी स्नाध्याय ध्यानमां तत्पर अने शुभ अंतःकरणवाळा ते वने पितापुत्र चिरकाळ सुधी साथे ज निचर्या. एकदा ते वनेए ईपत्त्रागभार नामना पर्वतपर चडी पादपोपगम नामनुं अनशन ग्रहण कयुं, अने आयुष्य पूर्ण थये त्रीजा त्रैवेयक्रमां पचीश सागरोपमना आयुष्यवाळा देदीप्यमान देवो थया.

आ जंवूद्धीपमां पूर्व महाविदेहने विपे पुष्कलावती नामनी विजयमां मोटी समृद्धिवाळी पुंडरीकिणी नामनी नगरी छे. तेमां शत्रु राजाओना तेजरूपी अग्निने बुझाववामां अद्वितीय मेघ समान अने अद्भुत पराक्रमवाळो घनरथ नामे राजा हतो. महादेवने गंगा अने गौरीनी जेम ते राजाने प्रीतिमती अने मनोरमा नामनी वे प्रियाओ हती. हवे वज्रायुधनो जीव त्रैवेयकर्त्री चर्चने प्रीतिमती देवीनी कुञ्जिमां अवतर्यो. ते वसते तेणीए स्वप्नमां पोताना मुसमां प्रवेश करतो वीजळीवाळो, गर्जना करतो अने अमृतवृष्टिने वरसावतो मेघ जोयो. तरत ज जागृत थइने तेणीए ते स्वप्ननुं फळ राजाने पूछ्युं, त्यारे तेणे कयुं के—“ हे प्रिया ! मेघनी जेम पृथ्वीना संतापने दूर करनार एवो पुत्र तारे थशे. ” त्वारपत्नी सहस्रायुधनो जीव पण त्रैवेयकर्त्री चर्चने मनोरमा देवीना उदरमां अवतर्यो. ते वसते तेणीए स्वप्नमां मनोहर रथ जोइ पतिने तेनुं फळ पूछ्युं, त्यारे राजाए कयुं के—“ हे प्रिया ! तारे पुत्र महारथी थशे. ” पत्नी समय पूर्ण थये ते वने राणीओए अद्भुत पुत्रोने जन्म आप्यो. ते पुत्रो जाणे के क्रीडा करवाना मिपथी मनुष्यशवमां आवेला इंद्र अने उपेंद्र होय तेवा शोभता हता. पत्नी राणी-

ओना स्वप्ने अनुसोर राजाए पहेलानु मेघरथ अने वीजानु दृढरथ नाम पाडु. ते वने पुनो मेरुनी जेम ते नृपकुब्जे शोभापता हता अने बाल कल्पवृक्षनी जेम वृद्धि पामता हता अनुक्रमे रत्नवडे सुवर्णनी जेम अने वसत श्चतुवडे उद्याननी जेम यौवनवडे ते वन्नरु रूप अत्यत शोभा पाभ्यु

आ अक्सरे सुमदिर नामना नगरमां जितशत्रु नामना राजाने जाणे त्रय भुवननी लक्ष्मी हरण करीने आणी होय एनी त्रय पुत्रीओ हती तेमां पहेलीनु नाम प्रियमित्रा, वीनीनु मनोरमा अने तीनीनु नाम सुमति हतु तेमांही पहेली ने पुत्रीओ राजाए मेघरथने आपी अने एक नामी पुत्री दृढरथ कुमारने आपी देवीओनी साथे देवोनी जेम ते प्रियाओ साथे विषयसुख भोगवता ते वने कुमारोए घणो काळ व्यतीत कर्यो

एकदा लोकातिक देवोए आबी श्रीधनरथ राजाने बोध कर्यो, एटले तेणे वार्षिक दान थाय्यु अने वने कुमारोने अनुक्रमे राज्य तथा युवराज पदवी आपी पक्षी चारित्र ग्रहण करी केवळज्ञान पामी भव्य जीवोने प्रतिबोध करता श्रीधनरथ तीर्थकर पृथ्वीपर विचरवा लाग्या

नमता एवा राजाओना मस्तकपरधी पडता पुष्पोवडे जेना चरणकमळ पूजाता हता, एवा मेघरथ राजा स्वर्गने इद्रनी जेम पृथ्वीनु शासन करवा लाग्या एकदा ते राजा पौषघशाळामां यौषध ग्रहण करीने रहेला हता, तेवामां फोडएक पारापत ( पोरु ) भयधी व्याकुळ थइ राजाना उत्सगमा आवीने पडथु ते पक्षीए मनुष्यनी भाषा बोली रानानु शरण

माग्युं. त्पारे राजाए तेने कणुं के—“तुं कोइना तरफथी भय पामीश नहीं. हुं तारुं रचण करीश. ” ते सांभळी ते पारापत तेना उत्संगमां सुसे रणुं. तेडलामां तेनी पाछळ सर्पनी पाछळ गरुडनी जेम एक श्येन पची आवुं, ते मनुष्यभापाए चोव्युं के—“हे देव ! आ मारुं भोजन छे, तेने तमे मुकी धो. ” राजाए तेने जनाव आप्यो के—“हे श्येन ! आ मारे आशरे आवेलाने हुं आपीश नहीं. कारणके चत्रियो प्राणति पण शरणे आवेलाने मूकता नथी. चळी विवेकी एवा तारे पण आ प्रमाणे परना प्राणनो नाश करी पोताना प्राणनी वृत्ति रुखी ए योग्य नथी. जेम तने तारुं जीवित इष्ट छे, तेम बीजाने पण पोतानुं जीवित इष्ट ज होय छे, तेथी करीने जेम तुं तारा आत्मानी रचा करे छे, तेम अन्यना आत्मानी पण रचा कर. तेम ज आ पचीने सावाथी तने मात्र चणिक वृत्ति ज थरो जेने आ पचीना तो आखा जीवितनो नाश थरो. बीजो आहार करवाथी पण लुधानी व्यथानो नाश थइ शके छे, परंतु प्राणीवध करवाथी जे नरकनी व्यथा प्राप्त थाय छे, तेनो चिरकाळे पण नाश थतो नथी. तेथी करीने हे बुद्धिमान् ! प्राणीहिसानो त्याग करी धर्मनो आश्रय कर, के जेथी अलोक अने परलोकमां उचम सुख प्राप्त थाय. ” ते सांभळी श्येन पचीए मनुष्य भापाथी राजाने कणुं के—“हे स्वामी ! आ कपोत माराथी भय पामीने तमारे शरणे आव्यो छे, तो धुधानी पीडाथी पीडित थयेलो हुं कोने शरणे जाउं ? ते कहो. तेथी जेम तमे तेनुं रचण करो छो तेम मारुं पण रचण करो. प्राणीओने धर्म अधर्मनो विचार सुखी अस्थामां ज थइ शके छे. चाकी भूल्यो प्राणी शुं पाप न करे ? ए तमे शुं सांभळ्युं नथी ? चळी हे राजा ! बीजा भोजनथी मने वृत्ति थती नथी, केमके हुं निरंतर तत्काळ

हथेली ट्रायीना मांसना स्वादमां ज आसक्त छु, तेथी करीने हे देव ! लुधानी पीडाथी मरता एवा मने आ पची आपी दो, कारण के महात्मा पुरुषो सर्व प्राणीओ उपर ठपाळु होय छे " ते सांभळी राचाए तेने कसु के— " हे रयेन ! आ कपो तना शरीरमां जेटळु मांस छे, तेदळु मांस हु तने मारा शरीरमांथी कापी आयु, तु फोगट धुपाथी मर नहीं " ते सांभळी रयेन पचीए तेम करवानी हा कही त्योरे राचाए शानवा मगावी एक छाचडामां पारापतने मूयु अने वीजा छाचडामां पोतानु मांस कापी कापीने नांसवा मांडशु जेम जेम राजाए पोतानु मांस कापी कापीने नांसु, तेम तेम ते पारापतनु वनन पधना लागु तेथी थाकीने छेवट शुभमतिवाळा राजाए पोतानु आयु शरीर ते छाचडामां मूगु, ते वयते शहाकार करता मुग्य मत्रीओ गदुगदु स्वरे राजाने फहेवा लाग्या के— " हे पृथ्वीपति ! आ शरीरखेडे आली पृथ्वीनु रक्षण करवानु छे, तो ते शरीरने एक पचीना रचणने माटे केम फोगट तनो छो ? वळी आ एक पचीनो मार आटलो वधो कोद रीते समवतो नथी, परतु आ कोद सायावी सुर के असुर होवो जोइए " आ प्रमाणे ते मत्रीओ बोलता हता, तेदलामा तरत ज त्यो दिव्य अलंकारवेड शोभतो फोद देव प्रगट थइ हाथ जोडी राचा प्रत्ये बोब्यो के— " हे राचा ! ईशान इहे पोतानी समामां तमारी स्तुति करी के— " ब्रहो ! मेयरथ राचाने देवताओ पण धर्मधी चलायमान करवा समर्थ नथी " आची प्रशसा सांभळी माराथी ते सहन थइ नहीं तेथी आ बे पचीओ चिरकाळ्यो युद्ध करता हता तेमना शरीरलो आश्रय करीने में आ तमारी परीबा करी छे तो हे महासत्त्ववाळा राजा ! तमने पय छे के जेथी तंमे परप्राखीनी रचा करवामां तमारा प्रिय प्राणोने पण तण समान गयो छो " एम कही राजानु शरीर साजु घनाथी ते देव स्वग गयो ते सर्व जोइ

मंत्री विगेरे सर्व अत्यंत विस्मय पाम्या, अने तेमोए राजाने पूछुं के—“ हे स्वामी ! आ देव कोण हतो ? अने आ पत्नी-  
ओने पहिलेथी शुं वैर हतुं ? ते कहो. ” त्यारे अग्रधिज्ञानथी जाणीने राजाए काणुं के—

“ आ भवथी पहिलां पांचमे भवे हुं अपराजित नामनो बळराम हतो अने आ वडरथ अनंतनीर्य नामनो वासुदेव हतो.  
ते वसते अमे दमितारि नामना प्रतिवासुदेवने मार्यो हतो. ते संसारमां अमण करी कांइक अज्ञानकष्टने लीधे आ देव  
थयो छे. तथा जंत्रद्वीपना ऐरवत क्षेत्रमां पदुम्निनीवंड नामना नगरमां सागरदत्त नामना इभ्यने धन अने नंदन  
नामना वे पुत्रो हता. ते वने भाइओ एकदा वेपारने माटे नागपुर नामना पुरमां गया. त्यां जेम वे गीघ पचीओ मांसना  
पिंडने जुए तेम तेमणे एक रत्न जोडुं. ते रत्न लेवानी इच्छाथी ते वने भाइओ छतां परस्पर युद्ध करवा लाग्या. कारण के  
एक पदार्थनो जे नेने अभिलाप ते ज वेरुं कारण छे. ते वने भाइओ नदीने कांठे युद्ध करता करता नदीमां पड्या अने  
मरीने महा अटवीमां तेओ आ पारापत अने श्येन थया छे. पूर्वभवना वेरने लीधे आ भवमां पण तेओ युद्ध करता हता.  
तेमने जोइ पेला देवे तेमनो आश्रय करी मारी परीचा करी छे.”

आ प्रमाणे राजां वचन सांभळी ते पचीओ पण तत्काळ जातिस्मरण पामी पोतानी भापाथी वोल्या के—“ हे  
राजा ! पूर्वगवमां रत्ननी जेम अमारो मनुज्य भव पण अमे लोभथी हारी गया छीए, तो हवे अमारी योग्यता प्रमाणे  
अमने धर्म कहीने अमारो अनुग्रह करो. ” राजाए अवधिज्ञानडे तेमनो अभिप्राय जाणी तेमने अनशन ग्रहण करवानुं  
काणुं. ते तेमणे भावथी अंगीकार कर्तुं, अने अनुक्रमे मरीने ते वने भवनपति देव थया.

एकदा मेघराय राजा अट्टम तप करी प्रतिमाए रखा हता. ते वखते 'तमने नमस्कार हो' एम बोली ईशानंद्रे मेघरायने हर्ष-  
 थी नमस्कार कर्यो, ते जोइ इद्रनी राणीओए तेने पूछ्यु के—“हे स्वामी ! तमे ज विधने वद्य छो, छतां तमे कोने नमस्कार कर्यो ?”  
 त्पारे इद्रे कसु के—“ पुढरीकिणी नगरीमां मेघराय नामना राजा प्रतिमाए रहेला छे, ते जिनेश्वर यवाना छे तेमने जोइ मे  
 भक्तिथी नमस्कार कर्यो छे मेरुनी जेम निश्चळ अने ध्यानमां रहेला महा सत्त्ववाळा तेने चलाववा माटे इंद्रोसहित देवताओ  
 अने असुरो पण शक्तिमान नथी ” आ प्रमाणे ते राजानी प्रयासा मुरुपा अने अतिरूपा नामनी तेनी बे पट्टराणीओए  
 सहन परी नहीं तेथी ते देवीओ राजाने सोम पमाडवा माटे त्यां आधी पछी तेमणे कामरूपी वृद्धोनी नीक समान घणी  
 स्त्रीओ विकुर्वीने ते राजाने अनुकूल उपसर्गो करवा आरभ्या. तेमां कोइ चतुर स्त्री कटाचरूपी पाणोचडे तेने वीषया लागी,  
 कोइ स्त्री लज्जानो त्याग करी भृष्टुटिना विलास कारवा लागी. पुष्ट-मोटा स्तनवाळी कोइ स्त्री पोताना केरापाश बांधवाना  
 मियथी हाथ उचा करी सुवर्णना कुम जेवा पोताना कुचकुम देखाडवा लागी, श्रेष्ठ कटिमागवाळी कोइ स्त्री त्रिवळीए करीने  
 मनोहर एग उदरने देखाडवा लागी, कोइ स्त्री वापीना जेवी उढी पोतानी नाभिने चारनार प्रगट फावा लागी, कोइक स्त्री  
 “ आ मारा नितव उपर नराचत थयेला होवाथी त्यां कटीमेखला ( कदोरो ) घसावाथी बहु वाधा थाय छे ” एम माया  
 -कपटथी बोलवी पोताना नितवने प्रगट कारवा लागी, कोइ स्त्री “ हे सती ! मने अही ममरी काली गद ” एवो मिय  
 करी पहेरोलु वस्त्र उचु करी सायळनु मूळ देखाडवा लागी, कोइ स्त्री शृंगार रसरूपी वृचन पुष्पो जेवु उज्वळ स्मित करवा



लागी, कोइ स्त्री विकाररूपी अङ्कुराने मेघ समान गाँतो गावा लागी, कोइ स्त्री पतिना संयोग अने वियोगनी कथा कहेवा लागी, कोइ स्त्री पोतानी अनुभवेली कामक्रीडानुं वर्णन करवा लागी अने केटलीक स्त्रीओ तेनी पासे जइ कहेवा लागी के—“ हे स्वामी ! अमने प्रिय वचन कहो, मनोहर दृष्टिथी अमारी सांभु जुओ अने अमारा कंठमां तमारा हाथ स्थापन करो. ” आ प्रमाणे ते स्त्रीओए आसी रात्रि सुधी राजाने सोभ पमाडवा माटे घणी कुचेष्टाओ करी, परतुं तेथी तो उलडुं तेनुं ध्यान पाणीथी वाडवात्रिनी जेम अधिक देदीप्यमान थयुं. मेरु पर्वतने विपे वायुनी जेम ते राजाने विपे विकुर्वेली ते सर्व स्त्रीओ निष्फल थइ. तेथी ते रूपाने संहरी ते चन्ने देवीओ राजाने नमस्कार करी स्वर्गे गइ.

आ प्रमाणे रात्रिना वृत्तांतथी राजाने संसारपरथी अधिक वैराग्य थयो. पछी अनुपम इमावाळा ते राजा प्रतिमाने पारी पोताने घेर गया.

त्यां एकदा घनरथ तीर्थकर समवसर्यां. तमने वांदवा माटे मेघरथ राजा पोताना नाना भाइ सहित उद्यानमां गया. त्यां प्रभुना मुखर्था वैराग्यनी माता एटले वैराग्यने उत्पन्न करनारी देशना सांभळी ते राजा पोताने घेर आव्या, अने तेणे नाना भाइने कळुं के—“ हे चंभु ! मारे दीक्षा ग्रहण करवी छे, तेथी तुं आ राज्य ग्रहण कर. ” त्यां ते चोन्न्यो के—“ हे ज्येष्ठ चंभु ! मने संसारपर जरा पण प्रीति नथी, तेथी तमारी साथेज-हुं पण दीक्षा लेवानो छुं. ” ते सांभळी राजाए पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन कर्यो. पछी नाना भाइ दृढरथ सहित, सात सो पोताना पुत्रो सहित अने चार हजार राजाओ सहित ते मेघरथे तीर्थकर पासे जइ प्रव्रज्या अंगीकार करी. पछी अग्यार अंगनो अभ्यास करी मेघरथ राजपिं पृथ्वीपर

त्रिबन्वा लाग्या आज्ञवताए करीने युक्त त राजर्षिपिण अरिहठ अने सिद्धनी सेवा आदि बीश स्थानकोना आराधनवडे तीर्थंजर नामकर्म उपार्जन कयुं साधुओमां सिंह समान ते राजर्षिपिण सिंहनिक्कीडित नामनो तप कयों, एक लाउ पूर्व सुधी उग्र च त्रिभु पालन कयुं, पछी अवरतिलक नामना गिरिपर आरोहण करी अनशन ग्रहण करी आयुपने बये सर्वार्थसिद्ध नामना विमानमांते देव थया तेना भाइ हठरथ मुनि पण केटलोक काळ गया पछी अनशन करी ते अ विमानमां देव थया.

आ जयद्वीपिनो भरत क्षेत्रमां मोटी समुद्रिवडे इद्रीनी नगरी नेतु श्रीकृस्तिनापुर नामनु पुर छे अलका नगरीमां युनेरनी जेम ते नगरमां विश्वसेन नामे राता हता अग्निने स्वाहानी जेम ते राजाने अन्निरा नामनी प्रिया हती ते रूप वडे इद्रार्थीने पण जीवनी अने शीटरूपी अलकारने धारण करनारी हती एकदा मेघरथनो चीव सर्वार्थसिद्धी चवीने कमळने धिपे इसनी नेम अचिरादेवीनी कुधिमां अबतयों ते वखते सुरे सुवेली ते देवीए श्रेष्ठ आकारने धारण करनारा चौद शुभ स्वप्नो पोताना भुलमां प्रवेश कराता जांया तत्काळ जागृत थइ देवीए राजाने ते स्वप्नो फळ पूछ्यु, त्यारे राताए कयु के—“ हे प्रिया ! आ समोधी तने तीर्थंकर के चक्रवर्ती पुत्र थये ” पछी प्रभु गर्भमां आव्या पहेलां अनेक शांतिना कर्मरडे पण ने रोगी तथा मरकी विगेरे उपद्रयो शांत थया नहोता ते प्रभुना प्रभावथी आखा कुल्देशमां शांत थइ गया अनुक्रमे गर्भनो समय पूर्ण थयो त्यारे मध्यरात्रि समये अचिरादेवीए सुखे करीने सुवर्थ जेवा बर्थवाळा अने मृगना लालिनवाळा पुत्रने जन्म आप्या ते वखते त्रणे भुवनमां उद्योत थयो अने नारकीओने पण बणवार सुउ थयुं ‘सर्व काळे सर्व तीर्थंकराना सर्व कन्याणकोमां आ प्रमाणे थाय ज छे ।’

ते वसते आसन कंपवाधी जिनेश्वरानो जन्म जाणी छप्पन दिक्कुमारीओए शीघ्रपणे त्यां आधी छतिकर्मो कर्यो. पष्ठी आसन कंपवाघडे अवधिज्ञानना उपबोगथी अस्मितनो जन्म आणी शक्र इंद्र परिचार सहित स्नामी पासे आव्या. जिनेश्वरने नमस्कार करी, जिनेश्वरनी मातानुं पोतानुं नाम अर्थाची, तेथीने अवस्सापिनी निद्रा आपी, तेथीनी पासे प्रभुनुं विकुर्वेलुं वीनुं प्रतिविम स्थापन करी इंद्रे पोतानां पांच रूप कर्यो. एक रूपवडे जिनेश्वरने पोताना हाथमां लइ, वे रूपवडे चामरने धारण करी, एक रूपवडे प्रभुपर छत्र राखी, तथा एक रूपवडे प्रभुनी आगळ वज्रने उखाळी ते इंद्र क्षणवारमां मेरुपर्वतना शिखरपर रहेली अतिपरंपुकवला नामनी शिलापर आव्या. त्यां शक्र इंद्र पोताना उत्संगमां प्रभुने राखी सिंहासनपर बेठा. ते वसते बीजा त्रैसठ इंद्रो पण आसन कंपवाधी जिनेश्वरानो जन्म जाणी पोतपोताना परिचार सहित आव्या. तेमांथी प्रथम अम्युतेंद्रे तीर्थनां जळवडे तीर्थकरने अभियेक कर्यो, अने तयारपष्ठी अनुक्रमे बीजा सर्व इंद्रोए अभियेक कर्यो. तयार-पष्ठी ईशानेंद्रना उत्संगमां प्रभुने स्थापन करी शक्रेंद्रे प्रभुनी चारे बालुमां चार द्युभो विकुर्व्यो, तेमना शींगडांमांथी नीकळेला जळवडे तेमणे प्रभुनुं स्नात्र कर्पुं, अने पष्ठी चंदन, पुष्प अने अलंकारघडे प्रभुनी पूजा करी तेमनी स्तुति करी. तयारपष्ठी जिनेश्वरने प्रथमनी जेम लइ शक्रेंद्रे आचिरा देवीनी पासे जइ मूक्या, अने अस्वापिनी निद्रा तथा प्रभुनु प्रति-विम दरी लीधुं. पष्ठी प्रभुना विनोदने मांटे तेमनी उपर उंचे श्रीदामगंडक अने ओशीका उपर रेशमी वस्त्र अने वे कुंडळ मूक्या. पष्ठी “ जिनेश्वर अने जिनेश्वरनी मातानुं कोइ पण अशुभ चिंतवन करसो, तेनुं मस्तक आर्जकनी मंजरीनी जेम सात प्रकारे मेदाइ जसो. ” ए प्रमाणे देवताओ पासे आपोषणा करावी तथा कुबेर पासे सुवर्ण अने रत्ननी वृष्टि करावी शक्रेंद्र

नंदीश्वर द्वीप उपर गया त्यां अरिहतोना शाश्वत चैत्योमां शक्रद्र तथा बीजा पण सर्वे इद्रो अष्टाहिका महोत्सव करी पोतपोताने स्थाने गया

अहीं हस्तिनापुरमां अचिराद्देवी जाग्या अने पुत्रने ज्योयो त्यारे तेनी दासीओए विश्वसेन राजा पास जइ पुत्रजन्मनी वधामणी आपी ते सांभळी राणाए तेमने पुष्कळ प्रीतिदान आपी मोटो जन्मोत्सव कर्यो पछी “ आ पुत्र गर्भमां हतो त्यारे रोमाविक उपद्रवोनी शांति थइ हती ” एम घारी राजाए तेनु शांति नाम पाड्यु पछी शक्रइडे अगुठामां सक्रमा-वेला अमृतनुं पान करता अमुपम तेज अने रूपवाळा ते अगत्यति वृद्धि पामवा लाग्या मातापिता ते पुत्रने जोबाधी, आलिंगन करवाधी अने यस्तकपर शुभवाधी जाणे अज्ञानदमां मप्र थया होय तेवु सुख अनुभववा लाग्या देवोने पण प्रिय लामे तेवा ते कुमारना ममठ आलाप सांभळी जाणे अमृतपान करता होय तेम मातापिता अत्यंत आनंद पामवा लाग्या अनुक्रमे स्वामी मनोहर पगलां भरवावडे जाणे जगम करुपपृष्ठ होय तेम राजमदिरना आंगणाने शोभाववा लाग्या बाळकनां रूप थारइ करीने आरेला देवोभी साथे प्रभु मनोहर बाळक्रीडा करता हता ‘ वाण्यावस्थामां एवी क्रीडा शोभे ज छे. ’

अनुक्रमे पोताना शरीरनो सचध करवाधी यौवनने शोभावता प्रभु बाळीश घनुप उचा थया सता समग्र विश्वने आनंद आपवा लाग्या त्यारपछी मातापितानी आज्ञाने लीधे जिनेश्वर यशोभती आदि राजकन्याओने परण्या ते कन्याओ तेवा पतिने पात्री पोताना आत्माने धन्य मानवा लागी प्रभु पचीश हजार वर्षना थया त्यारे राजाए प्रभुने राज्य आपी पोते

आत्मकार्य साधुं. त्यारपछी ते शांतिनाथ नामना राजा नीतिथी राज्यनुं पालन करता सता स्त्रीओ साथे उत्तम भोग भोग-  
वषो लाग्या. ' भोगफल आपनारुं निकाचित कर्म एज रीते छीण थाय छे. '

एकदा दृढरथनो जीव स्वार्थसिद्ध विमानथी चवीने यशोमती राणीनी कुचिमां अवतर्यो. ते वखते यशोमतीए स्वप्नमां  
चक्र जोयुं. ते स्वप्नुं फल पूछवाथी जगत्पतिए कहुं के—“ हे देवी ! तने उत्तम पुत्र थशे. ” त्यारपछी समय पूर्ण थये  
राणीए शुभ लक्षणवाळा पुत्रने जन्म आप्यो. स्वामीए स्वप्नने अनुसारे तेनुं चक्रायुध नाम पाडयुं. ते कुमार अनुक्रमे वृद्धि  
पामी युवावस्थाने पाम्यो, त्यारे स्वयंवर तरिके आवेली घणी राजपुत्रीओने ते परएयो.

श्री शांतिनाथ राजाने राज्य करंतां पचीश हजार वर्ष व्यतीत थया त्यारे एकदा आयुषशाळामां चक्ररत्न प्रगट थयुं.  
ते वखते चक्रनी पूजा करी पछी ते चक्रने मार्गे अनुसरी प्रभुए लीला मात्रमां ज छखंड भरत क्षेत्र साधी लीयुं. वत्रीश  
हजार राजाओथी जेमना चरणक्रमळ सेवता इतो एवा श्रीशांतिनाथ चक्री शत्रुओनी शांति करी हस्तिनापुरमां आव्या.  
पछी देवोए अने सर्व राजाओए मळीने वार वर्ष सुधी तेमने चक्रवर्तीपणानो अभियेक कयो. पछी अंतःपुरनी स्त्रीओनी जेम  
चक्रवर्तीनी लक्ष्मीने भोगवता प्रभुए पचीस हजार वर्ष व्यतीत कयो. ते वखते लोकांतिक देवोए आवी प्रभुने कहुं  
के—“ हे स्वामी ! धर्मतीर्थ प्रवर्ताओ. ” त्यारपछी प्रभुए वार्षिक दान दीयुं अने राज्यने विषे चक्रायुद्धने स्थापन करी  
स्वार्थ नामनी शिवीकामां बेसी सुरेंद्रो, असुरेंद्रो अने नरेंद्रोए जेमनो दीवा महोत्सव कयो छे एवा प्रभुए सहस्राश्रवन  
नामना वनमां आवी शिविकाथी उतरी ईशान दिशाए रही वखाभूषणनो त्याग करी हजार राजाओ साथे दीवा अंगीकार

करी तेन वखते प्रभुने मन पर्यव ज्ञान उत्पन्न थयुं पछी वायुनी जेम अग्रतिवधपणे प्रभु पृच्छीपर विचरवा लाग्या  
 अनुक्रमे एक वर्षे फरीधी प्रभु तेज सहस्राप्रवनामा पधार्या त्यां शुक्लस्थानना आश्रयथी प्रभुने केवळज्ञान प्राप्त थयु  
 ते वखते आसननो कप घवाथी प्रभुनु केवळज्ञान जाणी सर्व सुरेंद्रो तथा असुरेंद्रोए पोतपोताना परिवार सहित आबी मनो-  
 हर त्रण प्राकारवालु समवसरण रथ्युं तेमां पूर्वद्वारे प्रवेश करी पूर्वाभिमुखे सिंहासनपर प्रभु विराज्या ते वखते व्यतरोए  
 प्रभुना ज माहात्म्यथी बीजी त्रण दिसाए प्रभुनां त्रण रूप विक्रियां उद्यानपाळोए चक्रायुध राजा पासे जइ प्रभुना केवळज्ञान  
 नी वधामणी आपी तेथोने पुष्कळ प्रीतिदान आपी चक्रायुध राजा अत्यत उत्सुकताथी प्रभु पासे सर्व परिवार सहित  
 आव्या त्यां विधिपूर्वक प्रभुने चांदी तेणे एक चित्ते स्वामीनी मधुर देशना सांभळी देशनाने अते प्रभुने नमस्कार करी  
 चक्रायुध राजाए कहु के-“ हे स्वामी ! करुणारूपी अमृतना सागर समान आपना दर्शन मने आये थयां ते मारु अहो  
 मान्य छे आ छळनी गवेपणा करनार सत्साररूपी राक्षसथी हु अत्यत भय पाम्यो छु तेथी मने दीक्षारूपी रचा आपीने  
 मारापर अनुग्रह करो ” आ प्रमाणे तेणे विज्ञप्ति करी तयारे प्रभुए तेने अनुमति आपी, एटले राजाए पोताना राज्यपर  
 पोताना पुत्रने स्थापन करी पानीश राजाओ सहित त्रिनेश्वर पासे आधीने दीचा अगीकार करी ते छत्रीश मुनिओने श्री  
 शांतिनाथे गणघरो कर्पा तेओए त्रिपदीने अनुसारे द्वादशांगी रची ते, वखते वीजा पण घणा जनीए दीचा ग्रहण करी  
 अने केटलाएके श्राद्धधर्म अगीकार कर्पो. ए प्रमाणे त्रिनेश्वरे चार प्रकारना तीर्थनी स्थापना करी. तयार पछी आकाशमां

१ समवायांग सुवर्मा श्री शान्तिनिशिता ननु गणघरो बला ते मने आश्रयक आदि पणा प्रयोमा छत्रीश बहला घ सत्य बात शनीगम्य

सूर्यनी जेम कुमत-मिथ्यात्वरूपी अंधकारनो नाश करता अने भव्य प्राणीओरूपी कमळोने विकस्वर करता स्वामी चिरकाल सुधी पृथ्वीपर विचर्यो.

श्री शांतिनाथ स्वामीने बासठ हजार साधुओ, एकसठ हजार अने छ सो साध्वीओ, बे लाख ने नेलु हजार श्रावको तथा त्रण लाख ने त्राणुं हजार श्राविकाओ, एटलो गुणना सागर समान चतुर्विध संघनो परिवार थयो, ते चारे दिशामां चार प्रकारना धर्मनी प्रभावना करनार हतो. दीक्षाना दिवसथी पचीश हजार वर्ष गया त्यारे भगवान विहारना क्रमे संमत्तशिक्षरपर पधार्यो. त्यां भगवाने नव सो साधुओ सहित अनशन ग्रहण कर्युं, अने एक मासे शांतिनाथ स्वामी सिद्धि-पदने पास्या. पचीश हजार वर्ष कुमारपण्यामां, षधीश हजार मांडलिकपण्यामां, पचीश हजार चक्रवर्तीपण्यामां अने पचीश हजार वर्ष चारित्रमां ए रीते परिपूर्ण एक लाख वर्षनुं प्रभुनुं आयुष्य हतुं. त्रण जगतना दुःखने शांत करनार श्री शांति-नाथना निर्वाणनो महिमा सुरेंद्रोए अने असुरेंद्रोए आधीने कर्यो. अनुक्रमे केवलज्ञान पामेला श्री चक्रायुद्ध गणधर पण सिद्धिवधूने वर्यो.

इति श्रीशांतिनाथ चरित्र.

ईशखागरायवसभो, कुंथू नाम नैराहिवो ।

विकखायकिंती भयवं, पैसो गैइमणुत्तरं ॥ ३९ ॥

अर्थ-(ईशखागरायवसभो) इच्छाकु वंशना राजाओमां वृषभ समान (कुंथू) कुंथु (नाम) नामना (नैराहिवो) चक्रवर्ती

राजा थया, ते (शिवशायीकर्त्ता) निरयात छे कीर्ति जेनी एवा (भय) भगवान एटले तीर्थकर धरने (अनुत्तर गई) अनुत्तर गतिने एटले मोषने (पत्तो) पाम्या ३८

श्री कृष्णनाथनु सखिस चरित्र

आ जइशीपने विने पूर्वमहाविदेह सेत्रमां आबर्त्त नामना विजयमां ररखि नामनी नगरी छे तेमां सिंहावाट नामे राजा हतो. तेजे एकदा वैराग्य पापी श्रीसकराचार्यनी पासे दीषा ग्रहण करी निनसेयादिक वीश स्यानकोती तेयाथी तीर्थकर नामकर्म उपार्जन कयुं. बिरकाळ सुधी पथिय चारित्रनुं अतिचार रहित पाला करी अते अनशा ग्रहण करी आयुष्यने छेहे काळधर्म पापीने सर्वार्थसिद्ध विमानमां देव थया

आ जइशीपना भारतसेत्रमां हस्तिनापुर नामनु पुर छे तेमां सूर नामे राजा हतो अने तेने श्री नामनी प्रिया हती. एकदा ते सिंहावहनो जीव सर्वार्थसिद्ध विमानमार्थी बवी थीदेवीनी कुद्धिमां अतयों ते बएते राणीए चौद शुभ स्वमी जोयां अनुक्रमे ते देवीए छागना बिहवाळा अने काचन जेवा वर्षेवाळा पुत्रने जन्म आव्यो ते बएते आसनकपथी विने भरनो जन्म जाणी छपन दिफुमारीभोए आवी पृथिकर्म कयुं पछी सर्वे इद्रोए आवी मेरुपर्वतपर लइ जइ प्रधुनो चमाथियेक कयां. पछी इर राजाए पण पुत्रजन्मनो महोत्सव कयां पछी आ प्रभु गर्भमां आव्या त्यारे राजाना सर्वे शत्रुभो कपु जेवा एटले अष्टपसत्ववाळा धर गया, तथा माठाए स्वप्नमां कुस्थ एटले पृथ्वीपर रहेला रत्नना स्तूपने (सचयने-ढगलाने) जोयो हतो, तेथी महोत्सवपूर्वक राजाए तेमनु कुशु नाम पाडसु अनुक्रमे सर्वे उत्तम गुणोना आधारूप ते भगवान बुद्धि



पामी युवावस्था पाम्या, त्यारे राजाए तेमने घणी राजकन्याओ परणावी, तथा तेमने राज्य सोंपी पोते दीक्षा ग्रहण करी.

कुंथुराजा राज्य करता हता तेवामां एकदा आयुधशालामां चक्ररत्न उत्पन्न थयुं. तेनी पूजा करी तेना मार्गने अत्रुसरी कुंथुराजाए भरतना छ खंड साध्या. पछी खीरत्ननी जेम चक्रवर्तीनी लक्ष्मी तेणे चिरकाळ सुधी भोगवी. एकदा लोकांतिक देवोए तीर्थ प्रवर्तववा बोध करेला कुंथुस्वामीए पोताना पुत्रने राज्य सोंपी वार्षिक दान दइ देवेंद्रो अने नरेंद्रोना करेला उत्सव सहित शिविकामां आरूढ थइ सहस्राश्रवनमां जइ हजार राजाओ सहित चारित्र ग्रहण कर्युं. ते ज वखते तेमने मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी ते प्रभु मौरंड पक्षीनी जेम अप्रमत्तपणे पृथ्वीपर विहार करी सोळ वर्षे फरीथी ते ज सहस्राश्रवनमां आव्या. त्यां घातीकर्मनो क्षय थतां स्वामीने केवळज्ञान प्राप्त थयुं. एटले सर्व इंद्रोए आवी समवसरण रच्युं. तेमां पूर्वे सन्मुख सिंहासनपर बेसी पांणीश घनुपनी कायावाळा प्रभुए पांणीश गुणवाळी मधुर वाणीवडे देशना देवानो प्रारंभ कर्यो, ते देशना सांभळी घणा जनोए प्रभु पासे प्रत्रज्या ग्रहण करी. तेमांथी श्रीजिनेश्वरें पांणीश गणधरो स्थापन कर्यो. भगवाना परिवारमां साठ हजार मुनिओ, साठ हजार ने छसो साध्वीओ, एक लाख ने ओगणांशी हजार श्रावको तथा त्रण लाख ने एकाशी हजार श्राविकाओ आ प्रमाणे प्रभुने चतुर्विध संघ थयो. कुंथुनाथ प्रभुं कुल आयुष्य पंचाणु हजार वर्षनुं हतुं. तेमां कुमार अवस्थामां, मांडलिकपणामां, चक्रवर्तीपणामां अने चारित्र पर्यायमां समान अशे एटले के पोणी चौत्रीश हजार वर्षीं दरेकमां पसार कर्यो. छेवट हजार मुनिओ सहित संमंतसैलपर जइ एक मासना अनशनवडे प्रभु मोचे गया. पछी देवेंद्रोए आवी प्रभुना निर्वाण कल्याणकनो महोत्सव कर्यो. इति कुंथुनाथ कथा.

संगरत चैइत्ता ण, भैरह नरैवरीसरो । अरो त्रि अरैय पत्तो, पत्तो गइमणुत्तर ॥ ४० ॥

अर्थ—( सागरत ) समुद्रपर्यंत मर्यादावाळा ( भरह ) भरतचेतने ( चइत्ता ण ) तजीने ( अरो त्रि ) अर नामना ( नरवरीसरो ) नरेश्वर चक्रवर्ती ( अरय ) रत्ना एटले कर्मना अभावने ( पत्तो ) पाम्या सता ( अणुत्तर गरह ) अणुत्तर गतिने एटले मोक्ष गतिने ( पत्तो ) पाम्या छे ४०

अरनाथनी साक्षिस कथा

आ जवूद्रीपना पूर्वमहाविदेह क्षेत्रमा चत्स नामना विजयमां सुसीमा नामनी पुरी छे, तेमां नि सीम पराक्रमवाळा धनपति नामे राजा हतो तेणे एकदा सवर नामना मुनि पासे दीक्षा ग्रहण करी अरिहत आदि वीथ स्थानोना सेवनवडे तेमणे जिननामकर्म उपार्जन कर्युं. चिरकाळ सुधी तति तप करी उत्तम ततनु पालन करी छेगट अनशनवडे काळ धर्म पायी नवमा त्रैवेयकने विपे ते राजर्षि श्रेष्ठ देवपणे उत्पन्न थया

आ जवूद्रीपना भरतक्षेत्रमा हस्तिनापुर नगरने विपे जेनु दर्शन लोभेने आनद आपनारु छे एवो सुदर्शन नामे राजा हतो तेने देवीना जेवी सुदर देवी नामनी राणी हती। एकदा ते धनपतिनो जीव नवमा त्रैवेयकथी चवीने देवीनी कुचिमा अयतयो ते वलते देवीए चांद महास्वभो जायां अनुक्रमे तण ज्ञानने धारण करनार गर्भ पण वृद्धि पामवा लाग्यो. समय पूर्ण थये नदावर्तना चिहवाळा अने वाचनार्णवाळा पुत्रने देवीए जम आप्यो ते जाखी दिक्कुमारीओए आवी तेनु छतिकर्म कर्युं, अने देवेंद्रोए आवी भैरपर्वतपर लइ लइ जमोत्सव कर्यो. प्रभुना माताए स्वमर्मा रत्नना अर-चक्रना आरा

दीठा हता, तेने अनुसरीने राजाए महोत्सवपूर्वक अर नाम पाड्युं. ते प्रभु अनुक्रमे वृद्धि पायी त्रीश धनुषनी कायावाळा थइ युवावस्था पाय्या. ते वखते राजाए तेमने घणी राजकन्याओ परणायी. एकदा पितानी आज्ञायी प्रभुए राज्यधुरा अंगीकार करी. पछी चक्रादिक रतनो उत्पन्न भवाथी तेमणे भरतना छे खंड साधी आसक्ति रहितपणे जेम योगी भोजन करे तेम चक्रवर्तीनी लक्ष्मीने भोगयी. एकदा लोकांतिक देवोए तीर्थ प्रवर्ताववा बोध कयों त्यारे ते प्रभुए संवत्सरी दान आयुं. पछी पुत्रने विषे राज्यनु स्थापन करी शिविकामां आरूढ थइ सुर, असुर अने मनुष्योना परियार सहित सहस्रात्रवनमां गया. ते वखते तेमने चोशुं मनःपर्यव ज्ञान प्राप्त थयु. पछी सिंहनी जेम भय रहित पृथ्वीपर विचरता प्रभु अनुक्रमे त्रण वर्षे फरीथी ते ज सहस्रात्रवनमां आव्या. त्यां प्रभुने केवळज्ञानरूपी सूर्यनो उदय ययो, एटले सर्व देवेंद्रोए आवी समवसरण रच्युं. तेमां पूर्वाभिमुखे सिंहासनपर बेसी एक योजन विस्तारवाळा सर्व भाषाने अनुसरनारी वाणीबडे जिनेश्वरे धर्मनो उपदेश आय्यो. ते सभली अनेक मनुष्योए जिनेंद्र पासे चारित्र ग्रहण क्युं. तेमांथी स्वामीए तेत्रीश गणधरो स्थाप्या. अरनाथस्वामीने कुल पचास हजार साधुओ साठ हजार साध्वीओ, एक लाख चोराशी हजार श्रावको अने त्रण लाख ने वोंतेर हजार श्रावि- काओनो परिवार थयो. आ प्रमाणे भव्य प्राणीओनो अनुग्रह करवा माटे पृथ्वीपर विचरता प्रभुने गुणरूपी मणिओनो निधानरूप चतुर्विध संघ थयो. कुमारपणां आदिक चार स्थानोमां थइने समान भागे भगवंते कुल चोराशी हजार वर्षेनु आयुष्य व्यतीत क्युं छेवटे पोतानो निर्वाण समय जाणी प्रभु संमेतशील पर्यंतपर जइ हजार साधुओ सहित अनशन करी

१ कुमारपणामा, मण्डिकपणामा, चक्रवर्तीपणामां ने चारित्रपर्यायमां—

एक मासे मोक्षपद पास्या ते वखते सर्व देवद्वेष्टेण आवी प्रमुना निर्वाण कल्याणकनो महिमा कर्णे.

इति श्री अरनाथ कथा

चईत्ता भारंहं वाँस चक्कवट्टी महिड्डीओ । चईत्ता उत्तमे भोए, महापउमो तँव चरे ॥ ४१ ॥

अर्थ—( भारह वास ) भरतबंधनो ( चइत्ता ) त्याग करी तथा ( उत्तमे भोए ) उष्म भोगेने ( चइत्ता ) तजी ( महापउमो ) महापद्य नामना ( महिड्डीओ ) मोटी श्रद्धिवाळा ( चक्कवट्टी ) चक्रवर्तीए पण ( तँव चरे ) तपनु आचरण कर्णु-चरित्र ग्रहण कर्णु. ४१

महापद्य चक्रीनी सत्त्विस कथा

आ जयुद्धीपना भरत क्षेत्रने विषे श्रीहस्तिनापुर नामनु पुर छे तेमां इच्छाकु वशरूपी सरोवरमां पद्म समान पद्म मोत्तर नामे राजा राज्य कारतां हतो तेने ज्वाळा नामनी जिनधर्मने विषे रक्त राशी हती तेथीन सिहना स्वप्नयी छचित एवो विष्णु नामे एक पुत्र थयो, तथा बीजो लक्ष्मीना घररूप महापद्य नामे पुत्र थयो बीजो पुत्र गर्भमां आव्यो त्यार तेनी माताए चौद महास्वप्नो जायां हतां ते वझे कुमारो अनुक्रमे श्रुद्धि पामी कळ्वचार्य पासे समग्र कळानो समूह मथीने अनुपम शोभाना भिन्न समान बीजी वयने एटलू युवावस्थाने पास्या. तेमां महापद्यकुमार वधारे पराक्रमी होवाथी पद्मोत्तर राजाए तेने युवराज पदवी आपी कारण के प्राशस्त्यां जे बुद्धिमान होय अने छत्रियोमां जे अल्पन

ज्रीते एवो श्चोय ते ज प्रशंसापात्र गणाय छे.

आ अक्सरे उल्लयिनी नगरीमां श्रीवर्मा नामे राजां राण्य करतो हतो. तेने वितंडावाद करवामां चतुर अने नास्तिक एवो नमुचि नामनो प्रधान हतो. एकदा ते नगरीनी बहार उद्यानमां मुनिसुव्रत स्वामीना शिष्य सुव्रत नामना स्वरिराज पधार्या तेमने नमवा मांटे जता लोकोने जोइ प्रासाद उपर बेठेला राजाए 'आ लोको क्यां जाय छे?' एम नमुचिने पूछ्युं. त्यारे नमुचिए जवाब आप्यो के- "हे देव ! आजे नगरीनी बहार उद्यानमां कोइ साधु आवेला छे, तेने नमवा मांटे तेना भक्तजनो जाय छे." ते सांभळी राजाए कहुं के- "त्यारे आपणे पण त्यां जइए." त्यारे नमुचि बोल्थो के- "जो जबुं होय तो चालो जइए. परतुं त्यां आपे तो मध्यस्थ ज रहेबुं. हुं ज ते सर्वे पाखंडीअने वादमां जीती लइश." त्यारे राजा 'बहु सारुं' एम कही मंत्री सहित उद्यानमां गया. त्यां नमुचिए मुनिने कहुं के- "जो तमे धर्मे जाणता हो तो कहो." ते सांभळी 'आ कोइ नीच माणस छे.' एम जाणी आचार्य महाराज मौन रखा. त्यारे ते अधम मंी जिनशासननी निंदा करतो आचार्यने उद्देशीने बोल्थो के- "आ तो बळदीया जेवो छे, तेने धर्मनी शी खबर पडे ?" ते सांभळी गुरु बोल्या के- "जो तारा मुखमां सरज आवती होय तो अमे कांइक बोलीए." आ प्रमाणे गुरु बोल्या त्यारे तेमना एक धुल्लक साधुए गुरुने कहुं के- "हे पूज्य ! आ धृष्टनी साथे आपने जाते बोलबुं योग्य नथी, तेने हुं ज जीतीश. ते पोतानो जे पच बोलवो होय ते भले बोले." ते सांभळी नमुचि क्रोधथी बोल्थो के- "जेओ वेदधर्मथी बाह्य होय अने शौचधर्मथी रहित होय तेमने देशमां बसवा देवा ज योग्य नथी. ए मारो पच छे." ते सांभळी धुल्लक साधुए कहुं के-

श्री उप-

राध्यन

अ.

॥ ६७ ॥

“अहो ! वेदमां पाणीनो घडो (पाणीयाक), चूलो, सावरणी, घटी अने खांडणीयो ए पांच शूना एटले प्राणीघोनां वध स्थानो कहेलां छे तथा जेओ आ पांच शूनाने सेवनारा होय तेज वेदबाल कहेवाय छे, असे तो ते पाचिथी रहित छीए, तो कम वेदबाल कहेवाइए ? तथा अत्यंत अशौच तो मैथुन कहेवाय छे, ते मैथुननी जे सेवा करे तेने अशुचि कहेलो छे, अने अमे तो ते मैथुनधी विरति पामेला छीए, तेथी अमे अशुचि केम कहेवाइए ? ” आ रीते ते मत्रीने शुद्धके निरुत्तर कर्षो, तथी ते मत्री साधुओ उपर मोडु बैर धारण करी राजा सहित घेर गयो पछी रात्रीए मुनिने हणवा मांटे क्रोधधी अघ थयेलो ते नमुचि उद्यानमा गयो, त्यां जेटलामां ते दुष्ट नमुचि मुनिने हणवा जाय छे, तेटलामां मुनि उपर भक्तिवाळी देवीए तेने स्तम्भित कर्षो प्रात काळे तेथी स्थितिमां तेने जोइ सर्वे नगरना जनो तथा राचा पण विस्मय पाम्या पछी खरि पासेधी धर्मनु श्रवण करी ते सर्व उपशमने पाम्या. सर्व लोकोए नमुचिनी अत्यंत निंदा करी, तेथी ते बहुज लजा पाम्यो देवीए तेन मुक्त कर्षो एटले ते त्यांथी नीकळीने हस्तिनापुरमा गयो त्यां ते महापद्म युवराजने मळ्यो, अने पूर्वना पुण्यथी तेनो मत्री थयो

अहीं हस्तिनापुरना राज्यना सीमाडामां दुर्गम एवा दुर्ग ( किल्ला ) नो आश्रय करीने रहलो सिहनी जेवा उत्कट पराक्रमवाळो सिंहवळ नामनो राजा हतो ते वारवार पभोत्तर रानाना देशमां धाड पाडीने पोताना दुर्गमां पेसी जतो हतो तेथी तेने कोइ पकडीं शकतो नहोतो एकदा क्रोध पामेला पभोत्तर राजाए नमुचिने पूछ्यु क-“आ सिंहवळने प कडवानो कांइ पण उपाय तु जाणे छे ? ” त्वारे नमुचिए हा कही पछो महापद्मनी आज्ञायी ते नमुचि शीघ्रपणे सैन्य

साथे त्यां जइ तेना दुर्गने भांगी तेने बांधीने लइ आव्यो. ते जोइ हर्ष पामेला महापद्मे नमुचिने कहुं के—“ तारी इच्छामां आवे ते माग. ” नमुचिए कहुं—“ हे स्वामी ! समय आवे हुं मागीश. ” आ प्रमाणे, तेना वचनने महापद्मे अंगीकार कर्तुं. पक्षी महापद्मे चिरकाळ सुधी युवराज पदवीनुं पालन कर्तुं.

एकदा महापद्मनी माता ज्वाळादेवीए जैनरथ कराव्यो. ते वखते तेनी सपत्नी लक्ष्मी के जे मिथ्यादृष्टि हती तेणे ब्रह्म-रथ कराव्यो. पक्षी ते लक्ष्मीए राजाने कहुं के—“ आ मारा ब्रह्मरथने नगरमां पहलो भमाडो. ” ते जाणी ज्वाळादेवीए राजाने कहुं के “ जो मारो जैनरथ नगरमां पहलो नही भमे तो हुं भनशन करीश. ” ते सांभली चने राणीओने वलेश न थाय एवा हेतुथी राजाए चन्नेनी रथयात्रानो निषेध कर्तो. तेथी ज्वाळादेवीने महा दुःख थयुं. ते जाणी महापद्मे अत्यंत आतुर थइ विचार्युं के—“ मारी जेवो पुत्र छतां जेम वंजुस माणसनी लक्ष्मी पृथ्वीमां विलय पांमे तेम मारी मातानी इच्छा मनमां ज लय पामी जाय, अने जे पुत्र शक्तिमान छतां मातानां शुभ मनोरथने पूर्ण न करे, ते सत्पुत्रपणानुं अभिमान शी रीते करी शके ? वळी पिताए पण मारी मातानुं कांइपण विशेष मान राखुं नही. वीजी राणीओ समान ज गणी. तेथी मानी एवा मारे मान विना अहीं रेहवुं योग्य नथी. ” एम विचारी रात्रिए सर्व लोको सुता हवा, त्यांरे ते पोताना पुरमांथी नकळी स्वेच्छाए पृथ्वीपर अमण करतो एक अरएयसां तापसोना आश्रममां गयो. त्यां तापसोए तेनो सारो सत्कार कर्तो, तेथी ते महापद्म पोताना घरनी जेम सुखे करीने त्यां ज रक्षो.

आ अबसरे चंपा नामनी नगरीमां जनमेजय नामे राजा हवो. तेने काळ नामना राजाए लडाइमां हराव्यो, तेथी

ते नाशी गयो त्यारे काळ राजाना सैनिकोए चपानगरी मागी, ते वखते सर्व लोको सर्व दिशाओमां नाशी गया  
 अतःपुरनी स्त्रीओ पण कोइ रचक नहीं होवाथी आकुळ व्याकुळ थइ तेमां चपापतिनी राशी नागवती पोतानी पुत्री  
 मदनावळीने साथे लइ नाशीने ते ज तापसना आश्रममां आवी के ज्या महापत्र रहेलो हतो त्या महापत्र अने मदनाने  
 परस्पर दर्शन थर्ता लजाने मद करनारो परस्पर राग-श्रेम थयो ते जाशी नागवतीए मदनावळीने कथु के-“ हे पुत्री ! जे  
 ते पुरुषने जोइ तेनापर तु राग केम करे छे ? तु चक्रवर्तीनी मुरय स्त्री थवानी छे प्तु ज्ञानीनु वचन शु तु भूली गइ के  
 जेथी आवी रीते उत्सुक थाय छे ?” आ जरीते कुलपतिए पण मदनावळीने कथु, तो पण ‘ आ बने परस्पर रागी थवाथी  
 काइक उपद्रव करशे’ एम घारी हुलपतिए पद्यन कथु के-“ तु तारो इच्छा होय त्या जा.” ते सांमली मनमां काइक  
 दुःख पामी पत्र त्याथी नीकळी गयो ‘ प्रियजननो वियोग मोटा पुरुषोने पण दुःखदायक होय छे.’ पक्षी पत्रे विचार  
 कर्यो के-“ हु चक्रवर्ती थवानो ह्यु, तेथी आ मारी ज स्त्री थशे, तो हु क्यारे आ भरतचत्रने साथी तेने परणीश ? तथा  
 अरिहवतां चैत्योवडे समग्र पृथ्वीने भूषित करी मारी मातानो रथयात्रानो मनोरथ हु क्यारे पूर्ण करिश ?” आ प्रमाले  
 मनोरथरूपी रथपर आरूढ थयेलो ते राजपुत्र फरतो श्रीसिधुनदन नामना पुरना उपवनमां गयो ते वखते ते  
 उद्यानमां उजाशी करवा माटे नगरना जनो आवेला हता तथा स्त्रीओ पण आवेली हवी तेवामांते पुरना महासेन नामना  
 राजानो पट्टइस्ती आलान स्वमने उखेडी नगरमां तोफान करीते उद्यानमां आव्यो अने जाथे रोगथी व्याकुळ थयो होय तेम  
 ते नगरनी स्त्रीओ समुख दोळ्यो, तेने आवतो जोइ मयभूति थयेली स्त्रीओ नासवाने शक्तिमान नहीं होवाथी ब्रम पाटवा



लागी के—“जे कोई अहीं वीर पुरुष होय ते अमारं रक्षण करो.” आ प्रमाणे तेमनी ब्रूम सांभळी पद्मकुमार एकदम हाथी तरफ गयो अने तेणे तेनी तर्जना करी. त्यारे ते हाथी पण पाछो वळी कुमार तरफ दोडयो. तेने आवतो अटकाववा माटे कुमारे तेनी सन्मुख पोतानुं उत्तरीय वस्त्र फेंवयुं. ते वस्त्रने मनुष्य धारी क्रोधांध थयेलो हाथी तेनापर दंतप्रहार करवा लाग्यो. तेवामां त्यां स्त्रीओनो कोळाहळ सांभळी पुरजनो एकठा थया हता तथा महासेन राजा पण सामंतो अने मंत्रीओ सहित आवी प्होंब्यो हतो. तेथी ते राजाए उंचा हाथ करी कुमारे कहुं के—“हे वीर ! यमराजनी जेवा क्रोध पामेला आ हाथीथी तुं शीघ्रपणे पाछो हठी जा.” ते सांभळी पद्मकुमारे कहुं के—“हे महाराजा ! एक क्षणवार स्वस्थ चित्ते जुओ. हमणां ज आ मदोन्मत्त हाथीने खीनी जेम हुं वश करी लउं हूं.” एम कही कुमारे एकज मुठीना प्रहाराथी ते हाथीनुं मुख नमावी दीयुं, एटले ते हाथी वस्त्रने तजी कुमारेने पकडवा उंचो थयो, तेटलामां वीजळीनी जेम फलंग मारी कुमार तेनापर चडी गयो, अने तेणे चिरकाळ सुधी हाथ, पगना अंगुठा अने वचनरूपी अंकुशवडे ते हाथीने अत्यंत खेद पमाड्यो. एक नाना हाथीना बच्चानी जेम ते मत्त हाथीने क्रीडा करावता ते कुमारेने जोइ सर्व लोको तथा राजा पण अत्यंत आश्चर्य पाय्मा. आ रीते ते हाथीने वश करी कुमारे तेना मावतने सोंप्यो, अने पोते पर्वतपरथी सिंहेनी जेम ते हाथीपरथी नीचे उतर्यो. ते कुमारनुं रूप अने पराक्रम जोइ राजाए तेने श्रेष्ठ कुळनो पुत्र जाण्यो, तेथी तेने बहुमानपूर्वक पोताने त्यां लइ गयो. त्यां तेनुं मोडुं गौरव करी राजाए तेने पोतानी सो कन्याओ परयावी. ‘आवो जमाइ अणय्य पुण्यवडे ज प्राप्त थाय छे.’ पळी ते राजपुत्रीओ साथे स्वेच्छाए क्रीडा करता छतां पण ते कुमार मदनवळीने भूली गयो नही. ‘कदाच भमरो

लविगलताना पुष्पोनो भोग करे तो पण शुं ते कमलिनीने झुले ? न ज झुले '

एकदा पद्मकुमार रात्रिए सुखे सुतो हतो, तेवामां वेगवती नामनी विधाधरीए तेनु हरण कयुं ते जाग्यो त्यारे तेणे पोतानी मूठी दट रीते बांधीने " अरे ! तु कोण छे ? " एम तेणीने पूछ्यु त्यारे ते बोली के—" हे वीर ! तमारे में हरण कयुं छे, पण तेनु कारण सांभळो, क्रोध न करो वैताढय पर्वत उपर सूर्योदय नामनुं श्रेष्ठ नगर छे तेमां इद्रघनु नामे राजा राज्य करे छे तेने श्रीकाता नामनी प्रिया छे तेमने जयचद्रा नामनी मनोहर पुत्री छे ते पुत्रीने योग्य पति नहीं मळनाथी ते पुलपद्वैपिणी थइ छे. ' जो स्त्रीआने पोताथी हीन पति मळे तो ते अत्यंत दु खदायक छे ' पत्नी में भरत-घेत्रना समग्र राजाओनां स्वरूपो चीत्री चीत्रीने तेणीने वताव्यां, परतु तेणीने कोइ पण रुच्यो नहीं एकदा में तमारे स्वरूप आळेंसीने तेणीने वताव्यु, ते जोइ अयस्कति मणि जेम लोढानु आकर्षण करे तेम तमारा स्वरुपे तेणीना मननु आकर्षण कयुं पत्नी तमारी प्राप्ति दुर्लभ जाणीने तेणीए प्रतिज्ञा करी के—" जो आ पति मने नहीं मळे तो हु अग्निमां प्रवेश करीश " आवी तेणीनी प्रतिज्ञा में शीघ्रपण्ये तेणीना मातापिताने कही, तेथी आनद पामिने तेओए तमने लाबा मने मोकली ते कन्याने धीरज आपवा माटे में तेनी पासे प्रतिज्ञा करी के—"जो हु ते पद्मकुमारने न लावु तो अग्निमां प्रवेश करु " एम कहीने हु अही आवी अने ते पद्मिनीने आनद पमाडया माटे प्रभाकर ( सूर्य ) समान तमने हु लइ जाउ छु तमे ज तेणीना अने मारा जीवितरूप छो, तेथी तमे प्रसन्न थाओ " आ प्रमाणे ते वेगवतीना मुखथी हकीकत सांभळी कुमारे तेनी इच्छा प्रमाणे करवानी अतुहा भापी, एटले ते तेने घरोदय पुरमां लइ गइ प्रातःकाले सूर्येनी जेम ते

कुमारनी इंद्रधनु राजाए पूजा करी. त्यारपछी " जे विधाताए आने उत्पन्न कर्षो छे तेनी हुं अनृण ( देवा रहित ) केवी रीते थाउं ? " एम विचार करती जयचंद्राने ते कुमार विधिधी परणयो.

आ अबसरे ते जयचंद्राना सामाना पुत्रो गंगाधर आने महीधर नामना विधाधरो के जेओ महाविधावाळा हता आने जयचंद्राने परणवा इच्छता हता, तेओए पद्मनी साथे परणेली तेणीने सांभळी, तेथी तेओ क्रोध पामी युद्ध करवा तैयार थइ सर्व सैन्य सहित सरोदय पुरमां आव्या. ते जाणी महा पराक्रमी पद्मकुमार पण विधाधरना सैन्य सहित पुर बहार नीकळी तेमना सैन्य साथे युद्ध करवा लाग्यो. युद्ध करता पद्मकुमारनी सन्मुख कोइ पण रथी, अश्ववार, हस्तीस्वार के पदाति रही शक्यो नहीं. नैर्ऋत दिशाना वायुवडे वादळांनी जेम पद्मकुमारवडे चोतरफ पोतातुं सैन्य वीखरायेतुं जोइ ते बने खेचरो नाशी गया. त्यारपछी पद्मकुमारने त्यां ज चक्र विगेरे रत्नो उत्पन्न थयां, तेने अजुसारे तेणे भरतना छे खंड लीला मात्रथी साधी लीथा. एक स्त्रीरत्न विना सर्व चक्रीनी संपदाने ते पाम्यो, तो पण मदनावळी विना ते सर्व संपत्तिने पद्मराजा निःसार मानवा लाग्यो.

एकदा पद्म चक्री क्रीडाथी फरता फरता ते तापसना आश्रममां आव्या. त्यां तापसोए फळ, पुष्पादिकवडे तेनो सारो सत्कार कर्षो. तेवामां जनमेजय राजा पण फरतो फरतो त्यां ज आबी चडयो. तेणे हर्षथी पोतानी मदनावळी पुत्रीने पद्मचक्री साथे परणावी.

त्यारपछी संपूर्ण चक्रवर्तीनी लक्ष्मीने धारण करता पद्मचक्रीए पोताना नगरमां जइ हर्षथी मातापिताने नमस्कार

कर्मा वेन आधी समृद्धिबाळो जोइ तथा वेनु अद्भुत चरित्र सांमळी तेना मातापिता पण अत्यंत हर्ष पाव्या आ अवसरे श्री सुप्रतारबाभीना शिष्य सुप्रत नामना आचार्य विहारना क्रमधी ते नगरनी बहार आव्या तेमनु आगमन सांमळी पद्मोत्तर राजा परियार सहित तेमनी पासे गया गुरुने बांदी तेमना मुखयो मोहलूपी हिमनो नाश करवामां दुर्धनी प्रभा जर्वा धर्मदेशना सांमळी राजाए हाथ चोढी कसु के—“ हे पूज्य ! हु मारा पुत्रने राज्यपर स्थापन करी प्रत—चारित्र प्रहण करवा अही आठ, त्यांयुधी आप अही ज रहेवा कृपा करवी ” ते सांमळी दुरिए कसु के—“ हे राजा शुभकार्यमां विलंब करवो नही ” आ प्रमाणे गुरुनु यचन अगीकार करी राजा नगरमां गया त्यां मथ्रीओ अने सामतो विगेरे सर्व परिकारने तथा विष्णु नामना मोटा पुत्रने पालावी पद्मोत्तर राजाए कसु के—“ श्री सुप्रत नामना आचार्य पासेधी ससारी असा रता सांमळीने आटलो काळ मे प्रत विना निष्कळ गुमाव्यो पम हु मानु छु तेथी आजि ज हु ते पूज्य गुरुनी पासे प्रतनो स्वीकार करीश, तेथी आ मारा राज्यपर महा पराक्रमी एवा विष्णुदुमारने हु स्थापन करु छु ” ते सांमळी तत्काळ विष्णुकुमारे नगलाथी कसु के—“ हे पिता ! किपाकना फळजेवा आ भोगोवडे मारे सयुं पापकर्मनो नाश करवा माटे हु पण तमारी साथे च दीषा प्रहण करीश ” ते सांमळी राजाए पद्मने बोलावी आप्रहथी कसु के—“ हे पुत्र ! आ राज्य तु प्रहण कर ” त्यारे पद्मे कसु के—“ हे प्रहृ ! आ प्रभाववाळा मारा मोटा भार विष्णुने राज्याभिक करो अने हु जो वेनुं पुवराजपणु अगीकार करीश. ” ते सांमळी राजाए कसु—“ हे कुशळ पुत्र ! तेने जो प्रथम ज मे राज्य लेवानु कसुं, पातु ते प्रहण करपा इच्छतो नथी. पण मारी साथे दीषा लेवा इच्छे छे ” ते सांमळी पद्म कांइ भोग्यो नही,

एटले राजाए तेनो राज्याभियेक कर्यो. पछी मोटा उत्सवपूर्वक सुव्रत आचार्यनी पासे जइ पट्मोत्तर राजाए विष्णुकुमार सहित दीक्षा ग्रहण करी.

त्यारपछी पट्म चक्रीए माताना हर्यने माटे जैनरथने आखा नगरमां फेरव्यो. तेने सर्व पौरजनोए पूज्यो. ते चक्रीए पोताना वंशनी जेम जिनशासननी उन्नति करी, तेथी घणा भव्य प्राणीओए जैनधर्म अंगीकार कर्यो. जैनधर्मना परम भक्त चक्रीए दरेक गाम.नगर, पुर अने आकर विरेरे स्थळे उंचां करोडो जिनचैत्यो कराव्यां.

केटलेक काले पट्मोत्तर राजर्षि केवलज्ञान पामी मोचे गया, अने विष्णुकुमार मुनि उग्र तपस्या करी अनेक लब्धिओ पास्या, तेथी ते पोतानुं शरीर मेरुनी जेवुं (लाख योजन) उंचुं-मोडुं करवा शक्तिमान हता, गरुडनी जेम आकाशमां उडी शकता हता, देवनी जेम अनेक रूप विकुर्वी शकता हता अने कामदेवर्था पण अधिक पोतानुं शरीर रूपवान करी शकता हता. इत्यादिक अनेक शक्तिओ ( लब्धिओ ) तेने प्राप्त थइ हती. परंतु योगीजनोने कारण विना लब्धिओनो उपयोग करता नथी.

एकदा सुव्रत नामना आचार्य महाराज पोताना मोटा परिवार सहित हस्तिनापुरमां वर्षाचोमासुं रहेवा आव्या. ते जाणी पूर्वनुं घेर लेवाना हेतुथी नमुचिए चक्रीने विनंति करी के—“ हे स्वामी ! तमे मने पूर्वे जे वरदान आप्युं हतुं, ते आज हुं मागुं छुं. ” त्यारे राजाए तेने कणुं के—“ तारी जे इच्छा होय ते खुशीथी मागी ले. ” आ प्रमाणे राजाए कणुं, त्यारे तेणे मागुं के—“ हे स्वामी ! मारे यज्ञ करवो छे, तेथी ते यज्ञ संपूर्ण थाय त्यांसुधी मने तमारुं राज्य आपो. ” ते सांभळी

सत्य प्रतिज्ञावाद्या राजाए ते नमुचिने राज्यपर स्थापन कर्यो, अने पोते शुद्ध हृदयवाळा थर अत पुरमां जइने रसा  
 त्यारपछी यगलानी जेवा मायाची ते नमुचिए पुरनी बहार नइ यज्ञपाटकमां कपटथी यज्ञनी दीचा लीधी तेनो राज्या  
 भिकेक थयेलो होवाथी ते निमित्ते समग्र प्रजा तेनी पामे आची तथा जैन मुनिओ विना बीजा सर्वे लिगीओ ( धर्मगुरुओ )  
 तेनी पासे वर्धापन करवा-हर्ष करवा आब्या ते वगते " सर्वे लिगीओ मारी पासे आब्या छे, परतु जैन साधुओ आब्या  
 नथी " एम इर्याधी बोलता नमुचिए ते जैन साधुओनो मोटो अपराध गएयो पछी सुप्रताचार्यने बोलावी ते अनार्य  
 नमुचिए करु के— " जे बसते जे नवो राजा थाय ते वसते सर्वे लिगीओए तेनी पासे जंतु जोइए, कारणके राजा तपोव  
 नोनु पण रचण करे छे, तेथी तपस्वीओ राजा पास जाय छ आची दुनियानी स्थिति छे छतां तमे तो गर्विष्ट छो, लोक  
 मर्यादाथी रहित छो अने मारी निंदा करनारा छो, तेथी मारी पामे आब्या नथी, माटे तमारं मारा राज्यमां रहेतु नही  
 पोने ठेकाणे जाओ जो कदाच तमारासांथी कोइपण मारा राज्यनी हृदमां रहेसो, तो ते शठनो हु अवरय वध करीश  
 तमारी जेवा लोक्रुत्रोधी अने रात्रिरोधीने कोण वमवा दे ? " आ प्रमाणे तेतु वचन सांभळी सरि बोल्या के— " अ  
 मारो आचार नही होयाथी अमे तमारी पास आब्या नथी, परतु तमारा अभिपेक वानत अमे कांइपण निंदा करता नथी. " अ  
 ते सांभळी दुष्ट पुद्दिवाळो नमुचि क्रोधथी बोळ्यो के— " घणु कहेवाथी सरुं आनथी सात दिवम पछी चो तमने कांइने  
 हु बही' नोइश, तो अवरय चोरनी जेम तमारो घात करीश "

आ प्रमाणे तेनी उग्र आज्ञा सांभळी आचार्य मडाराज पोताने उपाथये आब्या पछी सर्वे मुनिओने एकरु करी सर्वे

बृत्तांत कही पूछ्युं के—“हवे आपणे शुं करबुं ?” ते सांभळी एक मुनि बोल्या के—“जे छ हजार वर्षया दुस्तप तपस्या करे छे, ते विष्णुकुमार मुनि हालमां मेरुपर्वत उपर छे. ते पथराजाना मोटा भाइ होवाथी तेनी वाणीचिडे आ नमुचि शांत थरो. माटे ते विष्णुकुमार ऋषिने बोलवावा तेची लब्धिवाळा कोइ मुनिने अहीथी आपणे मोकलीए.” ते सांभळी एक मुनि बोल्या के—“आकाश मार्गे मेरुपर्वतपर जवानी मारी शक्ति छे, पण त्यांथी पाळा आववानी शक्ति नथी. तेथी जो मारुं कार्य होय तो मने आज्ञा आपो.” त्यार गुरु महाराज बोल्या के—“विष्णुकुमार ज तमने अहीं लावशे, माटे तमे त्यां जाओ.” ते सांभळी ते मुनि तत्काळ त्यांथी आकाशमां उडी द्यवारमां विष्णुकुमार पासे गया. तेने आवता जोइ विष्णुकुमार मुनिए विचार्युं के—“अवश्य कांइक संघचुं मोडु कार्य होबुं जोइए, अन्यथा वर्षाकाळमां आ साधु अहीं केम आवे ?” आ प्रमाणे ते विचार करता हता, तेदलामां ते मुनिए आवी तेमने नमस्कार कर्या, अने आववांनुं प्रयोजन कलुं. ते सांभळी तत्काळ विष्णुमुनि ते साधुने लइ हस्तिनापुरमां आव्या, अने तेमणे गुरुने नमस्कार कर्या, पळी घणा साधुभोने साथे लइ विष्णु मुनि नमुचि पासे गया. त्यां एक नमुचि विना बीजा सर्व सांभंत राजाओए अने मंत्रीओ विगेरेए तेमने नमस्कार कर्या. पळी विष्णुमुनिए प्रथम धर्मोपदेश आपी नमुचिने कलुं के—“ज्यां सुधी वर्षाकाळ छे त्यां सुधी आ सर्व साधुभोने आ नगरमां वसवा आपो. आ मुनिओ पोते ज एक ठेकारे वधारे वखत रहेता नथी; परंतु वर्षाच्युतुमां पृथ्वी जीवाकुळ होवाथी साधुओ विचरता नथी. आ मोटा नगरमां भिचावृत्तिथी आजीविका करनारा अमारी जेवा घणा भिक्षुओ वसे, तेथी हे कुशळ नमुचि ! तमने शुं लुकसान छे ? पहेलां तो भरतादिक मोटा राजाओ पण मुनिभोने नमता हता. तमे तेबुं

न करता हो तो भले, पण तेमने काढी शामांट मूको छो?" आ प्रमाणे विष्णुकुमारनु वचन सांभळी नमुचि क्रोधधी बोल्यो के—“ वारवार कहेवाधी शु फळ छे ! जो पांच दिवस पछी तमने कोइने पण हु जोइश तो तेनो अवरय हु निग्रह करीश ” विष्णुमुनिए कणु—“ आ मुनिओने पुरनी बहार उद्यानमां घसवानी छुट आपो ” त्पार क्रोध पांभलो नमुचि पथर जेवा कठोर वचनधी बोल्यो—“ पुर के उद्यान तो दूर रहेा, परतु मारा समग्र राज्यमां पण सर्वथा प्ररार ए अधम पाखडी श्वेतभिन्नुओने रहेवानु नधी तेधी करीने जो तमने तमार जीवित प्रिय होय तो मारु राज्य शीघ्रपणे मूकी दो ” आवां तेनां कठोर वचनधी विष्णुकुमारने कांइक क्रोध आव्यो, तेधी ते बोल्यो के—“ हे नमुचि ! अमने मात्र वरण पग लाज पृथी आपो, तो तेमां पण अमे रही शक्यु ” ते सांभळी तत्काळ नमुचि बोल्यो के—“ नहु सार तमने त्रण पगलां पृथी आपी परतु तेटली जग्याधी बहार जो कांइ पण रहेशे, तो तेन हु तत्काळ हणी नासीश ” आवु तेनु वचन कयुल करी कोप पांभला विष्णुकुमारै वैप्रियलब्धिधी पोतानु शरीर बधारवा माडनु. तेमा सुगट, कुडक अन्न माळा सहित वज्र, धनुष अने सङ्गने धारण कर्यां प्रलय काळना यायुनी नेम मोटा भयकर फूटकार मूकवा लाग्या, पगना पछाडवावेडे समग्र पृथीने कपाववा लाग्या, समुद्रने उछाळवा लाग्या, पर्यतोना शिसरोने पाडवा लाग्या, धात्रीकठना समूहनी जेम चद्र, छर्ग, नक्षत्रादिक ज्योतिश्कर्ने दूर ससेडवा लाग्या, विविध प्रकारनां रूपेयडे सुर, असुर अने मनुष्योने चौंभ पमा डग लाग्या, ए रीते अनुपम शक्तिवाळा ते मुनि अनुक्रमे घृद्धि पांभने मेरपर्णत जेयडा यथा व्रण जगतनो जय करवामां समर्थः एवाः एते त्रिष्णु मुनि ते दुष्ट नमुचिने पृथीपरु पाडीने एक पग पूर्व समुद्रने कांठे अने बीजो



थयो। अनुक्रमे चंद्रनी जेम वृद्धि पामतो ते कुमार समग्र कळामां निपुण थयो अने पंदर धनुपना देहमानवाळो ते युवावस्थाने पाम्यो। एकदा पिताए तेने राज्यपर स्थापन कर्यो। त्थारपळी केटलेक दिवसे तेने चक्रादिक चौद रत्नो उत्पन्न थयां, एटले चक्रने अनुसरी तेणे छ खंड भरत क्षेत्र पोताने वश कर्तुं, सर्व राजाओए मळी तेना चक्रवर्तीपणानो अभिषेक कर्यो। त्थार-पळी चिरकाळ सुधी तेणे भोग भोगव्या। एकदा लघुकर्मो होवाथी संसारथी विरक्त थयेला तेणे विचार कर्यो के—“ मने पूर्वना पुण्यथी आ मोटी समृद्धि प्राप्त थइ छे, तेथी फरीने पण पुण्य उपाजने करवानो उग्रम करूं. कारण के नबुं उपाजने कर्यो विना मूळ धन क्षय पामवाथी दरिद्रता प्राप्त थाय छे.” इत्यादि विचार करी पुत्रने राज्यपर स्थापन करी पोते सद्गुरु पासो दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे उग्र तपरूपी अग्निवडे कर्मरूपी घासने भस्म करी नांल्युं. कुल दश हजार वर्षनुं पूर्ण आ-युष्य भोगवी श्रीहरिपेय चक्री गुनि घातीकर्मनो क्षय करी केवळज्ञान प्राप्त करी महानंदपदने-मोक्षने पाम्या।

इति हरिपेण चक्री कथा.

अंनिओ रायसहस्सेहिं, सुपरिच्चाइ दमं चरे । जयनामो जिनैवखायं, पंतो गंडर्मणुत्तरं ॥ ४३ ॥

अर्थ—( रायसहस्सेहिं ) हजार राजाओ वडे ( अंनिओ ) अन्वित एटले साहित तथा ( सुपरिच्चाइ ) सम्यक् प्रकार राज्यादिकनो त्याग करनार ( जयनामो ) जय नामना चक्रवर्तीए ( जिनवखायं ) जिनेश्वरे कहेला ( दमं ) इंद्रिय अने नोइंद्रियना दमनरूप चारित्र्युं ( चरे ) आचरण कर्युं. तथा ( अणुत्तरं गंडं ) अनुत्तर गतिने एटले मोक्षगतिने ( पंतो ) पाम्या. ४३.

जय चक्रीनी सच्चित्त कथा—

शाज जयद्वीपना भरतचैत्रमां सपत्तिना गृहरूप राजगृह नामे नगर छे तेमां यशरूपी अमृतना समुद्ररूप समुद्रविजय नामे राजा हतो तेने पवित्र लावण्यवाळी, शीलरूपी अलकारने धारण करनारी अने मनोहर गुणश्रेणिना वप्र ( मिश्रा ) समान वप्रा नामनी प्रिया हती तेमने चौद महास्वप्नोए खचन करेलो जय नामे पुत्र थयो ते शरीरनी लक्ष्मीवडे जयन्तना रूपने जीतनार हतो ते यमुना नदीनु अमृत समान जळ पीने<sup>१</sup> अनुक्रमे युवावस्थाने पाम्यो तेनु शरीर चार घटुप उचु थयु ते वसते तेणे पितानु राज्य धारण कर्यु पछी चक्र विगेरे रत्नो उत्पन्न थयां त्यारे तेणे भरतना छ खड साथी स्त्रीरत्ननी जेम चक्रीनी लक्ष्मी चिरकाळ सुधी भोगवी एकदा सप्तर उपर वैराग्य धवाथी तेणे विचार कर्यो के—

“ सुचिरमपि उपित्वा स्यात् प्रियैर्विप्रयोगः, सुचिरमपि चरित्वा नास्ति भोगेषु तृप्तिः ।  
सुचिरमपि सुषुप्त याति नाश शरीर, सुचिरमपि विचिन्त्यो धर्म एक. सहाय. ॥ ”

“ चिरकाळ सुधी साथे रखा छतां प्रियजनोनो वियोग थाय ज छे, चिरकाळ सुधी भोगव्या छतां भोगेने विपे तृप्ति थती ज नथी, चिरकाळ सुधी सारी रीते सुषुप्त-पोषण कर्यो छतां शरीर नाश पांमे ज छे । अर्थात् जीवने कोइ पण सहाय

१ रानगृह पासे यमुना नदी होवाथी आम कसु छे

भूत थतुं नथी. ) तेथी करीने चिरकाळ सुथी सहायरूप थनारो एक धर्म ज चित्तवत्ता ( करवा ) योग्य छे. ”  
आ प्रमाणे विचारवडे तीत्र वैराग्य पामी पुत्रने राज्य सोंपी ते जयचक्रीए संवेगी गुरु पासे चारित्र ग्रहण कर्युं.  
अनुक्रमे तपरूपी वायुवडे कर्मरूपी मेघनो नाश करी केवळज्ञान पामी जयचक्रीमुनि कुल त्रण हजार वर्षनुं आयुष्य पूर्णे करी मोक्षे गया.

इति जयचक्री कथा.

दसण्णरज्जं सुइत्थं, चइत्ता णं मुंणी चरे । दसण्णभदो निर्झखंतो, संखवं संकेण चोइओ ॥ ४४ ॥

अर्थ—( सखं ) साक्षात् ( संकेण ) शक इंद्रे ( चोइओ ) अधिक संपत्ति देखाडवावडे प्रेरणा करायला एवा ( दस-  
णभदो ) दशार्णभद्र राजा ( सुइत्थं ) मुदित एटले समृद्धिवाळा ( दसण्णरज्जं ) दशार्ण देशना राज्यनो ( चइत्ता णं ) त्याग  
करीने ( निखंत्तो ) घरथी बहार नीकळ्या सता तथा( मुणी ) मुनि थया सता ( चरे ) विचरता हवा.

दशार्णभद्र राजानी संक्षिप्त कथा.

आज भरतचेवने विषे दशार्ण नामना देशमा दशार्णपुर नामे नगर छे. तेमां भद्रपणानी खाणरूप दशार्णभद्र नामे  
राजा हतो. शुद्ध आत्मावाळो ते राजारूपी हंस सत्पुरुषोना चित्तरूपी कमळोमां नसतो हतो अने ते राजाना चित्तमां जिने-  
श्वरकहेलो धर्म वसतो हतो. तेना अंतःपुरमां मनोहर रूपवाळी पांचसो राणीओ हती. तेनी प्राप्तिनी चित्तावडे-इच्छावडे

ज देवताओ निद्रा लेता नथी, एम तक कराय छे ते राजनि समुद्रना जळनी जेम आपी पृथ्वीने डांकी दे तेटली मोटी सेना हठी तो पण समुद्र जेवो गभीर ते राजा मर्यादानुं उल्लंघन करतो नहोतो

ए समये बराड देशमां धान्यना समृद्धी भोरु धान्यपुर नामनु पुर हतु तेमां कोइ धनवान महचर पुन रहेतो हतो तेने एक स्त्री हती, ते कुलना हती ते तेनो स्वामी ज्यारे बहार जतो त्यारे एक सन्यासी साथे इच्छापूर्वक क्रीडा करती हती एकदा ते नगरमां कोइ नटोए थावी नाटक प्रारभ्यु, तेमां एक जुमान नट स्त्रीनो वेप पहेरी नृत्य करतो हतो तेने ते दम जाणवामां निपुण एरी कुलटाए कोइक रीते पुरुष छे एम जाणी लीयो तेथी तेनापर ते अत्यंत आसक्त थइ ' कुलटा स्त्रीने वायुनी नेम क्याइ पण प्रतिगध होवो नथी क स्थिरता होती नथी तेने तो जे कोइ युवान अने दृढ शरीरवाळो पुरुष होय ते प्रिय लागे छे ' तेथी ते कुलटाए लज्जनो त्याग करी गुप्त रीते तेना नायकने कणु के—“ जो आ तमारो नट ते ज वेपने धारण करी मारी साथे क्रीडा करे तो हु तमने उचम किमती मनोहर वस्त्र बढीश तरीके आपु ” ते सांभळी नटाधिपतिए हर्षयी तेनु वचन अगीकार करुं प्राये करीने नट लोको कुशीळीया ज होय छे तेमां पण स्त्रीओए ज प्रार्थना करी एटले तो पछी कहेपु न शु ? पछी ते नटना स्वामीए तेथीने कणु के—“ आ नट हमणां ज तारी साथे आने, परतु तारु घर क्या छे ? ” त्यारे तेथीए पोतानु घर तेने देखाड्यु पछी ते कुलटाए घेर जइ ते नटने मांटे खीर तैयार करी, तेटलामां ते नट पण स्त्रीवये ज तेथीने घेर आब्यो तेने ते कुलटाए प्रथम भोजन करथा वेसाड्यो, तेनी पासे मोटो थाळ मूळी तेमां रीर, धी अने खांड पीरसी जेटलामां ते नटे खावानो आरभ कर्यो, तेटलामां तेथीना जार

संन्यासीए द्वार पासे आवी कह्युं के—“ हे प्रिया ! द्वार उघाड. ” ते सांभळी व्याकुळ थयेली कुलटाए धीमेथी नटने कह्युं के—“ आ तल भरेला घरमां दूर खूणामां जइने तुं वेसी जा. ” त्यारे ते नट पण त्यां जइ छुपाइ गयो. पछी तेणीए द्वार उघाड्युं, एटले ते संन्यासी घरमां आव्यो. त्यां खीरनो पीरसेलो थाळ जोइ तेणे पूछ्युं के—“ आ शुं छे ? ” ते मायाथी बोली के—“ हुं भूखी थइ छुं, तेथी सावा वेसती हती त्यां तमे आव्या. ” ते सांभळी संन्यासी बोल्थो के—“ हुं भूल्थो छुं, माटे आ तो हुं ज साइश. ” एम कही ते संन्यासी वळात्कारे सावा वेठो, तेटलामां वरना स्वामीए आवी ‘ द्वार उघाड. ’ एम कह्युं. घरधणीने आव्यो जाणी ‘ हये हुं क्यां जाउं ? ’ एम संन्यासीए तेणीने पूछ्युं, त्यारे ते बोली के—“ आ तल भरेला घरमां जइ संताइ जाओ, पण तेमां दूर जशो नहीं. केमके तेना खूणामां सर्प रहेलां छे. तेथी जीवितनी इच्छावाळा तमारें आघा जंतुं नहीं. ” ते सांभळी वहुं सारं कही ते संन्यासी जार पण ते ज घरमां पेठो. त्यारपछी ते कुलटाए तरत ज द्वार उघाड्युं, सरळ प्रकृतिवाळो तेनो स्वामी घरमां आव्यो. तेणे पण पेलो थाळ पीरसेलो जोइ पूछ्युं के—“ आ थाळमां खीर केम पीरसी छे ? ” त्यारे ते बोली के—“ हुं भूखी थइ छुं, तेथी सावा वेसती हती. ” ते सांभळीने ते बोल्थो के—“ पारे पाछुं कार्य माटे जंतुं छे, तेथी हुं ज जमी लउं ” त्यारे ते बोली के—“ आजें आठम छे, तेथी स्नान कर्या विना शी रीते साशो ? ” त्यारे ते बोल्थो—“ हे प्रिया ! तें स्नान कर्युं छे एटले में पण स्नान कर्युं छे एम जाणी ले. ” ते सांभळी ते बोली.—“ आपणो एवो धर्म नथी, माटे तमे एम न करो. आपणें शिवधर्मी छीए, तेथी स्नान कर्या विना भोजन थइ शके नहीं. ” आ प्रमाणें तेणीना कसा छतां पण ते स्नान कर्या विना ज

ब्रह्मकार उभया पत्नी.

अही गत्तना परमां पुरायला नटे रिगार कर्पा क—“ इ अही भूख्यो गा मांटे पनी रहु ? ’ एम रिचारी तलने पे दापरटे मगर्जनने तथा कुही कुहोने ७ एगा लाग्यो ते वसने पेला मन्यानीए तनी कुहो तांभळी रिगायुं क—“ अही मप कुहाडा मारता नलाय छ, तथी आ परतो एसामी भोचन करयामां अग्र छे, तेटलांमां इत ७ जाये तेम पहार रीकळी चाउं ” एम रिचारी त गीप्रयणे परमांथी नीरुळी नामी गयो त नोद ‘ मारो पय आ समय छे ’ एम धारी नट परा तनी पाळ्ड नाडा तमने नीरुळा जोद गृहसामीए सरख्ड हृदयथी पोगानी स्यो गूळ्डु क—“ आ पे मी पुरण गया ते क्को ७ त्ते ? ’ त्यारे गारसालिक पुढियाळी ते तुनटा पोलनी के—“ मे तमन प्रथम ७ कहु हतु क स्नान कर्पा विना भोचन न करो मे निरार गेवा करान आपला परमां पार्वती मन शकरने रात्या हवा, ते अत्यारे तमारु स्ना ७ रहि ७ भोजन नार ७ पन्न नामी गर्पा ते गीमळी “ मे आ पहु खोडु कर्पु ” एम पधाचार करी तेण प्रियाने कहु—“ हे प्रिया ! आ देखो कर्पाथी शी री ७ पाछा आपले पेर आणे ? ” ते गीमळी—“ जो आ मारा पति परदेश नाय, तो हु सोच्छाए जीडा करी गहु ” एम रिचारी पतिनी पेरिणी एनी ते स्वच्छाचारी कुलगण पल्लुं के—“ नो ७ मे त रा उद्यमथी न्यायोपाहित पगा द्रव्यरुटे पार्वती मन शंकरनी पूजा करो, तो तथो पाछा आपले घर आय ” आ प्रमाणे प्रियातु वचा अंगीकार करी ते महारपुत्र वधारे द्रव्य मेळयामांटे दर्यागे देवामां गयो ‘ धर्मना छळथी गुर मागम पय छेताराय, तो पीनातु नु कडेतु ? ’

त्या पोरना घेयमां ते राम करवा रयो तेमां तेणे केटलाक दिवसे दम गदीयाणा गुरार्णे उपार्ति कर्तुं, तेटला अन्य

द्रव्यथी तेने संतोष थयो नहीं. तोपण तेने प्रियासुं स्मरण थतां ते घर तरफ जवा नीकळ्यो. मध्यान्ह समये कोइ ठेकाणे वनमां एक वृक्षनी नीचे ते विश्रांति लेवा वेठो. आ असरे दशार्णभद्र राजा विपरीत शिवावाला अश्वथी हरण कराहने फरतो फरतो पाणीनी शोध करतो ते वृक्ष पासे आव्यो. तेने जोइ “ आ अतिथिसत्कारने लायक कोइ महापुरुष छे. ” एम विचारी ते महत्तरपुत्रे राजाने आत्रकार आपी जळ आप्णुं. राजा पण ते जळनुं पान करी अश्वपरथी पर्योणने नीचे उतारी चणवार विश्रांति लेवा वेठो. पछी स्वस्थ थयेला राजाए ‘तुं ऋण छे ?’ एम तेने पूछ्युं, त्यारे तेणे पोतानो सर्व वृक्षांत कळ्यो. ते सांभळी बुद्धिमान राजाए विचार कर्यो के—“ आनी ही अत्रय कुलटा छे, तेथीज तेणीए आने छेतयो छे. परंतु आसुं धार्मिकपणुं जोइ मने मनमां आश्रय थाप छे, के जे द्रव्य रहित छतां पण द्रव्यने उपार्जन करी पोताना देवनी पूजा करवा इच्छे छे. कुशल पुरुषो द्रव्य छतां पण तेनो व्यसनादिकमां दुरुपयोग करे छे, अने आ मुग्ध छतां पण धर्मने साटे धन उपार्जन करवा वलेश सहन करे छे. तेथी आ धार्मिक पुरुषनो हु शो प्रत्युपकार करूं ? ” आ प्रमाणे राजा विचार करतो हतो, तेदलामां अश्वना पगलाने अनुसरतुं तेनुं सैन्य आवी पहोंच्युं. पछी राजा ते उपकारी पुरुषने साथे लई पोताना नगरमां गयो. त्यां तेनो भोजनादिकवडे सारो सत्कार कर्यो.

ते वसते वनपाळरु पुरुषोए आत्री राजाने वधाप्रणी आपी के—“ हे देव ! आजे आपणा उद्यानमां छेला तीर्थकर महावीरस्वामी समवसर्गो छे. ” आ प्रमाणे कर्णेने अमृत समान तेमनुं वचन सांभळी राजाना शरीरमां रोमांचरूपी कंबुक व्याप्त थया, ग्रने तरत ज आसनपरथी उभा धइ तेणे जिर्नेदनी दिसा तरु पृथ्वी सुधी मस्तक नमावी प्रभुने नमन कर्तुं. पछी ते उद्यानपालकोने घणुं प्रीतिदान आपी सत्सुरोमां अप्रेमर एवा ते श्रेष्ठ राजाए विचार कर्यो के—आ परदेशी

पुरुष तथाप्रकाराना विवेक रहित छातां पण पोताना देवने सर्व सपत्तिवडे पूजवा इच्छे छे, तो सर्व सामग्रीवडे सहित अमारी जेवा विनेकी पुरुषोए विशेषे करीने अरिहत्तनी पूजा करवी योग्य छे " आ प्रमाणे विचारी राजाए हाथी विगेरेना अधिकारीओने बोलावी आज्ञा आपी के—“ प्रात काळे जगद्गुरुहे वादना लबु छे, तेथी सर्व सैन्य विगेरेनी उंचामा उची शोमा थाय तेम करजा ” आ प्रमाणे आज्ञा आपीने पछी आत्या नगरमां आघोपणा करावी के—“प्रभात काळे सर्वज्ञेने वांदावा जवा माटे सर्व सामतो, मत्रीओ अने पुरजनेए पण श्रेष्ठ सामग्री तैयार करवी, ने ते सहित राजा साथे वादवा आवधु ” पछी राजाए पोताना सेवको पासे नगरना मार्गो तूथ, छाण, राख विगेरे कचरो कढात्री साफ कराव्या, तेमां चदन मिश्रित जळ छटावी पुष्पना समूहोवडे त्रिचित्र रचनाकरावी, ठेकाणे ठेकाणे जाणे लक्ष्मीने क्रीडा करवानी हींचोंग राट होय तेवी वदनमाळाओ-तोरणनी श्रेणीओ-बघावी. तेनापर जाणे कलक रहित चद्रो मूरुया होय तेना रुपाना कळशो मूकाव्या ते वसते ठेकाणे ठेकाणे करेला सुगधी धूपना धूमालाने लीधे जाणे अकाळे मेघ चट्यो होय तेम ते नगरमां देसावा लागु अने माणिक्यनां तोरणो बधाववाथी जाणे इद्रघनुपने धारण कर्युं होय एवु आकाश जणाना लागु मगळना हेतुरूप करोडो धजाओवडे आलु नगर शोभितु कराव्यु अने स्थाने स्थाने मनोहर मांचाओ मडाववाथी ते नगर विमाननी जेम शोभवा लागु राजानी आज्ञाथी-जंझ, मल्ल अने नः विगेरे जनो स्थाने स्थाने पोतपोतानी कळाओ देसाडवा लाग्या आ रीते राजाए अधिकारीओ पासे सांदात् स्वर्गना नगर जेतु पोतानु नगर बनाव्यु त्यारपथी प्रात काळे राजाए स्नान कर्युं, चदनवडे शरीराने विलेपन कर्युं, वे देवदूय वस्त्रो धारण कर्यां, शरीरे देदीप्यमान



अलंकारो पहेंयां.

पक्षी " कृत्यार सुधी कोइए न बांधा होय एवी रीते हुं आजे प्रभुने बांटीश. " एम अभिमानयुक्त विचार करी राजा पट्टहस्तीपर आरूढ थयो, तेना मस्तकपर पूर्णचंद्र जेवु उज्वळ छत्र धारण करवामां आवुं, चारे बाहु फीणनी जेवा उज्वळ चार चामरो तेने वीक्षावा लाग्या. तेनी फरता हजारो सामंन राजाओ श्रेष्ठ शणगार धारण करी पोत पोताना हाथीओपर आरूढ थइ जेम इंद्रने सामानिक देवो वींटाइ वळे तेम वींटाइ गया. त्यागपछी ते श्रेष्ठ राजाए हाथीने पगवळे प्रेरणा करी एटले ते हाथी जाणे के ' मारा चालवार्थी पृथ्वी भांगी जसे ' एम धारतो होय तेम धीमे धीमे चाल्यो. ते वखते मणिना आभूषणोथी शगगारेला वीजा हजारो हाथीओ जाणे चालता पनत होय तेम चाल्या. तेनी पाछळ सुर्यना अश्वीना जाणे सहोदर होय तेवा अने घणा आभूषणोथी शणगारेला एवा लाखो अश्वी शोभामां दृष्टि करता चाल्या. तेनी पाछळ घोडा जोडेला, मनोहर लक्ष्मीवाळा जाणे सुर्यना ज रथ होय एवा हजारो रथो चाल्या. तेमनी पाछळ विप-तिनो नाश करनारा, विविध आयुधने धारण करनारा तथा अति पराक्रमवाळा करोडो पत्तियो' चाल्या. तेमनी पाछळ पांच सो राणीओना मीयानाओ जाणे देवीओ सहित विमानो होय तेम चाल्या. ते वसते शब्द करती घुबरीओना अवाजयी दिशाओने वाचाळ करता एवा अने आकाश सुधी उंचा एवा पांच वर्णना हजारो ध्वजो साथे चालता शोभी रखा हता. भंभा, भेरी विगेरे लाखो वाजिनो एक साथे वागता हता, तेथी आखुं जगत शब्दमय थयुं होय एम जणाहुं इतुं. मंगलपाठको

१ चालता सीपदओ.

हर्षथी मांगलिक वचनो घोळता हता, अने गर्वयाओ कर्णेने अमृत समान सगीत गाता हता. अस्सराओनी जेवी वेरयाओ राचानी आगळ पगले पगले भगवानना गुणेना गायन सहित नृत्य करती चालती हती

आ रीते मोटी श्रद्धिवडे भव्यजनोना मनने आनद आपतो, सदभावरूपी अमृतवडे पुण्यरूपी घृष्टोने सींचतो, कल्प घृष्टनी जेम याचकोने अत्यंत दान आपतो अने अहकारथी पोताने उत्कृष्ट सपत्तिनु स्थान मानतो ते दशार्णभद्र राजा सर्व परिवार, पुरचनो अने ते महत्तरपुत्र सहित समवसरणनी समीपे जड पहोंच्यो त्यां हस्तीपरथी उतरी छत्र, चामरादिक राजचिहोनो त्याग करी सर्व परिवार सहित निनेश्वरने त्रण प्रदक्षिणा करी विधिपूर्वक भगवानने तम्यो पल्ली हर्षथी गवृग्द वाणीए मोटा अर्थवाळा स्तोत्रोवडे विनाधीशनी स्तुति करीने ते जनाधीश ( राजा ) योग्यस्थाने घेठो

आ चरते अधिज्ञानवडे दशार्णभद्रनो तेवो गर्वमय अभिप्राय जाणी शक्र इद्रे विचार कर्यो के—“ अहो ! दशार्ण भद्रनी प्रभुविपे अनुपम भक्ति छे, परतु आ वाग्तमां गर्त करवो तेने योग्य नथी केमके त्रणे भुवनवडे पण भगवाननी सपूर्ण भक्ति थड शके तेम नथी ” आ प्रमाणे विचार करी सपत्तिना अधिरूपणाथी उत्पन्न थयेला तेना मानने हरवा माटे तथा तेने पोष करवा माटे शक्र इद्रे शैरावण तामना देवने आज्ञा करी, तेथी तेणे उज्वलपणाथी अने उचाइथी कैलास पर्वतनो पण पराभव करे एरा चोसठ हजार हाथीओ विकुर्व्या एक एक हाथीने पांच सो ने चार चार मुल विकुर्व्या, दरेक मुले आठ आठ दांत विकुर्व्या, दरेक दाते आठ आठ मनोहर वाचो विकुर्वी, दरेक वाचमा आठ आठ कमळो विकुर्व्या, दरेक कमळने एरु एरु लास पत्रो विकुर्व्या, दरेक पत्रमां वत्रीशबह नाटक विकुर्व्युं तेम ज ते दरेक कमळनी

मध्यनी कर्णिकाए चार मुखवाळा प्रासादो विकुर्वा. ते सर्व प्रासादोमां इंद्र आठ आठ पट्टराणीओ सहित वेसीने ते सर्व नाटको जोवा लाग्या. आ रीते करवाथी दरेक हाथीने कुल ५१२ मुख, तेना ६६६ दांत, तेनापर ३२७६८ बावो, तेमां २६२१४४ कमळो, तेटला ज प्रासादो अने इंद्रो, तेनाथी आठ गुणी एटले २०६७१२ इंद्राणीओ तथा २६२१४००००० कमळना पत्रो अने तेटला ज चत्रीशबद्ध नाटको हतां. आटलो एक हाथीनो विस्तार हतो, तेवा चोसठ हजार हाथीओवडे आकाशने व्याप्त करतो इंद्र शीघ्रपणे जिनेश्वरना समवसरणमां आव्यो. तेगो हाथी उपर वेसीने ज जिनेश्वरने प्रदक्षिणा करी अने पोताना शरीरनी कांतिवडे सूर्यनो पण पराभव करनार ते इंद्रे प्रभुने वंदना करी.

आवा प्रकारनी इंद्रनी समृद्धि जोइ बुद्धिमान दशार्णभद्र राजाए विचार कर्यो के—“अहो ! तुच्छपणाने लीधे में मारी संपत्तिनो वृथा गर्व कर्यो. आ इंद्रनी आनी संपदा पासे मारी संपदा कइ गणतरीमां छे ? सूर्यनी कांति पासे पतंगीया-ना बचानी कांति केटलीक होय ? तेथी हुं धारुं हुं केनीच जनाने तुच्छ संपत्तिथी पण मद प्राप्त थाय छे. केमके देडकाओ कादववाळें जळ पागीने पण अत्यंत आनंदथी नाद करे छे. आ इंद्रे पण आनी समृद्धि पुण्यना प्रभावथी ज मेळथी छे, जो धर्माराधन सिवाय आनी संपत्ति मळती होय तो सर्व प्राण्.ओने आची ज संपत्ति केम न मळे ? तेथी हवे मारे ते नियेनो खेद न करतां निर्मळ धर्मनो ज आश्रय करवो योग्य छे, अने तेम करवाथी मारो गर्व पण कृतार्थ थरो.” आ प्रमाणे विचार करी दशार्णभद्र राजाएवे हाथ जोडी नम्रताथी जिनेश्वरने पितृपि करी के—“हे प्रभु ! हुं संसारपरथी उद्वेग पाम्यो हुं, तेथी मने दीक्षा आपी मारापर अनुग्रह करो.” आ प्रमाणे कहीने ते राजाए पोताने हाथे ज मस्तकपरना केशनो लोच कर्यो, पळी

व्रतना अर्था एवा त राजाने विश्ववत्सल प्रभुए पोते ज दीबा आपी तेनी पाछळ तत्काळ ते महत्तर पुत्रे पण दीबा ग्रहण करी ' सत्पुरुषो नो सग षड्याण आपवामां कामदुघा सदशा छे ' त्यारपछी ते राजर्षिने प्रणाम करी शक्र इद्रे कशु के —“ हे मुनि ! तमे आमी मोटी समृद्धिनो सहसा त्याग कर्यो, माटे तमने धय छे हे सत्य प्रतिज्ञाळा ! मोटा सामाज्यनो त्याग करी व्रत अर्गीकार करवाथी तमे तमारी प्रतिज्ञा पण सत्य करी छे केमके जिनेधरनी अर्चो करमी ते द्रव्यपूजा छे अने जे चारित्र्य ग्रहण करयु ते भावपूजा छे, द्रव्यपूजा करनार करतां भावपूजा करनारने अत्यंत अधिक मानेलो छे, तेथी तमे भावपूजा करीने मने जीती लीधो छे मारी वीजी घणी शक्ति छे, पण व्रत लेवानी मारी शक्ति नथी ” आ प्रमाणे ते राजर्षिनी स्तुति करी शक्र इद्र स्वर्गे गयो अने ते राजर्षि उग्र तप करी सर्व कर्मनो क्षय करी मुक्तिपुरीमां गया.

इति श्रीदशार्णभद्र राजर्षि कथा

नैमी नैमेहि अप्पाण, सैक्ख सैक्खेण चोईओ । चईऊण गेह वईदेही, सांमिणे पल्लुवट्ठिओ ॥ ४५ ॥

अर्थ—( वईदेही ) विदेह दशना स्वामी ( नमी ) नमि नामना राजा ( सक्ख ) साक्षात् ( सैक्खेण ) शक्र इद्रे ( चोईओ ) प्रेषी सता एटले ज्ञानचर्याने विषे परीचा कर्या सता ( अप्पाणं ) पोताना आत्माने ( नैमेहि ) नीतिमां स्थापन करता हवा एटले जरा पण कपाय करता न हवा, तथा ( गेह ) गृहवासनो ( चइऊण ) त्याग करीने ( सामणे ) साधुपण्यामां-चारित्र्य धर्मेने विषे ( पल्लुवट्ठिओ ) स्थिर थया एटले उद्यमवत थया ४५

करकंडु कलिंगेसु, पंचालेसु अ दुम्भुहो । नमिराया विदेहेसु, गंधारेसु अ नर्गई ॥ ४६ ॥  
ए ए नरिंदवसहा, निर्वखंता जिणसासणे । पुत्ते रंजे ठवेऊणं, सामेणो पज्जुवट्टिआ ॥ ४७ ॥

अर्थ—(कलिंगेसु) कलिंग देशमां ( करकंडु ) करकंडु राजा होता, ( पंचालेसु अ ) तथा पंचाल देशमां (दुम्भुहो) द्विमुख राजा होता, तथा ( विदेहेसु ) विदेह देशमां ( नमिराया ) नमि राजा होता, ( गंधारेसु अ ) तथा गंधार देशमां ( नर्गई ) नर्गति नामना राजा होता. ( ए ए ) ए चारे ( नरिंदवसहा ) श्रेष्ठ राजाओ ( पुत्ते ) पोतपोताना पुत्रोने ( रंजे ) राज्य उपर ( ठवेऊणं ) स्थापन करीने ( जिणसासणे ) जिनशासनने विपे ज ( निर्वखंता ) प्रवज्या लेता हवा, तथा ( सामणे ) साधुधर्मने विपे ( पसुवट्टिआ ) स्थिर थया—उद्यमवंत थया. ४६-४७.

( आ चारे प्रत्येभुद्धनी कथा प्रथम एटले नवमा अध्ययनमां कही गया छीए, तेथी अहीं लखता नथी. )

सोवीरारायवसहो, चइत्ताण मुंणी चरे । उदायणो पव्वइओ, पत्तो गईमणुत्तरं ॥ ४८ ॥

अर्थ—( सोवीरारायवसहो ) सोवीर देशने विपे राजवृषभ एटले श्रेष्ठ राजा ( उदायणो ) उदायन नामना हता. ते ( चइत्ताण ) राज्यने तजीने ( मुणी ) मुनि थया सता ( चरे ) विचरता हवा. तेथी ( पव्वइओ ) प्रवजित थया सता ( अणुत्तरं गई ) अनुत्तर गतिने एटले मोच गतिने ( पत्तो ) पामता हता. ४८.

## श्री उदायन राजानी सज्जित कथा

आ न चडूद्वीपना भरतक्षेत्रमा सिंधुसौवीर नामनो देश छे, तेमां सार्थक नामवाळु चीनभय नामनु नगर छे. तेमां उदायन नामे राजा राज्य करतो हतो. ते राजा सुकृतना उदयने कानार हतो तथा स्वामाविक एवा शौर्य, धैर्य अने औदार्यार्थक गुणोवडे विरानित हतो. ते चीनभय विगेरे त्रणसो ने त्रेसठ पुरनो तथा सिंधुसौवीर विगेरे सोळ देशोनो पालक हतो. त मलासेन त्रिगेरे दश महा पराक्रमी राजाओधी सेवातो हतो. ए रीते ते उदायन राजा लक्ष्मीए करीने जाणे वीचो इद्र होय तेम काळ निर्गमन करतो हतो. तेने चेटक राजानी पुत्री प्रभावती नामनी प्रिया हती. ते निरतर पोताना मनमा पतिनी जेम श्रीनिधर्मने धारण करती हती. ते राजान प्रभावतीनी बुद्धिउत्पन्न थयेलो अभिची नामनो पुयराज पुत्र हतो, अने ते राजानी बहेनने पुत्र केशी नामनो हतो. ते बच्चे कुमार साथे क्रीडा करता हता.

आ समये चपा नामनी पुरीमां मोटो धनवान कुमारनदी नामनो एक सोनी हतो, तेनु मन निरतर स्त्रीओमां न आसक्त हतु कोइपण ठेकाणे कोइ पण सुदर कन्याने ते जोतो तो तेणीने ते पांच सो सानामहोर आपीने परणतो हतो. ए रीते ते पांच सो स्त्रीओने परणो हतो, तो पण तेने तृप्ति थइ नहोती. 'प्राये करीने स्त्री धन, आयुष्य अने भोजनने त्रिपे प्राणीओ श्रुत न रहे छे.' आ मारी स्त्रीओ बीजा काइ पुरणने मळी न नाओ. एम विचारी ते सोनी एक स्तमना गहेल उपर सर्व त्रिगाओने राखी तेमनी साथे रात्रि दिवस विलास करतो हतो.

आ अरसरे समुद्रनी मध्ये रहेला पचथैल नामना द्वीपमां विद्युन्माली नामनो महर्षिक व्यतर हतो, ते एकदा पोतानी प्रिया दासा अने प्रदासा नामनी देवीओ सहित इद्रनी आज्ञाधी नदीशर द्वीपे जतो हतो. त्यां मार्गमा ज आयुष्य

पूर्ण थतां ते चवी गयो. एटले तेनी प्रियाओए चिंतातुर थइ विचार कर्यो के—“ आपणे कोइ स्त्रीलुब्ध पुरुषने लोभ पमा-  
डीए, जेथी ते मरण पामीने आपणो पति थाय. ” एम विचारी ते बने देवीओ पृथ्वीपर सर्वत्र जोवा लागी, तेटलामां  
महेलना उपरना भागमां पांच सो स्त्रीओ साथे रमता ते सोनीने जोयो. तेने जोइ ‘ आ ज आपणने योग्य छे. ’ एम निश्चय  
करी ते देवीओए जगतने मोह पमाडे एबुं दिव्य रूप तेने बताव्युं, ते जोइ अत्यंत मोह पामीने तेणे तेमने पूछुं के—“ तमे  
कोण छो ? ” ते सांभळी विलास-हावभाव सहित ते बने बोली के—“ अमे मोटी समृद्धिवाळी हासा अने ग्रहासा नामनी  
देवीओ छीए, जो तमे अमने वांछता हो तो पंचशैल नामना द्वीप उपर आवजो. ” एम कही वीजळीना चमकारानी जेम  
ते बने देवीओ तत्काल अदृश्य थइ-आकाशे उडी गइ. ते जोइ शून्य मनवाळो थयेलो ते सोनी चिरकाळ सुधी तेज दिशा  
सांभुं जोइ रह्यो. पछी तेणे विचार कर्यो के—“ आ पांच सो स्त्रीओथी मारे शुं फळ छे. नेत्रना जेवी ते बे विना आ आबुं  
विश्व मने शून्य भासे छे. रत्न जेबुं तेमनुं रूप जोइने आ काच जेवी स्त्रीओने विपे कोण रंजन थाय ? तेथी ते बे देवीओने  
माटे ब हुं शीघ्र प्रयास करूं. ” आ प्रमाणे विचार करी ते सोनीए राजसभामां जइ घणुं धन भेट करी राजानी आज्ञा मेळ-  
वीने आखा नगरमां आघोपणा करावी के—“ जे कोइ श्रेष्ठ नाविक कुमारंदी सोनीने पंचशैल द्वीप उपर लइ जशे, तो  
तेने ते कुमारंदी कोटि द्रव्य आपशे. ” आवी आघोपणा सांभळी एक अति वृद्ध नाविक के जे जीववानी स्पृहावाळो  
नहोतो तेणे ते पडह अंगीकार करी भांहुं पाणी भरीने वहाण तैयार कर्यु. पछी पोंताना पुत्रोने ते कोटि द्रव्य आपी ते वृद्ध  
नाविक कुमारंदीने लइ वहाणमां चळ्यो. केटलेक दिवसे ते वहाण समुद्रमां घणे दूर गयुं, त्यारे ते वृद्ध नाविके कुमारनं-

दीने कष्टु के—“ आगळ दूर तु कांइ देखे छे ? ” तेणे कष्टु—“ कांइक काठु काळु देखाय छे ” नाविके कष्टु—“ ते  
 समुद्रने काठि रहेला पर्यतना नितयमां उगेलो वटवृक्ष छे आ आपणु वहाण अवश्य ते वट वृक्षनी नीचे जशे ते वरते तु  
 दूदीने ते वृक्षपर चढी जजे रात्रिए ते पर्यतपर भारुपचीओ वसे छे, तेओ प्रातःफाले चरवा माटे पचशील पर्यतपर जाय छे,  
 ते पचीओ सुइ जाय त्यारे कोइ पण पचीना त्रण पगमांथी वचेना पगे एक वखवडे तु तारा शरीरने बांधीने पड्यो रहेजे.  
 प्रातःकाळे ते पचीओ उडशे ते तने पचशील पर्यतपर लइ जशे हु वृद्ध होवाथी ते वटवृक्ष पकडी शकीश नहीं परतु वडनी  
 आगळ मोटा आवर्तळे, तेमा आ वहाण पडशे, तेथी तेमां वहाण सहितमारो विनाश यशे, तेथी तु पण जो व्यग्रताने लीधे  
 ते वटवृक्षन ग्रहण नहीं करे तो तु पण मारी साथे ज मरण पामीश ” आ प्रमाणे ते नायिकु कहेतो हतो, तेटलामां ते वहाण  
 ते वटवृक्षनी नीचे पड्योच्यु. एटले तरत ज ते सोनी वटवृक्षने वळगी गयो. पछी नायिकना कहेवा प्रमाणे करी ते पंचशील  
 पर्यतपर पड्योच्यो मोगमां उत्कठित थयेला तेने आवेलो जोइ ते देवीओए तेने कष्टु के—“ आ मनुष्यना शरीरवडे तु अमारी  
 साथे मोग भोगववा लायक नथी. कान पण र्चीधावानी व्यथाने सहन करे छे तो ज ते अलकार पहेरी शके छे अने दाहा  
 दिकने सहन करे छे तो ज सुवर्ण पण मणिने पामी शके छे माटे तु पण तारे घेर जइ दीन, हीन विगेरेने घणु दान आपी  
 अग्निप्रवेशनु कष्ट सहन करी नीयाणु करीने आ द्वीपनी लक्ष्मीनो अने अमारो पण स्वामी था. मोटा लाभने माटे काइक  
 रुष्ट पण सहन करतु जोइए ” ते सांभळी ते रागवाळा सोनीए कष्टु के—“ हु अर्हीथी मारे घेर शी रीते जइ शकु ? ” ते  
 सांभळी तरत ज ते देवीओए ते कामाध सोनीने उपाडीने चपापुरीमा मूकी दीधो तेने जोइ नगरत्रनोए पृच्छ्यु के—“ हे कुमार



नंदी ! तुं शी रीते पाछो आव्यो ? त्यां तें शुं आश्चर्य जायुं ?" त्यारे ते सोनी "अहो ! ते हासा अने प्रहासा क्यां गइ ?" ए प्रमाणे वारंवार बोलवा लाग्यो. त्यारपछी ते मूर्ख इगिनीमरणवडे मरवा तैयार थयो. तेने तेना मित्र नागिल नामना थावके कळुं के-  
 "हे मित्र ! सिंहने घास खातुं अयोग्य छे, तेम तारे आवुं कुपुरुपने लागक कार्य करतुं योग्य नथी. वळी अस्थंत तुच्छ भोगने माटे  
 आ दुर्लभ मनुष्य भवने तुं हारी न जा. जो कदाच तने भोगनी इच्छा होय तोपण तुं कल्पवृक्षनी जेम इष्ट वस्तुने आपनार  
 धर्मनुं ज आचरण कर." आवा मित्रना उपदेशने पण ते उन्मत्ते गणकार्यो नही. तेथी तेणे पगथी मस्तक पर्यंत आवुं  
 शरीर वकरीनी लींडीओथी ढांकी दीयुं. पछी तेमां अश्रि सळगावी ते वने देवीओनुं ज स्मरण करी मरण पायी ते विद्युन्मा-  
 ली नामनो देव थयो. आ प्रमाणे इगिनीमरणथी मरण पामेला तेने जोइ नागिल थावक वैराग्य पाम्यो, अने "अहो !  
 मूढ पुरुषो भोगने माटे केटळुं कष्ट भोगवे छे ?" इत्यादि विचार करतो ते नागिल दीक्षा ग्रहण करी शुभ ध्याने मरण  
 पायी अच्युत नामना स्वर्गमां देव थयो. त्यांथी तेणे अवाधिज्ञानवडे पोताना पूर्वभवना मित्रने जोयो.

एकदा नंदीश्वर द्वीपनी यात्रानो महोत्सव प्राप्त थयो. ते वखते पटह वगाडवानुं काम ते विद्युन्मालीने करवानुं हळुं,  
 तोपण ते पटह वगाडवाने इच्छतो नहोतो, तेथी ते आम तेम नाशी जवा लाग्यो, तोपण वळात्कारे पटह तेना कंठमां  
 आवीने वळगी गयो. ते वखते हासा अने प्रहासाए तेने कळुं के—"जे अमारो स्वामी होय तेणे अवश्य पटह वगाडवानो  
 ज छे, माटे तमे केम नाशी जाओ छो ?" ते सांभळी विद्युन्माली व्यंतर शांत थयो अने शक्र इंद्रनी आगळ पटह वगाडतो  
 नंदीश्वर द्वीपपर गयो, त्यां आ नागिल थावकदेव पण आव्यो हतो, तेणे तेने जोयो. तेथी ते थावकदेव जेम जेम ते व्यंत-

रनी पासे जवा लाग्यो, तेम तेम तेनु तेज सहन नही यवाधी ते व्यतर दूर दूर नासवा लाग्यो त्यारे ते श्रावक देवे पोतानु तेन महरीने तेने कहु के—“तु मने जाणे छे ?” ते बोल्यो के—“इद्रादिक देवोने कोण न जाणे ?” ते सांभळी ते श्राद्धदेवे पोतानु पूर्वभवनु रूप देखाडी तेने कहु के—“हु नागिल नामनो तारो पूर्वभवनो भित्र छु ते वलते तारु कुमरण जोइ में वैराग्यधी दीक्षा ग्रहण करी हवी, तेधी हु आवी लक्ष्मी पाम्यो छु ते वलते में तने निषेध कर्यो छतां तु बाळमरखण्डे मरण पामी आतु हुदेवपणुं पाम्यो छे परतु जो ते ते वलते जिनधर्म अगीकार कर्यो होत, तो पारी जेम तु पण आवी स्वर्गलक्ष्मी पाम्यो होत” आ प्रमाणे तेनु वचन सामळी प्रतिबोध पामी ते विद्युन्माली बोल्यो के—“गंयेली चावतनो शोकरु करवाधी शु फळ छे ? हवे काइक तेवु कहो, के जेथी परभवमां मने शुभ फळ प्राप्त थाय ” त्यारे श्राद्धदेवे तेने कहु के—“श्री महावीर स्वामीनी प्रतिमा तु वनाव तेधी ज तने वीचा भवमां बोधिरत्न—समकित सुलभ थशे अरिहवनी प्रतिमा करनारने दगरिअ, दुर्गति अने दु ख प्राप्त थतां नथी अने स्वर्ग तथा मोक्षना सुखने आपनार धर्म प्राप्त थाय छे” आ प्रमाणे ते श्राद्धदेवनो उपदेश अगीकार करी ते विद्युन्माली देव क्षत्रियकुड नामना गाममां श्रीमहावीरस्वामी पासे गयो त्यां शरीरपर अलकारो धारण करेला, विकार रहित, सुदर आकृतिवाळा, सद्गुणना निधानरूप अने भावयतिपणु साधता होवाधी गृहस्थाश्रममां पण कायोत्सर्ग रहेला श्रीवर्धमानस्वामीने जोइ तेणे प्रणाम कर्यो त्यारपछी ते देव तरत ज महाहिमवान पर्वतपर गयो, अने त्यांथी तेणे अत्यंत सुगंधाडे विश्वने आनंद आपे तेवु गोशीर्ष चदननु काष्ठ ग्रहण कर्नुं ते वडे जेवु जोपु हतु तेवु प्रभुनु प्रतिविंद वनावी जेम हारने दाभडामा नांखे तेम ते प्रतिमाने एक काष्ठना सपुटमां स्थापन करी

पछी ते विद्युन्माली देवे समुद्रमां दृष्टि करी तो त्यां उत्पातने लीधे छ मासर्था आम तेम अथडातुं एक वहाण जोयुं. तेमां वेठेला सांयात्रिक लोको आकुळ व्याकुळ थयेला हता. आवी स्थिति जोइ ते देवे तरत ज उत्पातनुं हरण करी सांयात्रिक लोकोने प्रत्यक्ष थइ तेमने ते काष्ठसंपुट आपी कथुं के-“ हे लोको ! आ संपुटमां देवाधिदेवनी चंदनमय प्रतिमा स्थापन करेली छे. आने तमारे वीतभय नामना पत्तनमां लइ जइ त्यांना राजाने आपी कहेवुं के-“ आ संपुट हर्षथी देवाधिदेवनुं नाम लेवाथी भेदाय तेम छे. ” तमारी छ मासनो उत्पात में हरण कर्यो छे, तेथी आटलुं मारुं कार्य तमारे करवानुं छे. ” आ प्रमाणे देवनुं वचन ते सांयात्रिकोए हर्षथी अंगीकार कथुं. पछी विद्युन्माली देव तत्काल अदृश्य थयो.

अनुक्रमे ते सांयात्रिको समुद्रनो पार पामी वीतभय पत्तनमां गया. त्यां तापसना धर्ममां भक्तिवाळा उदायन राजानी पासे ते संपुट लइ गया, अने देवे कहेलुं वृत्तांत पण तेओए राजाने जणावुं. ते सांभली घणा ब्राह्मणो अने योगीओ विंगेरे त्यां एकठा थया. तेमांथी केटलाक बोल्या के-“ वेद अने सृष्टिना रचनार होवाथी ब्रह्मा ज देवाधिदेव छे, तेथी तेना नामथी आ संपुट भेदी शकाशे. ” एम कही तेओए ब्रह्मानुं नाम लइ ते संपुटनी वच्चे तीदृण कुठार नांख्यो, परंतु शास्त्र भूली जवाथी जेम पंडित स्वलना पामे तेम ते कुठार स्वलना पाम्यो. पछी बीजा केटलाक बोल्या के-“ जे देव युगने अंते जगतने पोताना उदरमां धारण करे छे, तथा दुनियाना शशुरूप दैत्योनो जे विनाश करे छे, ते विष्णु ज देवाधिदेव छे. ” एम कही तेनुं नाम लइ तेओए पण कुठार चलाव्यो, परंतु ते पण निष्फल थयो. पछी बीजा केटलाक बोल्या के-

प्रसा अने विष्णु पण जेना अशरूप छे, जे पोतानी मेळे उत्पन्न थयेला छे अने जे सर्व विश्वनु कारण छे ते महादेव ज देवा  
 धिदव छे " एम कही तेलु नाम लइ तेथ्राए पण ते सपुटपर कुठारनो प्रहार कर्यो परतु सिहना पुच्छमडे पर्वतना ठटनी  
 जेम ते कुठारवडे ते सपुट भेदायु नहीं त्यारपछी ते सर्वे विलखा थइने विचार करवा लाग्या तेदलामां ते धृतरांत सांभळी  
 प्रभावती राणी पण कौतुकथी त्यां आवी. तेथीए विधि प्रमाणे ते सपुटनी पूजा करी अमृत जेवी मधुर चाणीथी कसु  
 के-“ जेणे राग द्रेप अने मोहनो सर्वथा विनाश कर्यो छे, तथा जे अष्ट महाप्रातिहार्योवडे युक्त छे, ते देवाधिदेव सर्वज्ञ  
 जिनेश्वर मने दर्शन आपो " आ प्रमाणे कही ते राणीए कुठारवडे ते सपुटनो जराक स्पर्श कर्यो के तरत च धर्पना  
 किरणवडे कमळनी जेम ते सपुट विकास याम्यु-उषडी गयु, एटले तेमांथी समुद्रमांथी लक्ष्मीनी जेम नहीं करमांपेला पुष्पनी  
 माळाने धारण करनी अने सर्वे अगे मनोहर एरी श्री महावीरस्वामीनी मूर्ति प्रगट थइ तेने जोइ प्रभावती राणी वचनथी  
 न कही शक्य तेरा हर्षन पामी पछी भक्तिवडे ते प्रतिमानी पूजा करी रसिक स्ववर्णवडे तेनी स्तुति करी आ प्रमाणे  
 प्रत्यक्ष आश्चर्य थवाथी लोकोमां नैनघर्मनी महा प्रसन्नता थइ अने उदायन राजा पण जैनशामनमां कांइक रुचिवाळो थयो  
 तेथी ते राजाए अन्त पुरामा ज मनोहर चैत्य करानी महोत्सव पूर्वक तेमां ते सर्वज्ञनी प्रतिमा स्थापन करी पछी हमेशां  
 प्रभावती राणी भक्तिथी तेनी त्रिकाळ पूजा करवा लागी, अने पूजाने अते ते राणी प्रभुनी पांसे नृत्य करती, ते वखते राजा  
 पोते वीणा वगाडतो हतो

एवदा प्रभावती राणी विधिपूर्वक प्रभुनी पूजा करी तेनी पांमे नृत्य वग्या लागी ते वसुत राजाए तेणीनु मस्तक

जोधुं नहीं. तेथी व्यग्र थयेला राजाना हाथमांथी वीणानी कंचा नीचे पडी गइ. ते वखते नृत्यमां भंग श्वाथी कोपायमान थयेली राणीए राजाने कहुं के—“ शुं मारा नृत्यमां काइपण दोप आव्यो के जेथी तमे वीणा वगाडवानो त्याग कर्यो ? ” ते सांभळी राजाए काइपण प्रत्युत्तर आप्यो नहीं. त्यारे राजाने आग्रहथी पूछुं, एटले राजाए तेणीने सत्य हकीकत कही. ते सांभळी महा सचवाळी राणी बोली के—“ हे स्वामी ! हुं चिरकाळथी श्रावकधर्मनुं सेवन करं छुं, तेथी मारे मृत्युनो भय नथी, तो आ अल्प आयुष्यने स्ववचनारा निमित्तथी तमे शामाटे खेद पामो छो ? ” आ प्रमाणे कही तेणीए राजाने शांत कर्यो.

एकदा प्रभावती राणीए स्नान करी पूजाने माटे वखो लाववानुं दासीने कहुं, त्यारे ते दासी संभ्रमथी-उतावळथी श्वेत वस्त्रने बदले रातां वस्त्र लाधी. ते जोइ कोप पामेली राणीए कहुं के—“ जिनेश्वरनी पूजा करवा माटे चैत्यमां मारे जहुं छे, ते वखते आ रातां वस्त्रो मने केम आपे छे ? ” एम कही राणीए दासी उपर पोताना हाथमां रहेला दर्पणनो प्रहार कर्यो, ते तेणीने मर्मस्थानमां लागवार्थां ते तत्काळ मरण पामी. ते जोइ पश्चात्ताप करती राणीए विचार कर्यो के—“ आ निरपराधी दासीनो घात करवाथी मारा व्रतनो भंग थयो. तेथी हवे अनशन ग्रहण करीने आ पापनो हुं नाश करं. कारण के व्रतनो भंग थवाथी विवेकी माणसे जीवुं योग्य नथी. ” आ प्रमाणे विचारी राणीए पोतानो अभिप्राय राजाने कहो. ते सांभळी राजाए कहुं के—“ हे देवी ! मारुं जीवित तारे आधीन छे, तेथी हुं तने अनुमति आपतो नथी. ” ते सांभळी देवीए कहुं के—“ हे स्वामी ! ते वखतना दुर्निमित्तथी तमे मारुं अल्प आयुष्य जाणो छो, छतां मारा स्वार्थनो तमे

विनाश क्रेम करो छो ? " त्वारे रात्राए कहु के— "हे प्रिया! जो तु देवपणु पामीने मने सारी रीते जैनधर्ममां प्रतिबोध पमाउ, वो दु वने रना थापु " ते सांमळी रात्रानु वचन अगीकार करी प्रमानती राणी अनशन प्रदण करी स्वर्गे गइ " आद्धधर्मनी आराधना करतारने आ स्वर्गप्राप्तिरूप फळ मळे ते तो प्राप्तिकर फळ छे. सुरय फळ तो तेनु मोच छे.

त्वारपछी देयवत्ता नामनी दुन्ना दाणी निरतर भक्तिपूर्वक ते चिनप्रतिमानी पूजा करवा लागी

इत ते प्रभावती देव समादिकण्डे रात्राने प्रतिवाध करवा लाग्यो परतु ते रात्राए तापसनी भक्तिनो त्याग कर्यो नही त्वारे ते देव एरुदा तापसनु रूप लइ राजानी पोसे आव्यो, अने तेने मनोहर अमृतफळ आव्यो तेनो स्वाद लइ आनद पामेला रात्राए तेने पूछु के— " हे पूज्य ! आवा फळो क्यां थाय छे " ? तेणे कहु के— " हे रात्रा ! आ नगरथी थोडे दूर अमारो आश्रम छे, त्यां आवां फळो घणां थाय छे. " ते सांमळी रात्राए विचार कर्यो के— " एक वरत वृत्ति थाय त्यां गुधी आमा फळो गाउ वो ठीक " एम विचारी ते तापमनी मांये न रात्रा तेना आश्रममां गयो त्यां मनोहर फळो जोइ रात्रा ते लेग गयो, तेन्नामा त्या रहेला बीना मायावी तापमो आक्रोश सहित बोल्या के— " अरे ! तु कोण छे ? केम अर्ही आभ्यो ? " इत्यादिकरु फही क्रोधथी रात्राने मारवा दोळ्या त जोइ राजा भय पाम्या, अने " आ तापसोनो परिचय कात्रो सारो नथी " एम विचारी तयोना मारथी वचवा मांटे एरुदम नाठो मार्गमां कोइ उद्यानमां मुनिओने जोइने रात्रा तेमने शरथे गयो, अने नोन्यो के— " हे पूज्यो ! आ पाथी तापमोथी मारु रवण करो " मुनिओ बोल्या के— " हे रात्रा ! तुमं भय पामसो नही " आ प्रमाथे मुनिओए कहु के वरत न जाणे लजा पाम्या होय तंम ते तापमो पाछा वळी पोताने

स्थाने चाल्या गया. त्यारपछी निर्भय थयेला वीतभय नगरना स्वामीने सुनिओए अमृत जेवां वचनोवडे जैनधर्मनो उपदेश आप्यो. ते सांभळी प्रातिवोध पामी राजाए श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. 'देवनो करेलो उपाय प्रातःकालना मेघनी गर्जनानी जेम निष्फल थनो नथी.' पछी ते देव तत्काल प्रगट थइ राजाने धर्ममां स्थिर करी स्वर्गे गयो. राजाए पण तरत ज पोताने सभामां बेटेलो जोयो. त्यारपछी ते राजा निरंतर नवी नवी पूजाओवडे मोटा वैभवथी ते प्रतिमानी पूजा करवा लाग्यो.

आ अवसरे गांधार नामनो कोइ श्रावक चारित्र ग्रहण करवानी इच्छा थवाथी जिनेश्वरनां कल्याणकोनां सर्व स्थानो वांदवा नीकळ्यो. अनुक्रमे वैताढ्य पर्वतपर रहेली शाश्वती प्रतिमाओने वांदवानी इच्छा थवाथी तेणे उपवास करी शासनदेवीनी आराधना करी. तेथी तुष्टमान थयेली देवीए तेने ते प्रतिमाओनां दर्शन कराव्यां, अने सकल वांछितनी सिद्धि करनार सो गुटिकाओ तेने आपी. त्यांथी पाछा फरेला ते श्रावके देवनी आपेली ते चंदननी प्रतिमा सांभळी, तेथी तेने वांदवा माटे ते वीतभय पत्तनमां आव्यो. त्यां ते दैवयोगे मांदो पड्यो. ते वखते ते कुब्जा दासीए पितानी जेम तेनी सारी भक्ति करी. केटलेक दिवसे ते श्रावक सारो थयो, त्यारे ते सर्व गुटिकाओ कुब्जा दासीने आपी तेणे दीक्षा ग्रहण करी. पछी दासीए हर्ष पामी विचार्युं के—“आ गुटिकाना प्रभावथी हुं सुंदर आकृतिवाळी अने सुवर्ण जेवा वर्णवाळी थाउं.” एम विचारी तेथीए एक गोळी खाथी. तत्काल ते देवी जेवी मनोहर थइ गइ. तेथी ते सुवर्णगुलिका नामथी प्रसिद्ध थइ. एकदा तेथीए विवाग कर्यो के—“आ मारुं रूप पति विना अरण्यना पुष्पनी जेम निष्फल छे. आ राजा तो मारा पिता समान होवाथी तेनापर मने राग थतो नथी, तेथी मोटी समृद्धिवाळो चंडप्रद्योत राजा मारा भर्तो थाओ.” एम विचारी तेथीए

एक गुटिका खाधी तेना प्रभावथी देवीए चढप्रद्योत राणा पासे जइ सुवर्णगुलिकाना रूपनु वर्णन करुं ते सांभळी प्रद्योत राजाए तेणाने घोलावी लावचा माटे पोताना एक दूतने वीतभय पत्तनमां भोकळ्यो ते दूते जइ तेणीनि राजानो सदेशो कळो, त्यारें ते बोली के—' जो मने लइ जवी होय तो प्रद्योत राणा पोतें मने तेंडवा आवे, कारण के में तेमने कोइ पण चउते जोया नधी " आ प्रमाणे तेगीनु वचन दूते जइ प्रद्योत राजाने कहु त्यारें ते राजा पण अनलगरि नामना गघहस्तीपर आरुड थइ रात्रिने वउते वीतभयपत्तनमां आवी तेणाने मळ्या तेने जोइ सुवर्णगुलिका तेनापर आसक्त थइ अने बोली के—' हे राजा ! जो आ प्रभुनी प्रतिमा तमे साथे लइ न्यो, तो हु तमारी साथे आवु " ते सांभळी प्रद्योते कहु के—' आने ठेकाणे चीजी एवी ज प्रतिमा मूकवी जोइए, माटे ते लइने हु आवु छु " एम कही ते अवतीपति तरकाळ अवती नगरीमां गया, अने तेना जेवी ज नवी वीरप्रभुनी प्रतिमा भरमां कपिल नामना महर्षि पासे तेनी प्रतिष्ठा करावी फरीथी गघहरती पर आरुड थइ रात्रिने समये वीतभयपत्तनमां आव्यो हस्तीने नगर बहार मूकी ते नवी प्रतिमाने लइ प्रद्योत राजा राजमहेलमां गयो त्या नवी प्रतिमा मूकी आगळनी प्रतिमाने लइ सुवर्णगुलिका सहित ते प्रद्योत राजा हस्तीपर आरुड थइ एकदम अवती नगरीमां आव्यो ते वखते ते गघहस्तीए वीतभय पत्तननी बहार विष्टा तथा मूत्र कर्यां हवा, तेना गघथी ते पत्तनना सर्व हस्तीओनो मद नाश पाग्यो प्रात काळे वकरा जेवा थइ गयेला ते हाथीओने जोइ मयआत धयेला महावतोए ते हकीकत राजाने कही त्यारे राजाए पोताना सेवकोने तेनो निर्णय करवा हुकम कर्यो, एटले तेओए अवतीना मार्गमा हाथीनां पगलां जोइ पाछा आवी राजाने कहु के—' खरेखर अनलगरि हस्तीपर आरुड



थइ चंडप्रद्योत राजा अहीं आव्यो होनो जोइए. केमके तेना विना बीजा कोई पासे गंधहस्ती छे एम सांभळ्युं गथी. ते हस्तीना ज गंधथी आपणा हाथीओ सर्वे मदरहित थइ गया छे. " आ प्रमाणे तेओ चात करे छे, तेटलामां कोइ कंडुकीए आधी राजाने कहुं—“आपणा महेलमां आजे सुवर्णगुलिका दासी नथी.” ते सांभळी राजाए कहुं के—“ते राजा पोते आनी सुवर्णगुलिका दासीने हरी गयो जणाय छे, तेमां आपणने कांइ हरकत नथी. परंतु ते प्रयुनी प्रतिमा छे के नथी ? तेनी तपास करो.” सेवकोए स्पूळट्टिए जोइने कहुं के—“ प्रतिमा तो ते ठेकाणे छे.” पछी पूजाने समये राजा पोते चैत्यमां गयो, त्यां करमाइ गयेला पुष्पनी माळा जोइ सेद पामी राजाए विचार्युं के—“ जे नूळ प्रतिमा हती तेने स्थाने आ बीजी प्रतिमा मूकी छे, तेम न होय तो आ पुष्पो कदापि करमाय नहीं.” त्यारपछी राजाए पोतानो दूत प्रद्योत राजा पासे मोकल्यो. तेणे जइ प्रद्योतने कहुं के—“ श्री उदायन राजा मारा मुखवडे तमने कहेवरावे छे के—चोरनी जेम दासीने अने प्रतिमाने लइ जतां तमने लजा केम आनी नहीं ? अथवा दासीपर आसक्त थयेला तमारी आधी चेष्टा होय ते योग्य ज छे. तोपण कार्या-कार्यने जाणनारा मारे दासीनुं कांइ पण प्रयोजन नथी. मात्र मारी प्रतिमानुं ज हुं कुशळ इच्छुं छुं. माटे ते शीघ्रपणे मोकली आपो. जो ते प्रतिमाने नहीं आपो तो श्रीउदायन राजा प्रलयहाळना उछळता सयुद्र जेवी सेना सहित अहीं आवयो. एम तमारे नकी जाणबुं. ” ते सांभळी क्रोध पामेलो चंडप्रद्योत राजा बोळ्यो के—“ हे दूत ! खरेखर तुं निर्लज छे, के जेथी मारी पासे पण आनां वचन बोले छे. रत्नरूप प्रतिमा अने दासीनुं हरण करतां मने लजा शानी ? गभे ते प्रकारे रत्नने पोतानुं करबुं एम शुं ते सांभळ्युं नथी ? दासीने के प्रतिमाने पाछी आपवा माटे हुं हरी लाव्यो नथी, छतां तेने

प्रहस्य करना जो तारो स्वामी इच्छा करशे, तो ते अवश्य मारा हाथधी मरण पामशे, मांटे तेने अहीं आवधानो प्रयास करवो निष्कृष्ट छे, छर्ता आचशे तो मने ते जीती शक्रवानो नधी हाथी अति पळवान होय तो पण कांइ परतने चलावी शकतो नधी " आ प्रमाणे तेनां वचना दूते जइ उदायन राजाने कक्षां ते सांभळी राजाए तत्काल यागानी भेरी वग डावी ते वसते जेष्ठ मास हतो तोपण उदायन राजाए सर्व सैन्य अने दश मुहुटवद्ध राजाओ सहित अवती तरफ प्रयाण ह्युं अनुक्रमे सैन्यवडे पृथीने अने धूळवडे दिशाओने आच्छादन करतो ते राजा निर्जळ प्रदेशवाळी मरुभूमिमां आव्यो त्यां जळ विना समग्र सैन्य फठप्राण थइ गयु ते वखते राचाण प्रभावती देवनु स्मरण कर्युं, एटले तत्काल ते देवे आवी त्रण सरोवर चळ्यां भरी दीघा तेमार्था शीतळ जळयान करी सर्न सैन्य स्वस्थ थयु " अत्र विना जीगी शकाय छे, पण जळ विना जीवी शकातु नथी " पछी राचानी रना लइ ते देव स्स्थाने गयो अने उदायन राजा पण अनुक्रमे अगती पहोंच्यो तेणे प्रद्योत्तने दूतद्वारा कहेवराव्यु के— " घणा मनुष्योनो विनाश करवाथी शु कळ छे ? आपणा घनेनु परस्पर युद्ध हो तेमां पण तमे रथ, अथ के इस्तीपर आरूढ यइने के वाहन विमान जे रीते युद्ध करवा इच्छता हो, ते कहो, के जेथी हु पण ते ज प्रमाणे युद्धमां उतरु " ते सांभळीने प्रद्योते कहु के— " रथमां बेसीने आपणु युद्ध थाओ " आयु वचन दूतना कहेवाथी जाणी उदायन राजा रथमां आरूढ थयो अहीं प्रद्योत राजाए विचार कर्यो के— " रथमां बेसीने हु उदायन राजाने जीती शकेश नहीं " एम विचारी अनलगिरीने सज्ज करी तेनापर बेसीने अवतीस्वामी युद्धमां आव्यो तेने गजारूढ नोइ उदायन राचाए कहु के— " हे पापी ! तु तारी प्रतिज्ञानो लोप करी हाथीपर चडीने आव्यो

छे, तो पण हुं तने छोडीश नहीं. " एम कही बुद्धिमान उदायन पोताना रथने गोळ मंडळरूपे भमाडवा लाग्यो. अने प्रद्योत पण पोताना हाथीने रथनी पाळळ पाळळ भमाडवा लाग्यो. तेमां ते गंधहस्ती चालतां चालतां जे जे पग उंचो करतो हतो ते ते पगने उदायन राजा तीक्ष्ण वाखोवडे वींधवा लाग्यो. सर्ग पगो वींधाड जवाथी ते हस्ती नीचे पडयो के तरत ज वळवान उदायने ते राजाने हाथीपरथी नीचे पाडी वांधी लीयो. पथी ते प्रद्योतना कपाळमां ' आ मारी दासीनो पति छे ' एवा अचरो लग्नी हर्षथी ते दिव्य प्रतिमा लेवा गयो. प्रति-  
मानी नमस्कारपूर्वक पूजा करीने तेने उपाडवानो घणो उद्यम कर्यो, पण ते प्रतिमा जरा पण चलायमान थइ नहीं. ते वखते आकाशवाणी थइ के—' वीतभय पत्तन धूळनी वृष्टिथी स्थळरूप थइ जासुं छे, तेथी हे राजा! हुं त्या अवीश नहीं. " ते सांभळी उदायन राजा पाछो फरी प्रद्योत राजाने साथे ज लइ पोताना देश तरफ चाल्यो. मार्गमां जतां वर्षाकाळ आव्यो, तेथी प्रयाण न थइ शकवाने लीधे राजाए त्यां ज सैन्यनो पडाव नांख्यो. ते वखते चोतरफ धूळनो किल्लो करी ते दशे राजाओ तेनी रत्ना करवा लाग्या. त्यां वेपार करवा माटे यणा वेपारीओ पण आर्वाने रत्ना. ते शिखिरसुं नाम कोड पूछतुं त्यारे लोको तेने दशपुर कहेता हता.

उदायन राजा हमेशां चंडप्रद्योत राजाने पोतानी साथे ज भोजनादिक करावतो हतो. तेवामां पर्युषणा पर्व आव्युं, त्यारे उदायन राजाए ते दिवसे उपवास कर्यो. तेथी राजानी आज्ञाथी रसोइयाए प्रद्योतने " आज्ञे तमारे शुं भोजन करसुं छे ? " एम पूछ्युं, ते सांभळी तेणे विचार कर्यो के— " कोइ दिवस मने भोजनादिक माटे पूछ्युं नथी, अने आज्ञे ज पूछ्युं, माटे जरूर मने आज्ञे विपादिक खरावी मारी नांसवो हये. " एम विचारी तेणे रसोइयाने पूछ्युं के— " तुं मने

आजे केम पूछे छे ? " रसोइयाण कयु के— " आजे सांवत्सरिक पर्व होवाथी अमारा स्वामीए परिवार सहित उपवास क्यो छे तेथी आजे मात्र तमे व जमयाना होवाथी तमने पूछु छु " ते सांभळी अचतीपतिए कयु के— " ते मने आजे वार्षिक पर्व समारी आपु ते चहु ठीक थयु मारे पण आजे उपवाम छे केमके मारा मातापिता पण श्रावक हता " आयु प्रद्योतनु वचन रसोइयाए उदायन राजाने कहुं ते सांभळी तेणे कयु के— " ते केवो श्रावक छे ? ते हु जाणु छु, परतु ते मायावी श्रावक पण वधनमां हरो त्यांसुधी मारु पर्युपणा पर्वनु प्रतिक्रमण शुद्ध थयो नहीं " एम कही तेणे प्रद्योतने छोडी मूक्यो च्चमा अने पराक्रमना स्थानरूप उदायन राजाए तेना कपाळना अचरो टांक्रवा माटे तेने कपाळे पट्टवध क्यो, त्यारथी राजा-अने ते पट्टवध लक्ष्मीनां (शोभानां) स्थानरूप थयो पछी उदायन राजा तेने ते देश आपी वर्षाकाळ उतर्या पछी पोताना धीतमयपत्तने गयो वेपारने माटे आवेला वणिगज्जने त्यों ज रखा, तेथी त्यों दशपुर नामनु नगर थयु.

एकदा उदायन राजा पौषध करीने पौषधशाळामां रखा हता, त्यों रात्रिण धर्मजागरण करतां तेने विचार थयो के— " ते नगर, गाम, आकर अने द्रोण विगेरे धन्य छे के जेने जगवगुरु श्री वर्धमानस्वामी पोताना चरणवडे पविा करे छे जेओ वीरप्रभुनी वाणी सांभळी श्रावकधर्मने अने चारित्रने प्रहण करे छे ते राजाअने पण धन्यवाद घटे छे जो कदाच प्रभु पोताना वरणकमळवडे आ वीतमयपत्तनेने पवित्र करे तो हु तेमनी पासे दीचा प्रहण करी हुतार्थ थाउ " आवा तेना विचारने जाथी श्रीवीरप्रभु चपानगरीथी विहार करी वीतमयपत्तनना उद्यानमां समवसर्या प्रभुनु आगमन सांभळी हर्ष पामेला उदायन राजाए प्रभु पासे आवी वदना करीने देशा। सांभळी पछी आ प्रमाणे धिनति करी के—

“हे पूज्य ! मारा पुत्रने राज्य सोंपी हूं दीक्षा लेवा आपनी पासे आहुं, त्यांसुधी आप कृपा करीने अहीं ज रहेजो. ” स्वामीए कहुं—“आ तावतसां ग्रामाद करवो नहीं. ” ते सांभळी राजा स्वामीने नगी घेर आवी विचार करवा लाग्यो के—“जो हूं मारा अम्भीचि नामना पुत्रने राज्य आपीश तो ते राज्यसां मूर्खी पामशे अने तेथी ते निरकाळ सुभी भवअमण कररो. तेथी करीने प्रारंभमां मनोहर अने परिणामे भयंकर एहुं आ विपफळनी जेवुं राज्य हूं मारा पुत्रने नहीं आहुं. ” एम विचारी तेणे पोतानी व्हेनना पुत्र केशिने राज्यपर स्थापन कर्यो अने केशिए करेला उत्सवपूर्वक राजाए प्रभुपासे दीक्षा ग्रहण करी. पछी एक उपवासथी आरंभीने मासचपण पर्यंतना दुस्तप तपवडे ते राजपिं ठर्महुं अने कायाहुं शोपण करीने विचरवा लाग्या. एरुदा अंतप्रांत आहार करवाथी तेमना शरीरमां अनेक रोग उत्पन्न थया. ते वसते तेने वैद्योए ते रोगहुं औपध दहीं छे एम कहु. तेथी ते राजपिं गोकुळमां विचरवा लाग्या. केमके त्यां निर्दोषि दहींनी भिळा सुलभ होय छे.

एकदा उदायन राजपिं निहारना क्रमे वीतभयपचनमां गया. ते वसते अकारण शत्रुरूप मंत्रीओए केशिराजाने कहुं के—“हे राजा ! आ तमारा मामा परिपहोथी पराभन पाम्या छे, तेथी राज्य लेनानी इच्छाथी अहीं आव्या छे, तेनो तमारो विश्वास करवो नहीं. ” ते सांभळी केशि राजा बोल्हो के—“ते राज्यना स्वामी पोताहुं राज्य ले, तो तेमां मारे शुं ? शेठ पोताहुं धन ग्रहण करे, तेमां वाणोतरने कोप शानो ? ” ते सांभळी प्रधानो बोल्ह्या के—“आ चित्रियोनो धर्म नथी. केमके चत्रियो तो पिता पासेथी पण वळात्कारे राज्य लइ ले छे. तेथी तमे तेने राज्य पाहुं आपो ते योग्य नहीं. एथी रीते कोइ पण पाहुं आपे ज नहीं. ” ते सांभळी केशिए तेमने पूछ्युं के—“त्यारे मारे शुं करयुं ? ”

ते दुष्टोऽपि न वाच आप्यो के—“तेने कोइनी मारफत विप अपाचो” आ प्रमाणे मन्त्रीश्रोता भरमाववाधी ते मदसुद्धिवाळा कोशिए तेमनु वचन अगीकार करुं पछी केशिराचाए कोइ आभिरी पासे ते रात्रिने विपमिश्रित दही अपाव्यु परतु देरीए तेमाथी रिपने हरी लीधु अने कष्टु के—“हे मुनि ! विपमिश्रित दहीं तमने मळरो, माटे तमे दहींनो त्याग करो.” त्यारे तेणे दहींनो त्याग कर्यो एटले दहीं विना तेनो व्याधि वधवा लाग्यो तेथी मुनिए फरी दहीं लेवा मांड्यु तेमां पण विप आव्यु, ते देवीए हरी पूर्वनी जेम दहींनो निषेध कर्यो श्रीजीवार पण देवीए विप हरी लीधु, अने ते मुनिनी भक्तिमां लीन थयली होवाधी ते तेनी पाछळ ज भमवा लागी एकदा देवी प्रमादमां रही, ते वखते मुनिए दहीं साधु, “जे थयानु होय ते कोइ पण प्रकारे थाय न छे” त्यारपछी मुनिए पोताना अगनी व्याकुळता जोइ विपभवण थयानु जाणी तरकाळ समताभावमां रही अनशन ग्रहण करुं श्रीश दिवस सुधी अनशन पाळी समाधिमा रही केवळज्ञान पामी ते राजर्षि मोचे गया

ते उदायन राजर्षि श्रुक्ति पाम्या पछी देवी तेनी पासे आधी अने मुनिने कालधर्म पाम्या जोइ ते मनमां अत्यंत क्रोध पामी तेथी धूळनी घुट्टि करीने ते देवीए वीतमयपचनने स्थळरूप वनावी दीधु मात्र एक कुमार, के जे मुनिनो शय्यातर होवाधी निरपराधी हतो तेने ते देवी त्याथी सिनपल्लीमां लइ गइ, ते ज मात्र एक जीवतो रक्षो त्यां तेना नामथी ते देवीए कुभकारकृत नामनु नगर वसाव्यु देवनी शक्तिथी शु न थाय ?

अहीं जे वखते उदायन राजाए केशिने राज्यपर स्थापन कर्यो, ते वखते मनमा रुंद पामेला अर्भाचिए विचार कर्यो के—

“ हं प्रभावतीनी कुचिमांथी उत्पन्न थयो छुं, नीतिवाळो छुं अने भक्तिमान पण छुं; छतां राजाए केशिने राज्य आप्णुं, ते मारा पिताए विवेकी छतां योग्य कर्युं नथी. “ भाणेजेने घरमां लाववो नहीं ” एम लोकमां पण कहेवत छे ते सत्य छे. पुत्रने छोडी भाणेजेने राज्य आपतां मारा पिताने केम कोइए वार्यो पण नहीं ? तेम ज तेने केम अपशुकन पण थयां नहीं ? अथवा तो मारा पिता प्रभु छे तेथी तेणे पोतानी इच्छा प्रमाणे कर्युं, तो भले कर्युं, परंतु हूं उदायन राजानो पुत्र थइने मारे केशिनी सेवा करवी ते योग्य नथी. ” एम विचारी ते अभीचि नगरमांथी नीकळी चंपानगरीमां पोतानी मासीना पुत्र कृषिक राजा पासे गयो. त्यां कृषिक राजाए तेनो सारो सत्कार कर्यो, तेथी ते मोटी समृद्धिने पाम्यो. तेणे चिरकाळ सुधी अतिचार रहित श्राद्धधर्मनुं पालन कर्युं, परंतु पिताना तिरस्कारनुं स्मरण थवाथी तेनापरना बैरनो तेणे त्याग कर्यो नहीं. ते अभीचि घणा वर्षो सुधी श्रावकधर्मेने पाळी पितापरना बैरनी आलोचना कर्यो विना एरु पत्तनुं अनशन करी काळधर्म पाम्यो अने असुरकुमारने विषे एक पत्न्योपमना आयुष्यवाळो ते महद्विक देव थयो. त्यांथां आयुष्यने चंयं च्यवी महाविदेहमां जन्म पामी ते अभीचिनो जीव सिद्धिपदने पामयो.

इति श्री उदायन राजर्षि कथा.

तहेव कासीराया, सेओसच्चपरक्रमे । कामभोगे पंरिच्चज्ज, पैहणे कम्ममहावणं ॥ ४९ ॥

अर्थ—( तहेव ) तेज प्रमाणे ( सेओसच्चपरक्रमे ) अत्यंत प्रशंसा करवा लायक एवा सत्यने विषे एटले चारित्रिने विषे पराक्रमवाळा ( कासीराया ) काशी देशना नंदन राजाए ( कामभोगे ) कामभोगनो ( परिच्चज्ज ) त्याग करीने ( कम्म-

महावण) कर्मरूपी महावननो ( पहले ) नाश कर्यो ४६

काशीराजनी कथा

धाराणसी नगरीमां अग्निशिख नामे राजा हतो तेने जयती नामनी प्रिया हती तेनी कुविधी सातमो बळदेव पुत्र उत्पन्न थयो तेनु नदन नाम पाड्यु त्पारपळी ते ज राजानी शेषवती नामनी बीजी राणीथी दत्त नामनो वासुदेव पुत्र उत्पन्न थयो अक्सरे राचाए दत्तने राज्य आप्यु तेणे नदनी सहायथी त्रय एड भ्रत साध्यु चिरकाल सुधी छवीश धनुपनी कायावाळा वन्ने भाइओए राज्यलक्ष्मी भोगवी अनुक्रमे छप्पन हजार वर्षनु आयुष्य पूर्ण करी दत्त वासुदेव पांचवी नरकृष्णीमां गयो तेना मरण पळी वैराग्य पामेला नदने दीक्षा ग्रहण करी. छेवट केवळज्ञान प्राप्त करी पांसठ हजार वर्षनु आयुष्य भोगवी नदन मुनि मोक्षपद पाम्या

इति काशीराजकथा

तेहेव विजओ राया, आणट्टाकित्ति पंठवए । रंज तुं गुणसमिद्ध, पंयहितु महायसो ॥ ५० ॥

अर्थ—( तहेव ) तेमज वळी ( आणट्टाकित्ति ) नाश पामी छे अपकीर्ति जेनी अथवा ' आणट्टा ' एटले आर्चध्यान रहित अने ' कित्ति ' कीर्तिवाळो तथा ( महायसो ) महा यशस्वी एवो ( विनओ ) विजय नामनो ( राया ) राजा बीजो बळदेव ( गुणसमिद्ध तु ) गुणे करीने समृद्धिवाळा एवा पथ ( रज ) राज्यनो ( पंयहितु ) त्याग करीने ( पंठवए ) प्रव्रजित



थयो. अहीं गुणे करीने समृद्धिवाळें राज्य कळुं तेमां गुण एटले स्वामी, अमात्य, मित्र, कोश, राष्ट्र, दुर्ग अने सैन्य-ए ससांग राज्य जाणतुं अथवा गुण एटले कामभोग जाणवा. ५०.

विजयराजानी कथा.

द्वारका नगरीमां ब्रह्मराजनो पुत्र सुभद्रानी कुचिथी उत्पन्न थयेलो विजय नामनो बीजो बळदेव हतो. तेनो नानो भाइ द्विष्ट वासुदेव हतो. ते वोंतेर लाख वर्षतुं आयुष्य पूर्ण करी मरण पामी नरके गयो, त्यारे विजये वैराग्यथी दीक्षा अंगीकार करी, अनुक्रमे केवलज्ञान उत्पन्न करी पंचोतेर लाख वर्षतुं आयुष्य पूर्ण करी विजयप्रुनि मोक्षपद पाय्या. आ वक्रेलुं देहमान सीचिर धनुष्य हतुं.

इति विजयराजकथा.

तहेतुंगं तंव किंचा, अञ्चकिलत्तेण चेअसा । महव्वलो रायरिसी, आदाय सिरसा सिरां ॥ ५१ ॥  
अर्थ—( तहेव ) तथा वळी ( महव्वलो ) महावळ नामना ( रायरिसी ) राजपिं ( सिरसा ) मस्तकवडे ( सिरां ) चारित्रलक्ष्मीने ( आदाय ) ग्रहण करी एटले माथा साटे अर्थात् जीवितनी अपेक्षा रहितपणे चारित्रलक्ष्मी ग्रहण करीने ( अञ्चकिलत्तेण ) व्यग्रता रहित—स्थिर ( चेअसा ) चित्तवडे ( उगं ) उग्र ( तवं ) तप ( किचा ) करीने त्रीजे भवे मोक्ष पाय्या. ( ए अध्याहार खे. ) ५१.

## महाबळ राजानी कथा

आ ज भरतचंद्रमां हस्तिनापुर नामना नगरने विपे अतुल रळालो बळ नामे राजा हवो तेने देदीप्यमान कांतिवाळी प्रभावती नामनी राणी हती एकदा रात्रे सुते सुतेली ते राणीए स्वप्नमां सिंह जोयो. तत्काळ जागृत थइ हर्ष पामीने तेणीए राचाने ते स्वप्न कही तेनु फळ पूछ्यु राजाए कहु--" आ स्वप्नथी तन आपणा कुळरूपी समुद्रनो उद्घास करवामां चद्र समान पुत्र थशे " ते सांभळी हर्षे पामेळी राणीए गर्भ धारण कर्यो अशुकने समय पूर्ण थये राणीए शुभ लक्षणोवडे सपूर्ण पुत्र प्रसन्न्यो त्यारे वळराजाए हर्षथी मोटो उत्सव करी तेनु महाबळ नाम पाड्यु पांच घात्रीओथी लालन पालन करातो ते कुमार कळाना समूहने प्राप्त करी मनोहर युवावस्थाने पाम्यो. त्यारे राजाए तेने जाणे आठे दिसा ओनी लक्ष्मी होय तेवी आठ राजकथाओ महोत्सवथी एरु दिवसे परयावी पळी राजाए कुमारने तथा बहुओने घषी समृद्धि आपी तेथी ते कुमार सद्गुणवडे मनोहर एवी ते आठे प्रियाआ साथे इच्छा प्रमाणे कामभोग भोगववा लाग्यो

एकदा ते नगरना उद्यानमां पांचसो शिष्योना परिवार सहित श्री विमळनाथ तीर्थकरनी पट्टपरपरामां थयेला धर्मयोग नामना आचार्य महाराज पधार्यो तेमनु आगमन सांभळी आनंद पामेलो महाबळ कुमार गुरु पासे गयो तेमने वदना करी कर्मरूपी मळने धोवामां जळसमान धर्मदेशना सांभळी तेथी ते कुमार मदभाग्यवाळा प्राणीओने दुर्लभ एवो वैराग्य पाम्यो एटले तेणे गुरुने प्रणाम करी विज्ञप्ति करी के--" हे पूज्य ! रोगी माणसने जीवाडे तेवा औपघनी जेम मने आ धर्म रुच्यो छे, तेथी हु मारा मातापितानी रजा लइ दीवा लेवा माटे अर्ही आधु, त्यांसुधी आप मारापर कृपा

करी अहीं ज रहेजो. " ते सांभळी आचार्य महाराजे कहुं के— " हे राजकुमार ! तमारो विचार योग्य छे. माटे आ चाव-  
तमां विलंब करवो नहीं. " पछी कुमारे घेर जइ मातापिताने प्रणाम करी कहुं के— " हुं धर्मघोष गुरुनी धर्मदेशना  
सांभळी आनंद पाम्यो छुं. तेथी आप पूज्योनी अनुसारी हुं तेमनी पासे दीक्षा लेवा इच्छुं छुं. वहाण मळ्या पछी कयो  
माणस समुद्रमां उचतो रहे ? " आ प्रमाणे कुमारुं वचन सांभळी प्रभावती राणी पृथ्वीपर मूर्छा साइने पडी गइ. पछी  
शीतोपचारथी सावधान थइ सती ते रुदन करती बोली के— " हे पुत्र ! अमे तारा नियोगने सहन करवा शक्तिमान नथी.  
तेथी ज्यासुधी असे जीवीए छीए त्यांसुधी तुं गृहस्थाश्रममां ज रहे. पछी दीक्षा ग्रहण करजे. " कुमारे कहुं— " आ  
जगतमां सर्व संयोगो स्वप्ननी जेवा क्षणिक अने असत् छे, तथा मनुष्यनुं आयुष्य नायुथी हलता दर्भना अग्रभागपर  
रहेला जळना विंदु जेवुं चंचळ छे. तेथी हुं नथी जाणतो के पेहेलुं कोण जशे ? माटे मने आजे ज प्रव्रज्या लेवानी आज्ञा  
आपो. " माताए कहुं— " हे वत्स ! आ तारुं जीवन वयवाळुं शरीर अति मनोहर अने कोमळ छे, माटे हमणां सुख  
भोगव अने पछी वृद्धागस्थामां दीक्षा ग्रहण करजे. " कुमारे कहुं— " हे माता ! आ शरीर रोगोथी व्याप्त छे, अशुचिथी  
भरेलुं छे, मळथी मलिन छे, अने कारागृहनी जेवुं असार छे. आवा शरीरथी मनुष्यने शुं सुख छे ? वळी शरीरमां शक्ति  
होय त्यारे ज चारित्र लेवुं योग्य छे, वृद्धावस्थामां शरीर अशक्त थनाथी चारित्र बराबर पाळी शकातुं नथी, अथवा ते  
बचवते मन न होय तो पण व्रत जेवुं ज छे, माटे युवावस्थामां ज दीक्षा सफल थाय छे. " प्रभावती माता बोली— " समग्र  
गुणना स्थानरूप आ आठ स्त्रीओनी साथे हमणां तुं भोग भोगव. हमणां व्रत लेवाथी शुं ? " महाकळ कुमार बोल्यो—

“कष्टही साधी शरपाय तेवा, अज्ञानी जनोए सेवेला, दुःखना अनुभववाळा अने विषफळनी उपमावाळा भोगोधी शु फळ  
 छे ? वळी मोघने आपनारा आ मनुष्य भवने क्यो डाब्यो माणस भोगने माटे हारी जाय ? एक कोडीने माटे रत्नने कोण  
 गुमावे ? ” माठा बोली—“ हे पुत्र ! आ धश परपराधी आवेला द्रव्यनो भोगवटो कर, आ पण पुण्यरूपी वृचनुं ज  
 फळ छे ” दुमारे कळु—“ हे माता ! जे धन दणवारमां गोत्रियो, चोर अने अग्नि विगेरेने आधीन थाय छे, ते घनयी  
 मने लोग केम पमाडो छो ? वळी अनत सुउने आपनारो धर्म परभवमां पण साधे आवे छे, अने धन तो तेनायी विपरीत  
 छे, तेनी तुज्यता शी रीते थइ शके ? ” माठाए कळु—“ हे पुत्र ! चारित्र तो अग्निनी ज्वाळानु पान करवा जेवु दुप्कर  
 छे, ते तु सुकुमार अगवाळो शी रीते पाळी शकीश ? ” कुमार हसीने बोळ्यो—“ हे माता ! एवु शु बोलो छो ? कायर  
 पुळ्येने ज व्रत दुप्कर होय छे जे धीर पुरपो होय ते तो प्राणनी नाश थाय तोपथ पोतानी प्रतिज्ञानु पालन करे छे. तेवा  
 परलोकना अर्थनि ते व्रत काइपण दुप्कर नधी तो हे पूज्य मातुश्री ! मारापरना मोहनो त्याग करी मने चारित्र लेवानी  
 आज्ञा आपो वीजो पण कोइ धर्मनु आचरण करवा इच्छतो होय तेने उत्साह आपवो जोइए, तो पोताना पुत्रने उत्साह  
 आपवो तेमां शु कहेवु ? ” आ प्रमाणे उत्कट वैराग्यने पामेला ते कुमारने तेना माता पिता समजाची शक्या नही, एटले  
 निरुपाय थइ तेने व्रत लेवानी आज्ञा आपी

त्यारपछी ते महादयळ कुमारेने तीर्थना जळवटे अभिषेक क्यो, चंद्रिकानी जेवा चदनना द्रव्यवडे तेना शरीरने विलेपन  
 करुं, अश्वना गुणना फीण जेवा उज्वळ वे देवदुव्य चळो तेने पहेराळ्यां, पगधी मस्तक पर्यंत मणिसय आभूयणोवडे तेने

शाणुगारवामां आव्यो, विकस्वर कमळनी जेहुं श्वेत छत्र तेना मस्तकपर धारण करवामां आव्युं, वने बाजु उछळता जळतरं-  
गोनी जेवा चपळ चामरो वींज्ञावा लाग्या, ए रीते हजार मनुष्योए वहन करेली शिधिकामां ते कुमार वेठो. तेनी पाछळ  
बळराजा सर्व सैन्य सहित चाल्यो. ते वखते भेरी विगेरे वाजित्रोना नादवडे मेघगर्जनानी आंतिथी क्रीडामयूरो पण नृत्य  
करवा लाग्या. “जे नवा यौवनवाळो छतां मनोहर राज्यलक्ष्मीनो त्याग करी दीक्षा ग्रहण करे छे, ते आ महाबळ कुमारनो  
जन्म कृतार्थ छे.” इत्यादिक अनेक प्रकारे सर्व लोको तेनी प्रशंसा करवा लाग्या. आ रीते चिंतामणिनी जेम अर्थीअोने  
वांछित दान आपतो महाबळ कुमार नगरनी बहार नीकळी आचार्ये पवित्र करेला उद्यानमां आव्यो.

पछी कुमार शिधिकामार्थी नीचे उतर्यो. तेने आगळ करीने राजा तथा राणी गुरुपासे जइ हाथ जोडी बोल्या के—  
“आ अमारो प्रिय पुत्र विरक्त थयो छे, तेथी आपनी पासे दीक्षा ग्रहण करवा आव्यो छे, तेथी असे पण आपने शिष्यरूप  
भिन्ना आपीए छीए.” ते सांभळी गुरुए ‘ बहु सारुं ’ एम कहुं, एटले ते कुमार ईशान खूणामां जइ सर्व अलंकारोने जाणे  
विकार होय तेम दूर कर्यो. ते अलंकारोने ग्रहण करती प्रभावती राणी मुक्ताफळ जेवा अशुना विंदुओने मूकती बोली के—  
“ हे वत्स ! तुं कदापि धर्मकार्यमां प्रमाद करीश नहीं, अने उत्तम मंत्रनी जेम निरंतर गुरुमहाराजनी आराधना करजे.”  
पछी गुरुमहाराजने नमस्कार करी राणी सहित राजा पोताने घेर गया, महाबळ कुमार जे जाते पोताना केशनो पंचमुष्टि लोच  
कयो, अने धर्मघोष गुरुने भक्तिवडे नमस्कार करी विज्ञप्ति करी के—“ हे पूज्य ! संसारसागरमां डूवता मने दीक्षास्वी  
नाव आपो.” त्यारे सूरिमहाराजे तेने विधिपूर्वक दीक्षा आपी. महा बुद्धिमान ते महाबळ मुनिए तीव्र व्रतनुं पालन करतां

चौद पूर्वनो अभ्यास कर्षो नार वर्ष सुधी अति उग्र तप करी छेवट एक मासनु अनशन करी पांचमा देवलोकमां ते देव ययो त्यां दश सागरोपमनु आयुष्य पूर्ण करी त्यांथी च्यवी वाणिज नामना गाममां सुदर्शन नामे श्रेष्ठ श्रेष्ठी ययो त्यां समकित दर्शनवडे पवित्र आत्मावाळा ते सुदर्शन श्रेष्ठीए चिरकाळ सुधी श्रावकधर्मनु पालन करुं.

एकदा ते गाममां थी महावीर स्वामी समवसर्यां ते सांमळी श्रेष्ठी अत्यंत आनद पाम्यो पळी जिनेश्वर पासे जइ तेमने वदना करी तेमनी पासे धर्म सांमळी प्रतिबोध पामी विरक्त थयेला सुदर्शन श्रेष्ठीए अर्थीजनोने पांछित द्रव्य आपी प्रभु पासे दीक्षा ग्रहण करी पळी ते श्रेष्ठीमुनि सर्व पूर्वनो अभ्यास करी उग्र तप करी प्रति सर्व कर्मनो क्षय करी मोचपद पाम्या

इति महावल्परि कथा

आ प्रमाणे महापुरुषोना दृष्टांतवडे ज्ञानपूवक क्रियातु फळ वतावी हवे उपदेश आपे छे—

कह धीरे ग्रेहेऊहिं, उम्मत्तो व्व मेहि चरे । एए विसेसमादाय, सुरा दैटपरकमा ॥ ५२ ॥

अर्थ—( सुरा ) शूरवीर अने ( दैटपरकमा ) दैट पराक्रमवाळा ( एए ) आ भरतादिक महापुरुषोए ( विसेस ) अन्य दर्शनो करतां जैन दर्शनमां उत्तमत्तरूप विशेष छे एम ( आदाय ) ग्रहण करीने—जाणीनि तेनो ज आश्रय कर्षो छे, माटे ( धीरे ) धीर पुरुष ( अहेऊहिं ) क्रिया, अक्रिया, विनय अने अज्ञानरूप कुहेदुवडे ( उम्मत्तो व्व ) उन्मत्तनी जेम ( कह ) केम ( महि ) पृथ्वीपर ( चरे ) विचरे ? सत्त्वतो अपलाप करी असत्त्वरूपणानु प्रतिपादन करी पृथ्वीपर केम विचरे ?

न ज विचरे. तेथी करीने धीर पुरुषे आ जिनशासनने विषे ज दृढ चित्त करुं, ए उपदेश छे. ५२.

अचंचत्तनिआणखमा, सच्च्वा 'मे भासिआ वैई । अतरिसु तरंतेगे, तरिस्संति अणायगया ॥ ५३ ॥

अर्थ—जिनशासन ज आश्रय करवा लायक छे ए प्रमाणे ( मे ) में जे ( सच्चा ) सत्य ( वहै ) वाणी ( भासिआ ) कही छे, ते वाणीवडे ज ( अचंचत्तनिआणखमा ) अत्यंत निदान-कर्ममळुं शोधन, तेने विषे समर्थ एवा पूर्वना जनो ( अतरिसु ) आ संसारसमुद्रने तरी गया छे, वर्तमान कालना ( एगे ) केटलाक जनो ( तरंति ) महाविदेहमां संसारसमुद्रने तरे छे, अने ( अणायगया ) अनागत कालमां अनेक जनो ( तरिस्संति ) संसारसमुद्रने तरी जये. अहीं निदाननी व्युत्पत्ति आ प्रमाणे छे—नितरां दीयते-शोधयते पवित्रीक्रियते आत्माज्जेनेति निदानं. 'दैप् शोधने' इत्यस्य रूपम् ॥ ५३ ॥

तेथी करीने—

कंहं धीरे अहेजहिं, अत्ताणं परिआवसे । सव्वसंगविणिम्युक्के, सिद्धे हवइ नीरए' ति वेमि ॥५४॥

अर्थ—( धीरे ) धीर एवो साधु ( अहेजहिं ) अहेतुवडे एटले क्रियावादी विगरे कुमतिओना वचननी युक्तिवडे (अत्ताणं) पोताना आत्माने ( कंहं ) केम ( परिआवसे ) वासित करे ? एटले कुत्सित हेतुना स्थानमां केम वास करावे ? न ज करावे-आ रीते करवाथी शुं फल थाय ? ते कहे छे—( सव्वसंगविणिम्युक्के ) द्रव्य अने भाव एम एम सर्व संगथी विनिर्मुक्त एटले धन धान्यादिक द्रव्य अने क्रियावादादिक भावसंगथी रहित, तथा ( नीरए ) कर्मरूपी रजथी रहित थयो थको ( सिद्धे ) सिद्ध

( इवद् ) धाय छे-सिद्धपणाने पामे छे आ प्रमाणे उपदेश आपीने ते छत्रिययुनि पृथ्वीपर विचरवा लाग्या, अने सयतयुनि पण निरतिचार चारित्र्यनु पालन करी मोक्षपदने पाम्या ( विवेमि ) एम हु कहु छु, एम सुधर्मास्वामीए जबूस्वामीने कहु, ५४ इत्यष्टादशमध्ययनम् १८.



## अथ मृगापुत्रीय नामनु ओगणीशमु अध्ययन १६

अठारमा अध्ययनमा भोगनी श्रद्धिनो त्याग करवानु कहु ते त्याग अप्रतिकर्मण्याथी एटले शरीरनी शुश्रूषा-सेवा न करवाथी थाय छे तेथी आ अध्ययनमा मृगापुत्रना दृष्टांतवडे अप्रतिकर्मताने कहे छे—

सुग्गीवे नैयरे रंम्मे, काणणुजाणसोहिए । राया वैलभद ति, मिआ तैस्सर्गमाहिंसी ॥ १ ॥

अर्थ—( काणणुजाणसोहिए ) कानन एटले मोटा घुचोवाळा वनो अने उद्यान एटले क्रीडा करवाना वगीचाओवडे शोभित तथा ( रम्मे ) मनोहर एया ( सुग्गीवे ) सुग्रीव नामना ( नयरे ) नगरने विषे ( बलभद ति ) बळभद्र एवा नामनो ( राया ) राजा हतो ( तस्स ) ते राजाने ( मिआ ) मृगा नामनी ( अगमाहिंसी ) पट्टराणी हती ।

तेसिं पुत्ते वैलसिरी, मिआपुत्ते ति विस्सुए । अम्मोपिज्जण वैइए, सुवराया देमीसरे ॥ २ ॥

अर्थ—( वैसिं ) ते बळभद्र राजा तथा मृगा राणीने ( बलसिरी ) बळश्री नामे ( पुत्ते ) पुत्र हतो, एटले तेना माता



पिताए तेनुं नाम बळशी पाड्युं हतुं, तथा ( भिआपुते त्ति ) लोफमां मृगापुत्र एया नामे ( विस्सुए ) प्रसिद्ध हतो, एटले लोकोए मृगा राणीनो पुत्र होवाथी तेनुं मृगापुत्र नाम पाड्युं हतुं. ते पुत्र ( अम्ममापिऊण ) मातापिताने ( दइए ) अत्यंत वल्लभ हतो, तथा ( जुवराया ) युवराज पदवीने पामेलो हतो. पिता जीवतां छतां राजने योग्य जे कुमार होय ते युवराज कहेवाय छे. तथा ते कुमार ( दमीसरे ) दमी एटले इंद्रियोने दमन करनारा साधुप्रोनो ईश्वर-सामी हतो. अहीं आ कुमार साधुनो स्वामी थवानो छे माटे भावीने विषे भूतकालनो निर्देश करीने आ विशेषण आप्युं छे, प्रथया द्रव्यनिचेपाने आश्रीने आ विशेषण आप्युं छे. ३.

नंदेणे सौं उं पासाए, कीलेंए सिंह इत्थिहिं । देवो दोगुंदगो चैवं, निचं सुइअमाणसो ॥ ३ ॥

अर्थ—( उ ) तु पुनः ( मो ) ते कुमार ( निचं ) निरंतर ( सुइअमाणसो ) हर्ष पाम्युं छे मन जेनुं एवो सतो ( नंदगे ) वास्तुशास्त्रमां कहेला लक्षणवाळो होवाथी ममृद्विवाळा नंदन नामना ( पासाए ) प्रासादने विषे ( दोगुंदगो ) दोगुंदक जातिना ( देवो चैवं ) देवोनी जेम ( इत्थिहिं ) स्त्रीप्रोनी ( सह ) साथे ( कीलए ) क्रीडा करतो हतो. निरंतर भोगमां ज तत्पर रहेता त्रायस्त्रिया देवोने पण दोगुंदक कहे छे. ३.

मणिरथेणकुट्टिमतले, पासयालोअणे ठिओ । आलोएइ नैयरस्स, एउकैतिगचच्चरे ॥ ४ ॥

अर्थ—ते कुमार एकदा ( मणिरथणकुट्टिमतले ) मणि अने रत्नोथी जटेलं छे तळीयुं जेनुं एया ( पासयालोअणे )

प्रासादना गवाक्षमां ( ठिथो ) वेठो थको ( नयरस्स ) नगरना ( चउक्कतिगचखरे ) चतुक्क, त्रिक अने चत्वरोने ( आलोएद ) जोतो हतो चतुक्क एटले चार मार्ग एकठा थता होय ते स्थान, त्रिक एटले त्रण मार्ग एकठा थता होय ते स्थान अने चत्वर एटले चजार-बौडु तेने जोतो हतो ४

ते वखते शु थयु ? ते कहे छे—

अह तैत्थ अइच्छत, पासई समणसजय । तवनियमसंजमधर, सीलँडु गुणँआगर ॥ ५ ॥

अर्थ—( अह ) ते वखते ( तत्थ ) त्यां त्रिकादिक मार्गने विषे ( अइच्छत ) गमन करता, ( तवनियमसजमधर ) उपवासादि तप, द्रव्यादिकना अभिग्रहरूप नियम अने सत्तर प्रकारना सयमने धारण करनारा, तेथी करीनेज ( सीलँडु ) शील एटले अढार हजार शीलिंगि करीने सहित, अने तेथी करीनेज ( गुणआगर ) ज्ञानादिक गुणानी स्थाणरूप एवा ( समणसजय ) सयत साधुने तेथे ( पासई ) जोया ५.

त देहइ मिआपुत्ते, दिट्ठीएँ अणिमिसाए उ । केह भेत्रेसिँ रूव, दिट्ठुपुव्व भँए पुँरा ॥ ६ ॥

अर्थ—( मिआपुत्ते ) ते मृगापुत्र ( अणिमिसाए उ ) निमेष रहित एवी ज ( दिट्ठीए ) दृष्टिवडे ( त ) ते मुनिने ( देहर ) जोतो हवो जोइने तेणे विचार कर्पो के ( मन्ने ) हु मातु छु के ( एरिस ) आबु ( रूव ) रूप ( मए ) में (पुरा) पूर्व जममां ( कह ) क्यांक ( दिट्ठुपुव्व ) प्रथम जोयेलु छे ? एम विचार्तां तेने हर्प थयो ६.

साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे । मोहं गयस्स संतस्स, जाईसरणं संमुप्पन्नं ॥७॥  
 अर्थ—( तस्स ) ते ( साहुस्स ) साधुना ( दरिसणे ) दर्शन थये सते ( सोहणे ) शोभन एटले प्रशस्त एवा  
 ( अज्झवसाणम्मि ) अध्यवसायने विपे एटले मनना परिणामने विपे अर्थात् चायोपशमिक भावने विपे वर्ततां में आवुं रूप  
 क्यां जोयुं छे ? एवं चितवन करतां ( मोहं ) मूर्छाने ( गयस्स संतस्स ) पाम्या सता ते मृगापुत्रने ( जाईसरणं ) जातिस्मरण  
 ज्ञान ( समुप्पन्नं ) उत्पन्न थयुं, एटले के प्रथम साधुनुं दर्शन थयुं, पछी मनना शुभ परिणाम थया, पछी ते संबंधी ऊहा-  
 पोह करतां मूर्छा आवी अने ते मूर्छा वळी एटले जातिस्मरण ज्ञान थयुं. ७.

ते जातिस्मरण ज्ञान केवुं होय छे ? ते कहे छे.—

देवलोगनुओ संतो, माणुस्सं भवमीगओ । सन्नित्ताने संमुप्पन्ने, जातिस्सरणं पुराणयं ॥ ८ ॥

अर्थ—( देवलोगनुओ संतो ) हुं देवलोकधी चव्यो सतो ( माणुस्सं ) मनुष्य संबंधी ( भवं ) भवने विपे ( आगमो )  
 आब्यो छुं. ए प्रमाणे ( सन्नित्ताने ) संज्ञीज्ञान एटले गर्भज पंचेंद्रियने थतुं ज्ञान ते ( समुप्पन्ने ) उत्पन्न थये सते ( पुरा-  
 णयं ) पूर्वमवतुं ( जातिस्सरणं ) जातिस्मरण ज्ञान कहेवाय छे. ८.

जाईसरणे संमुप्पणे, मिआपुत्ते मैहिट्टिए । संरु पोरैण्णिअं जाई, संसामणं च पुरीकडं ॥ ९ ॥

अर्थ—( जाईसरयो ) जातिस्मरण ज्ञान ( सद्युप्यखे ) उत्पन्न थये सते ( महिद्रिय ) महा श्रद्धिवाळो एटले राजल-  
द्रीवडे युक्त एवो ( मिआपुत्ते ) मृगापुत्र ( पौराणिकं ) पूर्वनी ( जाइ ) जातिने-भचने ( च ) तथा ( पुराकठ ) पूर्व  
भवमां करेला-पाळेला ( सामर्ण ) चारित्रिने ( सरइ ) स्मरण करतो हवो ह

त्यारपळी तेणे शु कर्णुं ? ते कहे छे —

विसएसु अरैजतो, रैजतो सँजमम्मि अँ । अँम्मापिअर उँवागम्म, ईसं वैयणमँड्ववी ॥ १० ॥

अर्थ—( विसएसु ) विषयोने विषे ( अरजतो ) रागी नहों यतो ( अ ) अने ( सजमम्मि ) सयमने विषे ( रजतो )  
रागी यतो एवो ते मृगापुत्र ( अँम्मापिअरँ ) माता पिता पासे ( उँवागम्म ) आनीने ( इम ) आ प्रमाणे ( वयख ) वचन  
( अब्वी ) बोल्यो १०

जे वचन बोल्यो, ते कहे छे —

सुँआणि मे पँच महव्वयाणि, नरँएसु दुँक्ख चँ तिरिक्खजोणिसु ।

निडिँणकामो भिँहँ महँणवाओ, अँणुजाणह पँवइस्सामि अँम्मो ! ॥ ११ ॥

अर्थ—( मे ) में ( पच ) पांच ( महव्वयाणि ) महाव्रतो पूर्व भवमां ( सुआणि ) सांभळ्यां छे तथा ( नरएसु )  
नरकने विषे ( दुक्ख ) जे दुःख ( च ) अने ( तिरिक्खजोणिसु ) विर्यच योनिने विषे पण जे दुःख ते में सांभळ्यु छे

अथवा अनुभव्युं छे, तथा उपलक्षणथी देव अने मनुष्यने विषे जे दुःख छे ते पण में सांभळ्युं छे. तेथी करीने ( महष्ण-  
वायो ) महार्णव थकी एटले संसाररूपी समुद्रथकी ( निव्बिणरूपो ) नाश पाय्यो छे अभिलाष जेनो एवो ( मिह ) हुं  
थयो छुं. तो ( अम्मो ) हे माता ! ( अणुजाणह ) मने अनुज्ञा आपो. ( पवइस्सामि ) हुं प्रव्रज्या ग्रहण करीश. ११.

कदाच मातापिता भोग भोगववानुं कहेशे एम धारी तेनो निषेध करवा कहे छे.—

अम्मताय ! मैए भोगा, भुंत्ता विसफलोवमा । पैच्छा कडुअविवागा, अणुबंधुहावहा ॥ १२ ॥

अर्थ—(अम्मताय) हे माता पिता ! (मए) में (विसफलोवमा) विपना फळनी उपमावाळा एटले विपना फळ जेवा  
(भोगा) कामभोगो पूर्व (भुत्ता) भोगव्या छे. ते भोगो पहिलां भोगने समये मधुर लागे छे, परंतु (पच्छा) भोगव्या  
पछी (कडुअविवागा) कडुक विपाकवाळा एटले परिणामे कडवां फळ आपनारा छे, तथा (अणुबंधुहावहा) निरंतर  
दुःखने वहन करनारा-आपनारा छे. १२.

इमं सरीरं अण्णिच्चं, असुइ असुइसंभवं । असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥ १३ ॥

अर्थ—हे माता पिता (इमं सरीरं) आ शरीर (अण्णिच्चं) अनित्य छे, (असुइ) अशुचि एटले अपवित्र छे,  
(असुइसंभवं) अपवित्र एवा शुकु अने शोणितथी उत्पन्न थनारं छे, (असासयावासं) अनित्य निवासवाळुं  
एटले तेमां जीवो निवास पण अनित्य छे, तथा (इणं) आ शरीर (दुक्खकेसाण) दुःखना हेतुरूप जे क्लेशो एटले

ज्वरादिक रोगो तेमनु अथवा दुःख एतले जन्म, जरा, मृत्यु विगरे अने क्लेशो एटले धनहानि, स्वजन वियोग विगरे, तेतु ( भायण ) भानन एटले स्थान छे, १३

अंसासए सरीरम्मि, रेइ नोवँलभामि ह । पचेजा पुंरा ये चइअँव्वे, फेणवुवुअसन्निभे ॥ १४ ॥

अर्थ—तेथी करीने हे माता पिता ! ( पच्चा ) भोग भोगव्या पछी ( य ) अथवा ( पुरा ) भोग भोगव्या पहेलां ( चइअँव्वे ) त्याग करवा लायक तथा ( फेणवुवुअसन्निभे ) पाणीना फीखना परपोटा जेवा ( असासए ) अनित्य ( सरीरम्मि ) आ शरीरने विषे ( ह ) हु ( रइ ) प्रातिने ( न उवलभामि ) पामतो नथी १४.

माणुसत्ते असारम्मि, वाहीरोगाणे अल्लए । जरामरणंघत्थम्मि, ख्वण पि न रमांमि ह ॥ १५ ॥

अर्थ—वळी हे माता पिता ! ( वाहीरोगाण ) व्याधि एटले अगाध पीडाना हेतुरूप कुष्ठादिक अने रोग एटले वात, पित्त अने कफथी उत्पन्न थता ज्वरादिक तेमना ( अल्लए ) स्थानरूप, तथा ( जरामरणंघत्थम्मि ) जरा अने मरणबडे ग्रस्त-व्याप्त एवा आ ( असारम्मि ) सार रहित ( माणुसत्ते ) मनुष्य भवने विषे ( ख्वण पि ) बखवार पण ( ह ) हु ( न रमांमि ) आनद पामतो नथी १५

जंम्म दुवँख जंरा दुवँख, रोगा य मरणाणि अ । अँहो दुवँखो हुँ ससंरो, जत्थं कीसति जंतुणो ॥ १६ ॥

अर्थ—( जम्म ) जन्म थरो ते ( दुवख ) दुःख छे, ( जरा ) वृद्धावस्था थाय ते ( दुवख ) दुःख छे, ( रोगा य )

रोगो, तथा ( मरणाणि अ ) मरण पण दुःख ज छे, ( अहो ) अहो ! ( हु ) निश्चे ( संसारो ) संसार ज ( दुक्खो ) दुःखरूप छे, के ( जत्थ ) जे संसारमां ( जंतुणो ) जंतुओ ( कीसंति ) क्लेश पामे छे. १६.  
खित्तं वर्त्थु हिरैसां च, पुत्तदारं च वंधवे । चंडत्ता णं इमं देहं, गंतवमवसस्स मे<sup>१०</sup> ॥ १७ ॥

अर्थ—( खित्तं ) क्षेत्रने, ( वर्त्थुं ) वास्तु एटले घर, हाट विगेरेने, ( हिरणं च ) सुवर्णने, तथा ( पुत्तदारं च ) पुत्र, स्त्री विगेरेने, तथा ( वंधवे ) भाइ, काका विगेरे बांधवने, तथा ( इमं ) आ ( देहं ) देहने पण ( चंडत्ता णं ) तजनि ( अवसस्स ) परवश एवा ( मे ) मारे ( गंतव्वं ) परभवने विपे जवाहुं छे. १७.  
जहा किंपागफलाणं, परिणामो न सुंदरो । एवं सुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुंदरो ॥ १८ ॥

अर्थ—( जहा ) जेम ( किंपागफलाणं ) किंपकना फळसावाहुं ( परिणाम ) परिणामो ( न सुंदरो ) सारुं नथी, ( एवं ) एज प्रमाणे ( सुत्ताण ) भोगव्या एवा ( भोगाणं ) कामभोगाहुं ( परिणामो ) परिणाम पण ( न सुंदरो ) सारुं नथी, ( एवं ) किंपाकना फळो जोवामां मनोहर होय छे अने सातां अति स्वादिष्ठ लागे छे, तेज रीते विपयो पण जोवामां मनोहर अने भोगवतां पण सुसकारक लागे छे, परंतु परिणामे किंपाकना फळनी जेम मरण तथा नरकादिक गतिने आपे छे. १८.

आ प्रमाणे भोगादिकनी असारता कही. हवे वे दृष्टांतवडे पोतानो अभिप्राय प्रगट करे छे—  
अच्छाणं जो मेहतं तु, अपाहिज्जो पवज्जई । गच्छंतो सो दुंही होइ, छुहातण्हाहिं पीडिएं ॥ १९ ॥

अर्थ—( जो ) जे मनुष्य ( महत तु ) मोटा-लांबा ( अद्वाण ) मार्ग प्रत्ये ( अपाहिजो ) माता विना ( पवजई ) गमन करे छे, अने तेवी रीते ( गच्छतो सो ) जतो एवो ते ( छुहातण्हादि ) क्षुधा अने रुपावडे ( पीडिए ) पीडा पाम्यो सतो ( दुही होइ ) दुःखी थाय छे १६

ध्रुव धम्म अकारुण्य, जो गच्छइ पर भव । गच्छतो सो दुही होइ, वाहिरोगेहि पीडिए ॥ २० ॥

अर्थ—( एव ) एज प्रमाणे एटले धर्मरूपी माता विनाना मार्गे जता पुरूपनी जेम ( जो ) जे पुरुष ( धम्म ) धर्मेने ( अकारुण्य ) नहीं करिने ( पर भव ) पर भव प्रत्ये ( गच्छइ ) जाय छे, तो ( गच्छतो ) जतो एवो ( सो ) ते पुरुष ( वाहिरोगेहि ) व्याधि अने रोगोवडे ( पीडिए ) पीडा पाम्यो सतो ( दुही ) दुःखी ( होइ ) थाय छे २०

अद्वाण जो महत तु, अपाहिजो पवजइ । गच्छतो सो सुही होइ, छुहातण्हाविवज्जिओ ॥ २१ ॥

अर्थ—( जो ) जे पुरुष ( महत तु ) मोटा-लांबा एवा ( अद्वाण ) मार्ग प्रत्ये ( सपाहिजो ) माता सहित ( पवजइ ) गति करे छे, तो ( गच्छतो सो ) जतो एवो ते ( छुहातण्हाविवज्जिओ ) क्षुधा अने रुपाथी रहित एवो सतो ( सुही ) सुखी ( होइ ) थाय छे २१

ध्रुव धम्म पि कारुण्य, जो गच्छइ परे भव । गच्छतो सो सुही होइ, अप्पक्कमे अवैअणे ॥ २२ ॥

अर्थ—( एव ) एज प्रमाणे ( धम्म पि ) धर्मेने पण ( कारुण्य ) करिने ( जो ) जे प्राणी ( पर भव ) पर भव प्रत्ये



( गच्छद् ) जाय छे, तो ( गच्छंतो ) जतो एवो ( सो ) ते प्राणी ( अप्पक्कमे ) कर्म रहित-अल्प अशुभ कर्मवालो अने ( अवे-  
अणे ) वेदना रहित एटले असातावेदनीय रहित थयो सतो ( सुही होइ ) सुखी थाय छे. २२.

जहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो प्हू । सारंभंडाई नीणेइ, असारं अवउज्झइ ॥ २३ ॥

अर्थ—( जहा ) जेप ( गेहे ) कोइ घर ( पलित्तम्मि ) अग्निवडे वल्गना मंड्ये सते ( तस्स ) ते ( गेहस्स ) वरनो  
( जो ) जे ( प्हू ) स्वामी होय ते ( सारंभंडाई ) सारभूत एटले महा मूल्यवालां भांडो एटले वस्त्राभरणादिक किमती वस्तु-  
अने ( नीणेइ ) बहार कांटे छे, अने ( असारं ) असार एवा भांडोने ( अवउज्झइ ) तजी दे छे-जता करे छे. २३.

एवं लोए पलित्तम्मि, जैराए मरणेणं यं । अप्पणं तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥ २४ ॥

अर्थ—( एवं ) ते ज प्रमाणे ( लोए ) आ लोक ( जराए ) जरात्रस्थावडे ( य ) तथा ( मरणेण ) मरणवडे ( पलि-  
त्तम्मि ) वळते सते एटले आकुल व्याकुल थये सते ( तुब्भेहिं ) तमारा वडे ( अणुमन्निओ ) आत्ता अपायो एवो हुं ( अप्पणं )  
सारभूत मारा आत्माने ( तारइस्सामि ) तारीश एटले संसारमाथी बहार काडीश अने असार एवा कामभोगादिकनो त्याग  
करीश. तेथी मने तमे आज्ञा आयो. २४.

हवे वीश गाथावडे मातापिता जवाव आपे छे—

२४ तं वित्तम्ममापिअरो, सामणां पुत्त ! दुच्चरं । गुणाणं तु संहस्साइं, धारेअव्वाइं भिंभुणो ॥ २५ ॥

अर्थ—हवे ( अम्मापिङ्गरो ) माता पिता ( त ) ते मृगापुत्रने ( बिति ) कहेता हवा, के ( पुत्र ) हे पुत्र ! ( सामण्य ) साधुधर्म ( दुचर ) दु खे आचरि शकाय तेवो छे, केमके ( गुणण तु ) गुणेना ( सहसाइ ) सहस्रोने-हजारो गुणेने ( भिक्खुणो ) भिक्खु ( धारेअन्वाइ ) धारण करवाना छे २५

समया संव्वभूएसु, संत्तुमित्तिसु वा जगे । पाणाइवायविरई, जावज्जीवाइ दुक्कर ॥ २६ ॥

अर्थ—हे पुत्र ! ( संव्वभूएसु ) सर्व जीवोने विषे ( वा ) अथवा ( जगे ) जगतमा ( संत्तुमित्तिसु ) शत्रु अने भिन्न उपर ( समया ) समता धारण करवानी छे, तथा ( जावज्जीवाए ) जावजीव पर्यंत ( पाणाइवाइविरई ) प्राणातिपात-जीव-हिंसानी विरति धारण करवानी छे, ते ( दुक्कर ) अति दुक्कर छे २६

निच्चकालप्पमत्तेण, मुसावायविवज्जण । भासिअव्व हिअ संच्च, निच्चाउत्तेण दुक्कर ॥ २७ ॥

अर्थ—बळी हे पुत्र ! ( निच्चकालप्पमत्तेण ) निरतर अप्रमत्तपणे ( मुसावायविवज्जण ) मृगावादनु पण वर्जन करवानु छे, तथा ( हिअ ) जीवोने हितकारक एवु ( सच्च ) सत्यपचन ज ( भासिअव्व ) बोलवानु छे, तथा ( निच्चाउत्तेण ) निरतर आपुक्तपणाए करीने एटले तेना सत्यताना उपयोगे करीने सहित रहेवानु छे, ते ( दुक्कर ) दुक्कर छे २७

दत्तसोहणमाइस्स, अदिणस्स विवज्जण । अणवज्जेसणिज्जस्स, गिणहणा अवि दुक्कर ॥ २८ ॥

अर्थ—हे पुत्र ! ( दत्तसोहणमाइस्स ) दातने शोधवानी-खोतरवानी सब्बी विगेरे ( अदिणस्स ) अदत्त वस्तुने ( विव

जणं) वर्जवानी छे. वृथानी सळी जेनी चीज पण कोइना दीघा विना ग्रहण करवानी नथी. तथा ( अणवजेसणियजस्स ) दीधेली वस्तुमां पण निर्दोष अने एषणीय वस्तुनुं ज ( गिण्हणा ) ग्रहण करवानुं छे, ( अवि ) ते पण ( दुकरं ) दुष्कर छे. २८.  
**विरेई अंबंभचेरस्स, कामभोगरसणुण्ये । उरुगं महव्वयं वंभं, धोरअव्वं सुदुकरं ॥ २९ ॥**  
 अर्थ—हे पुत्र ! ( कामभोगरसणुणा ) कामभोगना रसने जाणनार एवा तारे ( अंबंभचेरस्स ) अन्नब्रह्मचर्यनी एटले मैथुननी ( विरेई ) विरति करवी ते अति दुष्कर छे, तथा ( उरुगं ) उग्र एवं ( वंभं ) ब्रह्मचर्यरूप ( महव्वयं ) महाव्रत ( धारेअव्वं ) धारण करवानुं छे, ते ( सुदुकरं ) अति दुष्कर छे. २९.

**धणधन्नपेसवग्गेसु, परिग्गहविवज्जणा । सव्वारंभपरिच्चाओ, निम्ममत्तं सुदुकरं ॥ ३० ॥**

अर्थ—( धणधन्नपेसवग्गेसु ) धन, धान्य अने नोकरवर्गने विये ( परिग्गहविवज्जणा ) परिग्रहनो एटले ए सर्वनो त्याग करवानी छे, तथा ( सव्वारंभपरिच्चाओ ) सर्व प्रकारना आरंभनो त्याग करवानो छे, तथा ( निम्ममत्तं ) ममता रहित-पणे रहेवानुं छे, ते सर्व ( सुदुकर ) अति दुष्कर छे. ३०.

**चउव्विहे वि आहारे, रईभोअणवज्जणा । संनिहिसंचओ चेवं, धजेअव्वो सुदुकरं ॥ ३१ ॥**

अर्थ—हे पुत्र ! वळी ( चउव्विहे वि ) चारे प्रकारना ( आहारे ) आहारने विये ( रईभोअणवज्जणा ) रात्रिभोजननुं वर्जन करवानुं छे, ( चेवं ) तथा ( संनिहिसंचओ ) धी, गोळ विगेरे उचित काळधी वधारे वखत राखवा, ते संनिधि कहे-

चाय छे, तेनो सचय एटले सग्रह ( वल्लेखव्वो ) बर्जवानो छे एटले पासे एवी कोइ चीज राखी शकावी नथी, ते पण ( सु दुकर ) अति दुप्कर छे ३१

आ प्रमाणे छे नतनी दुप्करता कही, हवे परीपहोनी दुप्करता कहे छे —

छुहा तणहा य सीउण्ह, दसमसगवेअणा । अक्कोसा दुम्खसिजा य, तणफासा जल्लमेव य ॥ ३२ ॥

अर्थ—वळी हे पुत्र ! ( छुहा ) जुषा, ( तणहा य ) वृषा, तथा ( सीउण्ह ) शीत, उष्ण, ( दसमसगवेअणा ) दश अने मच्छरनी वेदना सहन करवानी छे, तथा ( अक्कोसा ) आक्रोश एटले वीचानां दुर्वचनो ( दुवएसिजा य ) दु सशय्या एटले उपाश्रयनु दु'ए, तथा ( तणफासा ) सथाराने विषे वृणना स्पर्शनु दु ए, ( य ) अने ( जल्लमेव ) मल्लनो परीपह, ए सर्व सहन करवानु छे ते अति दुप्कर छे ३२

ताल्लणा तैज्जणा चैव, वैहवधपरीसहा । दुम्ख भिंक्खायरिया, जायणा य अलाभया ॥ ३३ ॥

अर्थ—(ताल्लणा) हस्तादिक्के कोइ ताडन करे तो ते सहन करवानु छे, ( तल्लणा ) आंगळी आदिक वळे तर्जना करे वो ते सहन करवानी छे, ( चैव ) तथा ( वैहवधपरीसहा ) वध एटले यटि विगेरेना मार अने दोरडा आ दिक्कना वधनरूप परीपहो सहन करवाना छे, ते दुप्कर छे, वळी ( भिक्खायरिया ) भिवाचर्या करवी ते पण ( दुक्कए ) दु एरूपछे तथा (जायणा य) याचना करवी अने तेमां पण (अलाभया) लाभ न थाय ते सहन करवु अति दुप्कर छे ३३

कावोऽआ जाँ इमाँ वित्ती<sup>४</sup>, कैसलोओ अँ दारुणो । दुर्वैखं वंभव्यं<sup>५</sup> धोरं धोरें<sup>६</sup> अँ महँप्पणा ॥३१॥

अर्थ—वळी हे पुत्र ! साधु धर्मने विपे (जा) जे (इमा) आ (कावोआ) कपोतसंबंधी (वित्ती) वृत्ति छे, ते अति दुष्कर छे. जेस कपोत एटले पारेवा निरंतर शंका सहित ज भद्दय ग्रहण करवामां प्रवर्ते छे, अने साधा पछी काँइ पण साथे राखता नथी, ते ज प्रमाणे साधुओ पण आहारना दोपनी शंकावाळा सत्ता ज आहार ग्रहण करवा प्रवर्ते छे, अने आहार करी पछी काँइ पण संब्य करता नथी-राखी मूक्ता नथी ते (अ) तथा साधुने (कैसलोमो) केशनो लोच करवो पडे छे ते (दारुणो) भयंकर छे, (अ) तथा (महँप्पणा) महात्मा एटले उत्तम साधुए (धोरं) अल्प राखनाळाने भयंकर एउं (वंभव्यं) ब्रह्मचर्यव्रत (धोरें) धारण करवुं ते पण (दुमखं) अति दुःखरूप छे. उपर २६ मी गाथामां ब्रह्मव्रतने दुष्कर कहुं हतुं अने अहीं फरीथी तेने ज दुष्कर कहुं ते तेनुं अति दुष्करपणुं जगानवा कहुं छे. ३४.

हवे ते व्रतादिकनी दुष्करतानो उपसंहार करे छे-समाप्त करे छे.—

सुहोइओ तुमं पुत्ताँ !, सुकुमौलो अँ सुमज्जिओ । न हुँ सि<sup>७</sup> प्हँ तुमं पुत्ताँ !, साँसणमणुंपालिआ । ३५।

अर्थ—(पुत्ता) हे पुत्र ! (तुमं) तुं (सुहोइओ) सुखने उचित छे-सुखनो भोक्ता छे. (सुकुमालो) अति सुकुमाल छे (अ) तथा (सुमज्जिओ) सारी रीते अभ्यंगनादि पूर्वक स्नान करनारो छे, तथा उपलक्षणी सर्व अलंकारवडे अलंकृत रहेनारो छे, तेथी (पुत्ता) हे पुत्र ! (तुमं) तुं (सामणं) चारित्रने (अणुपालिआ) पाठवोने (हु) निश्चे (पहू) समर्थ (न सि) नथी. ३५.

असमर्थपणाने ज दृष्टातवडे सिद्ध करे छे —

जावजीवमविस्सामो, गुणाण तु महंभरो । गरुओ लोहंभारु व्व, जो पुत्ता ! होई दुव्वंहो ॥३६॥

अर्थ—( पुत्ता ) हे पुत्र ! ( जो ) जे ( गुणाण तु ) चारित्रना मूळ अने उत्तर गुणोनो ( महंभरो ) मोटो भार छे, ते ( लोहंभारु व्व ) लोढाना भारनी जेम ( गरुओ ) मोटो-अत्यंत ( दुव्वंहो होइ ) दुर्बल छे-बहन करवो अशक्य छे, केमके ते गुणोनो भार ( जावजीव ) जावनीव पर्यंत ( अविस्सामो ) विथाति रहित छे जो कदाच बीजो कोइ भार वहन न करी शक्या तो ते कोइ ठेकाणे नीचे उतारी बीसामो लइ शक्या छे परंतु चारित्रना गुणनो भार तो कदी पण उतारावो नथी ते तो जीवित पर्यंत वहन करवानो ज छे ३६

आंगासे गर्गसोउ व्व, पडिसोउ व्व दुत्तरो । वाहाहिं सांगरो चेंव, तरिअव्वो गुणोदही ॥३७॥

अर्थ—( आंगासे ) आकाशमा रहली ( गगसोउ व्व ) गगा नदीनो प्रवाह जेम दुस्तर छे-दु से तरी शक्या तेवो छे तथा ( पडिसोउ व्व ) बीची नदीथोनो प्रतिश्रोत एटले सामो प्रवाह-सामे पूरे तरबु ते जेम ( दुत्तरो ) दुस्तर होय छे, ( चेंव ) तथा ( वाहाहिं ) वे हाथवडे ( सांगरो ) समुद्र तरवो दुप्कर छे, तेम ( गुणोदही ) ज्ञानादिक गुणोनो समुद्र ( तरिअव्वो ) तरवानो छे एटले ते तरवो अति दुप्कर छे ३७

वालुआकवले चेंव निरसाए उ सजमे । असिधारगमण चेंव, दुक्कर चरिउ तंजो ॥३८॥

अर्थ—(चेव\*) जेम (वालुआकवले) वेळुना कोळीया नीरस छे, तेम (संजमे) संयम (निरस्साए उ) नीरस—स्वाद रहित छे. (चेव) तथा जेम (असिधारामणं) खड्गनी धारपर गमन करवुं दुष्कर छे, तेम (तवो) चारित्ररूपी तप (चरिउं) आचरवुं, ते (दुष्करं) दुष्कर छे. ३८.

अही वेगंतोदिट्टीए, चरित्ते पुत्त ! दुच्चरे । जवा लोहमया चर्व, चावेयव्वा सुंदुकरं ॥३९॥

अर्थ—(पुत्त) हे पुत्र ! (दुच्चरे) दुःखे करीने आचरी शकाय तेवा (चरित्ते) चारित्रमार्गने विषे (अही व) सर्पनी जेम (एगंतदिट्टीए) एकांत-निश्चय दृष्टिवडे चालवावुं छे, जेम सर्प एकाग्र दृष्टिए चाल्यो जाय छे, आंडुं अवळं जोतो नथी, तेम साधुए पण मोच प्रत्ये ज एकाग्र दृष्टि राखीने चारित्रमार्गमां चालवावुं छे, तेथी ते चारित्रमार्ग दुःखे करीने आचरी शकाय तेवो छे. (चेव) तथा जेम (लोहमया) लोहमय एटले लोढाना (जवा) जव (चावेयव्वा) चाववा ते (सुंदुकरं) अति दुष्कर छे, तेम चारित्र पण पाळवुं ते अति दुष्कर छे. ३९.

जहा अग्गिसिहा दित्ता, पाउं होइ सुंदुकरं । तह दुष्करं करेउं जे, तारुणे संमणत्तणं ॥ ४० ॥

अर्थ—(जहा) जेम (दित्ता) देदीप्यमान एवी (अग्गिसिहा) अग्निनी ज्वाळा (पाउं) पीवी ते (सुंदुकरं) अति दुष्कर (होइ) छे, (तह) तेम (तारुणे) युवावस्थामां (समणत्तणं) चारित्र (करेउं) पाळवुं ते (दुष्करं) अति दुष्कर छे. (जे) 'जे' शब्द पादपूर्ति माटे छे. ४०.

\* 'च' पादपूर्ति माटे छे, अने 'इव' उपमाना अर्थगा छे. ए न रीते सर्वत्र जाणवुं.

जहा दुक्ख भेरिउ 'जे, होइ वायस्स कुत्थलो। तहा दुक्कर केरेउ 'जे, कीवेण संमणत्तण ॥ ४१ ॥  
 अर्थ—( जहा ) जेम ( कुत्थलो ) वखनो कोथळो ( वायस्स ) वायुधी ( भरेउ ) भरवो ते ( दुक्ख ) दु खरूप एटले  
 दुक्कर ( होइ जे ) छे, ( तहा ) तेम ( कीवेण ) सच्च रहित प्राणीए ( समणत्तण ) चारित्र ( केरेउ ) पाळ्हु ते ( दुक्कर जे )  
 दुक्कर छे ४१

जहा तुलाए तोलेउ, दुक्कर मंदरो 'गिरी। तहा निहुअनीसक, दुक्कर संमणत्तण ॥ ४२ ॥  
 अर्थ—( जहा ) जेम ( मंदरो ) मेरु ( गिरी ) पर्वत ( तुलाए ) राजवाडे ( तोलउ ) तोळवो ते ( दुकरं ) दुक्कर  
 छे, ( तहा ) तेम ( समणत्तण ) श्रमणपणु एटले चारित्र शरीरवडे पाळ्हु ( निहुअनीसक ) निश्चळपणे अने नि शकपणे  
 ( दुक्कर ) दुक्कर छे ४२

जहा भुजाहि तेरिउ, दुक्कर रैयणायरो। तहा अणुवसतेण, दुक्कर दमसायरो ॥ ४३ ॥  
 अर्थ—( जहा ) जेम ( रयणायरो ) रत्नाकर एटले समुद्र ( भुजाहि ) वे भुजावडे ( तरिउ ) तरवो ( दुक्कर ) दुक्कर  
 छे, ( तहा ) तेम ( अणुवसतेण ) अनुपशांत एटले उपशमने नई पांमला अर्थात् कपायवाळा पुरहे ( दमसायरो ) दम  
 एटले चारित्ररूपी सागर तरवो ( दुक्कर ) दुक्कर छे ४३

भुजं माणुस्सए भोए, पच्चलक्खणए तुम। भुत्तभोगी तओ जाया। पच्चडा धंम्म चरिस्संसि ॥ ४४ ॥



अर्थ—तेथी करीने (जाया) हे पुत्र ! (तुम) तुं (माणुस्सए) मनुष्य संबंधी (पंचलक्खणए) पांच प्रकारना (भोए) भोगीने (भुंज) भोगव, (तओ पच्छा) त्यास्पृही (भुत्तभोगी) भोगव्या छे भोग जेणे एवो थहने एटले भोग भोगवीने (धम्म) चारित्र धर्मतुं (चरिस्ससि) आचरण करजे. ४४.

आ प्रमाणे मातापिताए कहुं त्यारे मृगापुत्रे तेमने जे कहुं ते एकत्रीश गाथावडे कहे छे.—

सो वित्तस्मापिअरो !, एवमेअं जहाकुंडं । इह लोए निरिपिवासस्स, नत्थि किंचि वि दुक्करं ॥ ४५ ॥

अर्थ—(सो) ते मृगापुत्र (विति) कहे छे के (अस्मापिअरो) हे मातापिता ! (एवमेअं) ए एमज छे, जेम तमे कहो छो ते तेमज छे (जहाकुंडं) प्रगटपणे प्रत्रज्या दुक्कर छे ए वात सत्य छे, परंतु (इह लोए) आ लोकने विपे (निरिपि-वासस्स) तृष्या रहित एटले निःस्पृह एवा पुरुपने (किंचि वि) काइपण (दुकरं) दुक्कर (नत्थि) नथी. कहुं छे के—  
“निःस्पृहस्य त्रयं जगत्” निस्पृहने आसुं जगत तृण समान छे. जे स्पृहावाळो होय तेने परिग्रहनी त्याग करवो दुक्कर छे, परंतु निःस्पृहने तो साधुधर्म सुकर ज छे. हुं निःस्पृह छुं तेथी मारे साधुधर्म पाळवो सुकर छे. ६५.

निःस्पृह थवातुं कारण कहे छे.—

सारीरणणस्य चैव, वेअणाओ अणंतसो । मए सोढांओ भीमाओ, असइं दुक्खभयाणि अं ॥ ४६ ॥

अर्थ—हे माता पिता ! (मए) में (अणंतसो) अनंतवार (चैव) निश्चे (सारीमाणसा) शरीर प्रने मन

सबधी ( भीमाओ ) भयकर ( वेअलाओ ) वेदनाओ ( ए ) तथा ( असह ) बारवार ( दुबलभयाणि ) दुःखने उत्पन्न करनारी भयो अथवा दुःख अने भयो ( सोढाओ ) सहन कर्या छे ४६

जैरामरणकृतारे, चाउरते भैयागरे । मैए सोढाणि भीमाणि, जैम्माणि मरणाणि अँ ॥ ४७ ॥

अर्थ—( जरामरणकृतारे ) जरा अने मरणरूपी गाढ अरण्यवाला, तथा ( चाउरते ) देव, मनुष्य, तिर्यच अने नरक ए चार अवयववाला, तथा ( भयागरे ) भयनी खारुरूप आ सप्तारने विषे ( मए ) मै ( भीमाणि ) भयकर एवा ( जम्माणि ) जमो ( अ ) अने ( मरणाणि ) मरणो ( सोढाणि ) सहन कर्या छे ४७

जैहा ईह अगणी उण्हो, एत्तोऽणत्तगुणा तेहिं । नरैएसु वेअंणा उण्हो, अँसाया वेइँआ मएँ ॥४८॥

अर्थ—( इह ) आ मनुष्य लोकमां ( जहा ) जेवो ( अगणी ) अग्नि ( उएहो ) उष्ण छे, ( एत्तो ) तेथी-ते करतां ( तहिं ) ते ( नरैएसु ) नरकोने विषे ( अणत्तगुणा ) अनत्त गुणी ( उएहा ) उष्ण ( असाया ) असाता-दुःख उपजावनारी ( वेअणा ) वेदना ( मएँ ) मै ( वेइँआ ) अनुभवी छे । नरकमां बादर अग्निनो अभाव छे, परतु ते पृथ्विनो स्पर्श ज तेवा प्रकारनो उष्ण छे अर्थात् तेनी वेदना अग्निनी वेदना तुल्य छे ४८

जैहा ईह ईम सीअ, एत्तोऽणत्तगुणा तेहिं । नरैएसु वेअँणा सीअँ, अँसाया वेइँआ मएँ ॥४९॥

अर्थ—( इह ) आ मनुष्य लोकमां ( जहा ) जेबु ( इम ) आ ( सीअ ) सीत छे, ( एत्तो ) तेनाथो पण ( तहिं )

ते ( नरंशु ) नरकौर्मा ( अयंतगुणी ) अयंतगुणी ( असाया ) असाता-दुःख उपजायनारी ( सीआ ) शीत ( वेअया ) वेदना ( मए ) मे ( वेअ ) अनुमती छे. ४६.

कंदंतो वंदुंकुंभीसु, उडुंपाओ अहोसिरो । हुआसणे जलंतम्मि, पक्कपुव्वो अणंतसो ॥ ५० ॥

अर्थ—( कंदंतो ) आक्रंद करतो, ( उडुंपाओ ) उंचा पगवाळो अने ( अहोसिरो ) नाचि मस्तकवाळो एवो हुं ( कंदु-कुंभीसु ) लोढानी कुंभीने विषे ( जलंतम्मि ) देदीप्यमान ( हुआसणे ) अग्निमां ( अणंतसो ) अणंतवार ( पक्कपुव्वो ) पूर्वे पक्कावायो हतो. ५०.

महादवगिगसंकासे, मरुम्मि वैइरवालुए । कलंबवालुआए अं, दहुंपुव्वो अणंतसो ॥ ५१ ॥

अर्थ—( महादवगिगसंकासे ) महा दाघानळनी जेवा तथा ( मरुम्मि ) मरुदेशनी रती जेमा ( वैइरवालुए ) वज्रवा-लुका नदीने कांठे ( अ ) अने ( कलंबवालुआए ) कलंबवालुका नदीने कांठे ( अणंतसो ) अणंतवार ( दहुंपुव्वो ) हुं पूर्वे नरकमां बळ्यो छुं-भुंजायो छुं. ५१.

रसंतो वंदुंकुंभीसु, उडुं वद्धो अवंधवो । करवत्तकरकयाईहि, छिन्नपुव्वो अणंतसो ॥ ५२ ॥

अर्थ—हे माता पिता ! ( रसंतो ) आक्रंद करतो ( अवंधवो ) बंधु रहित एवो हुं ( कंदुकुंभीसु ) कंदुकुंभीने विषे ( उडुं ) उंचे वृचनी शाखामां ( वद्धो ) वंधायो सतो ( करवत्तकरकयाईहि ) करवत्त अने करकच नामनी नानी करवत्त वडे

( अणतसो ) अनतीवार ( छिअपुव्यो ) पूर्वे छेदापो ह्युं नाशी जइ न शकु तेटला मांटे मने उचो वांधी कडुकुभीमां नाखी करयतवडे लाकडानी जेम मने अनतीवार छेद्यो छे-वेर्यो छे ५२

अइतिखखटयाइण्णे, तुगे सिंवल्लिपायवे । खेविअ पांसवद्धेण, कैडुोकडुाहि दुंम्कर ॥ ५३ ॥

अर्थ—( अइतिखखटयाइण्णे ) अति तीर्य्य कांटाए करीने व्याप्त अने ( तुगे ) उचा एवां ( सिंवल्लिपायवे ) शपलि-शाब्मलि वृक्ष उपर ( पांसवद्धेण ) पाशथी पंधायेला में ( कडुोकडुाहि ) परमाधामीए कोरेला आकर्षण अने अपकर्षणवडे ( दुकर ) दु ऐ सहन थइ शके तेवो ( खेविअ ) रोद अनुभव्यां छे एटले पूर्वे उपाज्जन कोरेला कर्मनु फळ भोगव्युं छे ५३

मंहाजंतेसु उंच्छू व, आरसतो सुभेवं । पौलिओमि सँकम्महि, पावकम्मो अणतसो ॥ ५४ ॥

अर्थ—( सुभेवं ) अत्यंत भयानक ( आरसतो ) आक्रंद करंतो अने ( पावकम्मो ) पाप कर्मवाळो हु ( सँकम्महि ) मारा पोताना कर्म करीने ( अणतसो ) अनतीवार ( महाजंतेसु ) महा यत्रोने विषे ( उच्छू व ) शेरळीनी जेम ( पौलिओमि ) पीलायो हु ५४

कूयतो कोल्लिसुणएहि, सांमेहि संवलेहि अ । पांडिओ फालिओं छिन्नो, विंफुरतो अणेतसो ॥ ५५ ॥

अर्थ—( कूयतो ) आक्रंद करता एवा मने ( कोल्लिसुणएहि ) थुड अने कूतराना रूपने धारण करता ( सांमेहि )

श्याम नामना ( अ ) तथा ( सबलेहि ) शवल नामना परमाधामीओए ( अणोगसो ) अनेकवार ( पाडिओ ) पृथ्वीपर पाडी नांख्यो छे, तथा ( फालिओ ) जीर्ण वस्त्रनी जेम फाड्यो छे अने ( विपुंरंतो ) तडफडता एवा मने ( छिन्नो ) अनेकवार छेद्यो भेद्यो छे. ५५.

असीहिं अयसिवण्णाहिं, भल्लीहिं पंडिसेहिं अ। छिन्नो भिन्नो अं, उववण्णो पावकम्मुणा ॥५६॥

अर्थ—( पावकम्मुणा ) पापकर्म करीने ( उववण्णो ) नरकमां उत्पन्न थयेलो हुं ( अयसिवण्णाहिं ) अतसीपुष्पनी जेवा श्याम वर्णवाळा ( असीहिं ) खड्गोवडे, तथा ( भल्लीहिं ) भालाप्रोवडे ( अ ) तथा ( पड्डिसेहिं ) पड्डिश नामना शस्त्रवडे अनेकवार ( छिन्नो ) छेदायो छुं, तथा ( भिन्नो ) भेदायो छुं, ( अ ) अने ( विभिन्नो ) विशेष भेदायो छुं एटले सूक्ष्म कफडा करायो छुं. ५६.

अवसो लोहरहे जुत्तो, जलंते समिलालुए । चोईओ तोत्तजोत्तेहिं, रोड्झो वा जंह पांडिओ ॥ ५७ ॥

अर्थ—कोइ वखत परमाधामीए ( जलंते ) अग्निवडे जाड्वल्यमान अने ( समिलालुए ) झुसरी अने जोतरे करीने सहित एवा ( लोहरहे ) लोढाना रथने विपे ( अवसो ) परार्धीन एवा मने ( जुत्तो ) जोड्यो छे. पछी ( तोत्तजोत्तेहिं ) परोखा अने राशवडे—नासिकाए बांधेला दोरडावडे ( चोइओ ) मने हांफ्यामां आव्यो छे अने पछी ( रोड्झो वा ) रोझ नामना पशुनी ( जह ) जेम ( पाडिओ ) मने पाडी दीघो छे एटले लाकडी विगेरेथी कुटीने मने पृथ्वीपर पाडी दीघो छे. ५७.

दुःआसणे जलतम्मि, चिआसु मेहिसो त्रिव । दड्डो पंम्को अ अवसो, पावकम्मेहि पाविओ ॥५८॥

अर्थ—हे मातापिता ! ( पावकम्मेहि ) पाप कर्म करीने ( पाविओ ) व्याप्त अथवा नरकने पामेला एवा अने ( अवसो ) पराधीन एवा मने ( चिआसु ) परमाधामीए रचेली चिताने धिये ( महिसो विव ) पाडानी जेम ( जलताम्मि ) जाज्वल्यमान एवा ( दुःआसणे ) अग्निमां ( दड्डो ) बाळवामां आव्यो छे ( अ ) अने ( पंम्को ) रांघवामां आव्यो छे ५८

यैला संडासतुडेहिं, लोहेतुडेहिं पक्खिहिं । विलुत्तो विलेवतोऽह, ढकगिद्धेहिं ऽणतंसो ॥ ५९ ॥

अर्थ—( सडासतुडेहिं ) साडसी जेवा मुखवाळा अने ( लोहेतुडेहिं ) लोटाना एटले वज्र जेवा मुखवाळा ( ढकगिद्धेहिं ) परमाधामीए विदुवैला ढक अने गीध ( पक्खिहिं ) पर्चाओए ( विलवतोऽह ) विलाप करता एवा मने ( अणतंसो ) अनतीवार ( यला ) यळात्कारे ( विलुत्तो ) विविध प्रकारे छेयो छे, ५९

तेणहाक्विलतो धावतो, पैत्तो वैअरणिं नइ । जैल पाह ति चिंततो, खुरधाराहिं विवांइओ ॥६०॥

अर्थ—( तएहाक्विलतो ) तृपावडे व्याप्त थयेलो हु ( धावतो ) दोडतो ( वैअरणिं ) वैतरणी ( नइ ) नदीए ( पत्तो ) गयो त्यो ( जल ) जळने ( पाह ) हु पीउ ( ति ) एम ( चिंततो ) विचार करतो हतो चेटलामा ( खुरधाराहिं ) क्षुरनी धारावडे ( विवांइओ ) हु हणायो वैतरणी नदीना जळना तरगो क्षुरनी धारा जेमा छे तेथी पाणी पीवानो विचार करतां ज हु तेनाथी छेदायो ६०

उपंहाभित्तो संपत्तो, असिपत्तं महावणं । असिपत्तेहिं पंडतेहिं, छिन्नपुन्वो अणेगसो ॥ ६१ ॥

अर्थ—(उग्रहभित्तो) वज्रवालुकादिकनां तापथी तपेलो एवो हुं (असिपत्तं) खड्ग जेवा पत्रवाळा वृचो होवाथी असि-  
पत्र नामना (महावणं) महा वनसां (संपत्तो) छांयाने माटे प्राप्त थयो-गयो, तो त्यां वृत्तोपरथी (पंडतेहिं) पंडतां एवां (अ-  
सिपत्तेहिं) खड्ग जेवां तीक्ष्ण धारवाळां पांढडांमोवडे (अणेगसो) अनेक वार (छिन्नपुन्वो) पूर्वे छेदायो छुं. ६१.

मुग्गरोहिं मुसंडाहिं, सूलेहिं मुसलेहि अं । गैयांस भंगगत्तेहिं, पंतं दुंक्खमपंतसो ॥ ६२ ॥

अर्थ—(भंगगत्तेहिं) गात्रने एटले शरीरने भांगी नांखनारा (मुग्गरोहिं) मुद्गरवडे, तथा (मुसंडाहिं)मुसंडी नामना  
शस्त्रवडे, तथा (सूलेहिं) त्रिशूलवडे, (अ) तथा (मुसलेहिं) मुशळवडे (गयांस) रक्षणनी आशा रहितपणे में (अयंतसो) अ-  
नंतीवार (दुक्खं) दुःख (पंतं) प्राप्त कर्युं छे. ६२.

खुरेहिं तिम्वधाराहिं, छुरिआहिं कप्पणीहि अं । कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्कित्तो अं अणेगसो ॥ ६३ ॥

अर्थ—(तिम्वधाराहिं) तीक्ष्ण धारवाळा (खुरेहिं) छुर नामना मस्तक मुंडवाना शस्त्रवडे, तथा (छुरिआहिं) छुरिका  
वडे, (अ) तथा (कप्पणीहिं) कातरवडे (अणेगसो) अनेक वार (कप्पिओ) हुं कपायो छुं, तथा (फालिओ) वस्त्रनी जेम फ-  
डायो छुं, तथा (छिन्नो) छेदायो छुं, (अ) तथा (उक्कित्तो) चामडी दूर करवा वडे उतरडायो छुं. ६३.

पासेहिं कूडजालेहिं, मिओ वा अवसो अहं । वाहिओ बद्धरुद्धो अ, बहुसो चैवं विवांडओ ॥ ६४ ॥

अर्थ—हे माता पिता ! (भिर्यो वा) मृगनी जेम (अवसो) परार्थीन एवो (अह) द्रु (पासेहि) पाशवडे तथा (कूडजालेहि) कूट एटले कपटयुक्त जाळवडे (बहुसो) घणीचार (वांदिओ) ठगायो छु, (बद्धरुद्रो अ) तथा यघनवडे बंधायो छु अने बहार जइ न शकू तेम रुघायो छु (वेव) तथा (विवाइओ) विनाश कारायो छु ६४.

गलेहि भंगरजालेहि, मच्छो वा अवसो अह । उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ अ अणंतसो ॥६५॥

अर्थ—(अवसो) परार्थीन एवो (अह) द्रु (मच्छो वा) मत्स्यनी जेम (गलेहि) बडिशवडे एटले मत्स्यना गळाने वीधे तेवी मांस युक्त सोयवडे, तथा (मगरजालेहि) परमाधामीए विकुर्वेला मघरोवडे अने तेमणे कोरेली तेने पकडवानी जाळवडे (अणंतसो) अनती चार (जल्लिओ) विधायो छु, (फालिओ) लाकडानी जेम चीरायो छु, (गहिओ) ग्रहण कारायो छु अने (मारिओ अ) मरायो-कुटायो छु ६५

त्रिदसएहि जालेहि, लिप्पाहि संउणो विव । गंहिओ लग्गो अ बच्छो अ, भेरिओ अ अणतसो ॥६६॥

अर्थ—(सउणो विव) पचीनी जेम द्रु (त्रिदसएहि) विशेषे करीने दश कंनारा रथेनादिक पचीओवडे, तथा (जाले हि) जाळवडे, तथा (लिप्पाहि) बजलेपादिक लेपवडे अनुक्रमे (अणतसो) अनतीवार (गहिओ) ग्रहण कारायो छु (लग्गो अ) तथा लेप वडे आश्लेष कारायो छु ( बद्धो अ) तथा जाळवडे घघायो छु अने ( मारिओ अ) सर्ववडे मरायो छु ६६  
कुंहाडपरसुमाईहि, वट्टइहि दुंमो विव । कुंदिओ फालिओ छिंनो, तंचिअओ अ अणंतसो ॥६७॥



અર્થ—(દુમો વિવ) વૃત્તની જેમ હું (કુહાડપરસુમાર્હિં) કુહાડા અને પરશુ વિગેરે વંડે, (વહ્લુહિં) પરમાધામીએ વિકુર્વેલા સુથારોથી ( અણંતસો ) અનંતીવાર ( કુદ્દિઓ ) કૂટાયો એટલે સૂદ્ધમ કકડા કરાયો છું ( ફાલિઓ ) ફડાયો છું ( ચિત્તો ) છેદાયો છું ( તચ્ચિઓ અ ) તથા ઓલાયો છું. ૬૭.

ચૈવેડમુદ્દિમાર્હિં, કુમારેહિં અયં પિ વ । તૌડિઓ કુદ્દિઓ ભિન્નો, તુષિણઓ અ અણંતસો ॥૬૮॥

અર્થ—( કુમારેહિં ) હુહારોએ ઘણ વિગેરેવંડે ( અયં પિ વ ) લોહાને કુટે તેમ મને પરમાધામીઓએ ( ચવેડમુદ્દિમાર્હિં ) ચપેટા એટલે લાત અને મુઠી વિગેરેવંડે ( અણંતઓ ) અનંતીવાર ( તૌડિઓ ) તાડના કરી છે ( કુદ્દિઓ ) કુટ્યો છે ( ભિન્નો ) મેઘો છે ( તુષિઓ અ ) તથા ચૂર્ણરૂપ કર્યો છે. ૬૮.

તત્તૌં તંબલોહાં, તૈડાણિ સીસગાણિ અ । પાંડુઓ કલ્લકલંતાં, ઔરસંતો સુભેરવં ॥ ૬૯ ॥

અર્થ—( સુભેરવં ) અતિ મયંકર ( ઔરસંતો ) આક્રંદ કરતા એવા મને પરમાધામીઓએ વિકુર્વેલા ( તત્તૌં ) તપાવેલા અને ( કલ્લકલંતાં ) કલ્લકલ શબ્દ કરતા એટલે અત્યંત ઉકાલેલા—ખદ્ખદતા ( તંબલોહાં ) તાંવા, લોઢા ( તડઆણિ ) કથીર ( સીસગાણિ અ ) અને સીસાનો રસ ( પાંડુઓ ) અનેકવાર પાયો છે. ૬૯.

તુહં પિઆં મંસાં, સ્વંડાં સોહ્લિગાણિ અ । સ્વાંઓમિ સંમંસાં, અંગિવસાં જેર્ગસો ॥ ૭૦ ॥

અર્થ—“ ( તુહં ) તને ( મંસાં ) માંસ ( પિઆં ) વહુ પ્રિય હતું, ” એ પ્રમાણે મને પરમાધામીએ પૂર્વમવતું સ્મરણ

करावनि पक्षी ( समसाइ ) मारा पोताना ज मासने ( सुडाइ ) ककडारूप करी ( सोझगाणि अ ) शेकी तथा ( अग्निव  
 षाड ) अप्रिनी जेवा वर्येवाळु करी ( योगसो अनेकवार ( राइओमि ) मने खराव्यु छे ७० .  
 तुह पिआं सुरा सीहू, मेरेंओ अ महूणि अ । ७ पांइओमि जलतीओ, वसाओ रहिराणि अ ॥७१॥

अर्थ—“ ( तुह ) तने ( सुरा ) सुरा-चद्रहास नामनी मदिरा, तथा ( सीहू ) सीधु-चाड घुबयी बनेली मदिरा  
 -ताडी तथा ( मेरओ अ ) मेरक-लोटनी बनेली मदिरा, तथा ( महूणि अ ) मधु-पुष्पनी बनेली मदिरा ( पिआ )  
 पूर्वमयमी बहु प्रिय हती ” ए प्रमाणे स्मरण करावीने पने परमाघामीओए ( जलतीओ ) जाज्वल्यमान एटले तपावेली  
 ( वसाओ ) मारी पोतानी ज चरवी ( रहिराणि अ ) तथा रुधिर ( पाइओमि ) पायां छे ७१

निच भीषण तैथेण दुहिण य । परमा दुहसच्छा, वेअेणा वेइंआ मए ॥ ७२ ॥

अर्थ—हे माता पिता ! ( निच ) निरतर ( भीषण ) भय पामेला, ( तथेण ) त्रास पामेला, ( दुहिण ) दु खी थयेला  
 ( वहिण य ) तथा व्यथा पामेला एटले सर्व अगे कपता एवा ( मए ) में नरकने विपे ( दुहसच्छा ) दु राना सपघवाळी  
 ( परमा ) उत्कृष्टा ( वेअेणा ) वेदना ( वेइंआ ) वेदी छे-अनुभवी छे ७२

तिवंचडप्पगाढाओ, घोराओ अइटुस्सहा । महाभयाओ भीमाओ, नरएसु वेइंआ मए ॥ ७३ ॥

\* ' पञ्चिओमि ' इत्यपि पाठ

अर्थ—हे मातापिता ! ( मए ) में ( नरएसुं ) नरकने विपे ( तिवचंडप्पगाढाओ ) तीत्र-अधिक रसवाली, चंड-  
कही न शकाय तेवी उत्कट, प्रगाढ-घणी स्थितिवाली, ( घोराओ ) घोर-जे सांभळनार्थी पण शरीर कंपे तेवी भय आप-  
नारी, ( अइदुस्सहा ) अत्यंत दुःसह, तेथी करीने ज ( महाभयाओ ) महा भय आपनारी तथा ( भीमाओ ) भीम-सांभळी  
थकी पण भय आपनारी एवी वेदनाओ अनेकवार ( वेइआ ) वेदी छे-अनुभवी छे. आ तीत्र विंगेरे सर्व विशेषणो नरकनी  
वेदनानी कर्कशता सूचवनारा एक ज अर्थवाळा छे. ७३.

वळी ते तीव्रादिक वेदना केवी छे ? ते कहे छे—

जारिसो माणुसे लोए, ताया ! दीसंति वेअणा । एत्तो अणंतयुणिआं, नैरएसुं दुंयलवेअणा ॥७४॥

अर्थ—( ताया ) हे पिता ! ( माणुसे लोए ) आ मनुजलोकमां ( जारिमा ) जेवा प्रकारनी ( वेअणा ) शीतोष्णादि  
वेदना ( दीसंति ) जोवामां आवे छे. ( एत्तो ) तेनाथी ( अणंतयुणिआ ) अनंतगुणी ( नरएसुं ) नरकने विपे ( दुस्सवे-  
अणा ) दुःखनी वेदनाओ छे. ७४.

केवल नरकने विपे ज में दुःखवेदना अनुभवी छे एटलुंज नहीं, परंतु सर्व गतिने विपे पण अनुभवी छे. ते उपर कहे छे.  
संबवभवेसु असाया, वेअणा वेइआ मए । निमेसंतरमित्तं पि, जं सार्था नंतिय वेअणा ॥ ७५ ॥

अर्थ—हे मातापिता ! ( मए ) में ( सबभवेसु ) सर्व प्रस अने स्यात्तर भवोने विपे ( असाया वेअणा ) असाता

वेदना ( वेदना ) कृनुमवी छे ( ज ) जे कारण माटे ( निमेषतरामित्त पि ) निमेषनु आंतर पडे तेडलो बखत पण ( साथा ) साता ( वेअणा ) वेदना ( नरिथि ) वेदीज नथी विषयसथी सुख पण इष्यादिक अनेक दुःखोयडे व्याप्त होवाथी तथा परिणामे कडुक होवाथी दुःखरूप ज छे आ आखा प्रकरणो अभिप्राय ए छे जे—स आवा प्रकारा दु लो अनुभव्या छे, तेथी दु तत्त्वथी सुखने याग्य के सुकुमाळ केम होइ शक ? जेणे आवी वेदनाओ सहन करी छे, तेने दीचा दुष्कर शी रीते होय ? तेथी मोरे दीचा ग्रहण करवी ए ज योग्य छे. ७४.

आ प्रमाणे कंहीने मृगापुत्र मौन रखा ते बखते—

त विवर्तस्मैमापिअरो, छंदेण पुत्ते ! पंठवया । नवर पुण सोमणणे, हेमख निपडिक्कम्मया ॥ ७६ ॥

अर्थ—( अम्मापिअरो ) माता पिता ( च ) ते मृगापुत्रने ( विति ) कहेता हवा, के ( पुत्र ) हे पुत्र ! ( छंदेण ) तारी इच्छा प्रमाणे ( पंठवया ) तुं प्रवज्या ग्रहण कर ( पुण ) परतु ( नरर ) विशेष कहेवानु ए छे जे—( सामण्णे ) चारित्रने धिये ( निपडिक्कम्मया ) निःप्रतिकर्मता एटले रोगादिक उत्पन्न यथा छता पण तेनो प्रतिकार—औपयादिक उपाय करवानो नथी, ए ( दुवल ) अति दु ख छे ७६.

आ प्रमाणे मातापिताए कथु, त्थार—

सो विवर्तस्मैमापिअरो !, पंठमंअं जहाफुड । परिवेस्सं को कुणइ, अरणे मिअपविल्लण ? ॥ ७७ ॥

अर्थ—( सो ) ते मृगापुत्र ( भिति ) कहे छे के—( अस्मापिअरो ) हे माता पिता ! ( एअं ) आ तमे कहुं ते ( एवं ) ए ज प्रमाणे ( जहाफुंडं ) सत्यज छे. परंतु ( अरसे ) अरण्यने विषे ( मिअपखिखणं ) मृग एटले पशु अने पक्षीओना ( परिकम्मं ) प्रतिकारने एटले चिकित्साने ( को कुणइ ) कोण करे छे ? वनमां रहेता पशुपक्षीओ व्याधिथी पीडाय छे त्यारे तेमने कोइ पण चिकित्सा करुं नथी. ७७.

तेथी करीने—

‘एगभूओ अरसे वा, जहा उ चरई भिगो । एवं धम्मं चारिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥ ७८ ॥

अर्थ—( जहा उ ) जेम ( अरसे ) अरण्यने विषे ( भिगो ) मृग ( एगभूओ ) एकलो ज स्वेच्छाए करीने ( चरई ) विचरे छे, ( एवं ) ए ज प्रभाणे हुं पण ( संजमेण ) सतर प्रकारना संयमवडे ( तवेण य ) तथा बार प्रकारना तपवडे ( धम्मं ) चारित्र धर्मनुं ( चरिस्सामि ) आचरण करतो विचरिशा. ७८.

जया मिअस्स आंयंको, महारणस्मि जायई । अच्चंतं रुखंमूलम्मि, कों यं ताहे तिगिच्छई ॥७९॥

अर्थ—( जया ) ज्यारे ( महारणम्मि ) मोटा अरण्यमां ( मिअस्स ) मृगने ( आंयंको ) आतंक-रोग ( जायई ) उत्पन्न थाय छे, ( ताहे ) त्यारे ( रुखंमूलम्मि ) वृक्षना मूळने विषे ( अच्चंतं ) रहेला एवा तेने ( कों यं ) कयो वैध ( तिगिच्छई ) चिकित्सा करे छे ? ७९.

को वाँ से ओसह देई ? , को वाँ से पुच्छई सुहे ? । 'को वाँ' से भैत्तपाण च, ओहरित्तु पंणामए ? । ८० ।

अर्थ—( वा ) अथवा ( को ) कोण ( से ) तेने ( ओसह ) औपष ( देइ ) आये छे ? ( वा ) अथवा ( को ) कोण ( से ) तेने ( मुह ) मुख साता ( पुच्छई ) पूछे छे ? ( वा ) अथवा ( को ) कोण ( से ) तेने ( मत्तपाण च ) भात पाणी-आहार ( आहरित्तु ) लाबने ( पणामए ) आपे छे ? कोइ ज नहीं ८०

त्यारे तेनो निर्वाइ शी रीते यतो हस्ये ? ते उपर कहे छे —

जेया य से सुही होइ, तयो गच्छई गीअर । भैत्तपाणस्स अट्टुए, वल्लराणि संराणि अ ॥ ८१ ॥

अर्थ—( जया य ) अने अपारे ( से ) ते मृग ( सुही ) सुखी एटले रोग रहित ( होइ ) होय छे-याय छे, ( तथा ) त्यारे ( गीअर ) गायनी जेम चरमाने स्थाने ( गच्छई ) जाय छे, अने त्यां ( मत्तपाणस्स ) भोजन पाणीने ( अट्टाए ) अर्थ ( वल्लराणि ) लीला घासना स्थाने ( सराणि अ ) तथा सरोवरने शोधे छे ८१

खाइत्ता पाणिअ पाउ, वल्लरेहि संराहि अ । भिंगचारिअ चैरित्ता ण, गच्छई मिअचारिअ ॥ ८२ ॥

अर्थ—हे मातापिता ! ते व्याधि रहित मृग ( भिंगचारिअ ) मृगनी चर्यावेढे एटले मृगने खावा पीवानी विधिवेढे ( चरित्ता ण ) चरीने ( वल्लरेहि ) लीला घासना प्रदेशथी ( संरेहि अ ) तथा सरोवरथी ( खाइत्ता ) राइने अने ( पाणिअ पाउ ) पाणी पीने ( भिअचारिअ ) मृगने विश्रांति लेवानी भूमि प्रत्ये ( गच्छई ) जाय छे ८२.

आ प्रमाणे दृष्टांत कहीने हवे बे गाथावडे उपसंहार करे छे—

एवं समुद्रित्से भिक्खू, एवमेव अणेगगो। मिग्गचारिअं चरित्ता णं, उड्डुं पक्कमई दिंसिं ॥ ८३ ॥

अर्थ—(एवं) ए ज प्रमाणे (समुद्रित्ते) चारित्रनी क्रिया पाळवामां उद्यमवंत थयेलो एटले मृगनी जेम रोगनी उत्पत्ति सते पण चिकित्सा नहीं करनार तथा (एवमेव) ए ज प्रमाणे एटले मृगनी जेम (अणेगगो) अनेक ठेकाणे अनियमित रीते रहेनार (भिक्खू) साधु (मिग्गचारिअं) मृगना जेवी चर्याने (चरित्ता णं) आचरण करीने—पाळीने सर्व कर्मनो नाश करी (उड्डुं दिंसिं) ऊर्ध्व दिशा प्रत्ये एटले मोच प्रत्ये (पक्कमई) जाय छे. ८३.

मृगचर्याने ज स्पष्ट करे छे.—

अहा मिष् एग अणेगचारी, अणेगवासे धुवगोअरे अ ।

एवं मुणी गोअरिअं पविट्ठे, नो हीलए नो वि अं खिसइज्जा ॥ ८४ ॥

अर्थ—(जहा मिष्) जेम मृग (एग) एकलो—सहाय रहित, तथा (अणेगचारी) अनियत विहार करनार, तथा (अणेगवासे) अनेक स्थाने निवास करनार (अ) तथा (धुवगोअरे) निश्चित गोचरवाळो एटले निरंतर गोचरमां ज मळेली वस्तुनो आहार करनार होय छे, (एवं) एज रीते (मुणी) मुनि पण तेवा ज विशेषणवाळो (गोअरिअं) गोचरीने विषे (पविट्ठे) गयो थको (नो हीलए) कोहनी हीलना न करे एटले कदबादिक मळे तो ते अबनी के तेना आपनारनी निंदा न करे (वि अ)

तेमज वळी ( नो खिसइळा ) खिमा न करे एटले आहारनी शसि न थाय तो ते प्रसंगे पण पोतानी के परती निंदा न करे ८४

आ प्रमाणे मृगचर्यानु स्वरूप कहीने मृगापुत्रे जे कणु, तथा मातापिताए जे कणु, अने पळी मृगापुत्रे जे कर्पुं ते हवे कहे छे—

मिगेचारिअ चेरिस्सामि, एव पुंत्ता जैहासुह । अम्मापिईहिंइणुष्ठाओ, जंहाइ उंअहिं तैओ ॥८५॥

अर्थ—(मिगचारिअ) “शरीरनी चिकित्सा न करवी ए आदि मृगचर्याने (चरिस्सामि) हु आचरीश ” ए प्रमाणे मृगापुत्रे कणु, त्यारे मातापिताए जवान आप्यो के—(पुचा) “हे पुत्र ! (एव) जो एवी तारी इच्छा छे तो (जहासुह) जेम सुख उपजे तेम तु कर ” ए प्रमाणे (अम्मापिईहिं) मातापिताए (अणुष्ठाओ) अनुज्ञा आपी (तथो) त्यारे ते मृगापुत्रे (उवहिं) सर्व परिग्रहनो (जहाइ) त्याग कर्पो ८५

उपर कहेला अर्थने ज विस्तारथी कहे छे—

मिअचारिअ चेरिस्सामि, संवदुमखविमोक्खणिं । तुंभेहिं तैमणुणाओ, गच्छ पुंत्त ! जंहासुह ॥८६॥

अर्थ—मृगापुत्रे कणु के—हे मातापिता ! (तुंभेहिं) तयोए (समणुष्ठाओ) अनुज्ञा आप्यो एयो हु (संवदुमखविमोक्खणिं) सर्व दुःखनो नाश करनारी (मिअचारिअ) मृगचर्याने-दीक्षाने (चरिस्सामि) आचरीश ” त्यारे मातापिताए



कष्टुं के—(पुत्र) हे पुत्र ! (जहासुहं) जेम सुख उपजे तेम (गच्छ) तुं जा—सृगचर्यातुं आचरण कर. ८६.  
 धवं से अम्मापिअरो, अणुमाणिता ण बहुविहं । ममत्तं छिंदई ताहे, महानागु ठं व कंचुअं ॥८७॥  
 अर्थ—(एवं) आ प्रमाणे (स) ते सृगापुत्र (अम्मापिअरो) मातापितानी (अणुमाणिता ण) अनुज्ञा लइने (ताहे) ते  
 वखते (महानागु) मोटो सर्प (व) जेम (कंचुअं) कांचळीनो त्याग करे तेम (बहुविहं) घणा प्रकारना (ममत्तं) ममत्वने (छि-  
 दई) छेदतो हवो—त्याग करतो हवो. आ गाथावडे आभ्यंतर उपधिनो त्याग कसो. ८७.

हवे बाह्य उपधिनो त्याग कहे छे.—  
 इडुं वित्तं च मित्ते अ, पुत्त दारं च नायओ । रेणुअं व पंडे लग्गं, निंघुणिता ण निंगंओ ॥८८॥  
 अर्थ—(पंडे) वखने विपे (लग्गं) लागली—चोटेली (रेणुअं व) रजनी जेम (इडुं) समृद्धिने, (वित्तं च) धनने तथा  
 (मित्ते अ) मित्रोने तथा (पुत्त) पुत्रोने तथा (दारं च) स्त्रीओने तथा (नायओ) ज्ञातिने (निघुणिता ण) तजीने (निगंओ)  
 ते सृगापुत्र गृह बहार नीकळ्या. ८८.  
 त्यारपळी ते सृगापुत्र केवा थया ? अने तेने केबुं फळ प्राप्त थयुं ? ते कहे छे.—

पंचमहव्ययजुत्तो, पंचहिं समिओ तिगुत्तिगुत्तो अ । सन्भिभतरबाहिरए, तवोवहाणम्मि उज्जुत्तो ॥८९॥  
 अर्थ—(पंचमहव्ययजुत्तो) पांच महाव्रतोथी युक्त, तथा (पंचहिं) पांच समितिवडे (समिओ) सहित, तथा (तिगुत्ति-  
 गुत्तो) तिगुत्तिगुत्तो अ । सन्भिभतरबाहिरए, तवोवहाणम्मि उज्जुत्तो ॥८९॥

गुप्तो अ) प्रण गुप्तिगडे गुप्त, तथा ( सन्निभतरवाहिरण ) आभ्यतर सहित बाह्य एया (तवोवहाणस्मि) तप सबधी उपधानने विपे-कर्त्तव्यने विपे (उज्जुत्तो) उद्यमवत यथा ८६

निम्नमसो निरहकारो, निस्सगो चत्तगारवो । समो अ संव्वभूएसु, तंसेसु थावरेसु अ ॥ ९० ॥

अर्थ—तथा (निम्मसो) ममता रहित, (निरहकारो) अहकार रहित, (निस्सगो) गल्ल अने आभ्यतर सग रहित, (चत्त गारवो) त्रण गारव रहित, (अ) तथा (सव्वभूएसु) सर्व प्राणीओने विपे पटले (तससु) त्रस प्राणीओने विपे (थावरेसु अ) अने स्थावर प्राणीओने विपे (समो) समान परिणामगळा यथा ६०.

लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविण मरणे तहा । समो निदापससासु, समो भाणावमाणओ ॥ ९१ ॥

अर्थ—(लाभालाभे) लाभ अने श्लामने विपे, (सुहे) सुख अने (दुक्खे) दु खने विपे, (जीविण) जीवित अने (मरणे) मरणने विपे, (तहा) तथा (निदापससासु) निदा अने प्रससाने विपे ( समो ) समान, तथा (भाणावमाणओ) मान अने अपमानने विपे (समो) समान यथा ६१

गारवेसु कैसाएसु, दंडसल्लभएसु अ । निअत्तो हेससोगाओ, अनियाणो अचधणो ॥ ६२ ॥

अर्थ—(गारवेसु) त्रण गारव यकी (निअत्तो) निवृत्त यथा, तथा (कसाणसु) चार कपायधी निवृत्त यथा, तथा (दंड-सल्लभएसु अ) त्रण दंड, त्रण शल्य अने सात मयथी निवृत्त यथा, तथा (हाससोगाओ) हास अने शोकथी निवृत्त यथा,

तथा (अनिआणो) नियाणा रहित थया, तथा (अबंधणो) राग द्वेषना बंधन रहित थया. ६२.

अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिसिओ । वासीचंदणकप्पो अ, असणे अणसणे तंहा ॥९३॥  
अर्थ--(इहं लोए) आ लोकने विपे पण (अणिसिओ) कोइनी निश्रा एटले सहाय रहित, तथा (परलोए) परलोकने विपे पण (अणिसिओ) निश्रा रहित अर्थात् आ लोकमां राज्यादिकनी अने परलोकमां स्वर्गसुखनी वांछा रहित थया. (वासीचंदणकप्पो अ) तथा वासी अने चंदनने विपे समान एटले कोइ पुरुष वांमलावडे छेदे अथवा कोइ माणस चंदनवडे पूजा करे ते बनेने विपे समान दृष्टिवाळा थया, (तहा). तथा (असणे) आहारने विपे अने (अणसणे) अनशनने विपे पण समान एटले आहार करवामां अने नहीं करवामां अथवा आहार मळेके न मळे तोपण ते बनेमां समान दृष्टिवाळा थया. ६३.

अप्पसत्थेहिं दारेहिं, सव्वओ पिहिआसवो । अज्झप्पज्जाणजोगेहिं, पसत्थदमसासणो ॥९४॥

अर्थ--(अप्पसत्थेहिं) अप्रशस्त एटले कर्म उपार्जन करवाना हेतुरूप हिंमादिक (दारेहिं) द्वारोधी निवृत्त थया, तेथी करीने ज (सव्वओ) चोतरफथी (पिहिआसवो) रुंभ्या छे आश्रम एटले पापव्यापारो जेणे एना थया, तथा (अज्झप्पज्जाणजोगेहिं) आत्माने विपे शुभ ध्यानना व्यापारोवडे (पसत्थदमसासणो) प्रशस्त छे दम एटले उपशम अने शासन एटले सर्वज्ञनो सिद्धांत जेने एवा थया. अर्थात् उपशमवाळा अने शासनना आराधक थया. ६४.

एवं नाणेण चरणेणं, दंसणेण तवेण य । भावणाहिं अ सुद्धाहिं, संम्मं भावित्तु अप्पयं ॥ ९५ ॥

अर्थ—( एव ) एव प्रमाणे ( नाशेण ) मति, श्रुत विगोरे ज्ञानवडे, ( चरशेण ) यथाख्यात नामना चारित्र्यवडे, ( दंतशेण ) शुद्ध समकितवडे, ( तवेण य ) तथा बार प्रकारना तपवडे ( अ ) तथा ( सुद्धाहि ) शुद्ध एटले नियाणादिक दोपरहित एवी ( भावणाहि ) महाव्रत सचधी पचीश भावनावडे अथवा अनित्यादिक बार भावनावडे ( अप्पय ) पोताना आत्माने ( सम्म ) सम्यक् प्रकारे ( भावित्तु ) भावीने एटले निर्मळ करीने—६५

बहुआणि उ वासाणि, सामस्यमणुर्पालिआ । मोसिएण उ भसेण, सिद्धिं पंतो अणुत्तर ॥ ९६ ॥

अर्थ—( बहुआणि उ ) यथा ( वासाणि ) वर्षो सुधी ( सामण ) चारित्र्ये ( अणुपालिआ ) पाळीने ( मासिएण उ ) एक मासना ( भसेण ) अनशनवडे ( अणुत्तर ) सर्वोत्कृष्ट एवी ( सिद्धिं ) सिद्धिने ( पंतो ) याम्या ६६

हवे अध्ययननो उपसहार करता उपदेश आपे छे —

पव कंरति संबुद्धा, पडिआ पंविअवल्लणा । विणिंअट्टति भोगेसु, मिआंपुत्ते जहा मिंसी ॥ ९७ ॥

अर्थ—( संबुद्धा ) सम्यक् प्रकारे तत्त्वना जाण, तथा ( पडिआ ) पडित एटले हेय अने उपादेय जाणनारा, तथा ( पविअवल्लणा ) अति विचक्षण एवा पुरुषो ( एव ) उपर कळा प्रमाणे ( परति ) करे छे, वेधी ( भोगेसु ) भोग थकी ( विणिअट्टति ) पाछा वळे छे ( जहा ) जेम ( मिंसी ) अयि ( मिआंपुत्ते ) मृगापुत्र भोगथी निवृत्त थइ चारित्र्य ग्रहण करी मोचे गया तेम ९७ बीजी रीते उपदेश आपे छे

महापभावस्स महाजसस्स, मित्रापुत्तस्स निसम्म भासिञ्चं ।  
तवप्पहाणं चरिञ्चं च उत्तमं, गइप्पहाणं च तिलोञ्चंविस्सुञ्चं ॥ ९८ ॥

अर्थ--(महापभावस्स) मोटा प्रभाववाळा, तथा (महाजसस्स) मोटा यशवाळा (मित्रापुत्तस्स) मृगापुत्रना (भासिञ्चं) संसारतुं असारपणुं विगोरे जणावनारा वचनने (निसम्म) सांभळीने (च) तथा (तवप्पहाणं) तप छे प्रधान-मुख्य जेमां एवुं तथा (उत्तमं) उत्तम एवुं, तथा (गइप्पहाणं च) मोक्षरूप गतिए करीने प्रधान एवुं, तथा ( तिलोञ्चंविस्सुञ्चं ) त्रण जगतमां प्रसिद्ध एवुं ( चरिञ्चं ) ते मृगापुत्रतुं चरित्र सांभळीने--६८.

विआणिया दुक्खविवट्ठुणं धणं, ममत्तबंधं च महब्भयावहं ।

सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं, धारेह निव्वाणगुणावहं मंहं ॥ ९९ ॥ त्ति वेमि ॥

अर्थ--तथा (धणं) धन (दुक्खविवट्ठुणं) दुःखने वधारनार छे, (च) तथा (ममत्तबंधं) ममत्त्वतुं बंधन छे अने (महब्भयावहं) महा भयने वहन करनार छे एम (विआणिया) जार्णीने (सुहावहं) सुखने आपनार, (अणुत्तरं) सर्वोत्कृष्ट, (निव्वाणगुणावहं) मोक्ष प्राप्त करावनारा गुण जे अनंत ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य तेने धारण करनार थाओ तथा (मंहं) मोटी एवी (धम्मधुरं) धर्मधुराने (धारेह) धारण करो. (त्ति वेमि) ए प्रमाणे सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहेता हवा. ६९.

इति एकोनविंशतितममध्ययनम् ॥ १६ ॥

## अथ महानिर्ग्रन्थीय नामनुं वीशसु अध्ययन २०

ओगणीशमा अध्ययनमा निःप्रतिकर्मणु एटले शरीरनी सारवार न करवी एम कणु ते अनाथपणा विना पाली शकाय नहीं तेथी आ वीशमा अध्ययनमा अनेक प्रकारनु अनाथपणु कहे छे आ सचथी आवेला आ अध्ययननु प्रथम वन कहे छे—

सिद्धाण नमोविंश्या, सजैयाण च भाँओ । अर्थधम्मगइ तच्च, अणुसिट्ठि सुणेह मे ॥ १ ॥

अर्थ—( सिद्धाण ) तीर्थकरादिक पदरं प्रकारना सिद्धाने ( सजयाण च ) तथा सयतोने एटले आचार्य, उपाध्याय अने साधुओने ( भावओ ) भावथी ( नमोकिंचा ) नमस्कार करीने ( अर्थधम्मगइ ) प्रार्थना करवा लायक धर्मनु ज्ञान छे जेने एवी अने ( तच्च ) सत्य एवी ( मे ) माराथी कहेवाती एवी ( अणुसिट्ठि ) शिवाने-उपदेशने ( सुणेह ) तमे सांगळो १.

आ वनमा धर्मकयानुयोग होवार्थी धर्मकथाना द्वारवडे ज उपदेश आपे छे.—

पभूअरयणो राँयो, सेण्णोओ मंगहाहिवो । विहारजत्त निज्जाओ, मंडिकुच्छिसि चेईए ॥ २ ॥

अर्थ—( पभूअरयणो ) गज अश्वादिक अथवा वैडुर्पादिक घर्णा रत्नोवाळो ( मंगहाहिवो ) मगध देशनो अधिपति ( सेण्णोओ ) श्रेणिक नामनो ( राया ) राजा एकदां ( विहारजत्त ) विहार यात्राए एटले अश्वक्रीडा करवा माटे नगरथी ( निज्जाओ ) नीकळ्यो थको ( मंडिकुच्छिसि ) मंडितकुचि नामना ( चेईए ) चैत्यने विषे-वनने विषे गयो २

ते उद्यान केबुं हतुं ? ते कहे छे.—

नाणादुमलयाइखं, नाणापखिखनिसेविअं । नाणाकुसुमसंछन्नं, उज्जाणं नंदणोवमं ॥ ३ ॥

अर्थ—(नाणादुमलयाइखं) विविध प्रकारना वृक्षो अने लवाओवडे व्याप्त, (नाणापखिखनिसेविअं) विविध पक्षीओए सेवेलु तथा ( नाणाकुसुमसंछन्नं ) विविध जातिना पुष्पो सहित एबुं ( उज्जाणं ) ते उद्यान ( नंदणोवमं ) नंदन वननी जेबुं हतुं. ३.

तैत्थ सो पांसई साहुं, संजयं सुसमाहिअं । निसंन्नं रूखमूलम्मि, सुकुमालं सुहोइअं ॥ ४ ॥

अर्थ—(तत्थ) ते उद्यानमां ( सो ) ते श्रेणिक राजाए ( संजयं ) सम्यक् प्रकारे यतना करता, ( सुसमाहिअं ) सारी समाधिवाळा, (रूखमूलम्मि) वृचना मूलमां (निसन्नं) बेटेला, ( सुकुमालं ) अति कोमल अने (सुहोइअं) सुखने एटले सुख भोगवाने योग्य एवा एक ( साहुं ) साधुने ( पासई ) जोया. ४.

तस्स रूवं तु पासित्ता, राइणो तम्मि संजए । अच्चंतं परमो आसि, अउलो रूवविम्हओ ॥ ५ ॥

अर्थ—( तस्स ) ते भुनिहुं ( रूवं तु ) रूप ( पासित्ता ) जोइने (राइणो) श्रेणिक राजाने ( तम्मि संजए ) ते भुनिने विषे ( अच्चंतं ) अत्यंत ( परमो ) उत्कृष्ट ( अउलो ) अतुल-कोइनी उपमा न अपाय एवो ( रूवविम्हओ ) रूपना विषयवाळो विस्मय ( आसि ) थयो. ५

ते विस्मयने ज बतावे छे—

अहो ! वषो ! अहो ! रूव !, अहो ! अजस्त सोमया ! !

अहो ! खनी ! अहो ! मुत्ती !, अहो ! भोगे असगया ! ॥ ६ ॥

अर्थ—राना विचार करे छे के—(अहो) अहो ! आ मुनिना शरीरनो ( वषो ) वर्ष ! ( अहो रूव ) अहो एतु रूप ! ( अहो ) अहो ! ( अजस्त ) आ अर्थनी-पूज्यनी ( सोमया ) चद्रना जेनी सोम्यता-सुदरता ! ( अहो खती ) अहो ! आनी चमा ! ( अहो मुत्ती ) अहो ! आनी मुक्ति-निर्लोमता ! ( अहो भोगे असगया ) अहो ! भोगने विषे आनी नि स्पृहना ! सर्व अति आश्चर्यकाक छे ६

तस्से पाएँ उ वदिताँ, काऊँग र्ये पर्याँहिए । नाँइदूरमर्णासन्ने, पजली पडिपुँच्छइ ॥ ७ ॥

अर्थ—एम विचारी ( तस्त ) ते मुनिना ( पाए उ ) पादन ( वदिता ) वदन करीने ( य ) तथा ( पर्याहिए ) प्रदीचणा ( काऊण ) करीने ( नाइदूर ) अति दूर नहीं तमज ( अणासन्ने ) अति समीपे नहीं एवी रीते बेसीने ( पजली ) बे हाथ नोडी ( पडिपुँच्छइ ) राजए प्रश्न कर्यो ७

तेरुणोऽसि अजो ! पँवइओ ! भोगँकालाग्नि सँजया ! । उवँट्टिओऽसि सामँणे, एअँभट्ट सुणँमि तोँ\* ॥८॥

\* ते इति वा पाठ



अर्थ—( अज्ञो ) हे आर्य ! ( तरुणोऽसि ) तमे युवान छो, ( संजया ) हे मुनि ! ( भोगकालस्मि ) भोग भोगवचाने समये ( पव्वइओ ) तमे प्रवज्या लीधी छे, ( सामणो ) चारित्रने विपे ( उवाट्टिओऽसि ) उद्यमवंत थया छो. ( एअमट्टं ) आ अर्थने एटले आ युवात्रस्थामां प्रवज्या लेवाना कारणेने ( ता ) प्रथम ( ते ) तमारी पासे ( सुणामि ) हुं सांमळं—सांमळवा इच्छं छे, अने पळी तमे बीजुं जे कहेशो ते पण सांमळीश. ८.

हवे ते मुनि जवाव आपे छे.—

अणाहोमि महाराय !, नाहो मज्झ ने विज्झई । अणुकंपंगं सुंहिं वा वि, कंची नाभिसेममहं ॥९॥  
अर्थ—( महाराय ) हे महाराजा ! ( अणाहोमि ) हुं अनाथ छुं. ( मज्झ ) मारो कोइ ( नाहो ) नाथ ( न विज्झइ ) नथी. ( वा ) अथवा ( अणुकंपंगं ) दयाने चितवनार ( कंची ) कोइ ( सुंहिं ) सुहइ-मित्रने ( वि ) पण ( नाभिसेममहं ) हुं पास्यो नथी. आ कारणथी में प्रवज्या लीधी छे. ९.

तैओ सो पहसिओ रीया, सेणिओ मगहाहिवो । एवं ते इड्डिमंतस्स, कंहं नाहो नं विज्झई ॥१०॥  
अर्थ—( तओ ) ते वखते ( सो ) ते ( मगहाहिवो ) मगध देशनो अधिपति ( सेणिओ ) श्रेणिक ( राया ) राजा ( पहसिओ ) हस्यो के—( एवं ) आ प्रकारे ( इड्डिमंतस्स ) श्रद्धिवाळा एवा ( ते ) तमारो ( नाहो ) नाथ ( कंहं ) केम ( न विज्झई ) नथी ? अहीं सर्वत्र ते कालनी अपेचाए वर्तमानकाळ लखेलो छे. ११.

जो व्रत अंगीकार करवासा अनाथता ज कारण होय तो—

क्षामि नाहो भयताण, भोगे भुंजाहि सजया ! । मिचनार्इपरिवुडो, माणुस्स खु सुंदुल्लह ॥११॥

अर्थ—( भयताण ) पूज्य एवा आपनो दु ( नाहो ) नाथ ( होमि ) थाउ ( सजया ) हे मुनि ! ( मिचनार्इपरि  
वुडो ) मित्र अने ज्ञातिथी परिवर्था यत्ना ( भोगे ) मोगोने ( भुंजाहि ) भोगयो कारण के ( माणुस्स ) मनुष्यपणु पामदु  
( दु ) खरेखर ( सुदुल्लह ) अत्यंत दुर्लभ छे ? ?

ते साम्की मुनि बोल्या —

अप्पणा वि अण्णाहोऽसि, सेणिअ । भगहाहिवा ! । अप्पणा अण्णाहो सतो, कह नाहो भविस्ससि ? ॥१२॥

अर्थ—( भगहाहिवा ) हे मगधना अधिपति ( सेणिअ ) श्रेणिक राजा ! ( अप्पणा वि ) तमे पोते ज ( अणा  
होऽमि ) अनाथ—नाथ रहित छो ( अप्पणा ) तेथी पोते ज ( अणाहो सतो ) अनाथ सवा ( कह ) केषी रीते मारा  
( नाहो ) नाथ ( भविस्ससि ) धरो ? १२

धव तुत्तो नरिदो सो, सुसभतो सुनिम्हिओ । वयण अस्सुअपुव्व, साहुणा विम्हय निओ ॥१३॥

अर्थ—( एव ) आ प्रमाणे ( साहुणा ) मुनिए ( अस्सुअपुव्व ) पूर्वे नरी सामळेला ( वयण ) वचन प्रत्ये ( बुत्तो )  
कहेवायो एरो ( सो ) ते ( नरिदो ) श्रेणिक राजा ( सुसभतो ) अत्यंत सभंत यने ( सुविम्हयो ) अत्यंत निस्मित थद

(विम्हयं निञ्चो) आश्चर्यं पाप्म्यो. प्रथम ते मुनिना रूपादिक जोइने राजा आश्चर्यं पाप्म्यो हतो, ते फरीथी आबुं अपूर्व वचन सांभळी वधारे आश्चर्यं पाप्म्यो. १३.

पछी राजा आ प्रमाणे बे गाथावडे बोल्यो.—

आसा हैत्थी मणुस्सा मे, पुरं अंतेउरं च मे। भुंजामि माणुसे भोए, आणाइस्सरिञ्चं च मे ॥१४॥

अर्थ—हे मुनि ! ( मे ) मारे ( आसा ) घणा अश्चो छे, तथा ( हत्थी ) हाथीओ छे, तथा ( मणुस्सा ) मनुष्यो-सेवको अने स्वजनादिक छे, ( च ) तथा ( मे ) मारे ( पुरं ) नगर छे, तथा ( अंतेउरं ) राणीओनो समूह छे, तथा हुं ( माणुसे ) मनुष्य संबधी ( भोए ) कामभोगेने ( भुंजामि ) भोगबुं छुं, ( च ) तथा ( मे ) मारे ( आणाइस्सरिञ्चं ) अखलित शासनरूप आज्ञा अने अश्चर्य एटले समृद्धि-स्वामीपणुं छे. मारा राज्यमां कोइ पण मारी आज्ञानो भंग करतुं नथी. १०.

एरिसे संपैयगामि, सैवकामसमपिपि । कंहं अणाहो भवइ, मां हुं भंते ! मुंसं वए ॥ १५ ॥

अर्थ—( एरिसे ) आवा प्रकारनी ( सैवकामसमपिपि ) सर्व मनवांछितने पूर्ण करनार ( संपयगामि ) संपदानो प्रकर्ष-मोटी समृद्धि सते ( कंहं ) केवी रीते हुं ( अणाहो ) अनाथ ( भवइ ) थाउं ? कारण के हुं सर्व संपत्तिनो नाथ छुं, ( हु ) तेथी करीने ( भंते ) हे पूज्य ! आप ( मुंसं ) मृषा ( मा वए ) न बोलो. १५.

त्यारे मुनि आ प्रमाणे बोल्या —

ए तुम जाणे अणाहस्स, अत्थ पोत्थ च पत्थिवा ! । जहा अणाहो हेवइ, सैणाहो व नैराहिवा ! ॥१६॥

अर्थ—( पत्थिवा ) हे राजा ! ( तुम ) तम ( अणाहस्स ) अनाथ शब्दना ( अत्थ ) अर्थने ( पोत्थ च ) तथा प्रोत्थानने एटले कया अभिप्रायधी में अनाथ शब्द कळो तेनी मूळ उत्पत्तिने ( ए जाणे ) तमे जाणता नथी, के ( जहा ) जे प्रकारे ( अणाहो ) अनाथ ( व ) के ( सणाहो ) होय, ते प्रकारे ( नराहिवा ) हे नराधिप ! तमे जाणता नथी १६

सुणेह मे महाराय !, अंअक्खित्तेण चेअसा । जहा अणाहो भवति, जहा मे अ पवत्तिअ ॥१७॥

अर्थ—( महाराय ) हे महाराजा ! ( जहा ) जे प्रकारे मनुष्य ( अणाहो ) अनाथ ( भवति ) थाय छे, ( अ ) अने ( नहा ) जे प्रकारे ( मे ) में ते अनाथपणु ( पवत्तिअ ) प्रवर्ताव्यु एटले प्ररूप्यु-वरु छे, ते प्रकारे ( मे ) कहेता एवा मारा थकी तमे ( अअक्खित्तेण ) अयाचिस-स्थिर ( चेअसा ) चित्तवडे ( सुणेह ) सांभळो १७

आ प्रमाणे कहीने पछी मुनि पोतानी कथा कहेवा लाग्या —

कोसवी नाम नैयरी, पुराणपुरभेअणी । तत्थ आसी पिआ मंडइ, पंभूअधणसचओ ॥ १८ ॥

अर्थ—( पुराणपुरभेअणी ) जूना नगरने भेदनारी एटले जूना नगरोथी पण अधिक शोभावाळी ( कोसवी नाम )

कौशांबी नामनी (नयरी) नगरी छे. (तत्थ) तेमां ( पभूअध्ययसंचओ ) घणा धननो संचय-संग्रह करनार धनसंचय नामे ( मज्झं ) मारो ( पिआ ) पिता ( आसी ) हतो. प्राये करीने जूनां नगरोमां वसनारा लोको चतुर, धनवान, घणा अनुभवी अने विवेकी होय छे एवुं रहस्य जणाववा माटे जूना नगरने भेदनारी आ नगरी कही छे. १८.  
पढमे वैए महाराय !, अउला मे अच्छिवेअणा । अहोत्था विउलो दाहो, संवगत्तेसु पत्थिवा ! ॥१९॥

अर्थ—( महाराय ) हे महाराजा ! ( पढमे वए ) पहेली वयमां एटले युवावस्थामां ( मे ) मने एकदा ( अउला ) अतुल एवी ( अच्छिवेअणा ) नेत्रनी पीडा ( अहोत्था ) थइ, तेथी ( पत्थिवा ) हे राजा ! ( संवगत्तेसु ) मारा सर्व अवयवोने विपे ( विउलो ) विपुल-मोटो ( दाहो ) दाह थवा लाग्यो. १९.

सत्थं जहा परमतिकखं, सरीरत्रिवरंतरे । आवीलिज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छिवेअणा ॥ २० ॥  
अर्थ—( जहा ) जेम कोइ ( कुद्धो अरी ) क्रोध पामेलो शत्रु ( सरीरत्रिवरंतरे ) कर्ण, नासिका विगेरे शरीरना विवरोनी मध्ये ( परमतिकखं ) अत्यंत तीक्ष्ण ( सत्थं ) शस्त्रने ( आवीलिज्ज ) गाढ रीते नाखे अने तेथी जेवी वेदना थाय ( एवं ) एवी असह्य ( मे ) मने ( अच्छिवेअणा ) नेत्रनी पीडा थती हती. २०.

तिअं मे अंतैरिच्छं च, उत्तिमंगं च पीडंई । इंदासणीसमा धौरा, वेअणा परमदारुणा ॥ २१ ॥  
अर्थ—( मे ) मारा ( तिअं ) कटिभागने, तथा ( अंतैरिच्छं ) खान, पान, रमण विगेरे अंदरनी इच्छाने, तथा

( उच्चिमग च ) मस्तकने ते ( इदासणीसमा ) इद्रना यत्र जेवी अति दाह उत्पन्न करनारी ( घोरा ) भयकर एटले बीजाने पण मय उत्पन्न करनारी अने ( परमदाहणा ) पोताने अत्यंत दुःख उत्पन्न करनारी ( वेधणा ) वेदना ( पीडने ) पीडा करवा लागी २१

उर्वट्टिआ 'मे' ओयरिआ, त्रिजांसततिगिच्छगा । अंधीआञ्छ संस्थकुसला, मतमूलविसारया ॥ २२ ॥  
 अर्ध—ते वरते ( मे ) मने—मारी पासे ( आयरिआ ) आचार्यो एटले वैद्यो ( उर्वट्टिआ ) प्राप्त यथा एटले मारी चिकित्सा करवा आग्या ते वैद्यो ( विद्यामततिगिच्छगा ) विद्या अने मत्रवडे चिकित्सा करनारा हता, तथा ( अर्धीआ ) अद्वितीय एटले तेमनी जेवा बीजा कोइ निपुण नहोता, अथवा ( अर्धीआ ) सारी रीते भणोला हता, तेथी ज ( सत्यकुसला ) शास्त्रने विपे बुराब हता, तथा ( मतमूलविमारया ) देव अधिष्ठित मत्रो अने जडीबुटी आदि मूलीयांमां विचक्षण हता, एटले मत्र अने मूलना गुणोने जाणनारा हता २२

'ते' 'मे' तिगिच्छ कुंठवति, चाउप्पाय जहाहिअ । ने यं दुर्मखा विमोअति, एसी मज्झी अणोहया ॥ २३ ॥

अर्थ—( ते ) ते वैद्यो ( जहाहिअ ) जेम हित थाय तेम ( चाउप्पाय ) चार प्रकारे ( मे ) मारी ( तिगिच्छ ) चिकित्सा ( कुंठवति ) करवा लाग्या अही वैद्य, औपध, रोगी अने साखार करनार, अथवा वमन, विरेचन, मर्दन अने

\* अर्धीआ इति वा पाठ

स्वेदन-परसेवो आवे तेबुं, अथवा अंजन, बंधन, लेपन अने मर्दन ए रीते शास्त्रमां कहेली चार चार प्रकारनी चिकित्सा जाणवी. ए रीते गुरुपरंपरा प्रमाणे चिकित्सा करवा लाग्या, (य) तोपण तेओए मने (दुख्वा) दुःखथी (न विमोअंति) मुक्त कर्यो नहीं-मुक्त करी शक्या नहीं. (एसा) ए ज (मज्झ) मारी (अणहया) अनाथता छे. २३.

पिआ मे सर्व्वसारं पि, दिज्जाहि ममै कारण। नैयं दुर्व्वखा विमोएइ, एसां मज्झै अणहया ॥२४॥

अर्थ—(मे) मारा (पिआ) पिताए (मम कारण) मारे कारणे ते वेद्योने (सर्व्वसारं पि) धरनो सर्व्व सार-सर्व्व धनादिक सार वस्तु (दिज्जाहि) आपी. (य) तोपण तेणे मने (दुख्वा) दुःखथी (न विमोएइ) मुक्त कर्यो नहीं. (एसा) ए (मज्झ) मारी (अणहया) अनाथता छे. अर्थात् सर्व्वस्व आपीने पण मारा पिता सारं दुःख दूर करी शक्या नहीं, ए ज मारी अनाथता छे. २४.

माँया वि मे महाराय ! पुत्तसोगदुहट्टिआ०। नै य दुक्खो विमोएइ, एसा मज्झ अणहया ॥२५॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (पुत्तसोगदुहट्टिआ) पुत्रना शोकरूपी दुःखमां रहेली अथवा (दुहट्टिआ) दुःखे करीने पीडापैली (मे) मारी (माया वि) माता पण (दुक्खा) दुःखथी मने (न य विमोएइ) मुक्तावी शकी नहीं, (एसा मज्झ अणहया) ए ज मारी अनाथता छे. २५.

\* दुहट्टिआ वृत्ति वा.

भायरो मे महाराय !, संग जिट्टकणिट्टगा । नै य दुर्वखा विमोअति, पेसा मज्झं अणाहया ॥२६॥

अर्थ—( महाराय ) हे महाराजा ! ( जिट्टकणिट्टगा ) मोटा अने नाना ( सगा ) सहोदर ( मे ) मारा ( भायरो ) माइओ मने ( दुक्खा ) दुःखी ( न य विमोअति ) मूकावी शक्या नही, ( एसा मज्झ अणाहया ) ए मारी अनाथता छे २६

भेइणिओ मे महाराय ! संग जिट्टकणिट्टगा । नै य दुर्वखा विमोअति, एसो मज्झ अणाहया ॥२७॥

अर्थ—( महाराय ) हे महाराजा ! ( जिट्टकणिट्टगा ) मोठी अने नानी ( सगा ) सहोदरी ( मे ) मारी ( भइणिओ ) वहेनो मने ( दुक्खा ) दुःखी ( न य विमोअति ) मूकावी न शकी, ( एसा मज्झ अणाहया ) ए मारी अनाथता छे २७

भारिया मे महाराय !, अणुरत्ता अणुव्वया । असुपुखेहि नैयणेहि, उेर मे पंरिसिचइ ॥ २८ ॥

अर्थ—( महाराय ) हे महाराजा ! ( अणुरत्ता ) प्रीतिवाळी अने ( अणुव्वया ) पतिव्रता एवी ( मे ) मारी ( भारिया ) भार्या ( असुपुखेहि ) अथुवहे पूर्ण एवा ( नयणेहि ) नेत्रोवडे ( मे उर ) मारा उर सळने ( परिसिचइ ) सिचती हती परतु ते पण मने दुःखी मूकावी शकी नही ए मारी अनाथता छे २८

अन्न पाण च ँहाण च, गर्धमल्लविलेवण । मए णायमंणाय वा, सा वैला नोवंभुजइ ॥२९॥

अर्थ—( सा वाला ) ते मारी भार्या ( मए ) मे ( णाय ) जाणु ( अणायं वा ) के न जाणु तेम एटले मारा



जाणता के न जाणता ( अन्नं ) अन्न, ( पाणं च ) पाणी, तथा ( एहाणं च ) स्नान, तथा ( गंधमल्लविलेखणं ) गंध, पुष्पमाला अने विलेपन एसांनुं, कांइ पण ( न उवञ्जइ ) भोगवती नहोती, मारा दुःखथी सर्व भोगो तेणीए पण तज्या हता, २६.

खणं पि मे महाराय !, पासओ वि नं फिट्ठई । नं थं दुक्खा विमोएँइ, एसो मज्झ अँणाहया ॥३०॥  
अर्थ—( महाराय ) हे महाराजा ! ( खणं पि ) एक क्षणवार पण ( मे ) मारी ( पासओ वि ) पासेथी—समीप भागथी जरा पण ( न फिट्ठई ) दूर जती नहोती, ( य ) तोपण ते मने ( दुक्खा ) दुःखथी ( न विमोएँइ ) मूकावी शकी नहीं, ( एसो मज्झ अणहया ) आ मारी अनाथता छे. ३०.

तओ हं एवमाँहंसु, दुँखमा हे पुँणो पुँणो । वेअँणा अँणुभविउं जे, संसारम्मि अँणंतए ॥३१॥

अर्थ—( तओ ) त्थारपछी एटले सर्व उपायो निष्फल थया पछी ( हं ) हुं ( एवं ) आ प्रमाणे ( आहंसु ) बोल्यो के—( ह् ) निश्चे ( जे ) “ जे ( वेअँणा ) वेदना ( अणुभविउं ) अनुभववाने ( दुक्खमा ) दुःसह छे, ते वेदना ( अणंतए ) आ अंतंत एवा ( संसारम्मि ) संसारने विषे ( पुँणो पुँणो ) वारंवार में भोगवी छे. ३१.

तेथी करीने—

सइं च जइ सुच्चिज्जा, वेअँणा विउँला इओ । खंतो दुँतो निरंरंभो, पँववए अँणगारिअं ॥ ३२ ॥

अर्थ—( च ) जो ( स इ च ) एक चार हु ( इओ ) आ ( विउला ) मोठी ( वेअणा ) वेदनायी ( मुचिजा ) मूला, तो हु ( एतो ) घमावाळो, ( दतो ) इद्रिय अने नोशद्रियना दमनवाळो अने ( निरारभो ) सर्व सावध आरभ रहित एवो थइने ( अणगारिअ ) साधुपथाने-चारित्रने ( पव्यए ) अगीकार करीया के जेथी सत्तारनो ज नाश थवायी कोइ वरात पण फीने वेदना प्राप्त थशे ज नहीं ” ३२

एत च चित्तइत्ताण, पसुत्तोमि नेराहिवा । । परिअत्ततीइ रोईए, वेअणा मे ख्य गंया ॥ ३३ ॥

अर्थ—( नेराहिवा ) हे नराधिप ! केवल आ प्रमाणे बोलीने ज नहीं, परतु ( एव च ) ए प्रमाणे ( चित्तइत्ताण ) मनमा चितवन करीने ( पसुत्तोमि ) हु सुइ गयो, तेवामां ( रोईए ) रात्रि ( परिअत्ततीइ ) अतिक्रमण थतां एटले जेम जेम रात्रि जवा लाणी तेम तेम ( मे ) मारी ( वेअणा ) वेदना ( खय गया ) घय पामी ३३

तेओ वंछे पंभायम्मि, आपुच्छित्ता ण वध्वे । खेतो दंतो निरारभो, पंअइओ अणगारिअ ॥ ३४ ॥

अर्थ—( तओ ) त्यापछी एटले वेदनानो घय थया पछी ( कळे ) रोग रहित थयेला में ( पमायम्मि ) प्रात काळने पिपे ज ( वध्वे ) चधवोने ( आपुच्छित्ता ण ) पूछीने एटले तेमनी रजा लइने ( एतो ) घमावान, ( दतो ) इद्रियोना दमनवाळो अने ( निरारभो ) आरभ रहित थइ ( अणगारिअ ) चारित्रने ( पव्यइओ ) अगीकार कयुं ३४

तंओ हे नाहो जाओ, अप्पणो अ परस्स य । सव्वेसिं चेव भूआण, तंसाण धांवरण य ॥ ३५ ॥

अर्थ—(तत्रो) त्वार पक्षी एटले दीक्षा ग्रहण कर्षी पक्षी ( हं ) हुं ( अर्पणो अ ) पोतानो एटले मारो अने ( परस्स य ) परनो एटले बीजानो ( नाहो जागो ) योग सेम करनारो नाथ थयो छुं. ए प्रमाणे ( सन्वोसि चैव ) सर्व एवा ज ( तसाणं ) त्रस ( थावराण य ) अने स्थावर ( भूआणं ) प्राणीओनो हुं नाथ थयो छुं. ३५.

दीक्षा ग्रहण कर्षी पक्षी केम नाथ थया ? पहेला केम न थया ? ते उपर कहे छे.—

अर्ष्या नई वेअरणी, अर्ष्या \*मे कूडसामली । अर्ष्या कर्माडुहा धेणूँ, अर्ष्या \*मे नंदेणं वैणं ॥ ३६ ॥

अर्थ—हे राजा ! ( अर्ष्या ) मारो आत्मा ज ( वेअरणी ) नरकमां रहेली वैतरणी नामनी ( नई ) नदीरूप छे, ( मे ) मारो ( अर्ष्या ) आत्मा ज ( कूडसामली ) नरकमां रहेछं कूटशाल्मली नामनुं वृत्त छे, ( अर्ष्या ) मारो आत्मा ज ( कामदुहा धेणू ) कामदुहा गाय छे, तथा ( मे ) मारो ( अर्ष्या ) आत्मा ज ( नंदेणं वणं ) नंदन वनरूप छे. अर्थात् स्वर्ग नरकादिक आपनार आत्मा ज छे. ३६.

अर्ष्या कर्त्ता विकर्त्ता य, दुर्हाण य सुर्हाण य । अर्ष्या भित्तमर्त्तं च, दुर्पट्टिअ सुपट्टिओ ॥ ३७ ॥

अर्थ—हे महाराजा ! ( अर्ष्या ) आत्मा ज ( दुहाण य ) दुःखनो अने ( सुहाण य ) सुखनो ( कत्ता ) कर्त्ता-करनार अने ( विकत्ता य ) विकर्त्ता एटले नाश करनार पण छे, तथा ( अर्ष्या ) आत्मा ज ( भित्तं ) भित्त ( अर्भित्तं च ) अने अभित्त पण छे, तथा आत्मा ज ( दुर्पट्टिअ ) दुःप्रस्थित एटले दुराचारी अने ( सुपट्टिओ ) सुप्रस्थित एटले सदाचारी छे. तेमां दुराचारी सतो समग्र दुःखनो हेतु होवार्थी वैतरणी नदी आदि जेवो छे अने सदाचारी सतो समग्र सुखनो हेतु होवार्थी

कामघनु सदृश छे तेथी करीने प्रव्रज्याने विषे ज सदाचारीपणु होवाथी तथा स्वपरतु योग चेम करवापणु होवाथी हु नाथरूप धर्यो छु ३७

फरीथी बीजे प्रकारे अनाथपणु कहे छे —

इमा हुँ अन्ना वि अर्णहया निवा !, तमेगचित्तो निर्हुञ्चो सुणाहि ।

निश्चैठधम्म लँहिआण वी जंहा, 'सीदति पंगे धंहु कायरा नॅरा ॥३८ ॥

अर्थ—( निवा ) हे राजा ! ( इमा ) आ एटले हमरां हु कहीश ते ( हु ) निश्चे (अन्ना वि) बीनी पण (अर्णहया) अनाथता छे, ( त ) तने तमे ( एगचित्तो ) एकाग्र चित्तवाळा अने ( निर्हुञ्चो ) निश्चल एवा सता ( सुणाहि ) सांभलो ( जहा ) ते ए के—( एगे ) केटलाएक ( बहु कायरा ) घणा कायर (नरा) मनुष्यो ( निश्चैठधम्म ) साधुधर्मेने ( लँहिआण वी ) पामीने पण ( सीदति ) सीदाय छे—साधुना आचार पाळवामां शिथिल थाय छे तेओ सीदाता यका योतानु अने परतु रक्षण करवा समर्थ थता नथी, तेथी तेमनी आ सीदन नामनी बीजी अनाथता जाणवी ३८.

ते ज बतावे छे —

जो पटवैइत्ता ण महँवज्याइ, संम्म च नो फांसयई पमाया ।

अंणिगहप्पा थं रसेसुं गिद्धे, नं मूल्लओ छिंदेइ वधेण से ॥ ३९ ॥

अर्थ—हे राजा ! ( जो ) जे मनुष्य (पव्वइत्ता ण) प्रव्रज्या ग्रहण करीने पल्ली (पमाया) प्रमादथी ( महव्वयाइं ) पांच महाव्रतोंने ( सम्मं च ) सम्यक् प्रकारे ( नो फासयई ) सेवतो नथी, ( से ) ते मनुष्य (अणिग्गहप्पा) नथी वश कर्यो आत्मा जेणे एवो ( य ) तथा ( रसेसु ) मधुरादिक रसने विषे ( गिद्धे ) शुद्धिवाळो सतो ( वंधणं ) संसारनां कारणरूप रागद्वेषना लक्षणवाळा कर्मबंधनेने ( मूलओ ) मूळथी ( न छिदइ ) छेदी शकतो नथी—सर्वथा प्रकारे रागद्वेषने निवारी शकतो नथी. ३६.

आउत्तया जस्स य नत्थि काई, इरिआइ भासाइ त्हेसणाए ।

आयाणनिक्खेव दुंगंछणाए, न धीरजायं अणुजाइ मंगं ॥ ४० ॥

अर्थ—( जस्स य ) वळी जे साधुने ( इरिआइ ) ईर्याने विषे एटले गमनागमननी समितिने विषे, तथा ( भासाइ ) भाषासमितिने विषे, ( तथा एसणाए ) तथा एषणा—आहार ग्रहण करवानी समितिने विषे, तथा ( आयाणनिक्खेव ) उप-गरण आदि वस्तु लेवा अने मूकवानी समितिने विषे, तथा ( दुगंछणाए ) परिष्ठापनानी समितिने विषे ( काई ) कांइ पण ( आउत्तया ) उपयोग ( नत्थि ) नथी, ते साधु ( धीरजायं ) धीर्यात एटले धीर पुरुषोए पामेला ( मंगं ) मोचमार्गने ( न अणुजाइ ) पासतो नथी. ४०.

चिरं पि से मुंडेरुई भवित्ता, अथिरव्वए तवनिअमेहि भट्टे ।

चिरं पि अप्पाण किलेसंइत्ता, न पारए होइं दु संपराए ॥ ४१ ॥

अर्थ—( से ) ते पूर्व कहेलो पच समिति रहित साध्वामास ( अधिब्यए ) अस्थिर व्रतवाळो तथा ( तवनिअमेदि ) अनशनादिक तप अने अभिप्रहादिक नियमर्था ( मंडे ) अष्ट-रहित एवो सतो ( चिर पि ) चिरकाल सुधी ( मुडरुई ) मात्र मुडनने विपे ज-लोचने विपे ज रचिवाळो ( मविता ) यद्दने ( चिर पि ) चिरकाल सुधी ( अज्पाण ) पोताना आत्माने ( किलेसइत्ता ) बलेश पमाडीने ( सपराए ) ससारनो ( पारए ) पारगामी ( न होइ हु ) यतो ज नथी ४१  
 पोछेन मुट्टी जहें से' असारें, अयतिए कूडकहावणे वा ।

रंढामणी वेरुलिअपगाले, अमहघए होई हु जाणैएसु ॥ ४२ ॥

अर्थ—( से ) ते मुडरुचिवाळो द्रव्यसाधु ( पोल्लेर ) पोली ज ( मुट्टी जह ) मुठीनी जेम ( असारें ) असार छे-अतःकरणमा घर्म नहीं होवाथी खाली मुठीनी जेवो सार रहित ज छे, तथा ( कूडकहावणे वा ) हुट कार्यापण-खोटा रुपीयानी जेम ( अयतिए ) अनियत्रित एटले अनादर करवा लायक-उपेवा करवा लायक छे, ( हु ) कारण के ( वेरुलिअपगाले ) वैदूर्य मणिनी जेमा प्रकाशगळो छतां पण ( राढामणी ) काचमणि ( जाणएसु ) मणिनी परीचा जाणनाराओने विपे ( अमहघए होइ ) अमहाघर्ष थाप छे-मूयवान यतो नथी, ४२

कुंसीललिग ईह धारईत्ता, ईसिज्जय जीविय वूहइत्ता ।

असजण सर्जयलपमाणो, विणिंदायमार्गळइ से' चिर" पि ॥ ४३ ॥

अर्थ—( से ) साधुना आचार रहित एवो ते ( कुसीललिंगं ) पासत्यादिक कुशीळीयाना लिंगने ( धारइत्ता ) धारण करीने तथा ( जीविय ) आजीविकाने माटे ( इतिजस्यं ) अपिध्वजने एटले रजोहरणने अने मुखवस्त्रिकाने ( बृहइत्ता ) बृद्धि पमाडीने एटले आ वेप ज मुख्य छे एम कहीने ( असंजए ) संयमी नहीं छतां पण ( संजयलप्यमाणो ) 'हुं संयमी हूं' एम नीलतो सतो ( इह ) आ संसारमां ( चिरं पि ) चिरकाल सुधी ( विधिषायं ) विविध प्रकारनी पीडाने ( आगच्छइ ) पासे छे. ४३.

तेतुं कारण बतावे छे.—

विसं पिविंसा जह कौलकूडं, हर्णाइ सतंथं जैह कुंगहीअं ।

एमेव धम्मो विसंओववन्नो, हर्णाइ वेआल ईवाविवन्नो ॥ ४४ ॥

अर्थ—( जह ) जेम ( कालकूडं ) कालकूट नामतुं ( विसं ) विप ( पिविंसा ) पीयुं सतुं प्राणने ( हब्याइ ) हयो छे, तथा ( जह ) जेम ( सतंथं ) शस्त्र ( कुंगहीअं ) स्वरात्र रीते एटले विपरीतपणो प्रहरण कर्युं सतुं पोताने ज हयो छे, ( एमेव ) ए ज प्रमाणो ( धम्मो ) धर्म पण ( विसओववन्नो ) शब्दादिक विषयोधी युक्त सतो आत्माने ( हर्णाइ ) हयो छे. कोनी जेम ? ते कहे छे—( अविवन्नो ) मंत्रादिककवडे नहीं बरा कोलो ( वेआल इव ) वेताळ-पिशाच जेम उलटो हरणनार थाय छे तेम. ४४.

जो लक्ष्मण सुविण पँउजमाणे, निमित्तकोऊहलसपगाडे ।

कुँहेडविजासवदारजीवी, ने गच्छई सरण तँम्मि काले ॥ ४५ ॥

अर्थ—( जो ) जे साधु ( लक्ष्मण ) स्त्रीपुरुषना लक्षणना शास्त्रनो तथा ( सुविण ) स्वप्रशासनो एटले स्वभना शुभाशुभ फळ कहेनारा शास्त्रनो ( पउजमाणे ) उपयोग करतो होय, तथा जे साधु ( निमित्तकोऊहलसपगाडे ) भूकपादिक निमित्त कहेतुं अने कौतुक एटले पुत्रादिक यवा माटे जे खानादिक बतावतु, तेमां आसक्त होय, तथा जे साधु ( कुँहेडविजा सवदारजीवी ) कुँहेटक विद्या एटले सोटा आभय बतावनारा मत्र तंत्रादिकनी विद्या, ते ज कर्मबधनो हेतु होवाथी आश्रव द्वार कहेवाय छे, ते फूँहेटक विद्यारूपी आश्रवद्वारवडे आजीविका करवाना स्वभाववाळो होय, ते साधु ( तम्मि काले ) ते लक्षणदिकनो उपयोग करवाथी बघायेला कर्मना उदयकाले एटले नरकादिकनां दुःख भोगवतीं वखते ( सरण ) ते दुःखथी रक्षण करनार कोइ पण शरणने ( न गच्छई ) पागतो नथी ४५

आ ज अर्थने विस्तारथी कहे छे—

तँमतमेणेंउ उ सें असीले, सया दुँही विष्परिआसुवेइ ।

सधांवइ नरगतिरिखखजोणी, मोर्ण विरोहितु अँसाहुरूवे ॥ ४६ ॥

अर्थ—( असल्ले ) कुशीळीयो पयो ( से ) ते द्रव्य साधु ( तमतमेणेंउ ) अत्यंत अज्ञानवडे करीने ज ( सया ) सदा



( दुही ) दुःखी थयो सतो ( विपरियास उभेइ ) तत्तने विपे विपरीतपणाने पामे छे, तथा ( असाधुरूवे ) असाधुरूप एवो ते द्रव्यसाधु ( मोखं ) चारित्रनी ( विराहित्तु ) विराधना करीने ( नरगतिरियलजोखी ) नरक अने तिर्यचनी योनि प्रत्ये ( संपधावइ ) निरतर दोडे छे-जाय छे, अर्थात् चारित्रनी विराधनाथी दुर्गतिनो अनुबंध-चारंवार संबंध थाय छे, ४६.

शी रीते चारित्रनी विराधना करे छे ? अथवा शी रीते नरक अने तिर्यगति प्रत्ये दोडे छे ? ते कहे छे,—

उद्वेसिअं कैीअगडं निआगं, न मुंचई किंचिं अणेसणिज्जं ।

अगगी विवा संवभक्खी भंवित्ता, इओ चुओ गच्छइ कट्टु पावं ॥ ४७ ॥

अर्थ—जे साधु ( उद्वेसिअं ) औदेशिक एटले साधुने उदेशीने करेलो, ( कीअगडं ) क्रीत एटले साधुने माटे खरीद करेलो, आहत एटले साधुनी सन्मुख आणेलो, ( निआगं ) नित्यकं एटले हमेशां एक ज गृहस्थने घेरथी लीधेलो-एवो ( किंचि ) कांइ पण-कोइपण रीते ( अणेसणिज्जं ) अनेपर्याय एटले साधुने न कल्पे एवो जे आहार तेने ( न मुंचई ) मुके नहीं-तजे नहीं, ते ( अगगी विवा ) अग्निनी जेम ( संवभक्खी ) सर्वने भक्षण करनारो ( भविता ) थइने ( इओ ) आ मनुष्य भवथी ( चुओ ) चव्यो थको-भरण पाम्यो थको ( पावं ) पाप ( कट्टु ) करीने, दुर्गतिमां ( गच्छइ ) जाय छे, ४७.

ने 'त अरी कठञ्जिता करोति, ज से करे अप्पणिआ दुएप्पा ।

'से नाहिई मँचुमुह तुं पत्ते, पँच्छाणुतावेण दैयाविहूणो ॥ ४८ ॥

अर्थ—( से ) तेवा पापी साधुने ( अप्पणिआ ) पोतानी ज ( दुएप्पा ) दुरात्मता-दुष्टता ( ज ) जे अनर्थने ( करे ) करे छे, ( त ) तेवा अनर्थने ( कठञ्जिता ) कठने छेदनार ( अरी ) शत्रु पण ( न करोति ) करी शक्तो नथी ( तु ) वली ( दयाविहूणो ) दया रहित एवो ( से ) ते साधु ( मँचुमुह ) मृत्युना समयने ( पत्ते ) पामे छे त्यारे ( पँच्छाणुतावेण ) पथाचापे करीने ( नाहिई ) 'हा ! में बहुत दुष्कृत कर्या !' ए प्रमाणे कदी पोतानी दुष्टताने जाणशे केमके दुष्टता अनर्थनु कारण छे अने पथाचापनु पण कारण छे. परतु पछी जाण्यु काम आवशे नहीं तेथी पहेलेथी ज तेने जाणीने तेनो त्याग करवो उचित छे. ४८.

जे कोइ मरण समये पण मोहने लीधे पोतानी दुरात्मताने जाणे नहीं, तो तेनु शु थाप ? ते कहे छे —

निरँट्टिआ नगर्हई उ तस्स, जे उत्तिमट्टु विवँज्जासमेइ ।

इमे वि से नँत्थि 'परे वि लोए, दुँहओ त्रि 'से जिँझइ तँत्थ 'लोए ॥ ४९ ॥

अर्थ—( जे ) जे द्रव्ययाधु ( उत्तिमट्टु ) उत्तमार्थे एटले अत समयनी धाराधनाने विपे पण ( विवँज्जास एइ ) विप र्यासने पामे छे एटले दुरात्मने पण सुदरपणे माने छे, ( तस्स ) तेनी ( नगर्हई ) नाग्यत्तचि एटले चारिनी रुचि

( निरट्टिआ उ ) निरर्थक ज छे. ( से ) तेवा साधुने ( इमे वि ) आलोक पण नथी अने ( परे वि लोए ) परलोक पण ( नत्थि ) नथी. ( तत्थ ) ते उभय लोकनो अभाव सते ( लोए ) जगतने विषे ( दुहओ वि ) आलोक अने परलोकना अभावने लीधे बने प्रकारे ( से ) ते साधु ( क्षिञ्जइ ) चीण थाय छे-सुखथी अट थाय छे. अने आलोकमां तथा परलोकमां संपत्तिवाला जीवोने जोइने 'बने लोकथी अट थयेला मने धिक्कार छे.' एम पश्चात्ताप करतो सतो विशेष चीण थाय छे. ४६.

त्यारपछी ते जे प्रकारे पश्चात्ताप पामे छे, ते बतावे छे.—

एमेवहाछंदकुसीलरूवे, मंगं विरोहितु जिणुत्तमाणं ।

कुररी विवा भोगरसाणुगिच्छा, निरट्टसोआ परित्तावमेइ ॥ ५० ॥

अर्थ—( एमेव ) ए ज रीते एटले महाव्रतनी विराधनादिक प्रकारे करीने ( अहाछंदकुसीलरूवे ) यथाछंद एटले इच्छा प्रमाणे वर्तनार अने कुशीलरूप एटले दुष्ट शीलना स्वभाववाळो साधु ( जिणुत्तमाणं ) जिनेश्वरोना ( मंगं ) मार्गनी ( विराहितु ) विराधना करीने ( भोगरसाणुगिच्छा ) भोगना-जिन्हाने स्वाद आपनार मांसना रसमां लुब्ध थयेली अने ( निरट्टसोआ ) निरर्थक शोकवाळी ( कुररी विवा ) पक्षिणीनी जेम ( परित्तावं एइ ) पश्चात्तापने पामे छे. जेम मांसमां लुब्ध थइने जेणे मुखमां मांसनो पेशी नांखी छे एवी पक्षिणी बीजा मोटा पक्षीओथी विपत्ति पामे छे त्यारे ते शोक करे छे, अने ते वखते तेने काइपण आपत्तिनो प्रतिकार स्रहतो नथी, तेम भोगरसमां लुब्ध थयेलो साधु पण आलोक अने परलोकना

कष्ट प्राप्त थाय त्यारे शोक करे छे, पण ते स्वपरतु रक्षण करवामा असमर्थ होवाथी अनाथ छे ५०  
हवे जे करवा लायक छे, ते कहे छे,—

सौञ्चाण मेहांवि सुभासिअ ईम, अणुसासण नाणगुणोववेअ ।

मग कुंसीलाण जहाय सव्व, महानिअठाण वैए पेंहेण ॥ ५१ ॥

अर्थ—( मेहाधि ) हे बुद्धिमान् राजा ! ( सुभासिअ ) सारी रीते कहेला अने ( नाणगुणोववेअ ) ज्ञानगुणे करीने सहित एवा ( इम ) आ ( अणुसासण ) उपदेशना वचनो ( सोचाण ) सांभळीने ( कुंसीलाण ) कुशीळीयाना (सव्व) सर्व ( मग ) मार्गने ( जहाय ) तजीने, तमे ( महानिअठाण ) महा निर्ग्रथना ( पहेण ) मार्गे ( वए ) चालो ५२ ( आ उपदेश सर्वने माटे छे, मात्र राजा माटे नथी )

तेम करवाथी शुं फळ थाय ? ते कहे छे—

चरित्तमायारगुणन्निप तेओ, अणुत्तर सजैम पालिआण ।

निरासने सर्वविआण कम्म, उवेइ ठाण विउंलुत्तम धुंव ॥ ५२ ॥

अर्थ—( तओ ) ते महानिर्ग्रथना मार्गे जवाथी ( चरित्तमायारगुणन्निप ) चारित्राचार पटले चारित्रतु सेवन अने गुण पटले ज्ञान, शील विगरे गुणो, तेथे करीने सहित, तथा ( निरासने ) आश्रव रहित एवो साधु ( अणुत्तर ) सर्वोत्तम

एवा ( संजम ) सतर प्रकारना संयमने ( पालिआणं ) पाळीने तथा ( कम्मं ) आठ प्रकारना कर्मेने ( संखविआण ) खपा-  
वीने ( विउलुत्तमं ) विशाळ, उत्तम अने ( धुवं ) निश्चल एवा ( ठाणं ) मोक्षस्थानने ( उवेइ ) पामे छे. ५२.

हवे सुनि पोतानुं कहेहुं समाप्त करे छे.—

धुवुगदंते वि महातवोधणे, महासुणी महापइण्णे महायसे ।

महानियंठिज्जमिणं महासुअं, से काहए मेहया वित्थरेणं ॥ ५३ ॥

अर्थ—( एव ) आ प्रमाणे ( उगदंते वि ) कर्मरूपी शत्रु प्रत्ये उग्र-भयंकर, तथा दांत एटले इंद्रियो अने मनने  
दमन करनार, तथा ( महातवोधणे ) महा तपरूपी धनवाळा, तथा ( महापइण्णे ) महा प्रतिज्ञावाळा एटले दृढ व्रतवाळा,  
तथा ( महायसे ) महा यशवाळा एवा ( से ) ते ( महासुणी ) महासुनिए ( महानियंठिज्जं ) महानिर्णयीय एटले साधुओने  
हितकारक ( इणं ) आ ( महासुअं ) उपर कहेहुं महाश्रुत ( महया ) मोटा ( वित्थरेणं ) विस्तारथी ( काहए )  
कहुं छे. ५३.

त्यार पळी.—

तुट्ठो अ सेणिओ राया, ईणमुंदाहु कयंजली । अणाहत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उंवदंसिअं ॥ ५४ ॥

अर्थ—( तुट्ठो अ ) तुष्टमान थयेला ( सेणिओ राया ) श्रेणिक राजा ( कयंजली ) हाथ जोडीने ( इणं उदाहु )

आ प्रमाणे चीन्या के—हे महायुनि ! ( जहाभूय ) यथार्थ—सत्य एवु ( अणाहच ) अनाथपणु तमे ( मे ) मने ( सुदु ) सारं ( उदसिध ) देखाडयु छे—समजाव्यु छे. ५४

तुंभ सुलंढ खु मणुस्सजम्म, लाँभा सुलंछा यं तुंमे मंहेसी ।

तुंभे संणाहा यं सबधंवाँ यं, जं भे ठिआँ मँगि जिणुत्तमाण ॥ ५५ ॥

अर्थ—( मंहेसी ) हे महर्षि ! ( तुंभ ) तमारो ( मणुस्सजम्म ) मनुष्य भव ( सुलंढ खु ) सारो प्राप्त थयेलो ज छे—सफल ज छे, ( य ) तथा ( तुंमे ) तमने ( लाँभा ) रूप, वर्ण, विद्या विगरे लामो ( सुलंछा ) सारा प्राप्त थयेला छे, ( य ) तथा ( तुंभे ) तमे ज ( सणाहा ) सनाथ—आत्माना नाथ होवायी नाथ सहित छो, ( य ) तथा ( सबधवा ) तमे ज ज्ञाति कुटुंबादिक बधु सहित छो. ( ज ) कारण के ( भे ) तमे ( जिणुत्तमाण ) जिनेश्वरना ( मँगि ) मार्गने विषे ( ठिआ ) रहेला छो ५५.

'त सिं णाँहो अणाहाण, सब्बभूआण संजया । खामेमि ते महँभाग !, इच्छामु अणुसासिउं ॥ ५६ ॥

अर्थ—( संजया ) हे सुनीश्वर ! ( त ) तमे ( अणाहाण ) नाथ रहित एवा ( सब्बभूआण ) तस अने स्थावर सर्व प्राणीओना ( णाँहो ) नाथ ( सि ) छो ( महाभाग ) हे महा भाग्यवान ! ( ते ) तमने हु ( खामेमि ) खमातु छु मे प्रथम तमारो मारु सनाथपणु कहने जे अपराध कयो तेनी हु चमा मागु छु, अने ( अणुसासिउ ) मारा आत्माने अनुशा-

सन करवा ( इच्छामु ) इच्छुं छुं, एटले तमे मने शिवा-उपदेश आपो, एम इच्छुं छुं. हुं तमारी आज्ञामां छुं. ५६.  
फरीथी विशेषे करीने तमा मागे छे.—

पुच्छिऊण मए तुब्भं, झौणविग्घो उ जो कओ । निर्मत्तिआ यं भोगेहिं, 'तं संव्वं मरिसिह' मे ॥५७॥

अर्थ—हे महर्षि ! ( मए ) में ( तुब्भं ) तमने ( पुच्छिऊण ) दीक्षा लेवानुं कारण पूछीने ( जो ) जे (झाणविग्घो उ) तमारा ध्यानमां विघ्न ( कओ ) करेल छे, ( य ) तथा ( भोगेहिं ) भोगोवडे-भोग भोगववा ( निर्मत्तिआ ) तमने में निमंत्रण कर्युं छे, ( तं संव्वं ) ते सर्व ( मे ) मारा अपराधने ( मरिसिह ) क्षमा करो. ५७,

हवे आ अध्ययनने समाप्त करतां कहे छे.—

एवं थुणित्ताण से रायसीहो,—इणगारसीहं परमाइ भत्तिए ।

सओरोहो संपरिअणो संबंधवो, धम्मआणुरत्तो विमलेण चेअसा ॥ ५८ ॥

अर्थ—( एवं ) आ प्रकारे ( स ) ते ( रायसीहो ) राजाओना मध्यमां सिंह समान श्रेणिक राजा ( अणगारसीहं ) मुनिओने विपे सिंह समान एवा ते मुनिने ( परमाइ भत्तिए ) उत्कृष्ट भक्तिवडे ( थुणित्ताए ) स्तवीने-स्तुति करीने ( सओरोहो ) अंतःपुर सहित, तथा ( सपरिअणो ) परिवार सहित, तथा ( संबंधवो ) बंधुजन सहित ( विमलेण चेअसा ) निर्मल चित्तवडे ( धम्मआणुरत्तो ) धर्मने विषे अनुरक्त-रागी थयो. ५८.

ऊँससिअरोमकूवो, कार्ऊण य पर्याहण । अंभिवदिता सिरसा, अँतिजातो नैराहिवो ॥ ५९ ॥

अर्थ—( ऊँससिअरोमकूवो ) मृनिना दर्शनथी तथा तेना वाक्य श्रवण करवाथी विकस्वर यथा छे रोमकूप एटले रोमाच जेना एवो ( नराहिवो ) नराधिप एटले श्रेणिक राजा ( पर्याहण ) ते मृनिने प्रदक्षिणा ( काऊण य ) करीने तथा ( सिरसा ) मस्त्वकवडे ( अंभिवदिता ) तेमना चरणने बाँदीने ( अँतिजातो ) अतियात एटले पोताने स्थाने गयो ५९

इँअरो वि गुंणसमिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिँदडविरओ अ ।

विँहंग इव विँप्पमुक्को, विँहेरइ वँसुह विँगँयमोहो तिँ बेमि ॥ ६० ॥

अर्थ—( इँअरो वि ) श्रेणिक राजानी अपेक्षाए इतर-बीजा एटले ते महर्षि पण ( गुणसमिद्धो ) मृनिना सत्तावीश गुणे करीने सहित, तथा ( तिगुत्तिगुत्तो ) मन, वचन अने फाया ए त्रण गुप्तिथी गुप्त, तथा ( तिँदडविरओ अ ) मन, वचन अने कायाना त्रण दडे करीने एटले अशुभ व्यापारे करीने रहित, तथा ( विँहंग इव ) पत्नीनी जेम ( विँप्पमुक्को ) कोइ पण ठेकारे प्रतिवध रहित एटले परिग्रह रहित, तथा अनुक्रमे ( विंगँयमोहो ) मोह रहित एटले मोहनीय कर्मनो चय करवाथी केवळज्ञानवाला थया सता ( वँसुह ) पृथ्वीपर ( विँहेरइ ) विचरवा लाग्या ( तिँ बेमि ) एम इ कहु छु ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जचूस्वामीने कहु ६०

॥ इति विंशतितममध्ययनम् ॥ २० ॥



## अथ समुद्रपालीय नामनुं एकवीशमुं अध्ययन. २१.

वीशमा अध्ययनमा अनाथपणुं कणुं, तेनो विचार विविक्त-एकांत चर्यावडे थइ शके छे, तेथी आ एकवीशमा अध्ययनमा समुद्रपालना दृष्टांते करीने विविक्त चर्या कहे छे.—

चंपाए पालिए नामं, सावए आसि वाणिए । महावीरस्स भंगवओ, सीसे<sup>१</sup> सो उ महप्पणो ॥ १ ॥

अर्थ—(चंपाए) चंपा नगरीमां (पालिए नामं) पालित नामनो (सावए) श्रावक एटले देशविरतिने धारण करतो (वाणिए) वणिक (आसि) हतो. (सो उ) ते (महप्पणो) महात्मा (महावीरस्स) श्रीमहावीर (भगवओ) भगवाननो (सीसे) शिष्य हतो. महावीरस्वामीए तेने प्रतिबोध करी श्रावक कर्यो हतो तेथी तेसनो ते शिष्य कहेवाय छे. १.

निर्गंथे पावयणे, सावए से विकोविए । पोएण वैवहरंते, पिहुंडं नगरंमांगए ॥ २ ॥

अर्थ—(निर्गंथे) साधुना एटले वीतरागना (पावयणे) सिद्धांतमां (विकोविए) अत्यंत पंडित एवो (से) ते (सावए) पालित श्रावक एकदा (पोएण) वहाणवडे (ववहरंते) वेपार करतो सतो (पिहुंडं) पिहुंड नामना (नगरं) नगरने विषे (आगए) आब्यो. चंपा नगरीथी वहाणमां वेसीने वेपारने माटे पिहुंड नगरे आब्यो. २.

पिहुंडे वैवहरंतस्स, वाणिओ देइ धूअरं । तं ससत्तं पंडुगिज्झ, संदेसमहं पैत्थिओ ॥ ३ ॥

अर्थ—( पिडुडे ) पिडुड नगरमां ( बवहरतस्स ) वेपार करता एवा ते पालितने तेना गुणथी रंजन थयेला कोइ ( वाखिमो ) वखिके ( धूअर ) पोतानी पुत्री ( देइ ) आपी-परणावी. ( अह ) त्पारपछी त्या केटलोक बखत रहोने ( ससर्च ) गर्भवती थयेली ( च ) वेणीने ( पशगिज्ज ) साथे लइ ते पालित ] ( सदेसं ) पोताना देश तरफ ( परियमो ) चान्यो ३

अहं पालिअस्स धरणी, समुद्धम्मि पसंवेई । अहं दारए तँहि जांए, समुद्धपालो चिं' नामंए ॥४॥  
 अर्थ—( अह ) त्पारपछी ( पालिअस्स ) पालितनी ( धरणी ) स्त्रीने ( समुद्धम्मि ) समुद्रने निपे ज ( पसवई ) प्रसव ययो. ( अह ) वेथी ( तँहि ) त्यां समुद्रमां ( दारए ) पुत्र ( जाए ) उत्पन्न थये सते ( समुद्धपालो चिं ) समुद्रपाळ एवु ( नामए ) तेनु नाम पाळ्यु ४

खेमेण अंगए चंप, सांअए वाणिए धेर । संवेडुए धेरे तंस्स, दारंए सें सुहोइए ॥ ५ ॥

अर्थ—( वाणिए ) ते वणिक ( साअए ) श्रावक ( खेमेण ) जेस कुशळवाथी ( चप ) चरा नगरीमां ( धरं ) पोताने धेर ( आगए ) आवे सते ( सुहोइए ) सुगने उचित्त एवो ( से ) ते ( दारए ) बाळक-समुद्रपाळ ( तस्स धरे ) ते पालितने पर ( समुद्रए ) वृद्धि पामवा लाग्यो ५

चान्तिरिं कलाओ अं, सिक्खिए नीइंकोविए । जोव्वणेण चं संपंने, सुह्वे पिअदंसणे ॥ ६ ॥

अर्थ—( अ ) तथा ते समुद्रपाल ( नावत्तरि ) चहोतेर ( कलाओ ) कलाओने ( सिखिए ) शीख्यो सतो ( नीह-  
कोविए ) नीतिमां निपुण थयो एटले लोकनीतिं अने घर्मनीतिमां चतुर थयो, ( य ) तथा ( जोव्येण ) युवावस्थाए  
करिने ( सुरुवे ) सारा रूपवाळो अने ( पिअदंसे ) मनोहर दर्शनवाळो ( संपचे ) थयो. ६.

तस्स रूववइं भज्जं, पिआ आणेइ रूविणिं । पासाए कीलेए रस्से, 'देवो दोगुंदगो जंहा ॥ ७ ॥

अर्थ—( तस्स ) ते समुद्रपालो ( पिआ ) पिता ( रूववइं ) रूपवाळी (रूविणिं) रूपिणी नामनी (भज्जं) भार्याने-  
कन्याने समुद्रपाल माटे (आणेइ) लाव्यो अने ते रूपिणी नामनी कन्या साथे समुद्रपालने परणाव्यो पछी ते (रस्से) मनोहर  
( पासाए ) प्रासादने विये ( दोगुंदगो ) दोगुंदक जातिना ( देवो ) देवनी ( जहा ) जेम ( कीलए ) इच्छा प्रमाणे तेणीनी  
साथे क्रीडा करा लाग्यो. ७.

अह अन्नया कयाइ, पासायालोअणे ठिओ । वज्झमंडणसोभागं, वड्झं पासइ वज्झंग ॥ ८ ॥

अर्थ—( अह ) त्दारपछी ( अन्नया ) एकदा ( कयाइ ) कदाचित् ( पासायालोअणे ) प्रासादना मालोकनसां एटले  
गोखसां ( ठिओ ) वेठेला एवा ते समुद्रपाले ( वज्झमंडणसोभागं ) रातुं चंदन अने करवीरना पुष्पनी माला विंगेर  
वध्याना भूषणोथी शोभावेला तथा ( वज्झंगं ) वध्यभूमि तरफ लइ जवाता एक ( वज्झं ) वध्यने-चोरने ( पासइ ) जोयो. ८.  
'त पासिउएण संवेगं, समुद्धपालो इणमब्बवी । अहो असुहार्ण कंममाणं, निज्जाणं पावेगं इमं ॥ ९ ॥

अर्थ—( त ) ते वधने ( पासिऊण ) जतो जोहने ( सवेग ) वैराग्य पामेलो ( समुद्रपालो ) समुद्रपाल ( इण ) आ प्रमाणे ( अन्ववी ) बोल्यो के ( अहो ) अहो ! ( असुहाण ) अशुभ ( कर्मोतो ) कर्मोतो ( इम ) आ ( पावग ) अशुभ ( निष्ठाण ) निर्याण-अवसान एटले उदय केवो आश्चर्यकारक छे ! के जेथी आ विचारो वधने माटे आ प्रमाणे लइ जवाय छे १०

सबुध्दी सो तँहि भयंव, परैम सर्वेगमागओ । अपुच्छड्मापिअरो, पंठवए अणंगारिअ ॥ १० ॥

अर्थ—( सो ) ते समुद्रपाल ( भयव ) भगवान-पूज्य ( तहि ) ते गवाचमां ज ( सबुद्धो ) बोध पाम्या सता तथा ( परम ) अत्यंत ( सवेग ) वैराग्यने ( आगओ ) पाम्या सता ( अम्मापिअरो ) मातापिताने ( आपुच्छ ) पूछीने-तेमनी रजा लइने ( अणंगारिअ ) अनंगारणाने-चारित्रने ( पन्वए ) अर्गीकार करता हवा १०

प्रवज्या लइने तेणे जे रीते आत्माने शिवा आपी तथा जे रीते प्रवृत्ति करी ते कहे छे —

जँहितु संग च महाकिलेस, महतमोह कैसिण भयौवह ।

परिआयधम्म चऽभिरीयइज्जा, वयाणि सीलाणि परीसहे अँ ॥ ११ ॥

अर्थ—ते विचारे छे के—हे आत्मा ! ( महाकिलेस ) महा क्लेशकारक, तथा ( महतमोह ) महामोहवाळा, तथा ( कसिण ) समग्र अथवा कृष्णलेश्यानु कारण होवाथी कृष्ण, तथा ( भयावह ) भयदायक एवा ( संग च ) स्वचनादिक

संबंधने ( जहितु ) तजीने ( परिआयधम्मं च ) पर्याय धर्मने विपे-चारित्रधर्मने विपे ( अभिरोयइज्जा ) तुं रुचिवाळो था, एटले के ( वयाणि ) मूळगुणरूपी पांच महाव्रतोंने विपे, तथा ( सीलाणि ) पिंडविशुद्ध्यादिक उत्तरगुणोरूपी शीलने विपे, ( अ ) तथा ( परीसहे ) चावीश परीपहो सहन करवाने विपे रुचिवाळो था. ११.

त्यारपब्धी जे कुरवानुं, छे ते कहे छे.—

अहिंस सच्चं च अतैणंगं च, तत्तो य बंभं अपरिगहं च ।

पेडिवज्जिआ पंच महव्वयाइं, चरिज्जे धम्मं जिणंदेसिअं विऊं ॥ १२ ॥

अर्थ—( अहिंसा, ( सच्चं च ) सत्य, तथा ( अतैणंगं च ) अचौर्य, तथा ( तत्तो य ) त्यारपब्धी ( बंभं ) ब्रह्मचर्य, ( अपरिगहं च ) तथा अपरिग्रह, ए ( पंच ) पांच ( महव्वयाइं ) महाव्रतोंने ( पेडिवज्जिआ ) अंगीकार करीने हे आत्मा ! ( विऊ ) विद्वान एवो तुं ( जिणंदेसिअं ) जिनेश्वरे कहेला ( धम्मं ) धर्मनुं ( चरिज्ज ) आचरण-सेसन कर. १२.

सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकंपी, खंतिवत्तमे संजयंबंभयारी ।

सार्वज्जजोगं परिवज्जयंतो, चरेज्ज भिक्खू सुंसमाहिइंदिए ॥ १३ ॥

अथ—( सव्वेहिं ) सर्व ( भूएहिं ) प्राणीओने विपे ( दयाणुकंपी ) हितोपदेशरूप भने रचणरूप दयाए करीने

अनुकूपाना स्वभाववाळो, तथा ( एतद्विषयमे ) चाटिए करीने बीजाना दुर्वचनादिकने सहन करनार, तथा ( संजय ) साधुना आचाराने पाळनार, तथा ( बभयारी ) ब्रह्मचर्यने धारण करनार एवो ( भिक्षु ) भिक्षुरूप तु हे आत्मा ! ( सावज्जजोग ) सावध योगने ( परिवज्जयंतो ) वर्जतो-त्याग करतो सतो ( सुसमाहिदिए ) सारी रीते वश करी छे इद्रियो जेणे एवो ( चरेज ) चारित्रमार्गने विषे विचर-विहार कर १३.

कालेण काल विहरिज रट्टे, बलावळ जाणिएथ अर्पणो अ ।

सीहो व संदेण ने सतंसिजा, वयजोग सुच्चा णे असंभमाहुं ॥ १४ ॥

अर्थ—हे आत्मा ! ( कालेण ) पौरुषी-पौरसी आदिक काळे ( काल ) काळने उचित एवी पडिलेहणादिक क्रियाने करीने ( अ ) तथा ( अर्पणो ) पोताना ( बलावळ ) बळावळने एटले उपसर्गादिकने सहन करवापणुं अने नही सहन करवापणु तेने ( जाणिएथ ) जाणीने ( रट्टे ) देशने विषे तथा उपलचणयी ग्रामादिकने विषे ( विहरिज ) तु विचर, जेम समययोगनी हानि न थाय तेम विहार करवो तथा ( सीहो व ) सिहनी जेम ( संदेण ) भयानक शब्दवडे-शब्द सांभलीने ( न संतंसिजा ) नास पामीश नही, तथा ( वयजोग ) अशुभ एवा वचनयोगने ( सुच्चा ) सांभलीने पण ( असंभ ) असंभ्य वचन-अयोग्य वचन ( ए आहु ) बोलीश नही. १४.

त्यारे शु करतु ? ते कहे छे —

उवेहमाणो ऽ परिव्वएज्जा, पिअमपिअं संव तित्तिक्खएज्जा ।

नें सव्वं सव्वत्थंभिरोअइज्जा, नें यीवि पूअं गैरहं च संजए ॥ १५ ॥

अर्थ—( उ ) तु पुनः वली ( उवेहमाणो ) परना कहेला अशुभ वचननी उपेक्षा करता सता तारे ( परिव्वएज्जा ) विचरुं, तथा ( पिअं अप्पिअं ) लोकाना प्रिय के अप्रिय ( संव ) सर्व वचनोने ( तित्तिक्खएज्जा ) सहन करवां, तथा ( सव्व ) सर्व वस्तुने विषे ( सव्वत्थ ) सर्व ठेकाणे ( न अभिरोअइज्जा ) रुचि-इच्छा करवी नहीं. ( यावि ) तथा वली ( पूअं ) लोकानी करेली पूजाने-स्तुतिने ( गरहं च ) अने निदाने ( संजए ) संयमवाला तारे ( न ) इच्छवी नहीं-तेना पर तारे रागद्वेष करवो नहीं. १५.

अहीं कोइने शंका थाय के-भिक्षुने पण आवो अन्यथा भाव होय ? के जेथी आत्माने आ प्रमाणे शिवा आपवी पडे ? ते उपर कहे छे.—

अणोग छंदाँ मिह माणवेहिं, जे भावओ संपकरेइ भिक्खू ।

भंयभेरवा तत्थं उइति भीमा, दिव्वा मणुस्सा अटुवा तिरिच्छा ॥ १६ ॥

अर्थ—( मिह ) आ जगतने विषे ( माणवेहिं ) मनुष्योने ( अणोग ) अनेक ( छंदा ) अभिप्रायो-इच्छाओ थाय छे. के (जे) जे अभिप्रायोने ( भिक्खू ) कर्मने वश रहेलो साधु पण ( भावओ ) भावधी-मनधी ( संपकरेइ ) अत्यंत करे छे.

बन्दी ( तत्प ) ते साधुपणाने विपे ( भयमेरवा ) भय उत्पन्न करवावडे करीने मयकॅर, अने ( भीमा ) अति रौद्र एवा ( दिव्या ) देवसन्धी, ( मणुस्सा ) मनुष्यसन्धी ( अदुवा ) अथवा ( तिरिच्छा ) तिर्यचसन्धी उपसर्गों ( उदति ) उदयनां आये छे—उत्पन्न थाय छे १६

तथा —

परीसहा दुःखिसहा अणेगे, सीदति जर्था बहुकायरा नरा ।

‘से तर्था पत्ते नै वैहिज भिस्वू, सर्गामसीसे ईव नागराया ॥ १७ ॥

अर्थ—( दुःखिसहा ) दुःखे करीने सहन थइ शके तेवा ( अणेगे ) अनेकं ( परीसहा ) परीपहो पण उत्पन्न थाय छे, के ( तथा ) जे उपसर्गों अने परीपहो उत्पन्न थये सते ( बहुकायरा ) घणा कायर ( नरा ) मनुष्यो ( सीदति ) सीदाय छे ण्ठले चारित्र्य पाठचामां शिथिल थाय छे ( से ) हवे ( तत्प ) ते उपसर्ग अने परीपहोने विपे ( पत्ते ) प्राप्त थयेलो अथवा उपसर्गों अने परीपहो प्राप्त थये सते ( भिस्वू ) साधु थयेलो तु ( सर्गामसीसे ) तत्प्राप्तना मोखरामां प्राप्त थयेला ( नागराया इव ) हाथीनी जेम ( न वहिज ) व्यथा पाभीश नहीं—सत्त्वधी चलायमान थइरा नहीं १७

‘सीतोसिणा दसमसा य फांसा, आयकां विविहा फुंसति देह ।

अक्रुओ तर्थाऽहियासएजा, रंयाइ खेवेजै पुरेकडीइ ॥ १८ ॥



अर्थ—( सीतोसिणा ) शीत, उष्ण, ( दंसमसा य ) दंश, मशक, ( फासा ) तृणादिकना स्पर्शों, तथा ( विविहा ) विविध प्रकारना ( आर्यका ) व्याधिओ विगरे सर्व परीपहो ( देहं ) वारा शरीरने ( फुसंति ) स्पर्श करे छे—पीडा उप-  
जावे छे. ( तत्थ ) ते शीतादिक परीपहोने स्पर्श थये सते ( अकुक्कुओ) आक्रंद कर्यो विना ज तारे ( अहियासएजा ) ते परीपहोने सहन करवा. एम करवाथी तुं ( पुरेकडाइं ) पूर्वे करेला ( स्याइं ) कर्मरूपी रजने ( खेवेज ) चय करी  
शकीश. १८.

पहार्थ रंगं च तेहेव दोसं, मोहं च भिक्खू सययं त्रिअंखणो ।

मेरुं व्व वाएणं अंकंपमाणो, पैरीसहे आययुत्ते सहेजा ॥ १९ ॥

अर्थ—( सययं ) निरंतर ( विअंखणो ) विचक्षण एटले तत्तना विचारमां तत्पर एवो ( भिक्खू ) साधु ( रागं च ) रागने ( तेहेव ) तथा ( दोसं ) द्वेषने ( मोहं च ) तथा मोहने ( पहाय ) तजीने ( वाएण ) वायुवडे ( मेरु व्व ) मेरु पर्वतनी जेम परीपहोवडे ( अंकंपमाणो ) नहीं कंपतो सतो तथा ( आययुत्ते ) काचवानी जेम आत्माने एटले इंद्रियोने गुप्त करतो सतो ( परीसहे ) परीपहोने ( सहेजा ) सहन करे छे. १९.

अणुसए नावणए महेसी, न यावि पुंअं गेरिहं च संजए ।

से उंज्जुभावं पैडिवज संजए, निव्वाणमगं विरेए उवेइ ॥ २० ॥

अर्थ—( अणुनए ) अनुभूत एटले अभिमान रहित अने ( नावणए ) नावन्त एटले दीनवा रहित एवा जे ( महेमी ) महर्षि ( पूथ ) पूजानो-स्तुतिनो ( गरिह च ) तथा गर्हानो-निदानो ( न यावि सजए ) सग न ज करे एटले स्तुति अने निदानो प्रसग न करे, अर्थात् साधु पोतानी स्तुति सांमळी हर्ष न करे अने निदा सांमळी दुःख न पामे ( से ) ते ( सजए ) साधु ( उञ्जु भाव ) सरळताने ( पडिबज ) अगीकार करीने ( विरए ) पापथी विराम पाम्या सता ( निव्याणमग ) मोचमार्गने ( उवेइ ) पामे छे २०

वळी ते साधु केना थइने शु करे छे ? ते कहे छे —

अंरइरइसहे पैहीणसथवे, विरए आयाहिए पैहाणव ।

पेरमट्टुपएहिं चिट्टुई, छिन्नसोए अममे अर्किचणे ॥ २१ ॥

अर्थ—( अरइरइसहे ) सयममा अरति अने असयममा रति तेने सहन करनार एटले नाश कर्नार, तथा ( पहीण सथवे ) नाश पाम्यो छे सस्त्व एटले पूर्वानो अने पछीनो गृहस्थ साथेनो परिवय जेनो एवा, तथा ( विरए ) पार्षक्रियाथी निवृत्त थयेला, तथा ( आयाहिए ) आत्मा अने सर्व जीवोने हितकारक, तथा ( पहाणव ) प्रधान एटले संयमवाळा, तथा ( छिन्नसोए ) नाश कर्णो छे शोक अथवा मिथ्यात्वादिक श्रोतस् जेणे एवा, ए ज कारण माटे ( अममे ) ममता रहित अने ए ज कारण माटे ( अर्किचणे ) परिग्रह रहित एवा ते साधु ( परमट्टुपएहिं ) परमार्थना-मोचना स्थानोने विवे ( चिट्टुई ) रहे छे-रहेता हवा २१

विविक्तलयणाणि भङ्ग ताई, निरूवलेवाइँ असंथडाइँ ।

ईंसीहि चिष्ठाइँ महायसेहिं, काथेण फासेज्ज पंरीसहाइँ ॥ २२ ॥

अर्थ—( ताई ) छकाय जीवनी रद्दा करनार ते समुद्रपालित मुनि ( निरूवलेवाइँ ) द्रव्यथी छाया विगरेना लेप रहित अन भावथी राग एटले ममतारूपी लेप रहित, तथा ( असंथडाइँ ) असंस्कृत एटले शालि विगरे बीजना संघट्टा रहित, तथा ( महायसेहिं ) महा यशवाळा ( इसीहिं ) मुनिओए ( चिष्ठाइँ ) सेवेलां एवां ( विविक्तलयणाणि ) विविक्त एटले स्त्री, पशु, पंडक रहित एवां आलय एटले उपाश्रयने ( भङ्ग ) सेवता हवा, तथा ( काथेण ) कायावडे ( परीसहाइँ ) परीपहोने ( फासेज्ज ) स्पर्श एटले सहन करता हवा. २२.

त्यारपछी ते केवा थया ? ते कहे छे.—

सै नाणनाणोवगए महेसी, अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचयं ।

अणुत्तरेणाणधरे जंसंसी, ओभांसईँ सुंरिइ वंतलिवले ॥ २३ ॥

अर्थ—( नाणनाणोवगए ) ज्ञान एटले श्रुतज्ञान, तेणे करीने जे ज्ञान एटले सम्यक् प्रकारे क्रियाना समूहनुं जाणवुं, तेणे करीने सहित अर्थात् श्रुतज्ञान अने क्रियाना ज्ञाने करीने सहित एवा ( स ) ते समुद्रपाल नामना ( महेसी ) महर्षि ( अणुत्तरं ) सर्वोत्तम ( धम्मसंचयं ) धर्मना समूहने एटले बांत्यादिक दश प्रकारना चारित्रधर्मने ( चरिउं ) सेवीने

(अणुचरेनाणधरे) सर्वोत्तम ज्ञान न केवळज्ञान तन धारण करनारा तथा (जससी) यशस्वी थया सता (अतालिक्ले)  
 आकाशने विपे (सूरिए व) सूर्यनी जेम (ओभासई) प्रकाशता हवा-शोभता हवा. २३

हवे उपसहार-समाप्त करवा पूर्वक तेतु ज फळ कहे छे --

दुविह खवेऊण यं पुसुपाव, निरगेणे सब्वओ विप्पमुके ।

तैरित्ता समुद व महाभंवोह, समुद्वर्पालो अपुंणागम गंप्पं वेमि ॥ २४ ॥

अर्थ--(य) तथा (दुविह) घाती अने भवोपग्राहि--अघाती एम वे प्रकारना (पुणपाव) शुभ अने अशुभ  
 प्रकृतिरूप कर्मने (खवेऊण) खपावीने-क्षय करीने (निरगणे) निरगन-गयु छे अगन एटले चालयु जेनाथी एटले  
 समयमा निवळ तथा (सवओ) सर्वथी एटले चाल अने आभ्यतर परिग्रहथी (विप्पमुके) रहित एवा (समुदपालो)  
 समुद्रपाळ मुनि (समुद व) समुद्रनी जेवा (महाभवोह) मोटा स्वर्गादिक भवना समूहने (तरित्ता) तरीने (अपुण्यगम)  
 जेनाथी पाळु आववानु नथी एवा अपुनरागमने एटले भोचने (गए) पाम्या (त्ति वेमि) एम हु कहु छु ए प्रमाणे  
 सुधर्मास्वामीए जंवूस्वामीने कए २४

इति एकविंशमध्ययनम् ॥ २१ ॥

## अथ रथनेमीय नामनुं बावीशमुं अध्ययन. २२

एकवीशमा अध्ययनमां विधिकृचर्या कही, ते धैर्यवंतने सुखेयी पळी शकाय छे, छतां कदाचिक् कोइक प्रकारे मनना परिणाम धर्मथी अष्ट थाय ते वस्वते रथनेमिनी जेम चारित्रने विषे धृति करवी, एम जणाववा माटे आ अध्ययन रच्युं छे. तेनुं आ प्रथम सूत्र छे.—

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि रायाँ महिड्डिए । वसुदेव ति नमिणं, रायलखणंसंजुए ॥ १ ॥

अर्थ—(सोरियपुरम्मि) शौर्यपुर नामना ( नयरे ) नगरमां ( महिड्डिए ) मोटी ऋद्धिवाळा तथा ( रायलखणसंजुए ) हाथ पगना तळीयामां चक्र, स्वस्तिक, अंकुश विगेरे अथवा औदार्य, धैर्य, गांभीर्य विगेरे राजानां लक्षणोवडे युक्त ( वसुदेव ति नमिणं ) वसुदेव एवा नामे ( राया ) राजा (आसि) हता. जो के शौर्यपुरमां समुद्रविजय विगेरे दश दशार्हो, दश भाइओ हता, तेमां वसुदेव सौथी नाना हता, तोपण वसुदेवना पुत्र कृष्ण थया छे तेथी अहीं वसुदेवनुं वर्णन कर्तुं छे. १- तस्स भज्जा दुंवे आँसि, रोहिणी देवई तहा । तांसिं दोणहं पि 'दो पुता, अँड्डुा रामकेसवा ॥२॥

अर्थ—( तस्स ) ते वसुदेवने ( रोहिणी ) रोहिणी नामनी (तहा) तथा (देवई) देवकी नामनी ( दुवे ) ने ( भज्जा ) भार्या ( आसि ) हती. जो के वसुदेवने बहोतेर हजार स्त्रीओ हती. तोपण अहीं नेनी ज जरु होवाथी ने ज लखी छे. •

( तासि ) ते ( दोएह पि ) नन्ने भायाश्रोने ( अइह्ठा ) अत्यत इए-यल्लभ एवा ( रामकेसना ) बल्लराम अने केशव-कृष्ण नामना (दो पुत्ता) वे पुत्तो धया राम अने केशव प्रथम उत्पन्न थया हत्ता तथा श्रीनेमिनाथना चिवाहाहिक कार्यामां तेमनी जरु छे तेथी तेमने प्रथम लरया छे २

सौरियपुराभि नंयरे, आसि राया महिद्विष्ट । समुद्रविजए नाम, रायलम्लणसजुए ॥ ३ ॥

अर्थ—( सौरियपुराभि ) शौर्यपुर नामना ( नयरे ) नगरमां ( महिद्विष्ट ) मोटी ऋद्विवाळा अने ( रायलम्लणसजुए ) राजानां लक्षणोए करीने युक्त एया ( समुद्रविजए नाम ) समुद्रविजय नामना ( राया ) राजा ( आसि ) हत्ता अहां वसुदेव अने समुद्रविजय सांथे ज रहेता हत्ता एतु जणाववा माट फरीधी शौर्यपुर लरयु छे ३.

तंस भञ्जा सिंवा नाम, तीसे पुत्ते मेहायसे । भयव अरिट्टनेमि ति, लोगंनाहे दमीसरे ॥ ४ ॥

अर्थ—( तस ) ते समुद्रविजयने ( मिना नाम ) शिना नामनी ( भञ्जा ) मार्या हती ( तीसे ) ते शिवादेवीना ( पुत्ते ) पुत्र ( भयव ) भगवान ( अरिट्टनेमि ति ) श्रीअरिट्टनेमि एवा नामना ( महायसे ) भद्रा यशवाळा, ( लागनाहे ) त्रय लोकना नाथ अत ( दमीसरे ) मुनिश्रोना स्वामी हत्ता ४ ( हवे पत्री थयाना होयस्पी वे अपेचाए दमीश्वरनु विरापण आप्यु छे )

अहां प्रसंगने लीथे श्रीनेमिनाथनु चरित सवेपथी कहे छे —

आ ज भरतेश्वरमां अचळपुर नामतुं पुर छे. तेमां श्रीविक्रमधन नामे राजा हतो. तेने धारिणी नामनी राणी हती. तेमने धन नामनो पुत्र हतो. ते सर्व कळाना समूहने पामीने अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो, त्यारे ते कुसुमपुरना राजा सिंहनी धनवती नामनी कन्याने परण्यो. लक्ष्मीनी साथे विष्णुनी जेम ते धनवतीनी साथे क्रीडा करतो ते धनकुमार एकदा श्रीष्म ऋतुमां मध्याह्न समये क्रीडा करवा माटे उद्यानमां गयो. त्यां तेणे पृथ्वीपर मूर्च्छित थयला एक मुनिने जोया. ते मुनिनुं ताळवुं तृपाथी सुकाइ गयुं हतुं, तपवडे तेनुं शरीर अति कृश हतुं, अने गुणवडे तो ते शांतरसना समुद्र हता. तेमनी आवी स्थिति जोइ ते वस्त्रे दंपतीए तेमनी पासे जइ शीतळ उपचार करी शीघ्रपणे तेमने स्वस्थ कर्यो. पळी विनयथी मुनिने वंदना करी धनकुमार तेमने पूछयुं के—“ हे भगवान् ! आपनी आवी अवस्था केम थइ ? ” मुनिए जवाब आप्यो के—“ हुं मुनिचंद्र नामनो साधु छुं. मोटा गच्छनी साथे विहार करतां सार्थथी अष्ट थयो, तेथी आ वनमां दिशा नहीं स्रस्रवाथी आमतेम भ्रमण करवा लाग्यो. अनुक्रमे शुधा अने तृपाथी पीडा पाम्यो, चालतां चालतां थाकी गयो, अने आ श्रीष्मः ऋतुना तापथी अकळाइ गयो, तेथी अहां मूर्च्छा आववाथी पडी गयो हतो. तेलामां तमारा आववाथी, ने तमे करेला उपचारथी हुं चेतना पाम्यो छुं. तेथी धर्ममां सहाय आपनारा तमने धर्मलाभ हो. वळी हे महादुभाव ! जेम प्रतिमा विना देवालय शोभतुं नथी, तेम धर्म विना आ मनुष्यभव शोभतो नथी, तेथी बुद्धिमान पुरुषोए निरंतर धर्ममां उद्यम करवो योग्य छे. ” आ प्रमाणे कहीने मुनिए ते दंपतीनी पासे समकित सहित श्रावकधर्मनो उपदेश आप्यो. ते सांभळी प्रतिबोध पामी ते वस्त्रे ते मुनि पासे श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. पळी मुनिने निमंत्रण करी पोताने घेर लइ जइ तेमने अन्न पाणी

बहोरान्या, अने धर्म शीखरा मांटे मुनिने थोडा दिवस त्यां ज राख्या मुनिए पण कंटलाक दिवस त्यां रही तेमने धर्ममां हट करी अन्यत्र विहार कर्यो

ते दपती पण परस्परना प्रेमनी जेम अउडपणे श्राद्धधर्मनु पालन करवा लाग्या अनुक्रमे ते धनकुमारने तेना पिताए राज्यपर स्थापन कर्यो, एटले ते धनराजा नीतिथी राज्यनु पालन करतो श्रावकधर्मनु सेवन करवा लाग्यो एकदा यमुधर नामना मुनि त्यां पधार्यो तेमने धनराजा पोतानी धनवती प्रिया सहित वांदावा गयो विधिपूर्वक मुनिने वांदा तेमना मुदथी सत्सारसमुद्रेने तरवामां नाव समान धर्मदेशना सांभळी ते राजा सत्सार्थी विरक्त थयो एटले तेखे पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी पोतानी प्रिया सहित ते ज गुरुनी पासे दीक्षा ग्रहण करी अनुक्रमे शास्त्रनो अभ्यास करी धनराजापि गीतार्थ थया. पछी आचार्यपद प्राप्त करी धर्मदेशनावडे भव्य प्राणीओनो उपकार करी छेवट अनशन ग्रहण करी ते धनराजापि धनवती सार्धो सहित काळधर्म पामी सौधर्म देवलोकमां इद्रना सामानिक देव थया

आ ज भरतघेजमां वैताढ्य पर्वतनी उत्तरश्रेणिने विपे सूरतेज नामनु नगर छे तेमां सूर नामे विधाधर राजा हतो तेने चियुन्मती नामनो प्रिया हती धननो जीव सौधर्ममार्थी चवीने विद्युन्मतीनी कुचिमा श्रवतयो पछी समय पूर्ण थयो त्यारे ते राणीए शुभ लक्षणवाळो पुत्र प्रसव्यो राजाए महोत्सवपूर्वक तेनु चित्रगति नाम पाड्यु अनुक्रमे वृद्धि पामतो ते कुमार गुरु पासेथी समग्र कळाओने ग्रहण करी युवावस्थाने पाम्यो

हवे ते ज वैताढ्य पर्वत उपर दक्षिण श्रेणिमां शिवमंदिर नामनु नगर छे तेमां अनगस्सिह नामनो राजा हतो.



तेने चंद्रनी प्रभा जेवा उज्वळ गुणवाळी शशिप्रभा नामनी प्रिया हती. तेणीनी कुचिमां धनवतीनो जीव स्वर्गधी चवीने अवतर्यो. अनुक्रमे शशिप्रभाए उत्तम रूपवाळी पुत्रीने जन्म आप्यो. तेना पिताए तेनुं रत्नवती नाम पाड्यु. अनुक्रमे वृद्धि पामती ते कन्या समग्र कळामां निपुण थइ युवावस्थाने पामी. एकदा राजाए कोइ ज्ञानी मुनिने पूछुं के—“आ मारी पुत्रीनो पति कोण थशे ?” मुनिए कहं के—“हे राजा ! जे तारा हाथमांथी दिव्य खड्गने हरण करी लेशे, तथा जेना उपर नित्यचैत्यने विषे पुष्पवृष्टि थशे, ते नररत्न तमारी कन्याने परणथे.” ते सांभळी राजाए विचार्युं के—“जे मारा हाथमांथी खड्गने खुंचवी ले तेवो महा बळवान मारो जमाइ थशे.” एम विचारीने ते पोताना मनमां घणो हर्षे पाम्यो.

आज भरतक्षेत्रने विषे चक्रपुर नामनुं नगर छे. तेमां सुग्रीव नामे राजा हतो. तेने यशस्विनी अने भद्रा नामनी बे राणीओ हती. तेमां पहेली राणीने सुमित्र नामे पुत्र थयो, ते जैनधर्ममां रक्त, गुणवान अने सज्जनोरूपी कमळोने हर्षे आपवामां सूर्यनी जेवो सज्ज-तैयार हतो. बीजी राणीने पद्म नामनो पुत्र थयो, ते कपटनुं घर अने गुण रहित हतो. ए-कदा भद्राए विचार्युं के—“ज्यां सुधी आ सुमित्र हयात छे, त्यां सुधी मारा पुत्रने स्वप्नमां पण राज्य मळनुं दुर्लभ छे.” एम विचारी तेणीए गुप्त रीते सुमित्रने उग्र विष आप्युं. तेथी सुमित्र मूर्छी पाम्यो. ते जोइ राजा अत्यंत व्याकुळ थयो अने तत्काल मंत्रादिकवडे तेना उपाय कराववा लाग्यो. परंतु कुमारने कोइपण रीते जरा पण चेतना आवी नहीं, त्यारे सर्व परि-वार अने पुरना जनो सहित राजा पुत्रना गुणोने संभारी संभारीने शोक करवा लाग्यो. ‘आ कुमारने भद्राए विष आप्युं छे’ एम लोकोना जाणवामां आव्युं, तेथी लोको तेणीनी निंदा करवा लाग्या. ते जाणी भद्रा त्यांथी नाशी गइ. ‘लसणनी

गधनी नम पापीनु पाप छानु रही शरुतु नयी ।

आ अयमर देसयोग ते चित्रगति विद्याधर रात्रपुत्र आकाशमार्गं त्याधी नीकळ्यो तेखे रात्रा अन लोकाने विलाप करता जाइ, विपतु दृत्तल चाखी, तेमनी पासे आधी मत्रित जळ्याडे ते सुमित्रपुमाने अभिपेक कयों, तेथी तरकाळ सुमित्र घेतना पाम्यो अन रात्रादिक मर्मन शोरातर चोद ' आ धयु शु छे ? ' एम तेणे पूछ्यु, त्यारे राजाए म्हु रु— " हे वरत ! तारी विमाताए तने विप आऱ्यु हतु, ते आ निःकारण वयुए शमन कयुं छे " ते सांभळी सुमित्रे ते विद्याधरकुमारने हाथ चोडी म्हु के— " हे माइ ! तमाह नाम अन वश फहीने अमारा कान पत्रित्र फतो कारण के तमारी जेवा उपकारी तु नामादिक मर्मज्यु होय तो तेथी पथ वणु पुण्य प्राप्त थाय छे " ते सांभळी चित्रगतिनी साथे न आवेला तेना मित्रे चित्रगतिनु नाम, उळ विंगेरे म्हु, ते सांभळी सुमित्र हर्ष पापी बोल्यो के— " अहो ! विप अने विपना आपनारे मारा उपर यणो उपकार कर्था, के नधी वादद्या विनाना अमृतना वरसादनी जेम मने अरुस्मान् तमारा दर्शन थयां. नीवित्ते आप नार तथा वाऱ्मृत्युधी उत्पन्न थती दुर्गतिधी रक्षण करनार तमारो हु शी रीते प्रत्युपकार करी शकू ? चगतना लोकाने मे घनो शो प्रत्युपकार करी शके ? " आयां तना यानो सांभळी चित्रगति तेना गुणोधी आनंद पाम्यो, पक्षी मित्रपयाने पामेला ते सुमित्र पाते विद्याधरकुमारे पोताना नगर तरफ जवानी रत्रा मागी त्यां सुमित्रे तेने कसु के— " हे मित्र ! सुपयशा नामना केऱळी भगवान विहारना क्रमधी आच काल अर्धा पधारवाना छे, तेमन वदना करीने पक्षी तमे चाओ, एम हु इच्छु छु " आ प्रमाणे सुमित्रना रुदेयाधी चित्रगति त्यां रोकायो

त्रीजे दिवसे सुमित्र अने चित्रगति उद्यानमां गया. त्यां देवोथी परिवरेला अने सुवर्णकमलपर बंठेला ते केवळीने जोया. तेमने हर्षथी बंदना करी ते वने मित्रो तेमनी पासे बंठा. सुग्रीव राजा पण ते वृत्तांत सांभळी हर्षथी परिवार अने पुरजनो सहित मुनिनी पासे आन्वयो अने विधिपूर्वक केवळीने बंदना करी योग्य स्थाने बंठो. ते वसते जगतने हितकारक एवा मुनीश्वरे तेमने धर्मोपदेश आप्यो. ते सांभळी आनंद पामेला चित्रगतिए गुरुने कळुं के—“ हे भगवान ! आ मिठना प्रसादथी आपनी धर्मदेशना सांभळी हुं प्रतिबोध पाम्यो छुं, तेथी हे प्रभु ! आपनी पासे समकित सहित श्रावकधर्मने हुं ग्रहण करं छुं. ” एम कही धर्ममां वीर्यना उल्लासवाळा अने पापकर्मथी विराम पामेला ते विद्याधरकुमारै देशविरति अंगी-कार करी.

त्यारपळी सुग्रीव राजाए हाथ जोडी मुनीश्वरने पूछ्युं के—“ हे प्रभु ! मारा पुत्रने विप आपनि ते मारी राणी क्यां गड ? ” मुनि बोल्या के—“ ते अहीथी नाशीने एक अरण्यमां गड, त्यां चोरोए तेनां माभरणो उतारी लड तेने पल्ली-पतिने सोंपी, पल्लीपतिए धन लड कोइ वेपारीने वेचाती आपी. कोइ वखत लाग मळवाथी वेपारी पासेथी नाशीने ते अरण्यमां गड, त्यां दावानळ वडे वळीने पहेली नरके गड. ‘ पापीनी सद्गति क्यांथी होय ? ’ पळी पहेली नरकमांथी नीक-ळीने ते कोइक चंडाळनी सी थशे. त्यां सपत्नी साथे कजीओ थतां सपत्नीथी हयाइने त्रीजी नरकमां जशे. त्यांथी नीक-ळीने ते तिर्यच गतिमां अनेक दुःखो पामशे. ” आ प्रमाणे सांभळी वैराग्य पामेला राजाए गुरुने कळुं के—“ जेने माटे तेथीए आबुं कृत्य कर्युं, ते तेथीनो पुत्र तो अहीज छे, परंतु ते पोते ज नरकमां गड, तो आवा असार संसारने धिकार छे. ”

आ प्रमाणे कही ते राणाए सुमित्रने राज्य सोंपी ते ज केवळीनी पाले दीक्षा ग्रहण करी पळी सुमित्र मित्रसहित पोताना नगरमां गयो, अने पोताना नाना भाइ पद्मने केटलाक गाम आप्या परतु ते निर्बुद्धि एकलो कर्पाइ पण जतो रलो पळी एकदा चित्रगति विद्याधरकुमार सुमित्रराजानी रजा लइ पोताना नगरमा गयो परतु मित्रनी जेम धर्मकार्येने ते कदापि विसरतो नहोतो

एकदा सुमित्रनी वंहेन के जे फालिंग देशना राजानी प्रिया हर्ता, तेने अनगसिंहनो पुत्र अने रत्नवर्तनीनो भाइ कमळ हरी गयो ते सांभळीने सुमित्र राजा व्याकुळ थयो ते दृचात विद्याधरना मृत्युधी चित्रगतिना जाणवामा आव्यो, त्यार ते बोळ्यो के—“ मारा मित्रनी वंहेने हु शीघ्रपणे शाधीने लइ आवीश ” पळी विद्याना प्रभावधी तेर्याने कमळे हरण करी छे एम जाणी ते महा वळ्यान चित्रगति तत्काळ शिवमंदिर पुरमां गयो त्यां तेंणे कमळनी साथे विग्रह करी तेनो निग्रह कर्यो ते जाणी कमळनो पिता अनगसिंह क्रोध पापी सिंहनी जेम चित्रगति उपर धस्यो वनेनु परस्पर भयकर युद्ध थयु तेमां चित्रगतिने दुर्जय जाणी अनगसिंह पोताना दिव्य सज्जतु स्मरण वर्युं, एटले तरत ज ज्वाळानी श्रेण्णिधी व्याप्त अने शत्रुना मदनी नाश करनार देवतु आपेलु एङ्गरत्न तेना हाथमां प्राप्त थयु पळी अनगसिंह चित्रगतिने कटु के—“ ह मूर्ख ! शामांटे फोगट मरवा इच्छे छे ? अहीथी जतो रहे नही तो आ एङ्गधी हमणां ज तु मरणे शरण थइश ” ते सांभळी चित्रगति बोळ्यो के—“ आ लोढाना एङ्गधी तु जे मद करे छे तेच प्रगटपणे तारु वळीनपणु घरने छे ” ए प्रमाणे कही तेणे विद्याधी तत्काळ तमस्काय जेवु गाठ अधकार विडुब्बुं, तेधी क्रोडपण मनुष्य पोताना हाथमां रहेली वस्तुने

पण जोइ शकतो नहोतो. आवा गाढ अंधकारमां ते चित्रगति तत्काळ अनंगसिंह पासे जइ तेना हाथमांथी ते खड्ड खुंचवी लइ तथा सुमित्रनी वहेनने लइ जतो रलो. पछी एक चणवारमां अंधकारनो नाश थयो, ते वखते अनंगसिंह पोताना हाथमां खड्डारत्न जोयुं नही, तेम ज पासे रहेला शत्रुने पण जोयो नही. तेथी ते चणवार खेद करवा लाग्यो, तेटलामां ज्ञानीनु वचन याद आववाथी ते संतुष्ट थयो अने 'आनी वधारे खात्री शाश्वत चैत्यमां थयो' एम विचारी अनंगसिंह पोताने स्थाने गयो.

चित्रगतिए सुमित्रने असंड शीलयाळी तेनी वहेन सोंपी. ते ज वखते वहेनना हरणना दुःखधी विरक्त थयेला सुमित्रे पोताना पुत्रने राज्य सोंपी सुयशा नामना सुनि पासे दीक्षा ग्रहण करी. चित्रगति पोताने स्थाने गयो.

हवे सुमित्रराजपि कांइक न्यून नव पूर्वो अभ्यास करी गुरुनी आज्ञाथी एकाकी विहार करता मगध देशमां गया. त्यां कोइ गामनी वहार ते कायोत्सर्गे रखा. तेवामां त्यां तेमनो सापत्न भाइ पत्र आव्यो. तेणे सुनिने ओळखी क्रोध पामी तरत ज तेना हृदयमां तीव्रण वाण मायु. परंतु सुनिए तेनापर जरापण क्रोध नहीं करतां विचार्युं के—“मारो ज आ दोष छे के जेथी ते वखते आ मारा भाइने मे राज्य आप्युं नहीं, तेथी हमणां हुं आने तथा बीजा सर्व प्राणीओने खमायुं छुं.” आ प्रमाणे विचारी अनशन ग्रहण करी ते सुमित्रराजपि शुभ ध्यानधी मरण पामी ब्रह्मलोक नामना पांचमा देवलोकमां इंद्रनो सामानिक देव थयो, अने पत्र ते ज रात्रे सर्पंडशधी मरण पामी तमत्तमा नामनी सातमी नरके गयो. चित्रगति सुमित्रना मरणधी अत्यंत शोकातुर थयो.

एकदा चित्रगति यात्रामहोत्सव करमा सिद्धापत्तनमां गयो त्यां बीजा पण पणा विघाधरो एकठा यया हता ते वखते अनगमिंह पण पोतानी कया रत्नघती महित आव्यो त्यां चित्रगति भक्तियी चिनप्रतिमानी पूजा करी स्तुति करवा ला ग्यो. ते वरुते सुमित देन पण मित्रने जोवा माटे त्यां आव्यो अने चित्रगतिना मस्तकर तेणे विचिन पुण्यानी दृष्टि करी. ते जोइ अनगसिंहे तेने पोतानी पुत्रीनो थनार पति जाण्यो. ते वखते सुमित देवे पण प्रत्यक्ष थह ' मने तु ओळखे छे ? एम चित्रगतिने पूछ्यु. त्यारे ' तमे महर्दिक देव छो ' एम चित्रगति पोच्यो, त्यारे तेनी ओळखाणने माटे देवे पोतानु पूर्व भयनु स्वरूप घनाव्यु तरत न आनदथी तेने आलिंगन करी चित्रगतिए कहु के—“ हे महाभागवान ! तमारा प्रसादथी न मन आ धर्म प्राप्त थयो छे ” देवे कहु—“ ते वरुते मारु विप उतारी मने जीवित आपवाथी आ देवनी लक्ष्मी पण तमे न मने आपी छे, नहीं ता ते ज वखते मारु कुमरण थयाथी मारी आ गति क्याथी थात ? ” आ प्रमाणे परस्परना उपकारोने कहेता ते बन्नेने जोइ गुरचकी विगेरे सर्व विघाधरो हर्ष पाभ्या

ते वरुते चित्रगति रत्नघतीना नेत्रमार्गे थरने तेणीना हृदयमां पेठो अने तेनी स्पर्थाथी न कामदेवे पण त्यां ज पोतानु स्थान कर्युं फामग्रहथी व्याकुळ थयेली तेणीए तत्काळ लज्जालुपी वखनो त्याग करी विविध प्रकारनी चेष्टावड पोता नो भाव प्रगट थर्या तेणीने कामातुर जोइ अनगसिंहे विचार्युं के—“ आ महा मनगळ्याए मारा खड्गनी जेम आ मारी पुत्रीनु मन पण हरण कर्युं छे, तेथी आने अहीं ज हु मारी कया आपु फोगट काळचेप शा माटे करवो ? परतु आ धर्मने स्थाने आनु व्यावहारिक कार्य करतु योग्य नथी ” ए प्रमाणे विचारी ते पोताने धेर गयो चित्रगति पण मित्रदेवने नि

दाय करी पिता सहित पोताने घेर गयो.

पछी अनंगसिंहे पोतानी पुत्री आपवा माटे पोताना मंत्रीने मोकल्यो. तेणे छरचक्री पासे जइ प्रणाम पूर्वक कथुं के—  
 “ हे स्वामी ! आ चित्रगति अने मारा स्वामीनी पुत्री रत्नवती ए बन्ने अधिक गुणवान छे, तेथी ते बन्नेना परस्पर संबंध-  
 थी ते आनंद पावो. ” ते सांभळी छरचक्रीए ते अंगीकार कर्तुं. पछी मोटा उत्सवथी ते बन्नेना विवाह थया. चित्रगति ते-  
 ग्नीनी साथे यथावसरे धर्म अने सांसारिक सुख भोगववा लाग्यो, एकदा छरराजा चित्रगतिने राज्य सोंपी चारित्र ग्रहण  
 करी अनुक्रमे मोक्षे गया.

त्यारपछी आश्चर्यकारक विद्या अने बळनी समृद्धिवाळा चित्रगति राजाए चिरकाळ सुधी विद्याधरचक्रीनुं पद अनु-  
 भव्युं. एकदा पोताना सामंत राजाना चे पुत्रो राज्यने माटे परस्पर युद्ध करीने मरण पाव्या, ते जोइ चित्रगतिने परम वैराग्य  
 थयो. तेथी पोताना पुत्रने राज्य सोंपी ते चित्रगति राजाए प्रिया सहित दमचर नामना मुनि पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी.  
 अनुक्रमे चिरकाळ सुधी विहार करी छेवट अनशनवडे काळ करी रत्नवती सहित ते चोथा देवलाकमां देव थया.

पश्चिम महाविदेह चैत्रमां पत्र नामनी विजयमां सिंहपुर नामे पुर छे. तेमां हरिनंदी नामे राजा हतो. तेने यथार्थ  
 नामवाळी प्रियदर्शना नामनी राणी हती. तेनी कुचिमां चित्रगतिनो जीव स्वर्गथी चवीने उतयो. साणनी पृथ्वी रत्नने  
 प्रसवे तेम तेणीए समय पूर्ण थये पुत्र प्रसव्यो, तेनुं नाम राजाए अपराजित पाड्युं. अनुक्रमे श्रद्धि पामतो ते कुमार समग्र  
 कळाने ग्रहण करी घुवावस्था पाव्यो. तेने सचिवनो पुत्र विमलबोध नामनो मित्र हतो. एकदा ते बन्ने कुमारोनुं वक्रगति-

वाळा अश्वं हरण कर्युं, तेथी तंश्रो एक माटा वनमां आवी पर्वोच्या त्या अपराजित कुमार मंत्रीपुत्रने कहु के-“ आपणे  
 अश्वथी हरण करेला अहीं आव्या ते ठीक थयु, केमके आपणे पितानी आज्ञाने आधीन होवाथी तेमनी आज्ञा विना बहार  
 जइने आपणे देशान्तर जोइ शकत नहीं अने तेओ आपणी उपरना प्रेमथी आपणने आज्ञा आपत नहीं हवे तो आपणा मातपिता  
 आपणा विरहने सहेने सहन करशे न, तेथी आपणे हवे घेर नहीं जतां पृथ्वीपर फरीने कौतुक जोशु ” ते सांभळी मंत्रीपुत्रने तेना  
 मतने समति आपी तेटलामां ‘ रक्षण करो रचण करो ’ एवीं वाणी बोलतो एक पुरुष त्या आव्यो मयभीत थयेला  
 तेने रात्रकुमारे ‘ तु कोइथी भय पामशि नहीं ’ एम कहु, तेटलामां त्यां हाथमां खड्ग धारण करनार केटलाक योद्धाओ  
 आव्या तेओ बोल्या के-“ आ अमारा नगरनो चोर छे, तेने अमे हणशु, माटे हे पथिको ! तमे अहीथी  
 चान्या जाओ ” ते सांभळी कुमारे कहु के-“ मारा अश्रितने हणवा इद्र पण शक्तिमान नथी,  
 तो नीतानी शक्ति ययाथी होय ? ” आतु कुमारतु वचन सांभळी ते सुभटो तेने ज मारवा दोड्या एटले कुमारे खड्ग  
 तेंची ते सर्वने नसाडी मूक्या तेओए जइ पोताना स्वामी कोशळा नगरीना राजाने ते वृचात कसो. त्यारे रात्राए पोतानु  
 समग्र सैन्य मोकब्यु तेनो पण कुमारे पराजय कर्यो त्पारपथी राजा चतुरग सैन्य सहित आव्यो, त्यारे कुमारे मनी  
 पुत्रने ते चोर सोंप्यो अने पोत शुद्ध करवा तैयार थयो पथी एक हाथीना दांतपर पग दइ तेनापर चडी तेना मावतने  
 हथी ते कुमार मयकर पुद्ध करवा लाग्यो ते वखते ते राजाना कोइ मंत्रीए ते कुमारने प्रथम जोयेलो होवाथी ओळखीने  
 राजान कहु, त्यारे रात्राए सैन्यने युद्धथी निवारी इमारने कहुं के-“ अहो वत्स ! शु तु मारा मित्र हरिनदि



राजानो पुत्र छे ? हे वीर ! आवा पराक्रमथी तें तारा पिताने लजव्यो नथी. तुं आजें मारो अतिथि थयो ते सारुं थयुं अने तने आजें में जोयो ते पण घणुं सारुं थयुं. ” आ प्रमाणे कही पोताना हाथीपर कुमारने बेसाडी राजाए तेने आलिगन कर्तुं. पछी मंत्रीपुत्र सहित तेने पोताने घेर लइ जइ पोतानी कनकमाला नामनी पुत्रीने तेनी साथे परणावी. त्यां ते केटलाक दिवस सुखे रह्यो.

एकदा कुमार भित्रसहित प्रयाणमां विघ्नना भयथी राजानी रजा लीधा विना ज रात्रिने समये त्यांथी नीकळी गयो. जतां जतां एक मोटा अरण्यमां ते आव्यो. तेटलामां तेणे ‘ हा ! हा ! हा ! आ पृथ्वी वीरपुरुष रहित ज छे ’ एम करुणस्वरवाळें रुदन सांभळ्युं. तेथी ते वीरकुमार शब्दने अनुसारे ते तरफ गयो. आगळ जतां तेणे एक जाज्वल्यमान आग्निना कुडनी पासं रहेली कोइ स्त्रीने तथा तेनी पासं खड्ग खेंचीने उभेला एक पुरुषने जोयो. ते कुमारने जोइ ते स्त्री बोली के— “ जो अहीं कोइपण वीरपुरुष होय तो ते आ अथम विद्याधरथी माहं रक्षण करो. ” ते सांभळी कुमारे तेनी पासं जइ कळुं के— “ अरे दुष्ट गर्ववाळा ! युद्धने माटे तैयार था. अबळा उपर बळनो गर्व शुं करे छे ? ” ते सांभळी ते विद्याधर बोल्यो के— “ तुं पण परलोकमां आ स्त्रीनो सथवारो था. ” एम बोली उद्धत एवो ते युद्ध करवा तैयार थयो. प्रथम ते बने वीरोए चिरकाळ सुधी खड्गवडे युद्ध कर्तुं. पछी बाहुयुद्ध कर्तुं. तेमां ते विद्याधरे ते कुमारने नागपाशवडे बांध्यो, तेने कुमारे जीर्ण रज्जुने हाथीनी जेम तत्काळ तोडी नांख्या. पछी विद्याधरे अपराजित उपर विद्यामंत्रित शस्त्रोवडे घणा प्रहारो कर्तया. परठ पुण्यशाळी ते कुमारने ते प्रहारो कांइपण करी शक्या नहीं. छेवट सूर्योदय वखते कुमारे विद्याधरना मस्तकपर

बदना प्रहार कर्यो, तैषी तन्काठ ते मूर्खित धर पृथ्वीपर पढंगो कुमारे तेने दरस्य करी करी युद्ध करवा कलु, ते वरते ते खेपर शोच्यो के—“ हे महाशुत्र ! में मने चीती लीघो ते ठीक कर्युं छे हे भित्र ! मारा वस्त्रनी गठि मणि अगे मूळिका वधिली छे तेमा मयिना जळगडे मूळिकाने पपीने मारा प्रहारपर लगाड. ” ते सांमळी कुमारे ते प्रमाणे कर्युं, एटले ते खेपर माचो धपो पछी अपराधितना पूछ्माथी ते विघाधरे पोतानु वृत्तत आ प्रमाणे कलु —

आ कन्या अमृतसेन नामना विघाधराराजानी पुत्री छे, तेनु नाम रत्नमाळा छे, तेने कोद शानीए कलु हतु के— “ तारो मर्तो अपराधित धरा ' त्यारपछी एकदा में तेना विवाह माटे प्रार्थना करी, त्यारं तैशीण मने कलु के—“ मारा भर्तोर अपराधित धरो अथवा मारा देहने अग्नि बाळरो. ” ते सांमळी मने तेनापर क्रोध रळ्यो हु श्रियेण नामना विघाधर राजानो खूरकात नामनो पुत्र हु पछी में आने माटे यहेने घणी हु साध्य विघाधरो साथी, अने आनी पथे प्रकारे याचना करी, परतु तैशीए मारु माय राळ्युं नहीं त्यारे ' आनी अप्रिदाहनी प्रकिता पूर्णे माओ ' एम धारीने क्रोधपी आने अही लामी अग्निमा नांलग तैपार धयो, तेजामां आना अने मारा पुण्यनी प्रेरणाधो तमे अही आवी पळोच्या अने मारायी अ नु रचण कर्युं, तेम ज श्रीहत्याने लीधे थती दुर्गतियी मारु पण रचण कर्युं परतु हे परोपकारी ! तमे कोण छो ? ते यहे ” आ प्रमाणे तेना पूछ्माथी मथीपुत्र ते राजकुमारु नाम यिगेरे कलु त सांमळी रत्नमाळा चिचमां अत्या आनंद पासी अने कामदेवना बाएना निपयने पासी, अर्थव् कामातुर धर तेजामां रत्नमाळाना मातपिता पण तैशीने शोषता शोषता

त्यां आद्या, अने तेमना पृच्छवार्थी मंत्रीपुत्रे तेमने सर्व वृत्तांत व्हो. ते सांभळी अमृतसेन राजा अने तेनी राणी हर्षे पाम्या अने तरत ज तेमणे पोतानी पुत्री राजकुमारने परयावी. पछी कुमारना कहेवाथी राजाए खरकांतने अभयदान आप्युं. खरकति पण ते मणि अने मूलिका तथा त्रेप बदलवानी गुटिकाओ आग्रहथी राजकुमारने आपवा मांडी, परंतु ते निःस्पृह कुमारे कांई पण ली.धुं नहीं, त्यारे तेणे ते सर्व वस्तु मंत्रीपुत्रने आपी. पछी कुमारे अमृतसेनने कहुं के—“ हुं मारा नगरमां जाउं त्यार आ तमारी पुत्रीने लावजो.” एम कही कुमार त्यांथी आगळ चाल्यो, अने कुमारसुं स्मरण करता ते खेचरो पोतपोताने स्थाने गया.

आगळ चालतां अपराजितकुमार एक मोटा अरएयमां गया. त्यां तृपातुर थवाथी तेने आम्रवृक्षनी नीचे बेसाडी मंत्रीपुत्र जळ लेवा गयो. थोडीवारें मंत्रीपुत्र जळ लहने पाळो आव्यो, त्यारे ते स्थाने ते कुमारने जोयो नहीं, तेथी अत्यंत शोकातुर थइ तेने चोतरफ शोधवा लाग्यो, परंतु तेनो पत्तो नहीं लागवाथी ते मंत्रीपुत्र शोकथी मूर्खा पाम्यो. थोडीवारें सावधान थइ अत्यंत विलाप करी कांईक धैर्यने पकडी ते मंत्रीपुत्र फरीथी कुमारने शोधवा लाग्यो. अनुक्रमे फरतो फरतो ते नंदिपुरना उद्यानमां आधी उत्कंठापूर्वक वेठो. तेटलामां त्यां वे विद्याधरोए आवी तेने कहुं के—“ हे भद्र ! अहीं सुवन भालु नामे शसिद्ध विद्याधरराजा छे. तेने कमलिनी अने कुमुदिनी नामनी वे पुत्रीओ छे. ते वनेनोपति तमारो मित्र अपराजित थशे एम ज्ञानीए कहुं हटुं, तेथी तेने लाववा माटे अगने अमारा स्वामीए आज्ञा आपी. एटले अमे ते अरएयमां तमने वनेने जोगा, तेटलामां तमे जळ लेवा दूर गया, अने अमे तमारा मित्रने हरिने अमारा स्वामी

पासे गया. त्या सुवनमानुए तेने आसनपर बेसाही पोतानी पुत्रीओ परणवानी प्रार्थना करी, परतु तमारा वियोगना शोकथी हुमार काइपण बोल्या नही ते जाणी तमने लाववा मोटे अमारा स्वामीए अमने आज्ञा करी, तेथी अमे तमने अही रहेला चोया ते बहु सारु थयु माटे हे भाग्यवान ! क्रीडावडे वनमां महेल करीने रहेला अमारा स्वामी पासे तमे चालो ” ते सांभळी मंत्रपुत्र हर्षथी तेमनी साथे त्या गयो पळी कुमार ते वने कन्याओने हर्षथी परण्यो, अने फेटलोक काळ त्यां रहो

पळी प्रथमनी जेम सुवनमानुनी रजा लह ते वने मित्रो त्यांथी नीकळी श्रीमदिर नामना नगरमां गया त्यां द्वाकांत विद्याधरे आपेला मखिना प्रभावथी पूर्ण मनोरथवाळा ते वने सुलेथी रहा एकदा ते नगरमा लोकोनो बोलाहळ सांभळी हुमारे ‘आ शेनो कोळाहळ छे ?’ एम मित्रने पूछ्यु, त्यारे तेणे तपास करी कुमारने कहुके—“आ नगरमा सुप्रभ नाम राना छे तेने कोइए हळ वपटथी शस्त्रवडे प्रहार कर्यो छे ते राजाने राज्य भोगवे तेवो एक पण पुत्र नथी तेथी नगरना लोको शोचथी आ कोलाहळ करे छे. ” ते सांभळी हुमार बोल्यो के—“ कोइ शटुए धा कर्यो हशे ” एम कही हुमार दु ली थयो होय तेम खेद करवा लाग्यो

हवे ते सुप्रभ राजाने अनेक उपायो कर्यो छतां शांति थइ नही त्यारे कामलता नामनी गणिकाए एकातमां सचिवोने वहु के—“ आ आरणा नगरमां कोइ परदेशी पुरुष तेना मित्र सहित रहेलो छे ते काइपण उद्यम करतो नथी, तोपण तेना सर्व मनोरथो सिद्ध थाय छे तेनी पासे काइपण चमत्कारी औपघ होयु जोइए ” ते सांभळी मनीओ आदरपूर्वक ते कुमारने राजा पासे लह गया त्यां जइ दयाळु हुमारे मित्र पासेथी मणि अने मूलिका लह मखिना जळमां मूलिकाने घसी तेना

प्रहार उपर ते लगाडी. तरत ज राजाजु शरीर सज्ज थयुं, एटले राजाए कुमारने पूछ्युं के—“ हे भाग्यवान ! कारण विना बंधुरूप तुं क्यांथी आवे छे ? ” ते सांभळी तेना मित्रे कुमारनो वृत्तांत कळ्यो, त्यारे राजाए फरीथी कळ्युं के—“ अहो ! तुं तो मारा मित्रनो पुत्र छे. घणुं ज ठीक थयुं के पोताने ज घेर तुं आव्यो छे.” एम कही राजाए पोतानी रंभा नामनी पुत्री तेने परणावी. पछी त्यां वणा काळ सुधी रहिने प्रथमनी जेम कुमार मित्र सहित त्यांथी नकळी गयो.

अनुक्रमे चालतां ते अपराजित कुमार मित्र सहित कुंडपुर नगरना उद्यानमां आव्यो. त्यां सुवर्णकमळपर वेठेला केवळीने जोइ तेमने भक्तिथी वंदना करी योग्य स्थाने बेसी देशना सांभळी. पछी कुमारे हाथ जोडी केवळीने पूछ्युं के—“ हे भगवान् ! हुं भव्य छुं ? के अभव्य छुं ? ” मुनीश्वरे कळ्युं—“ तुं भव्य छे, अने आ ज जंबूद्वीपना भरतचेवने विपे आ भवथी पांचमे भवे तुं चावीशमो तीर्थंकर थइश. तथा आ तारो मित्र ते वखते तारो गणधर थशे.” आ प्रमाणे सांभळी ते वने मित्रोए आनंद पामी चिरकाल सुधी ते केवळीनी भक्ति करी. पछी मुनिए त्यांथी विहार कर्यो त्यारे ते मित्रो ग्रामादिकमां जइ चैत्योने नमचा लाग्या.

आ अक्सरे जनोने आनंद करनारा श्री जनानंद नामना नगरमां जितशत्रु नामे राजा हतो. तेने धारिणी नामनी राणी हती. तेणीनी कुक्षिमां रत्नवतीनो जीव स्वर्गथी चवीने अवतर्यो. समय पूर्ण थये राणीए पुत्रीने जन्म आप्यो. तेनु प्रीतिमती नाम पाड्युं. अनुक्रमे वृद्धि पामती ते कन्या समग्र कळाने ग्रहण करी यौवनवयने पामी. तेणीनी पासे विद्वान पण मूर्ख जेवो लागतो हतो, तेथी ते कोइपण पुरुपनी उपर जरापण रंजित थती नहोती. एकदा राजाए तेणीने पूछ्युं

के—“ तने कयो पनि इष्ट छे ? ” त्पारे ते बोली क—“ मन वादमा जे जीते, ते मारो पति थाओ ” आधी तेनी इच्छाने अगीकार करी राजाए स्यवर मडप कराव्यो, अने सर्व रानाओने इतढारा बोलाव्या, तेमां पुत्रना वियोगधी दुखी थता एक हरिनद्री राना निना बीजा सर्व राजाओ पोतपोताना कुमारो सहित आव्या ते सर्वे मडपमां आबी मां चाओ उपर अनुक्रमे वेठा ते वयते देवयोगे भ्रमण करतो अपराजित कुमार पण मित्र सहित त्यां आव्यो, अने ‘ आपणने फोइ ओढ्यो नहीं ’ एम धारी गुटिकाना प्रयोगधी सामान्य रूप धारण करी ते मडपमां गयो पछी मनोहर वस्त्रादिक धारण करी सखीओ अने दामीओधी परिप्रेली प्रीतिमती रून्पा जाणे के बीजा लक्ष्मी होय तेम ते मडपमां आयी मालती नामनी तेनी सर्वा आगळीपडे राजाओ अने राजकुमारोने देखाडती बोली के—“ हे सखी ! आ सर्वे खेचरो तथा भूरो तने ररया माटे अहीं आव्या छे तेमाधी जे तने इष्ट होय तेने तु वर ” ते सांमळी प्रीतिमती जे जे राजा के राजकुमार उपर पोतानी दृष्टि नाखती, तेना तेना उपर कामदेव पण पोताना बाणो नांखतो हतो पछी ते कन्याए मधुर स्रो पूर्वपक्ष कर्या, ते सामळीने ‘ शु आ साचाव् सरस्वती देवी ज छे ? ’ एम माणगोण तर्क कर्यो तेखीना प्रश्नो जमाव आपवा फोइपण राजकुमार समर्थ थयो नहा, तेथी सर्वे मिलला थइने पृथी सामु-नीतु ज जोवा लाग्या, अने परस्पर कहेवा लाग्या के—“ आ कथाए रूपे करीने ज अमाक मन हरी लीधु छे, तेथी मन विना अमे शी रीते उतर आपी शकीए ? ” त्पारपछी नितशतु राजाए विचार कर्यो के—“ आ सर्व राजाओमां मारी पुत्रीने लायक वर नहीं, तो हवे शु धशे ? ” आ प्रमाणे विचार करता राजाने जोड एक बुद्धिगान मत्रीए कयु के—“ हे स्वामी ! तेद न करो पृथीपर घणां रत्नो होय

छे. माटे राजा, राजपुत्र के बीजो कोइपण आ कन्याने वादमां जीतशे ते तेनो पति थशे एम अहीं सर्वत्र आघोपणा करावो. " ते सांभळी राजाए ते प्रमाणे कर्तुं, त्यारे अपराजित कुमार प्रीतिमती पासे आव्यो. तेने कुत्सित वेपवाळो जोया छतां पण पूर्वना प्रेमने लीधे प्रीतिमती हर्ष पामी पूर्वपक्ष बोली, एटले तरत ज अपराजिते तेनो उत्तर आप्यो. ते सांभळी तरकाळ तेना कंठमां कन्याए वरमाळा आरोपण करी. ते जोइ सर्व राजाओ क्रोध पामी सुभटोने युद्ध करवा माटे तैयार करवा लाग्या, अने बोल्या के— " अमे राजाओ छतां आ वाणीथी ज शूरो सामान्य मनुष्य आ कन्याने शी रीते परणी जाय ? " एम बोली तेओए युद्ध आरंभ्युं. ते वखते कुमार कोइ मावतने मारी तेना हार्थीपर चडी जइ युद्ध करवा लाग्यो. चळी कोइ र्थीने मारी तेना रथमां बेसी युद्ध करवा लाग्यो. ए ज प्रमाणे ते कुमारे चणवार अश्वचार थइ, पत्ति थइ, रथी थइ अने निर्पादी थइ युद्ध करी सर्वनो पराजय कर्षो. पछी " शास्त्रवडे स्त्रीथी जीताया अने शस्त्रवडे आनाथी जीताया " एम विचारी लजा पामेला ते सर्व राजाओ फरीथी एकत्र थइ युद्ध करवा आव्या. ते वखते कुमार सोमप्रभ राजाना हाथी-पर चडी गयो. तेने ते राजाए तेना तिलकादिक चिन्होथी ओळखी हर्ष पामी कहुं के— " हे महापराक्रमी भाणेज ! बहु सारुं थयुं के मे तने ओळख्यो. " एम कही ते राजाए तेने आलिंगन कर्तुं, पछी सोमप्रभ राजाए ते कुमारनो वृत्तांत सर्वने वखो, ते सांभळी सर्व राजाओ युद्धथी निवृत्त थया, अने कुमारे पण पोतातुं मूळ स्वरूप प्रगट कर्तुं, पछी जितशत्रु

१ हाथी स्वार

राजाए महोत्सवपूरक तेने प्रीतिमती साथे परापाव्यो, अने सर्ग राजाआने मरकारपूर्वक विदाय कर्षो पक्षी अपराजित  
 दुमार प्रीतिथी प्रीतिमती साथे श्रीरा करवो गुलेथी त्या ज रवो

एवदा हरिनदी राजानो दू त्या आव्यो आलिगा रुरी कुमार मालापितानी दुशब्दा पूछी. त्वारे दूत बाज्यो के-  
 " हे दुमार ! मात्र देहने घारण पराथाथी तेओ दुशब्द छे; परतु तमे प्रयास कर्षो त्यारथी तेमना नेत्रोमा पाणी गुस्तु  
 नथी तमारु मा पुराण मास्त्रीने मातापिताए तमने बालापवा माटे मने मोकज्यो छे. वो हरे तेयने तमारु दर्शन पायी  
 आनद पमाओ ' ते सोमत्री मातापिताने मळ्या उगुक पयेलो दुमार तरण न ससरानी राजा लद प्रीतिमतीने साथे रासी  
 मित्र महिन चाज्यो ते दुमार प्रथम छे न राजानी कयाओ परणयो हतो, ते ते राजाओ पोतपोतानी पुत्रीओने लरने  
 हर्षथी तेनी पासे आरथा पटले से य सहित भूचर अने गेचर राजाओ अने पोतानी प्रियाओथी योमतो ते हुमार अनु  
 त्रमे सिद्धपुर पक्षीस्यो ते बसुते हरिनदी राजा हर्षथी तेनी समुदा आव्यो हुमारे तेने त्रियाथी नमस्कार कर्षो अने  
 राजाए तने प्रीतिथी आलिंगन कर्षुं. माताए पण त नमना एवा हुमारने पोताना हाथवडे स्पर्श कर्षा पक्षी सर्ग ग्रीओ  
 पण साधु ससराने एगे लागी त्यापक्षी तिमलबोष मित्रे राजा तथा रासी पागे हुमारनो सर्ग पुर्णत कर्षो, ते मांम  
 छाने त एव अति हर्ष पाग्या पक्षी शंहेरमा प्रवेश करी हुमारे सर्ग गेचर अने भूरर राजाओने सत्कार पूर्वक विदाय  
 कर्षो अ पदा हरिनदी राजा अपराजित हुमारने राज्य तोषी प्रत्रग्या ग्रहण करी नेतु आराधन ररीन मोषे ग्या पक्षी  
 अपराजित राजाए विनेशरोना बेल्यो उडे पृथ्वीने शरण से तिरकाळ गुषी राज्यनु पालन कर्षुं



एकदा अपराजित राजा उद्यानमां क्रीडा करवा गयो. त्यां तेणे मित्रो अने स्त्रीओथी परिवरेला कोइ महेभ्यने जोयो, तेनी पासे मनोहर संगीत थंतुं हतुं, तथा ते अर्थीओने इच्छित दान आपतो हतो. तेने जोइ राजाए “आ कोण छे ?” एम पोताना सेवकोने पूछ्युं, त्यारे तेओ बोल्या के—“हे स्वामी ! आ समुद्रपाळ नामना सार्थवाहनो अनंगदेव नामनो पुत्र छे.” ते सांभळी राजाए विचार कर्यो के—“अहो ! मारा राज्यमां बाणिको पण आत्रा उदार अने समृद्धि-वाळा छे, तेथी मने पण धन्य छे.” एम विचारी राजा पोताने घेर गयो. पळी बीजे ज दिवसे राजाना प्रासाद पासे थइने घणा मनुष्योथी वहन करातुं एक शत्रु नीकळ्युं, ते जोइ राजाए ‘आ कोण मरी गयुं ?’ एम पोताना सेवकोने पूछ्युं, त्यारे तेओ बोल्या के—“हे स्वामी ! काले ज आपे जे अनंगदेवने उद्यानमां क्रीडा करतो जोयो हतो ते ज विद्विचिकाना व्याधिथी अकस्मात् मरण पाम्यो छे.” ते सांभळी—“अहो ! संध्याकालना रंगनी जेम आ विश्रमां सर्व पदार्थ अनित्य छे.” एम विचारी राजा अत्यंत वैराग्य पाम्यो. तेवामां प्रथम कुंडपुर नगरमां ते राजाए जे केवळीने जोया हाता, ते केवळी ज्ञानथी तेने दीक्षा योग्य जाणी त्यां पधार्या. तेमनी पासे जइ धर्मदेशना सांभळी प्रतिबोध पामी अपराजित राजाए पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी प्रीतिमती भ्पने विमळबोध सहित दीक्षा ग्रहण करी. अने चिरकाळ सुधी तीव्र तप करी ते त्रये कालधर्म पामनि अग्यारसा देवलोकमा इंद्रना सामानिक देव थया.

आ ज भरतक्षेत्रमां श्रीहस्तिनापुर नामना नगरमां श्रीषेण नामे राजा हतो. तेने श्रीमती नामनी राणी हती. तेमनी कुक्षिमां अपराजितनो जीव अवतर्यो. ते वखते राणीए स्वप्नमां शंख जेयो उज्वळ पूर्ण चंद्र जोयो. समय पूर्ण थये

राणीए पुत्रन जन्म आप्या, तेनु नाम शम्भ राउवामां आव्यु पाच थात्रीओवंडे पालन करातो ते कुमार वृद्धि पामो अनुक्रमे सर्व कळ्यओमां निपुण थयो

ए च रीते निमळ्योधनो जीव पण स्वर्गधी षवी श्रीपेण राजाना मत्री गुणनिधिनी पुत्र मत्तिमभ नामे थयो ते शंखकुमारनो मित्र थयो ते वन्दे मित्रो अनुक्रमे मनोहर युवानस्थाने पाम्या

एवदा श्रीपेण राजा पासे प्रजाननोए आवी कण्ठु के—“ हे देव ! तमारा देशना सीमाडामां एक महा दुर्गम दुर्ग छे तेमां समरकेतु नामनो पल्लीपति रहे छे, ते निरतर अमने लुटे छे अने हेरान करे छे तेधी तमे अमारु रक्षप करो ” ते सांभळी राजा तत्काल त्यां जवा उत्सुक थया ते वखते शरकुमारो नम्रताधी विज्ञप्ति करी के—“ हे पिता ! सर्पना यथा उपर गरुडना उद्यमनी नेम ते पल्लीपति उपर तमारो आ उद्यम योग्य नथी तेधी तेनो जय करवा माटे मने आज्ञा आपो ” ते सांभळी राजाए तेने आज्ञा आपी, एटले शखकुमार सैन्य सहित पल्ली तरफ चाल्यो तेने आपतो जाणी पल्ली पति दुर्गनो त्याग करी कोइ गाढ वनमां पंठो ते चाणी बुद्धिमान कुमारो पण एक सामतने ते दुर्गमा प्रवेश कराव्यो, अने पोते दुर्गनी पहार सैन्य सहित कोइ गुप्त स्थाने छुपाइने रहो ते जात नही जाणता पल्लीपतिए तत्काल आवी ते दुर्गने रुधी लीधो, तेटलांमां कुमारो पण प्रगट थइ पोताना सैन्यधी तेने घेरी लीधो पल्ली दुर्गमां पंठेला सामतना सैन्य अदरधी अने हुमारना सैन्ये पहारधी एम वंशे बाजुधी मध्यमां रहेला पल्लीपतिनी उपर प्रहारो कर्यो एटले कइ दिशामां नासी जत्रु ए नही वृक्षवाधी व्यारुक धयेलो पल्लीपति पोताना कठपर हुठार राखी कुमारने शरणे नइ हाथ जोडीने बोव्यो के—

“ हे बुद्धिमान् ! मारी मायाना जाळने तोडनार तमे एक ज छो. माटे हुं तमारो दास छुं. मारुं सर्वस्व ग्रहण करी मारापर प्रसन्न थाओ. ” पछी तेणे जेटलुं धन लोकोलुं लुंठ्युं हतुं तेटलुं लइ तेना स्वामीओने आपी कुमार पल्लीपतिने साथे लइ पोताना नगर तरफ चाल्यो. मार्गमां रात्रि समये कोइ ठेकाणे सैन्यनो पडाव नांखी कुमार रखो हतो, तेवामां कोइनुं रुदन सांभळी कुमार हाथमां खड्ग लइ ते शब्दने अनुसारे ते तरफ चाल्यो. केटलेक दूर गयो, तेटलामां एक वृद्ध स्त्रीने रुदन करती ती जोइ कुमारे तेने रोवाळुं कारण पूछ्युं, त्यारे ते बोली के—“ अंगदेशमां चंपा नामनी नगरी छे. तेमां जितारि नामे राजा छे. तेने कीर्त्तिमती नामनी प्रियाने विषे उत्पन्न थयेली यशोमती नामनी पुत्री छे. ते समग्र कळामां कुशल अने युवावस्थाने पामेली छे. ते पोताने योग्य वर नहीं जोवाथी कोइ पण ठेकाणे रागवाळी थती नथी. एकदा श्रीपेण राजाना पुत्र शंखकुमारना गुणो सांभळी ‘ मारा पति शंस ज हो ’ एम तेणीए प्रतिज्ञा करी. आवी तेनी प्रतिज्ञा जाणी जितारि राजा “ आ पुत्री योग्य वरने विषे रागवाळी थइ छे. ” एम विचारी अत्यंत हर्ष पाम्या. पछी एकदा मणिशेखर नामना खेचरे ते कन्यानी याचना करी त्यारे जितारि राजाए तेने उचर आप्यो के—“ आ मारी कन्या शंखकुमार सिवाय बीजा पतिने वरवा इच्छती नथी. तेथी तेवी इच्छानाळी ते कन्या बीजे केम आपी शकाय ? ” ते सांभळी ए खेचर क्रोध पाम्यो, एटले एकदा तेणे ते कन्यानुं हरण कर्युं. ते वसते हुं तेथीनी पासे हती तेथी तेथीनी साथे मारुं पण हरण कर्युं. हुं ते कन्यानी धात्री छुं. मार्गमां मने अहीं तजी दइने ते खेचर ते कन्याने लइने क्यांइक जतो रखो छे, तेथी हे वीर ! हुं रुदन करुं छुं, के ते कन्यानुं हवे शुं थशे ? ”

आ प्रमाणे सांभळी शखकुमारें ते वृद्धाने कहु के—“ हे माता ! तमे धीरज राखो हमणा ज हु ते खेचरने जीती कयने लइ आवु छु ” एम कही वनमां भवतो भवतो कुमार प्रातःकाल यता एक पर्यंतपर गयो त्यां “ हे मूढ ! मने शर ज परणयो, तु फोगट नेश शा माटे करे छे ? ” एम विद्याधरने कहेती ते कन्याने तेणे जोइ ते बनेए शखकुमारने जोयो एटले हसीने खेचर बोल्यो के—“ हे जड ! तु जेने वरवाने इच्छे छे, ते पोते ज मरवानी इच्छायी अहीं आव्यो छे, जो, आने तारी आशा सहित हणीने हमणां ज हु यमराजने घेर मोकलु छु अने तने इर्षयी बळात्कारे मारे घेर लइ जाउ छु ” आ प्रमाणे तेनु वचन सांभळी शखकुमारें तेने कहु के—“ रे दुष्ट ! उठ, तैयार था, तारा मस्तकनी साथे तारी आ दुष्ट इच्छानु हु हरण करु छु ” ते सामळी खेचर तेनी साथे एहवेडे युद्ध करवा लाग्यो तेमा कुमारने दुर्जय जाणी विद्याधिष्ठित शस्त्रानो ग्रहार करवा लाग्यो परतु ते शस्त्रो पुण्यशाळी कुमार उपर ग्रहार करवाने समर्थ यथा नहीं ए रीते युद्ध करीने थावी गयेला विद्याधर पासेथी तेनु ज धनुष खुचवी लइने कुमारे तेनावडे तेने चाण मारु, तेथी ते मूर्खो एाइ पृथ्वीपर पड्यो ते जोइ कुमारे तेने उपचार करी सज कर्गो अने फरीथी युद्ध करवानो तेने उत्साह आप्यो त्यांरे ते प्रसन्न थइने कुमार प्रत्ये बोल्यो के—“ हे वीर ! अत्यार सुधी मने कोइए जीत्यो नथी, आजें तें मने जीत्यो छे, ते चहु सारु थयु छे, हु तारु पराक्रम जोइ तारो दास थयो छु. माटे मारो आ अपराध तु दमा कर ”

ते सांभळी कुमारे तेने कहु के—“ हे खेचर ! तागी भक्तिथी हु प्रसन्न थयो छु, तेथी तारी जे इच्छा होय ते कहे ” त्यांरे ते बोल्यो के—“ हे पुण्यवान कुमार ! शाश्वत चैत्योने बांदवा तथा मारापर अनुग्रह करवा तु मारी साथे वैताड्य

पर्वतपर चाल. " ते सांभळी कुमारे तेनुं वचन अंगीकार कर्युं. ते वखते शंखकुमारने सर्व गुणोवडे उत्कृष्ट जोह ' हुं श्रेष्ठ वरने वरी छुं ' एम विचारी यशोमती कन्या अत्यंत हर्ष पायी. तेदलामां त्यां ते मणिशेखरना विद्याधर सेवको आव्या. तेमांथी वे विद्याधरोने मोठ्ठली कुमारे पोताना सैन्यने पोताना नगर तरफ जवा कहेवरावुं, अने बीजा विद्याधरने मोकली पेली वृद्ध धात्रीने बोलावी ते धात्री, कन्या अने खेचर सहित शंखकुमार चैताढ्य पर्वतपर गयो. त्यां तेमणे शाश्वत चैत्योमां रहेला जिनेश्वरोनी प्रणामपूर्वक पूजा करी. पछी मणिशेखरे कुमारने पोताना नगरमां लइ जइ तेनी घणी भक्ति करी. बीजा पण खेचरोए कुमारना पराक्रमथी खुशी थइ तेने पोतपोतानी कन्याओ आपी. त्यारे कुमारे तेमने कहुं के— " आ यशोमतीने प्रथम परएया पछी हुं तमारी कन्याओने परणीश. " त्यारपछी मणिशेखर विगेरे विद्याधरो पोतपोतानी कन्याओ सहित यशोमतीने अने कुमारने लइ चंपानगरीए आव्या. ते सर्वने आवता जाणी जितारि राजा तेमनी सन्मुख आत्री महोत्सवपूर्वक तेमने पोताने घेर लइ गयो. पछी त्यां शंखकुमार यशोमतीने तथा बीजी विद्याधर-कन्याओने हर्षथी विधिपूर्वक परएयो अने भक्तिथी श्रीवासुपूज्यस्वामीना चैत्यनी यात्रा करी. पछी सर्व विद्याधरोने विदाय करी शंखकुमार केटलाक दिवस चंपानगरीमां रही सर्व प्रियाओ सहित हस्तिनापुरमां आव्यो.

एकदा श्रीपेण राजाए शंखने राज्यपर स्थापन करी दीक्षा ग्रहण करी. शंखराजा पण इंद्रनी जेम मांटा राज्यनुं पालन करवा लाग्यो. केटलेक काळे श्रीपेण राजपिंने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं. एकदा विहारना क्रमथी ते केवळी हस्तिना-पुरमां पधार्या. तेमनुं आगमन सांभळी शंखराजा परिवार सहित मुनीश्वरने वांदवा आव्या. केवळीना मुखथी धर्मदेशना

साभन्धी शख राचा वैराग्य पाण्या एटले पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी ते केवळी पासे दीक्षा ग्रहण करी तेनी साथे मतिप्रम मर्त्रीए तथा यशोमती राणीए पर्ण दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे शख राजर्षि श्रुतना पारगामी थया, अने दुस्तप तपवडे अर्हत् भक्ति विगोरे स्थानकोनु सेवन करी तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्युं छेवट यशोमती साध्वी अने मन्त्रीमुनि सहित शारराजर्षि अनशन करी अपराजित मिमानमां देवपणे उत्पन्न थया

आ ज भरतबेत्रने विषे शौर्यपुर नामना नगरमां दशार्हना मोटा भाइ समुद्रविजय नामे राजा हुता तेने सर्व प्राणीओनु कल्याण करनारी शिवा नामनी राणी हती देवायु पूर्ण थतां योग्य समये अपराजित नामना स्वर्गथी चवीने शंख राजानो जीव शिवदेवीना गर्भमां अवतर्यो. ते चलते सुखे सुतेली देवीए चौद महास्वप्नो तथा रिष्टरत्नमय नेमि-चक्र जोइ जागृत थइ राजाने ते घृचांत कस्यो एटले राजाए प्रातःकाले स्वप्नपाठकोने बोलावी ते स्वप्नोनु फळ पूछ्यु, त्यारे तेओए फयु के—“ तमारे चक्री के धर्मचक्री पुत्र थयो ” पक्षी समय पूर्ण थये राणीए उत्तम पुत्रने जन्म आप्यो ते चलते दिग्बुमारीओए आबी स्रतिकर्म कर्युं, इद्रोए आबी मेरुपर्वतपर तेनो स्नानमहोत्सव कर्यो पक्षी राजाए पण हर्षथी पोताना नगरमां जमनो महोत्सव कर्यो भगवान गर्भमां आव्या त्यारे माताए स्वप्नमां रिष्टनेमि जोयो हतो, तेथी राजाए तेनु अरिष्टनेमि नाम पाडयु इद्रे आदेश करेली घात्रीओथी लालन पालन कराता भगवान जगतना हर्षनी साथे वृद्धि पामी आठ वर्षना थया आ अवसरे यशोमतीनो जीव स्वर्गमांथी चवीने उग्रसेन राजानी धारिणी नामनी राणीनी कुबिधी पुत्रीपणे उत्पन्न थयो. तेनु राजीमती नाम पाडयु ते पण

अनुक्रमे वृद्धि पाप्मी कळाना समूहने ग्रहण करी पवित्र युवावस्थाने पाप्मी.

अहीं मथुरापुरीमां वसुदेवना पुत्र कृष्णे जरासंध नामना राजाना जमाइ कंसने हएयो, त्यारे सर्वे यादवो क्रोध पामेला जरासंधना भयथी निमिचितियाना वचनवडे पश्चिम समुद्रने कठि जइने रखा. त्यां कृष्ण वासुदेवे कुचेरनी आराधना करी, तेथी ते देवे समुद्र मध्ये नव योजन पहोळी अने चार योजन लांबी द्वारकापुरी बनावी आपी. लंकानगरीनी शंका करावती ते सुवर्णमय नगरीने विषे बळराम, श्री कृष्ण, दशार्ह अने बीजा सर्वे यादवो सुखेथी रखा. अनुक्रमे प्रतिवासुदेव जरासंधने हणी तथा भरतार्धने साधी राम अने कृष्ण वळदेव अने वासुदेव थइ उत्तम राज्य भोगववा लाग्या. त्यां भगवान नेमिनाथ पण इच्छा प्रमाणे क्रीडा करता पवित्र युवावस्थाने पाम्या. पण तेओ भोगने विषे पराङ्मुख ज होता.

हवे सूत्रकार महाराजा भगवानना रूपादिकतुं वर्णन करे छे.—

सो रिद्वनेमिनामो उ, लक्खणस्तरसंजुओ । अट्टसहस्सलक्खणधरो, गोअमो कालगच्छवी ॥ ५ ॥  
अर्थ—( सो ) ते ( रिद्वनेमिनामो उ ) अरिद्वनेमि नामना भगवान ( लक्खणस्तरसंजुओ ) माधुर्य, लावण्य विगेरे स्वरना लक्ष्यो सहित होता, तथा ( अट्टसहस्सलक्खणधरो ) हस्त पाद विगेरे स्थाने शंख, चक्र, गदा स्वस्तिक विगेरे एक हजार ने आठ लक्ष्योने धारण करनारा होता तथा ( गोअमो ) गौतम गोत्री होता, तथा ( कालगच्छवी ) रयाम कांतिवाळा होता. ५.

वैज्रिसहस्रघयणो, समचउरसो द्वैसोदरो । तैस्स राइमइ कंन, भेज जाएइ कैसवो ॥ ६ ॥

अर्थ— तथा ( वैज्रिसहस्रघयणो ) वज्रर्पमनाराध सययणवाळा हता, तथा ( समचउरसो ) समचतुरस्र सस्थानवाळा हता, ( द्वैसोदरो ) मत्स्यना जेवा उदरवाळा हवा ( तस्स ) ते नेमिनाथनी ( मज्ज ) भार्यो करवा माटे ( कैसवो ) वासुदेवे ( राइमइ ) राजीमती नामनी ( कन्न ) कन्यानी तेना पिता पासे ( जाएइ ) याचना करी ६  
ते राजीमती कन्या केंवी हती ते कहे छे—

अह सा रायवरकणा, सुसीला चारुपेहिणी । सव्वलक्खणसपत्ता, विज्जुसोआमणिप्पहा ॥ ७ ॥

अर्थ— ( अह ) हवे ( सा ) ते ( रायवरकणा ) उग्रसेन राजानी श्रेष्ठ कन्या ( सुसीला ) सारा शीळवाळी हती, तथा ( चारुपेहिणी ) मनोहर जोनारी-दृष्टिवाळी हती, तथा ( सव्वलक्खणसपत्ता ) सर्व शुभ लक्षणोए करीने युक्त हती, तथा ( विज्जुसोआमणिप्पहा ) विद्युत् एटले विशेष कातिवाळी सौदामिनी एटले वीजळीनी जेवी प्रभावाळी-कातिवाळी हती ७,

राजीमतीनी याचना करवानो जे प्रसंग प्राप्त थयो तेनी हकीकत आ प्रमाण छे—

एकदा अर्निर्मनाथ प्रभु कीडा करता वासुदेवनी आयुधशाळामां गया, त्यो वासुदेवनु शार्ङ्ग नामनु धनुष लेवा लाग्या ते वखते तेना आरुक्षकोए कशु के—“ हे कुमार ! आ धनुषने षडाववा विष्णु विना वीजा कोइ समर्थ नथी.



तेथी आने ग्रहण करवानो आग्रह मूकी द्यो. " ते सांभळी प्रभुए कांइक हसी ते धनुष पोताना हाथमां लीधुं, अने तरत नेतरनी सोटीनी जेम अनायासे ज वाळीने तेनापर प्रत्यंचा चडावी. पळी इंद्रधनुष जेवा ते धनुषवडे शोभता मेघ जेवा ते नेमिनाथे तेनो टंकार करी तेनी गर्जनावडे समग्र विश्व पूरी दीधुं. पळी धनुषने मूकी कांतिवडे देदीप्यमान चक्रने हाथमां लह कुंभारना चक्रनी जेम तेने आंगळीना अग्रभागवडे भमाडधुं. पळी चक्रनो त्याग करी जेने ग्रहण करतां वासुदेवने पण घणो प्रयास थतो हतो एवी गदाने प्रभुए लाकडीनी जेम ग्रहण करीने फेरवी. पळी तेने पण तजी प्रभुए पांचजन्य नामनो शंख लह पोताना मुख पासे राख्यो, ते बसते ते शंख विकस्वर काळा कमळनी पासे रहेला राजहंसनी जेम शोभवा लाग्यो. पळी स्वामीए ते शंख वगाड्यो, तेना शब्दथी समग्र विश्व वधिर थह गधुं, सर्व पर्वतो कंपवा लाभ्या, पृथ्वी पण चळाचळ थह, समुद्रो चोभ पाभ्या अने वीरो मूळीं साह पृथ्वीपर पड्या. वणुं कहेवाथी शुं ? ते शब्दथी देवो पण त्राम पाभ्या. सिंहना नादथी हाथीनी जेम ते शंखनादथी वासुदेवे पण चोभ पामी विचार कर्यो के— " कथा बळवाने आ शंख वगाड्यो ? हुं ज्यारे शंख वगाडुं छुं त्यारे सामान्य मनुष्यो ज चोभ पाभे छे, परंतु आ नादवडे तो मने पण अत्यंत चोभ थयो छे. तो शुं इंद्र, चक्रवर्ती के वीजो कोइ वासुदेव आव्यो छे ? जो एम ज होय तो हुं आ राज्यतुं रक्षण शी रीते करी शकीश ? " आ प्रमाणे सभामां वेठेला वासुदेव विचार करता हता, तेटलामां आयुधशाळाना रत्नकोए आची सर्व वृचांत कळीो. ते सांभळी शंकाथी आकुळ व्याकुळ थयेंला विष्णुए बळरामने कहुं के— " जेनी क्रीडाथी पण आ प्रमाणे आखा विश्वने चोभ थयो, ते अरिष्टनेमि आपणुं राज्य ग्रहण करे, तो तेने कोण निषेध करी शके ? " ते सांभळी बळदेव चोल्या

के—“ हे भाई ! तमे खांटी शका न करो पूर्वना तीर्थकरोए आ आपणा भाइनो घृत्तात एयो कळो छे के—यादवशरूपी समुद्रनो उल्लास करवामां चद्र समान चावीशमा तीर्थकर श्री अरिष्टनेमि राज्यलक्ष्मीने भोगव्या विना ज दीचा ग्रहण करशे वळी अत्यारे पण समुद्रमिजय विंगेरे सर्ग तेने घणी प्रार्थना करे छे, तोपण ते बुद्धिमत् एरु कन्याने पण परखता नथी, तो ते श्रीनमि शु आ राज्यने प्रहण करे ? ” आ प्रमाणे बठारमे कळा छतां हरिना हृदयमाथी शका गइ नही

एकदा श्रीनेमिकुमार उद्यानमां क्रीडा करवा गया हता कृष्ण साथे हता त्यां कृष्ण वासुदेवे तेने कहु के—“ हे भाई ! आपणे आपणा बळनी परीचा करवा माट द्रढयुद्ध करीए ” नेमिकुमारे कहु के—“ सामान्य माणसने उचित एवु द्रढयुद्ध आपणे करवु योग्य नथी परतु बळनी परीचा तो मात्र वाहु वाळवाथी पण थइ शके छे. ” आयु तेनु वचन अगीकार करी हरिण पोतानो वाहु लावो कर्या तेने प्रष्टए कमळना नाळनी जेम तरकाळ नमावी दीधो अने पोतानो जेम ते जेवो पाहु लावो कर्यो तने वाळवा माटे वासुदेवे पोतानु सर्व बळ वापयुं, तोपण ते शाखापर लटकेला वाळकनी जेम ते हाथपर टांगाइ गया ते बसते हरिण विचार कर्यो के—“ जेने राज्य लेवानी इच्छा होय, ते आटलु वयु बळ छवां आटलो विलच करे ज नही ” एम विचारी राज्यना अपहारनी चिंता दूर करी वासुदेव पोताने घेर गया

एकदा समुद्रविजये श्रीकृष्णने कहु के—“ सर्गं इमारो पोतपोतानी स्त्रीश्रो साथे क्रीडा करे छे, पण नेमिहुमार तो ते सर्वथी विलक्षण छे, तेथी अमने अत्यंत खेद धाय छे तो हे वत्स ! कोइपण उपायथी आ नेमिकुमार विवाह करे एवु कर. ” आयु समुद्रमिजयनु वचन अगीकार करी श्रीकृष्णें कामदेवना दिव्य शस्त्ररूप सत्यमामा अने रक्मिणी विंगेरे

पोतानी प्रियाओने ते कार्य माटे आज्ञा करी. ते दखते विश्वना जनोने उत्सवना कारणरूप वसंतोत्सव पण प्रवर्तते हतो, तेथी सत्यभामा विगेरे स्त्रीओ उद्यानमां क्रीडा करवा गइ, तेमनी साथे विष्णुना आग्रहथी श्रीनेमिनाथ पण कामविकार रहित ज ते स्त्रीओनी साथे ऋतुने उचित एवी क्रीडावडे रमवा लाग्या. वसंतऋतु पछी ग्रीष्मऋतु आव्यो त्यारे पण वासुदेवना आग्रहथी भगवान तेनी प्रियाओनी साथे क्रीडापर्वत उपर क्रीडा करवा लाग्या. त्यां विश्वना अलंकाररूप निर्विकार जगद्गुरु श्रीनेमिनाथ कृष्णना आग्रहथी जळक्रीडादिक क्रीडा करवा लाग्या. पछी एकदा वासुदेवनी प्रियाए अवसर जोइ प्रीति, नम्रता अने हास्य सहित नेमिकुमारने कळुं के—“ हे दियर ! तमारं रूप इंद्रथी पण अधिक छे, तमारं शरीर सदा आरोग्य अने सौभाग्यादिक गुणे करीने युक्त छे, अने आ तमारी युवावस्था इंद्राणीने पण कामातुर बनवे तेथी छे, तो योग्य कन्याने परणीने ते सर्व सफल करो. आ तमारं रूपादिक सर्व भोग विना अवकेशि वृद्धनी जेम निष्फल छे. केमके स्त्री विना भोग शा कामना ? स्त्री ज भोगनुं स्थान छे, स्त्री विना स्नानादिक शरीरनी शुश्रूषा थती नथी, स्त्री रहित एवा पुरुषने निर्धननी जेम मनवांछित भोजन क्यांथी मळे ? जेम खाण विना रत्न न होय तेम स्त्री विना पुत्र पण होता नथी. भिक्षुकना धननी जेम स्त्री रहितना अन्नने अतिथि पण खातो नथी. युवति विना युवाननी रात्रि पण शी रीते जाय ? जुओ, चक्रवाकनी रात्रि चक्रवाकी विना वर्ष जेवडी थाय छे. योग्य स्त्रीना संयोग विना कोइपण पुरुष शोभतो नथी. जुओ, रात्रि विनाना चंद्रने कांति क्यांथी होय ? तेथी हे गुणसागर ! कोइपण कन्यानुं पाणिग्रहण करी दशार्हादिक सर्व यादवोनुं मनवांछित पूर्ण करो. जन्मथी ज आरंभोने स्वच्छंदपणे फरनारा सांड जेम गाडीनी झुसरी वहन न करी

शुके तेम जमधी आरभीने स्वेच्छाए फरनारा तमे पण बधूनो निर्वाह करी शको तेम नहीं होय, तेथी ज विवाहने अगीकार करता नथी एम दु धारु छु, जो ए ज कारण होय तो ते पण अयुक्त छे केमके तमारा भाइ वासुदेव जेम अमारो ( १६ हजारनो ) निर्वाह करे छे, तेम तेनो पण निर्वाह करशे समग्र पृथ्वीनो भार धारण करनार शोपनागने कांइ लतानो भार बधी जतो नथी बळी निर्वाणनी प्राप्ति नहीं थवाना भयथी जो भोगनो त्याग करता हो, तो ते पण खोड छे. केमके श्रष्टमादिक चिनेशरो भोग भोगवीने पण सिद्ध थया छे धृष्टपथाथी मुगा थयेला तमे जयाच आपो के न आपो, परतु विवाह अगीकार कर्यो विना अमाराथी तमे छुटी शकशो नहीं ”

आ प्रमाणे ते कृष्णनी प्रियाञ्चा प्रार्थना करती हती, ते वखते बळराम अने कृष्ण विंगरेए आवीने ते ज प्रमाणे प्रार्थना करी, बधुओए मनोहर वचनो वडे अत्यंत आग्रह कर्यो, त्यारे भाविभावने विचारता स्वामीए विवाहनी समति आपी तथी हर्ष पामता वासुदेवे समुद्रविजय पासे जइ ते वृत्तांत कथो, एटले ते पण अत्यंत हर्षित थया, अने तेषे कृष्णने कसु के—“ हे महा बुद्धिमान ! तु ज नेमिकुमार माटे योग्य कन्यानी शोध कर ” त्यारे वासुदेव पोते योग्य कन्यानी शोध करवा लाग्या, तटलामां मत्स्यभामाए तेने कसु के—“ हे प्रिय ! कमळना सरखा नेत्रवाळी मारी येन राजीमती ज नेमिकुमारने योग्य छे ’ ते सांभळी श्रीकृष्ण हर्ष पामी पोते ज उग्रसेन राजाने घेर गया वासुदेवने पोताने घेर आवेला जोइ उग्रसेन हर्ष पामी, उभा थइ, आसन आपी हाथ जोडीने बोल्या के—“ आजि स्वामीए जाते अहीं आपवानो प्रयास शा मांटे कर्यो ’ पोताना सेवकने मोकली मने ज केम न बोलाव्यो ? आ मारु घर, धन, शरीर अने पुत्री विंगरे सर्व आपनु ज

छे एम आप जाणजो. हे स्वामी ! आपनी जे इच्छा होय ते कहो. " कृष्णे कष्टुं के— " हे राजा ! मारा भाइ नेमीकुमारने आ तमारी राजीमती पुत्री आपो. " आ प्रमाणे हरिए राजीमतीनी याचना करी ते जाणी पोताने धन्य मानता उग्रसेन राजाए जे कष्टुं, ते सुत्रकार ज कहे छे—

अहार्ह जणैओ तीसे, वासुदेवं महिष्ठिअं । इहागच्छउं कुमारी, जाँ से कंत्रं दलामहं ॥ ८ ॥

अर्थ—( अह ) याचना कर्षा पत्नी ( वीसे ) ते राजीमतीना ( जणओ ) पिताए ( महिष्ठिमं ) मोटी अद्विवाळा ( वासुदेवं ) वासुदेवने ( अह ) कष्टुं के—(कुमारो) नेमिकुमार (इह आगच्छउ) अहीं आवे, (जा) जेयी (से) तेने ( अहं ) हुं ( कंत्रं ) मारी कन्या ( दलामि ) आपुं. ८.

आ प्रमाणे उग्रसेन राजाए कष्टुं, एटले वने कुळमां वर्धापन थयां, अने जोशीए बतावेलुं विवाहलुं लग्न नजीक आवुं, ते बखते जे थयुं, ते कहे छे.—

संव्वोसहिहिं पंहविओ, कयकोउअमंगलो । दिव्वजुअलपरिहिओ, भूसणैहिं विभूसिओ ॥ ९ ॥

अर्थ—( संव्वोसहिहिं ) सर्व औपधिओए करीने (एंहविओ) नेमिकुमारने स्नान करावुं—अभिषेक कर्षो तथा ( कयकोउअमंगलो) कौतुक अने मंगळ करवामां आवुं तथा (दिव्वजुअलपरिहिओ) मनोहर वे देवदूष्य वस्त्र धारण कराव्या, तथा (भूसणैहिं) आभूषणो वडे ( विभूसिओ) विभूषित कर्षो. ९. पत्नी.

मैत्र च गर्धहरिथि, वासुदेवंस्त जिह्वंग । आरूढो सोहई अहिअ, सिरै चूडामणी जहाँ ॥ १० ॥

अर्थ—(वासुदेवस्त) वासुदेवना (जिह्वंग) अत्यंत प्रशस्त (मच च) अने मदोन्मत्त एवा (गर्धहरिथि) गर्धहस्ती उपर (आरूढो) आरूढ थयेला ते नेमिकुमार (सिरै) मस्तरूपर (चूडामणी) चूडामणि-मुकुट(जहा) जेम शोभे तेम (अहिअ) अधिक (सोहई) शोभया लाग्या १०

अह ऊँसिष्ण त्तेण, चामराहि अ सोहिओ । दँसारचक्रेण यं सो, सेवओ परिवारिओ ॥ ११ ॥  
अर्थ—(अह) त्यापछी (ऊँसिष्ण) माये धारण करेला (छत्तेण) छत्रवडे ( चामराहि अ ) तथा वींझाता एवा चा मरो वडे (साहिओ) शोभता (य) तथा (दँसारचक्रेण) ममृद्रविजयादिक दश दशाहोना समूहोवडे (सो) ते नेमिकुमार (स व्यओ) चोतरफथी (परिवारिओ) परिवरेला ११

चतुरगिणीए सेणोए, रइआएँ जहकंम । तुँडिआण सत्रिनाएण, दिँडेण गंपणफुसे ॥ १२ ॥

अर्थ—(चतुरगिणीए) चतुरगिणीए (चतुरगिणीए) चतुरगी (सेणोए) सेनावडे, तथा ( दिँडेण ) दिव्य अने ( गयणफुसे ) आकाशने स्पर्श करता एवा ( तुँडिआण ) वाजिओना ( सत्रिनाएण ) गाढ शब्दवडे जयाता-  
पिआरिणीण डैडोए, जुत्तीएँ उत्तमाएँ अँ । निँअगाओ भवणाओ, निँजाओ वैण्हपुगवो ॥ १३ ॥

अर्थ—तथा ( णआरिणीए ) आवा प्रकारनी उपर कही तेवी (इष्टीए) समृद्धि करीने (अ) तथा (उत्तमाए) उत्तम एवी

(जुत्तीए) दीप्तिवडे करीने शोभता एवा (वण्हिपुंगवो) यादवोने विपे श्रेष्ठ एवा नेमिकुमार (निअगाओ) पोताना (भवणाओ) घरथकी (निजाओ) नीकल्या अने मंडपना समीप देशमां आव्या. १३.

ते वखते पोताना घरनी बारीमां बेठेली राजीमती कन्या नेमिकुमारने आवता जोइ वचनथी न कही शकाय तेवा आनंदने पामी आ प्रमाणे विचारवा लागी के—“ शुं आ ते आश्विनीकुमार छे ? के सूर्य छे ? के कामदेव छे ? के इंद्र छे ? के मनुष्यना देहनो आश्रय करीने आवेलो मारा ज पुण्यनो समूह छे ? जे बुद्धिमान विधाताए आ मारा पतिने बनाव्या छे, ते महात्मानो हुं शो प्रत्युपकार करी शकीश ?” आ रीते विचारतां तेणीने श्रीनेमिना दर्शनथी उत्पन्न थयेला हर्षवडे “ हुं कोण छुं ? आ शुं थाय छे ? आ कयो समय छे ? अने हुं कयां रहेली छुं ?” इत्यादिक कांइपण खबर रही नहीं. तेटलामां राजीमतीनुं जमणुं नेत्र फरक्युं, तेथी मनमां उद्वेग पामी तेणीए तरत ज ते बात पोतानी सखीओने कही. त्यारे सखीओ बोली के—“ हे मोटा आशयवाली ! तारुं पाप हणह जाओ. आटली पृथ्वी सुधी आवेला आ नेमिकुमार हवे पाछा नहीं वळे. ’ राजीमती अधीरी थइने बोली के—“ हुं मारा भाग्यपरथी जाणुं छुं के—आ मारा नाथ अहीं सुधी आव्या छे, तोपण ते पाछा ज जशे अने मारुं पाणिग्रहण करशे नहीं. ”

आ अवसरे जे थयुं ते सूत्रकार ज बतावे छे,—

अहं सो तैथ निजंतो, दिस्स पांणे भयहुंए । वडिहिं पंजरहिं च, सन्निरुद्धे सुदुत्रिखंए ॥१४॥

अर्थ—( अह ) हवे ( सो ) ते अरिष्टनेमि ( तथ ) त्यां एटले मंडपनी समीपे ( निजंतो ) गया सता ( वडिहिं )

वाढाओवडे ( पंजरेहि च ) अने पाजराओवडे एटले वाढाओमां अने पांनराओमां ( साक्षिरुदे ) र्धेला एटले पूरेला, एन कारणीओने ( सुदुविसए ) अत्यंत दुःखी यत्तां अने ( मयडुए ) भयथी घास पामेला एवा ( पाणे ) प्राणीओने ( दिस्स ) जोइने १४

जीविअत तु सपत्ते, मसट्टा भक्खिअव्वए । पासित्ता से महापण्णे, सारहिं पडिपुच्छइ ॥ १५ ॥

अर्थ—( जीविअत तु ) जीवितना अतने एटले मरण अवस्थाने ( सपत्ते ) पामेला, तथा ( मसट्टा ) मांसने माट एटले प्राणीओने खावाथी खानारतां शरीरमां मासनी युथी घाय छे एटला माटे ( भक्खिअव्वए ) अविवेकीजनोए भच्चय करवा लायक एवा ते प्राणीओने ( पासित्ता ) जोइने एटले हृदयमां धारण करीने ( महापण्णे से ) महा बुद्धिमान एटले अवधिज्ञानवाढा ते भगवान ( सारहिं ) सारथिने एटले महावतने ( पडिपुच्छइ ) पूछता हवा १५

कस्स अट्टा ईमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो । वडिहि पंजरेहि च, सन्निरुद्धे अ अंच्छहि ॥ १६ ॥

अर्थ—( कस्स अट्टा ) शाने अर्थे एटले शा कारणथी ( एए सव्वे ) आ सर्वे ( सुहेसिणो ) सुत्तना अभिलाषी-सुखने इच्छनारा ( ईमे पाणा ) आ प्राणीओ ( वडिहिं ) वाढाओवडे ( पंजरेहि च ) अने पांनराओवडे ( सन्निरुद्धे अ ) रुध्या सता ( अंच्छहिं ) रहेला छे १ १६.

था प्रमाणे भगवाने पूछयु त्त्यारे—



अहं सौरही तओ भणइ, एए भँदा उ पाणियो । तुब्भं विवाहकज्जम्मि, भुंजावेउं चहुं जणं ॥१७॥

अर्थ—( अहं ) हे ( तओ ) त्पारपत्नी ( सारहो ) सारथिए ( भणइ ) कहुं के ( एए ) आ ( भदा उ ) उत्तम जातिना ज ( पाणियो ) प्राणीओने ( तुब्भं ) तमारा ( विवाहकज्जम्मि ) विवाहना कार्यमां ( चहुं जणं ) घणा जनोने एटले यादवोने ( भुंजावेउं ) खवराववा माटे रुंध्या छे. १७.

आ प्रमाणे सारथिए कहुं, त्पारे प्रभुए शुं कर्हु ? ते कहे छे.—

सोऊण तस्स वयणं, बहुपाणविणासणं । चित्तेइ से महापणणे, साणुंकोसे जिएहि उ ॥ १८ ॥

अर्थ—( बहुपाणविणासणं ) घणा प्राणीओने विनाश करनारुं ( तस्स ) ते सारथिनुं ( वयणं ) वचन ( सोऊण ) सांभलीने ( महापणणे ) महा बुद्धिमान अने ( जिएहि उ ) जीवोने विषे ( साणुंकोसे ) करुणावाळा ( से ) ते भगवान ( चित्तेइ ) विचार करवा लाग्या. अथवा ( जिए हिओ ) एवो पाठ राखी जीवने विषे हितकारक एवा प्रभु विचारवा लाग्या एम अर्थ करवो. १८.

जेदि मज्झ कारणे एए, हम्मंति सुबहुं जिआ । ने मे एअं तु निस्सेसं, परलोए भविस्सइ ॥१९॥

अर्थ—( जदि ) जो ( मज्झ ) मारा ( कारणे ) कारणथी ( एए ) आ ( सुबहुं ) घणा ( जिआ ) जीवो ( हम्मंति ) हणयो, तो ( एअं तु ) आ जीवहिंसा ( मे ) मने ( परलोए ) परलोकमां ( निस्सेसं ) कन्याणकारक ( न भविस्सइ ) नहीं थाय.

पूर्वमवोमां परलोक मीरुपणानो वणो अभ्यास होवाथी अर्ही आ प्रमाणे—' मने परलोकमां कन्याणकारक नही थाय ' एम कसु छे अन्यथा मगवान चरम देहधारी अने अतिशय ज्ञानवाळा होवाथी आको विचार थाय ज नही १९.  
 त्यारपछी जिनेश्वरनो अभिप्राय नाथीने सारथिए ते सर्वे जीवोने पांजरामांथी अने वाडाश्रोमांथी छोडाव्णा, ते वखते प्रभुए हर्षे पामीने ज कयुं ते कहे छे —

सौ कुडलाण जुअँल, सुत्तंग च महायंतो । आहरणाणि अं सव्वंणि, सारंहिस्स पणामए ॥ २० ॥  
 अर्थ—( महायमा ) मोटा यशवाळा ( सो ) ते प्रभुए ( कुडलाण ) कुडळनु ( जुअल ) युगल-चे हुड्यो ( सुत्तंग च ) तथा कटिघट्ट-कदोरो ( अ ) तथा ( सव्वाणि ) सर्व वीजा अगोपांगनां ( आहरणाणि ) आभूषणो ( सारंहिस्स ) सारथिने ( पणामए ) आप्पा-प्रीतिदान कर्यां २०

त्यारपछी करुणारसना समुद्ररूप अने समग्र जीवोना हितकारक प्रभु वक्र प्रहनी जेम तत्काळ त्यांथी पाछा वळ्या ते पवते शिवाराणी अने समुद्रमिनय राजा प्रभुनी पासे आर्ची मेघनी जेम नेत्रमांथी अटुनी धाराने मुक्ता मत्ता बोल्या के —“ हे वत्स ! अर्गीकार करेला मियाहनो त्याग करवाथी अमारा हर्षरूपी घुचने तु केम मूळथी उरुंठी नाचें छे ? अने आ कृष्णादिक यादवोने केम ऐद पमाडे छे ? आ कृष्णे तारे माटे उग्रसन राजा पासे जाते जइने तेनी पुत्री मागी लीधी छे, ते हवे शी रीते तेने पोतनु सुग देखाडी शक्ये ? जीवतां मरेला जेवी रात्रीमती कन्यानु पण हवे शु धरो ? चंद्र विना

रात्रिनी जेम पति विना स्त्री शोभती नथी. तेथी तुरुं विवाह करीने अमने बहुतुं मुख देखाड, अने अमारी आ प्रथम प्रार्थना सफल कर. ” ते सांभळी भगवान् बोल्या के—“ हे पूज्यो ! आवो आग्रह तमे मूकी द्यो. प्रियजनने हितकार्यमां ज प्रेरणा करवी योग्य छे. जे स्त्रीतुरुं पाणिपीडन ज प्राणीपीडनरूप छे, अने जेनामां आसक्त थयेला प्राणी तत्काळ दुर्गतिये पामे छे, तेथी स्त्रीओनो संग मारी जेवा मुमुक्षुने योग्य नथी. कारण के पंडित पुरुषो परलोकना हितने माटे ज यत्न करे छे, परंतु मात्र प्रारंभमां ज सुंदर अने परिणामे दाखण एवा कार्यने माटे यत्न करता नथी. ” आ प्रमाणे भगवान् कहेला हता, ते ज वखते आसन कंपवाथी योग्य अवसर जाणीने लोकांतिक देवोए त्यां आत्री भगवानने ‘ तीर्थ प्रवर्तवो ’ एम कहुं. तथा ते देवोए समुद्रविजय विगेरे सर्वेने कहुं के—“ तमे सर्व पुण्यवंतो आत्रा हर्षने स्थाने सेद केम करो द्यो ? आ भगवान् दीचा ग्रहण करी केचळज्ञान पामी चिरकाल सुधी तीर्थने प्रवर्तवी त्रय जगतने आनंद आपवाना छे. ” आ प्रमाणे देवोतुरुं वचन सांभळी सर्व खुशी थया. पछी घेर जइ भगवान सांबत्सरिक दान देवा लाग्या.

अहीं श्रीनिमिकुमारने पाछा वळेला जोइ रात्रीमती अत्यंत शोकातुर थः मूर्च्छा पामिने पृथ्वीपर पडी गइ. तेने तेनी सखीओए शीतळ उपचार करी चेतना पमाडी, त्यारे ते जाण्ये दुःसना उदुगार काढती होय तेम विलाप करवा लागी के—“ हे नाथ ! कांडपण दोष विना अरुस्मात् आपने विषे रक्त एवी जे हुं तेनो त्याग करी तमे क्यां गया ? तमारी जेवाने भक्तजननी उपेक्षा करवी योग्य नथी. महापुरुषो पोतानो आश्रित जन सदोष होय तोपण तेने तजता नथी. चंद्र कदापि कलंकने तजतो नथी, अने समुद्र वडनानळने तजतो नथी. एम छतां पण हे प्रभु ! जो तमारे मने तजवी हती,

तो विवाहानो स्वीकार करी मारी विडम्बना शामाटे करी ? अथवा तो मारो ज दोष छे के जेधी दुर्लभ एवा पण तमारो विपे में राग क्यो कागडी हसने विपे जे राग करे तेमां कागडीनो ज दोष छे हे नाथ ! तमे मारो स्वीकार करीने मने मूकी दीधी, तेधी मारु रूप, कळाकुशळता, लावण्य, यौवन अने कुळ विंगेरे सर्व निष्फळ थयु हे कांत ! तमारा वियोगनी ब्यथाधी चाणे मारा प्राण नीकळी जता होय, जाणे मारु हृदय फाटी जतु होय अने जाणे मारु शरीर बळी जतु होय एवी हु थइ छु हे स्वामी ! तम जे प्रकारे पशुओने विपे दयाळु थया, ते ज रीते मारापर दयाळु थाओ तमारी जेवा महात्माने पक्तिभेद कारवो योग्य नधी हे प्रभु ! तमारो विपे रागी थयेली मने एक ज वार दृष्टिवडे अने वाणिविडे प्रसन्न करो स्वाद कर्यो विना मीठा के कडवा फळने कोण जाणी शके ? अथवा तो सिद्धिरूपी बहूने वरया उत्तुक थयेला तमारा मनने इद्राणी पण हरण करी शकती नधी, तो हु मनुष्यरूपी कीटिका तो कइ गणतरीमां होउ ? ”

आ प्रमाथे विलाप करती राजीमतीने सखीओए कणु के—“ हे सखी ! रोइस नही ते नीरस अने महा कठोर छे, तेने जवा दे चीजा पणा यदुकुमारो मनोहर रूपवाळा छे, तेमांथी कोइ योग्यने वरने, ” ते सांभळी पोताना कान चे हाथ वडे डांकी दइने राजीमती बोली के—“ हे सखीओ ! तमे सामान्य जनने उचित एडु पण उत्तमने अनुचित एडु वचन केम बोली छो ? जो वदाच रात्रिए स्वर्णनो उदय थाय, के अग्नि शीतळ थाय, तोपण श्रीनेमिने मूकीने बीजा वरने हु नही वरु जो विवाहने विपे मारा हाथपर नेमिनो हाथ नधी थयो तो दीक्षा प्रदण करती वरुते माए मस्तकपर तेनो हाथ यशे ” ते सांभळी सखीओ बोली के—“ हे शुभ आशयवाळी ! तारो था विचार अति उत्तम छे ” पछी ते सती

बोली के--“ हे सखीओ ! आजे मने स्वप्न आव्युं हतुं. तेमां कोइ पुरुष ऐरावण हाथीपर चडनि मारे घेर आव्यो, अने तत्काल पाछो फरी मेरुपर्वतपर चडी गयो. त्या रहीने ते लोकोंने चार अमृतफळ देवा लाग्यो. तेनी पासे में पण फळनी याचना करी त्यारे मने पण ते फळ आव्यां. ” ते सांमली सखीओए कहुं.--“ हे सखी ! तुं खेद न कर. हे पाप रहित ! तारा विघ्नो नाश पाय्या. आ स्वप्न जो के प्रारंभमां कडुक लागे छे, परंतु तेतुं परिणाम अति शुभ छे. ” त्यारपछी राजीमती एक नेमिनाथतुं ज ध्यान करती घरमां रही. प्रभु पण व्रत लेवा तैयार थया.

पछी जे प्रकारे प्रभुए दीक्षा ग्रहण करी, ते सूत्रकार ज कहे छे,--

भ्रमणपरिणामो अकंओ, देवा यजैहोइअं संमोइण्णा । सविट्ठुइ संपरिसा, निक्खलमणं तैस्स काउं जे । २१ ।

अर्थ--( भ्रमणपरिणामो अ ) श्री अग्निनेमिए व्रत लेवा माटे मननो परिणाम ( कओ ) कर्यो. एटले ( देवा य ) चार निकायना देवो ( जहांइअं ) उचितता प्रमाणे ( सविट्ठुए ) सर्व ऋद्धि सहित तथा ( सपरिसा ) पोतपोताना परिचार सहित ( तस्स ) ते नेमिनाथनो ( निक्खलमणं ) दीचानो उत्सव ( काउं जे ) करवा माटे ( समोइण्णा ) स्वर्गथी उतर्यो. २१.

देवमणुस्सपरिवुडो, सीआरयणं तेओ संमारूडो । निक्खलमिअ वारयाओ, रेर्वययम्मि ठिओ भैयवं ॥

अर्थ--( तओ ) त्यारपछी ( देवमणुस्सपरिवुडो ) देवो अने मनुष्योथी परिवरेला अने ( सीआरयण ) शिनिका

रत्नपर ( समारूढो ) आरूढ धयेला ( भयव ) भगवान ( चारथाओ ) द्वारका नगरीधी ( निक्खमिअ ) नीकळीने ( रेव ययम्मि ) रेवतरूपवतपर ( ठिओ ) रमा-गया २२

उज्जाण सपत्तो, ओइण्णो उत्तिमाओ सीआओ। साहस्सीइ परिबुडो, अह निम्बमई उ चिन्ताहि ॥२३॥

अर्थ—त्या ( उज्जाण ) महत्तामवन नामना उद्यानमा ( सपत्तो ) प्रश्न प्राप्त थया त्यां ( उत्तिमाओ ) उत्तम ( मी आओ ) शिकिकाथकी ( ओइण्णो ) नीचे उतर्या ( अह ) पळी ( साहस्सीइ ) हजार प्रधान पुरपोधी ( परिबुडो ) परिवर्या सता ( निन्ताहि ) चिया नवत्रमा प्रश्न ( निक्खमई ठ ) दीचा प्रहण करता हवा-पच महाप्रत उचरता हवा आ प्रमुना पंचे कन्याणको चिन्ता नवत्रमा ज थया छे २३

अह सो सुंगधगधिइ, तुरिअ मैउअकुचिइ। सयमेव लुचई केसे, पंचमुठीहि सैमाहिओ ॥ २४ ॥

अर्थ—( अह ) तयारपळी ( समाहिओ ) सर्ग सावध योगनो त्याग करतायी वान, दर्शन अने चारित्रने विषे समा धिवाळा ( सो ) ते प्रमुण ( गुगधगधिइ ) स्वभावधी ज गुरभि गधवाळा तथा ( मउअकुचिइ ) कोमळ अने कुटिल एवा ( केसे ) केशोना ( पामुठीहि ) पांच मुठीवडे ( मयमेव ) पोते ज ( तुरि अ ) शीघ्र ( लुचई ) लोच कर्णो २४  
वासुदेवो यै ण भर्णइ, लुत्तेकेस जिइदिअ। इच्छिअमणोरह तुंरिअ, पौवेसू ते दंमीसरा' ॥ २५ ॥

अर्थ—( वासुदेवो ) वासुदेव ( य ) तथा बळमद्र अने समुद्रधिजय विंगेरे यादवो ( लुत्तेकेस ) जेणे केशनो लोच

कर्णो ह्ये एवा तथा ( जिह्दिञ्च ) जेषे इन्द्रियोने जीती छे एवा ( णं ) ते नेमिनाथने ( भणइ ) कहेता हवा के- ( दमीसरा ) हे मुनीश्वर ! ( तं ) तमे ( इच्छिअमणोरहं ) वाञ्छित मनोरथने ( तुरिअं ) शीघ्रपण्ये ( पवेसु ) पामो. २५.

नाणेणं दंसणेणं च, चरित्तेण तवेण य । खंतीए सुत्तीए, वड्डुमाणो भवाहि अ ॥ २६ ॥  
एवं ते<sup>२</sup> रामकेसवा, देसारा य बहुजणा । अरिठ्ठनेमिं वंदित्ता, अइगया वारगाउरिं ॥ २७ ॥

अर्थ—वली हे स्वामी ! ( नाणेणं ) ज्ञानवडे, ( दंसणेणं च ) दर्शनवडे, ( चरित्तेण ) चरित्रवडे, ( तवेण य ) तपवडे, ( खंतीए ) चमावडे, तथा ( सुत्तीए ) श्रुक्तिवडे एटले निलोभतावडे ( वड्डुमाणो ) वृद्धि पामनारा ( भवाहि अ ) तमे थाओ. २६. ( एवं ) ए प्रकारे कही ( ते ) ते ( रामकेसवा ) बळराम, वासुदेव, ( देसारा य ) दशार्हो तथा ( बहुजणा ) बीजा घणा जनो ( अरिठ्ठनेमिं ) श्रीअरिष्टनेमिने ( वंदित्ता ) वादीने ( वारगाउरिं ) द्वारका नगरीमां ( अइगया ) पेठा-आव्या. २७.

ते वखते प्रभुना संगमनी आशा नष्ट थवाथी राजीमती केवी थइ ? ते कहे छे.—

‘सौऊण रायवरकक्षा, पव्वजं सा जिणस्स उ । नीहासा य निराणंदा, सीगेण उ संमुच्छया ॥२८॥

अर्थ—( रायवरकक्षा ) उग्रसेन राजानी श्रेष्ठ कन्या ( सा ) ते राजीमती ( जिणस्स उ ) जिनेश्वरनी ( पव्वजं )

दीक्षा ( मोक्षण ) सांभळीने ( नीहासा य ) हास्य रहित तथा ( निराणदा ) आनंद रहित यद्द सती ( सोगेण उ ) शोके करीने ( समुच्छया ) व्याप्त पद्. २८

राईमई विचिंतेइ, धिरंत्यु मैम जीविअ । जा ह तेण परिच्चत्ता, सेअ<sup>२</sup> पेठवडउ, मंम ॥ २९ ॥

अर्थ— त्यापछी ( राईमई ) राणीमती ( विचिंतेइ ) चित्तववा लागी, के—( मम ) मारा ( नीविअ ) जीवितने ( धिरंत्यु ) धिक्कार हो, के ( जा ) जे ( ह ) हु ( तेण ) ते नेमिनाथवडे ( परिचत्ता ) त्याग कराइ छु तेथी हवे ( मम ) मारे ( पव्वइउ ) प्रवज्या लयी ते न ( सेअ ) वन्याणकारक छे के जेथी अन्य जममां पण आवु दु ए प्राप्त न थाय तेम न ' सतीमो पतिने अनुमरे छे ' ए वचन पण सत्य धाय २६.

अहीं श्री अरिष्टनेमिनो भाइ रथनेमि राजीमतीने निपे आसक्त थवाथी हमेशां तेणीने फळ, पुण्य थने अलंकार विगेरे मोरुलतो हतो परतु राणीमती तो पोताना मनमा एम समजती के—“ आ रथनेमि पोताना भाइना स्नेहथी आ सर्वे मने मोकलाय छे ” एम धारी ते सर्वे अगीकार करती हती रथनेमि तो ते यस्तु ग्रहण करवाथी राजीमतीने पोतानी उपर रागवाळी ज मानतो हतो. “ कामी ननेने कमळानी व्याधिवाळानी जेम सर्वे विपरीत ज भासे छे ” एकदा रथनेमि ए राजीमतीने ऋतु के—“ हे सुदर नेत्रवाळी ! तु खेद पापीश नहीं. जो कदाच राग रहित नेमीए तारो त्याग क्यो, तेथी शु धपु ? परतु हये तु मने पतिरूपे अगीकार कर, अने तारु यौवन छुतार्थे कर मालतीने भ्रमरनी जेम हु तारी अत्यंत इच्छा करं छु ” ते सांभळी राजीमती बोली—“ जो के नेमिनाथे मारो त्याग क्यो छं, तोपण हु तेनी शिष्या



थवानी छुं, तेथी आ तमारी प्रार्थना नरुामी छे. " आ प्रमाणे तेणीए निषेध कर्षी छतां रथनेमिए तेणीने विषे स्पृहानो त्याग कर्षी नहीं. तेथी फरीथी एकद्रा एकांतमां तेणे सती राजीमतीने कहुं के— " हे मृगाची ! शुष्क काष्ठमां भमरीनी जेम तुं राग रहित नेमिने विषे आसक्त थइने शामाटे फोगट तारा आत्माने संताप पमाडे छे ? जो तुं मारो स्वीकार करे तो हुं जन्म पर्यंत तारो दाम थइने रहुं. माटे तुं मारी साथे भोग भोगय. भोग विना मनुष्यनो जन्म निष्फल छे एम पंडितो कहे छे. " आ प्रमाणे तेनुं वचन सांभळी तेने बोध करवा राजीमतीए प्रथम दूधनुं पान करी पछी मदनफल ( मीढोळ ) सुंघीने एक थालमां तेनुं वमन करी तेने कहुं के— " आ दूध तमे पीओ. " रथनेमिए कहुं— " शुं हुं श्वान छे ? के जेथी वमननुं पान करं ? " तयारे ह्मीने राजीमतीए कहुं— " शुं तमे एटळुं समजो छो ? " ते वोल्यो— एक चालक पण आ चात समज्जी शके छे, तो हुं केम न ममजुं ? " ते सांभळी राजीमती बोली के— " तो नेमिनाथे वमेली मने तमे भोगववा इच्छो छो, तेथी तमे श्वान तुल्य ज छो. " आ प्रमाणे तेणीनुं वचन सांभळी रथनेमि तेणीनी इच्छानो त्याग करी पोताने घेर गया, अने ते सती पण उग्र तप करवा लागी.

आ तरफ श्रीनेमिनाथ छबस्थ अवस्थाए चोपन दिवस सुधी अन्य ग्रामादिकमां विचरी फरीथी रैवताचळ पर्वत पर आब्या. त्यां प्रभु अष्टम तप करी ध्यानमां मग्न थया. ते चलते तेमने केवळज्ञान प्राप्त थयुं. तरत ज आसन कंपवाथी सर्व इंद्रो देवो सहित उत्सव करवा त्यां आब्या. देवोए मनोहर समवसरण रच्युं. तेने विषे चार मूर्तिवाळा प्रभुए बेसी

१ एक वाजु पोते ने त्रण वाजु त्रण प्रतिविध देवकृत होय छे.

धर्मदेशना प्रारंभी त उरते उद्यानपालकना मुखी प्रभुने ज्ञान उत्पन्न धनु जाणी बळमद्र, श्रीकृष्ण, रानीमती, दशाई विगेरे यादवो अने बीजा मरु मनुष्यो रैवतक परित पर जइ प्रभुने वादी यथायोग्य स्थाने बेसी धर्मदेशना सांमळवा लाग्या धर्मदेशना सांमळी प्रतिगोध पामला घणा राजाओण, अन्य ननोए अने स्त्रीओए प्रभु पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी अने केटलाक श्रावकनां प्रतो अगीकार कर्पो दीचा लीघेला मुनिओमांथी चरवत्त विगेरे अठार गणधरो थया तेमणे स्वामी पासेथी त्रिपदी पामिने द्वादशांगिनी रचना करी त्यारपछी रयनेमिए पण वेराग्य पामो स्वामी पासे प्रव्रज्या लीघी, तथा रानीमतीए पण घणी कन्याओ महित दीचा लीघी

ते ज वात ब्रह्मकार पण कहे छे —

अह सां भमरंसनिभे, कुचैफणगपसाहिए । सयमेव लुचई कॅसे, धिइमता वैवसिसआ ॥ ३० ॥

अर्थ—( अह ) त्यारपछी ( धिइमता ) धैर्यगळी अन ( ववसिसआ ) चारित्रधर्म प्रत्ये उद्यमवाळी ( सा ) ते रानी मतीए ( भमरमनिभे ) अपर चेवा ज्याम अने ( कुचफणगपसाहिए ) कुच एटले कांचकी अने फणक एटले दांतीयावडे सकार कोला ( केमे ) केशोनो ( सयमेव ) पोते ज ( लुचई ) लोच कर्पो ३०

वासुदेवो यै ण भणइ, लुत्तकेस जिईदिअ । ससोरसायर धोर, तैर कॅसे ! लहु लहु ॥ ३१ ॥

अर्थ—( वासुदेवो ) वासुदेव ( य ) तथा बळमद्र विगेरे सर्वेए ( लुत्तकेस ) जेणे केशनो लोच कर्पो छे, अने

( जिह्वादियं ) जेणे इंद्रियो जीती छे एवी ( णं ) ते राजीमतीने ( भणइ ) कहं के- ( कणे ) हे कन्या ! ( घोर ) भयंकर  
एवा आ ( संसारसागरं ) संसारसागरने तुं ( लहुं लहुं ) शीघ्र शीघ्र ( तर ) तरी जा. ३१.  
सा पं०वइआ संती, पं०वावेसी तेहिं वैहुं । सैयणं परिअणं चैव, सीलवंता वैहुस्सुआ ॥ ३२ ॥

अर्थ—( सीलवंता ) शीलवती अने ( बहुस्सुआ ) घणा श्रुतज्ञानवाळी ( सा ) ते राजीमतीए ( पवइआ संती )  
दीक्षा ग्रहण करी संती एटले दीक्षा लीधा पछी ( तहिं ) ते द्वारका नगरीमां ( बहुं ) घणी ( सयणं ) स्वजननी स्त्रीओने  
( परिअणं चैव ) तथा परिजननी स्त्रीओने ( पवावेसी ) दीक्षा अपावी. ३२.

गिरिं च रेवयं जंती, वासेणोल्ला उ अंतरा । वासंते अंधयारम्मि, अंतो लयणस्स सा ठिआ ॥३३॥

अर्थ—एकदा प्रभुने नांदवा माटे ( रेवयं ) रैवतक नामना ( गिरिं च ) गिरि तरफ ( जंती ) जती ( अंतरा )  
मार्गमां ( वासंते ) वरसाद वरसते सते अने ( अंधयारम्मि ) चोतरफ अंधकार थये सते ( वासेण उल्ला ) वरसादवडे आर्द्र  
थयेली एटले भीजायेला सर्व वस्त्रवाळी ( सा ) ते राजीमती ( लयणस्स अंतो ) एक गुफा मध्ये ( ठिआ ) रही. प्रथवा  
अंधकारवाळी गुफामां जइने रही. ३३.

चीवराइं विसारंती, जहाजाय ति पासिआ । रहनेमी भग्गाचित्तो, पच्छा दिट्ठो अ तीईं वि ॥३४॥

अर्थ—ते गुफामां ( चीवराइं ) वखोने ( विसारंती ) सुकववा माटे प्रसारती एवी राजीमती ते वखते ( जहाजाय )

जेवी रीते जन्म पामी हती तेवी एटले वख रहित थइ ( चि ) एवा स्वरूपवाळी तेणीन ( पासिआ ) जोइने प्रयमथी त्यां रहेलो ( रहनेमी ) रथनेमि ( रगचितो ) भयचिचवाळो एटले चारित्रथी अष्ट परिणामवाळो थयो ( थ ) अने ( पच्छा ) त्यारपळी ( तीइ वि ) ते राजीमतीए पण ( दिड्डो ) तेने जोयो प्रवेश करती वखते अघारी जग्यामां काइ पण देखी शकातु नथी, तथी तेणीए प्रयमथी त्यां रहेला रथनेमिने जोयो नहोतो जो कदाच प्रथम प्रवेश करती वेळाए ज जोयो होत तो उपारे वीजी साचीओ जुदा जूदा स्थानमां गर तेम ते पण बीजे जात, एकली अहीं प्रवेश करत नहीं ३४

भी<sup>१</sup>श्रा<sup>२</sup>य<sup>३</sup>सा<sup>४</sup>ताहिं<sup>५</sup>दट्टु, पगते<sup>६</sup>सजय<sup>७</sup>तय<sup>८</sup>। वा<sup>९</sup>हाहिं<sup>१०</sup>काउ<sup>११</sup>सगोफ<sup>१२</sup>, वे<sup>१३</sup>वमाणी<sup>१४</sup>नि<sup>१५</sup>सीश्रइ ॥ ३५ ॥

अर्थ—( य ) तथा ( सा ) त राजीमती ( तहिं ) त्यां ( एगते ) एकतमां रहेला ( तय ) ते ( सजय ) रथनेमि साधुने ( दट्टु ) जोइने ( भीआ ) भय पामी ' कदाच आ मारा शीलनो भग करशे ' एम घारी भयथी ( वेवमाणी ) कपती सुती ( वाहाहिं ) पोताना चे गड्डवडे ( सगोफ ) परस्पर गुथबु-गोपवबु ( काउ ) करीने एटले पोताना स्तनपर चे वाहु वडे परस्पर भर्केटवघ करीने ( निसीश्रइ ) तेने बळात्कारे पण आलिगन नहीं करया देवा माट नीच वेसी गद ३५

अह सो वि रायपुतो, समुद्धिजयगओ । भीअं पवेइअ दट्टु, इम वक्कमुदाहरे ॥ ३६ ॥

अर्थ—( अह ) त्यारपळी ( सो वि ) ते पण ( रायपुतो ) राजपुन ( समुद्धिजयगओ ) समुद्रविजयनो अगज रथनेमि ( भीअ ) भय पामेली अने ( पवेइअ ) कपती एवी तेणीने ( दट्टु ) तोर ( इम ) आ प्रमाणे ( वक्क ) वचनने

( उदाहरे ) बोल्यो. ३६.  
रहनेमी अहं भवे, सुखे चारुभासिणि । ममं भयाहि सुतणू, न ते पीला भविस्सइ ॥ ३७ ॥  
अर्थ—( भदे ) हे भद्रे ! ( सुखे ) हे सारा रूपवाली ! ( चारुभासिणि ) हे मनोहर वचनवाली ! ( अह ) हुं ( रह-  
नेमी ) रथनेमि छुं. ( सुतणू ) हे सुंदर शरीरवाली ! ( ममं ) मने ( भयाहि ) भज-पतिपणे अंगीकार कर. तेम करवाथी  
( ते ) तने ( पीला ) पीडा ( न भविस्सइ ) थरो नही. तुं पीडानी शंकाथी कंपे छे, पण विषयसेवा कांड पीडाने माटे  
थती नथी, परंतु सुखने माटे थाय छे. ३७.

एहि तां भुंजिमो भोए, माणुस्सं खुं सुदुल्लहं । सुत्तंभोगी तओ पंच्छा, जिणंमगं वैरिस्सिमो ॥३८॥  
अर्थ—हे राजीमती ! ( एहि ) आव. ( ता ) प्रथम आपणे ( भोए ) भोगने ( भुंजिमो ) भोगवीए. ( खु )  
खरेखर ( माणुस्सं ) मनुष्यपणुं ( सुदुल्लहं ) अति दुर्लभ छे. ( तओ ) ते कारण माटे ( सुत्तंभोगी ) भोग भोगवीने ( पच्छा )  
पछीथी आपणे ( जिणंमगं ) जिनेश्वरना मार्गने चारित्रने ( चरिस्सिमो ) आचरशुं. प्रथम भोगसुख भोगवीए अने पछी  
दीचा लइए, तो पछी भोगसुखनी इच्छा रहेती नथी. माटे हमणां प्रथम भोगसुख भोगवतुं सारुं छे. ३८.

ते सांभळी राजीमतीए शुं कयुं ? ते कहे छे.—

दंठुण रहनेमिं तं, भग्गुज्जोअपराइअं । रईमई असंभंता, अपर्पाणं संवरे तंहिं ॥ ३९ ॥

अर्थ—(भगुजोअपराहथ) समयने विपे जेनो उद्यम भग्न थयो छे एवा तथा स्त्रीपरीपहथी पराजय पोमला एवा (त) ते ( रहनेमि ) रथनेमिने ( दडूण ) जोइने ( अममता ) “ आ मारापर बळात्कार करी शकथे नहीं ” एम धारी भय रहित थयेली ( राईमई ) राजीमती ( तर्हि ) ते गुफामां ज ( अष्याण ) पोताना शरीरने ( सवरे ) बांकती हवी एटले लूगडां पहेरी लेती हवी ३६

अहै सौं रायवरकन्ना, सुट्टिआ निअमव्वए । जाइं कुल च सील च, रक्खेमाणी तंय वैए ॥ ४० ॥

अर्थ—( अह ) त्पारपछी ( निअमव्वए ) शौच, सतोष, स्वाध्याय अने तपरूपी नियमने विपे तथा पच महाव्रतने विपे ( सुट्टिआ ) स्थिर रहेली ( सा ) ते ( रायवरकन्ना ) राजानी श्रेष्ठ कन्या-राजीमती ( जाइ ) जाति एटले माताना धराने, ( कुल च ) कुळ एटले पिताना धराने ( सील च ) तथा शीलने ( रक्खेमाणी ) रचण करती सती ( तय ) ते वखते ( वए ) आ प्रमाणे बोली ४०

जैइ सिं रूवेण वेसमणो, लल्लिएण नल्लकूररो । तंहा वि 'ते नै इच्छामि, जैइ सिं' सर्म्मव पुंरदरो ॥ ४१ ॥

अर्थ—हे रथनेमि ! ( जइ ) जो तु ( रूवेण ) रूपे करीने ( वेसमणो ) वैश्रमण-कुचेर जेवो ( सि ) होय, अथवा जो तु ( लल्लिएण ) थिलासमाळी चेष्टाए करीने ( नल्लकूररो ) नळकूर देव जेवो होय, अथवा ( जइ ) जो तु ( सक्क ) साक्षात् ( पुंरदरो ) इद्र जेवो ( सि ) होय, ( तहा वि ) तो पण इ ( ते ) तने ( न इच्छामि ) इच्छती नथी. ४१

पर्वखण्डे जलित्त्रं जोई, धूमकेउं दुरासयं । नं इच्छंति वंतयं भोतुं, कुले जाया अंगंधणे ॥ ४२ ॥

अर्थ—हे रथनेमि ! ( अंगंधणे ) अंगंधन नामना ( कुले ) कुळमां ( जाया ) उत्पन्न थयेला सर्पो ( जलित्त्रं ) जाड्व-  
ल्यमान अने ( दुरासयं ) दुःसह एवी ( धूमकेउं ) अग्निनी ( जोई ) ज्याळाने विषे ( पर्वखण्डे ) प्रवेश करे छे, परंतु- ( वंतयं )  
वमेलुं विप ( भोतुं ) खावाने—पाळुं चूसी लेवाने ( न इच्छंति ) इच्छता नथी. ४२.

धीरस्थु तेजसो कामी, जो तं जीविअकारणा । वंतं इच्छसि आवेउं, सेअं ते मरणं भवे ॥४३॥

अर्थ—( कामी ) हे कामांध ! ( ते जसो ) तारा यशने ( धीरस्थु ) धिक्कार हो. अथवा ( अजसोकामी ) हे अपयशनी  
इच्छावाळा ! ( ते ) तने धिक्कार छे, के ( जो ) जे ( तं ) तुं ( जीविअकारणा ) असंयमरूप जीवितने कारणे ( वंतं ) वमेलाने  
( आवेउं ) फरीथी पीवाने ( इच्छसि ) इच्छे छे. जे भोगने तजी दीक्षा ग्रहण करी, ते ज भोगने फरी भोगववा इच्छे छे. तेथी  
करीने ( ते ) ताहं ( मरणं ) पंडित मरण ( सेअं ) श्रेयस्कर ( भवे ) छे. अर्थात् असंयम जीविते जीववा करतां पंडित-  
मरणे मरवुं सारुं छे, परंतु वमेलता भोगीने फरीथी भोगववानी इच्छा करवी सारी नथी. निघ वस्तुने जाणी तेनो त्याग  
क्यों होय, तो तेने पंडितो फरीथी ग्रहण करता नथी. ४३.

अहं च भोगरायस्स, तं च सिं अर्धवण्हिणो । मां कुले गंधणा होमो, सज्जमं निहुंओ चर ॥४५॥

अर्थ—हे रथनेमि ! ( अहं च ) हुं ( भोगरायस्स ) भोगराजनी एटले उग्रसेन राजानी पुत्री छुं, ( तं च ) अने तुं

( अघगवदिहयो ) अघकवृष्णिना कुळमां ( सि ) उत्पन्न थयेलो छे, तेथी आपणा ( तुले ) कुळमां आपणे ( गघणा ) गघन जातिना सर्पतुन्य ( मा होमो ) न थइए गघन जातिना सर्पो वमेला विपने मन्थी आकर्षण कराय त्यारे अग्निपा तना मयथी पाहु चूसी ले छे, परतु अगघन जातिना सर्प तो अग्निमा प्रवेश करे छे पण वमेलु विप पाहु चूसी लेता नथी तेथी करीने ( निहुओ ) व्रतमां स्थिर थइने तु ( सज्जम ) समयनु ( चर ) आचरण कर—सेवन कर ४४

जई त काँहिसि भाँव, जां जा दिच्छसि नांरीओ । वांयाविहु वं हेडो, अँट्टिअप्या भँविस्ससि ॥४५॥

अर्थ—हे साधु ! ( जा जा ) जे वे ( नारीओ ) स्त्रीओने ( दिच्छसि ) तु जोइश थने जोइने तेने विपे ( जइ ) जो ( त ) तु ( भाव ) अभिलाषाने ( काहिसि ) फरीश, तो ( वायाविहो ) वायुथी प्ररायेली ( हडो ) हड नामनी वनस्पति एटले शेवाळनी ( व ) जेम तु ( अँट्टिअप्या ) अस्थिर चित्तवाळो ( भविस्ससि ) थइ जइश ४५

गोवालो भडवालो वाँ, जहा तँदव्वणिस्सरो । एँव अँणिस्सरो त पि, सामँणस्स भँविस्ससि ॥४६॥

अर्थ—( जहा ) जेम ( गोवालो ) गोवाळ-पारकी गायने पगार लइने चारनार ( वा ) अथवा ( भडवालो ) पगार लइने कोइना करीयाणानु रचण करनार ( तँदव्वणिस्सरो ) ते द्रव्य एटले गाय अथवा करीयाणानो अनीश्वर छे—स्वामी नथी ( एँव ) ए ज प्रमाणे ( त पि ) तु पण ( सामणस्स ) चारिजनो ( अँणिस्सरो ) अनीश्वर ( भविस्ससि ) थइश गोवाळ के भाँडपालक जेम गायनो के भाँडनो स्थामी नही होवाथी तेना फळने भोगवनार थतो नथी, तेम तु पण चारि



व्रत्तो वेपयमान धारण करवाची-द्रव्ययमेनो ७ पाळक होपाची मात उदरपूर्तिना कळने न भोगनार यद्दश, परंतु भास्यमंतुं फळ जे मोक्ष तेनो मोक्ता थडश नहीं. ४६.

आ प्रमाणे राजीमतीए क्लं, न्यार रयनेमिण शुं क्लं ? ते तडे ते.—

\* तीसे सो वयणं सीञ्चा, संजैयाइ सुभासिञ्चं । अंकुसेण जंहा नागो, धम्मसे संपेडिवाइओ ॥ ४७ ॥

अर्थ—( जहा ) जेम ( प्रकुमेण ) मंहुयाउडे ( नागो ) हाथी मार्गमां आवं डे, तेम ( तीणं ) ते ( संजयाइ ) राजीमती माधीतुं ( सुभासिञ्चं ) मुभासिञ्चं ( वयणं ) वचन ( गोणा ) गोंगडीने ( धम्मो ) धम्ममागेंमां ( संपेडिवाइओ ) स्थिर थयो. ४७.

मंणगुत्तो वयंणुत्तो, कांयगुत्तो जिइंदिओ । सोमाणं निइलं फासे, जांवजीवं वुडेव्वओ ॥ ४८ ॥

अर्थ—( मणगुत्तो ) मनउडे गुप्त एटने मनगुभिराळो, ( वयणुत्तो ) मनउडे गुप्त एटले ७ मनगुभिराळो, ( कायगुत्तो ) नायावडे गुप्त एटले कायगुभिराळो तथा ( जिइंदिओ ) निर्गोदग थने ( वुडेव्वओ ) वल्ल जिणे एउ थडने ( तासडीनं ) जीति पयंत ( निइलं ) निश्चलं एसा ( मामाणं ) चारिणने ( क्लं ) पाऊता लाग्यो. ४८.

उगं तवं चैरित्ताणं, जांया वुणिं पि केंपली । संबं कम्मं न्वित्ता णं, सिद्धिं पेसा अणुत्तरं ॥४९॥

अर्थ—( उगं ) उग्र ( तां ) तप ( चरित्तानं ) क्लंनि ( इमि णि ) मधीमती अने रयनेमि ए यमे ( केंपली ) केळ्यानी ( जाया ) थया थने अनुक्के ( मलं ) गौ ( क्लं ) क्लंने ( वरित्ता णं ) तसांनि ( अणुत्तरं ) नरो-

तम एवा ( सिद्धि ) सिद्धिस्थानने ( पत्ता ) पाम्या ४६

एव कैरिति सधुद्धा, पडिआ पँविअवखणा । त्रिणिअट्टति भोगेसु, जँहा 'से पुरिसुत्तमु सिं' वेमि ॥५०॥

अर्थ—( मनुद्धा ) सम्यक् प्रकारे बोधवाळा, ( पडिया ) तत्त्वबुद्धियाळा अने ( पवित्रवखणा ) विवेकी एवा पुरुषो ( एव ) आ प्रमाणे ( कैरिति ) करे छे, तथा ( से ) ते ( पुरिसुत्तमो ) पुरुषोमां उत्तम एवा रथनेमिनी ( जँहा ) नेम ( भोगेसु ) भोग थकी ( विणिअट्टति ) पाछा फरे छे ( ति वेमि ) ए प्रमाणे हु कहु छु, एम सुधर्मास्वामीए जधुस्वामीने कहु ५०

अहीं भगवान नेमिनाथ पण पृथ्वीतलपर विहार करता सता जेम कमळोने छर्ये निकस्वर करे तेम भव्य प्राणीओने प्रतिबोध करता हता ते दश धनुष उचा हता, तेने शरनु चिन्ह ( लछन ) हतु, मेघ जेवा रयाम हता, दश प्रकारना धर्मनो उपदेश आपी दण दियाओने पवित्र करता हता तेना परिवारमां अठार हजार साधु, चाळीश हजार साध्वीओ, एक लाख ने श्रोगणोतेर हजार श्रामको तथा त्रण लाख छत्रीश हजार श्राविकाओ हती. ते प्रभु केवलज्ञान थया पछी चोपन दिवस ओछा एवा सातसो वर्ष सुधी पृथ्वीपर विचर्या छेवट उज्जयत गिरि उपर पांचसो छत्रीश साधुओ सहित अनशन ग्रहण करुं, कुल एक हजार वर्षनु आयुध पूर्ण करी ते साधुओ सहित एक मासे अरिष्टनेमि प्रभु निर्वाणपदने पाग्या. ते बखले समग्र परिवार सहित देवेन्द्रोए आनी तेमनो निर्वाण उत्सव कर्यो इति श्रीअरिष्टनेमिजिन चरितम्

॥ इति द्वाविंशमध्ययनम् ॥ २२

## अथ केशिगौतमीय नामनुं त्रेवीशसुं अध्ययन. २३

कोइक प्रकारे चारित्रिनी शिथिलता थाय तो रथनेमिनी जेम धर्ममां ज धृति करवी, एम वावीशमा अध्ययनमां कसुं. हवे बीजाना मननी शंका पण केशी अने गौतमनी जेम दूर करवी एम आ अध्ययनमां कहेवाशे. ते विपेनुं आ प्रथम सूत्र छे.—

जिणे पासि ति नामेणं, अरहा लोगपूइए । संबुद्धप्पा य सबवणू, धम्मतिथयरे जिणे ॥१॥

अर्थ—( जिणे ) रागद्वेयने जीतनार ( पासि ति ) पार्श्व एवा ( नामेणं ) नामना ( अरहा ) पूजाने लायक तीर्थकर, ए ज कारण माटे ( लोगपूइए ) लोकोए पूजेला तथा ( संबुद्धप्पा य ) तत्त्वना ज्ञानवाळा, तथा ( सब्वणू ) सर्वज्ञ, तथा ( धम्मतिथयरे ) धर्मतीर्थने करनारा तथा ( जिणे ) सर्व कर्मने जीतनारा होता. १.

अहीं प्रसंगे प्राप्त थयेनुं श्रीपार्श्वनाथनुं संचित्त चरित्र कहे छे.

आ ज भरतक्षेत्रमां पोटनपुर नामनुं नगर छे. तेमां अरविंद नामे राजा हतो. तेने सकल शासनो पारगामी अने जिनधर्ममां तत्पर विश्वभूति नामे पुरोहित हतो, तेने अनुद्धरा नामनी भार्या हती. ते पुरोहितने कमठ अने मरुभूति नामना वे पुत्रो हता. ते बनेने अनुक्रमे वरुणा अने वसुंधरा नामनी भार्याश्रो हती. एकदा विश्वभूति पुरोहित बने पुत्रो उपर घरनो भार स्थापन करी अनशन ग्रहण करी स्वर्गे गयो. तेनी भार्या अनुद्धरा पण पतिना वियोगथी शोक अने तप-वडे शरीरनुं शोषण करी मृत्यु पासी. बने भाइओए मातापितानी उत्तरक्रिया करी. पछी राजाए मोटा पुत्र कमठने पुरोहित

पदे स्थापन कर्षो मरुभूति व्रत लेवानी इच्छाथी विषयोथी विद्युख थइ अत्यत धर्मकर्ममां तत्पर थयो

एकदा नवा र्णवनवाळी अने मनोहर आकृतिवाळी नानामाहनी प्रिया वसुधराने जोइ कमठ तेणीनापर आसक्त थयो तेथी स्वभावथी न परस्त्रीमां लपट एवो ते कमठ कामदेवरूपी वृचना दोहद समान मधुर वचनोवडे तेणीनी साथे वातो करवा लाग्यो एकदा तेणे तेणीने कहु के—“ हे मुग्धा ! भोग विना फोगट आ युवावस्थाने केम गुमावे छे ? जो मारो नानो माइ सत्त रहित होवाथी तने सेवतो नथी, तो हे मनोहर ! मारी साथे क्रीडा कर ” एम कही पोताना उत्सर्गमां तेणीने आदरपूर्वक पेसाडी, एटले प्रथमथी ज भोगने इच्छती वसुधराए तेनु वचन अगीकार कयुं पछी ते वज्रे विवेक, मर्यादा अने लज्जानो त्याग करी एकांतमा पशुक्रिया सेववा लाग्या केटलेक काले कमठनी स्त्री वरुणाए तेमनो आ अनाचार नाणी इर्घ्यान लीधे ते सर्वे वृत्तांत मरुभूतिने कळो. ते सांभळी “ असमवित वातने प्रत्यक्ष जोया विना सत्य केम मानवी ? ” एम मनमा विचार करतो मरुभूति कमठ पासे जइ बोल्यो के—“ हे भाइ ! हु कांइ कार्यने माट परगाम जाउ छु ” एम कही गाम बहार जइ भिक्षुकनो वेप लइ रात्रिए घेर आवी स्वर फेररीने कमठने कहुं के—“ हु दूर देशथी आवु छु, मने रात्रिवासो रहेवा माटे कांइक स्थान आपो ” ते सांभळी परमार्थने नहीं जाणता कमठे तने पोताना घरनी पासना एक थोरडामां रहेवानु कहु, एटले ते वज्रे कामांधनी दुष्ट चेष्टा जोवानी इच्छाथी ते तेमां खोटी निद्राए सुतो पछी “ मरुभूति बहारगाम गयो छे ” एम धारी वसुधरा अने कमठ निःशकपणे क्रीडा करवा लाग्या ते मरुभूतिए साक्षात् जोषु आवो तेमनो दुराचार जोवाने अममर्थ छता लोकापवादथी भय पामतो मरुभूति तेनो प्रतिकार

कर्या विना शीघ्रपणे त्यांथी नीकळी गयो. पळी कांइक विचार करी मरुभूतिए ते सर्व वृत्तांत अरविंद राजा पासे जइने कळो. राजाए पण क्रोध पामी कमठने नगर बहार काढी मूकवा माटे आरचकोने हुकम कर्यो एटले आरचकोए तेने गधेडापर वेसाडी चोतरफ फेरवी विडंबनापूर्वक नगरमांथी काढी मूकयो. तेवी विडंबनाथी चैराग्य पामी वनमां जइ ते कमठ तापसत्रत ग्रहण करी उग्र वाळतप करवा लाग्यो. आ वृत्तांत जाणी पश्चात्ताप पामेला मरुभूतिए विचार कर्यो के— “ मने धिक्कार छे के में राजानी पासे घरनुं छिद्र उधाडुं करी मोटाभाइने विडंबना पमाडी. ‘ घरनुं दुश्चरित्र प्रगट करलुं नहीं. ’ ए नीतिनुं वचन पण क्रोधथी अंध थयेला मने स्मरणमां रहुं नहीं, तो हजु पण मोटाभाइ पासे जइ आ मारा अपराधने हुं खमाहुं. ” एम विचारी वनमां जइ ते मोटाभाइना पगमां पळ्यो. ते वखते ते दुष्ट बुद्धिवाळा अने दुष्कर्ममां ज तत्पर एवा कमठे विचार्युं के—“ आणे जे मारी विडंबना करी छे ते मने मृत्यु करतां पण अधिक दुःखकारक छे. ” एम विचारी महाक्रोधथी एक मोटी शिला उपाडी नानाभाइना मल्लकपर मारी, तेथी तत्काळ ते मरुभूति मरण पामी आर्तध्यानने लीधे विंध्याचळनी अटवीमां गूथनो स्वामी हाथी थयो.

एकदा अरविंद राजा पोतानी प्रियाओ साथे शरदऋतुमां अगाशीने विपे क्रीडा करतो हतो. ते वखते आकाशमां वादळां चडी आव्यां. ते साथे इंद्रधनुष, गर्जना अने वीजळीना चमकारा पण थवा लाग्यां. ते सर्व जोइ “ अहो ! आ अतीव रमणीय छे. ” एम राजाए तेनी प्रशंसा करी. थोडीवारमां ते वादळां सर्व आकाशमां व्यापी गयां अने पाळां तरत ज वायुना हापाटाथी वीखराइ गयां. ते जोइ राजाए विचार्युं के—“ जेम आ वादळां चणवारमां देखाइने वीखराइ

गया-नाश पाम्यां, ते न रीते आ चगतना सर्वे पदार्थो विनश्चरं छे, तेमां प्रीति करवी फोगट छे, " आ प्रमाणे विचारतो ज राजाने अवधिज्ञान प्राप्त घयु तरत ज तेणे पोताना राज्यपर पोताना पुत्रने स्थापन करी सदगुरुनी पासे चारित्र्य अगीकार करुं अनुक्रमे ते रानर्षि श्रुतना पारगामी थइ विहार करता एकदा सागरवदत्त नामना सार्थवाहनी साथे अष्टापद पर्वत तरफ चान्या तेमने नमस्कार करी सार्थवाहे पूछ्यु के—" हे प्रभु ! आपने क्यां चबु छे ? " रानर्षि चोच्या के—" अमारें तीथयात्रा करवा जनु छे " करीथी सार्थवाहे पूछ्यु के—" आपनो क्यो घर्म छे ? " त्यारे मुनिए तेने विस्तार सहित जैनधर्म कसो. ते सामळी सार्थवाहे श्रावकधर्म अगीकार कर्यो अनुक्रमे चालतो ते सार्थ ज्यां मरुभूति हाथी रहेतो हतो ते अट्टीमां पर्वोच्यो अने त्यां मोजननो अवसर थवाथी एरु सरोवरने कांठे पडाव नांल्यो तेवामां ते मरुभूति हाथी पोतानी घणी हाथणीओ सहित ते तळावगां पाणी पीचा आंव्यो त्यां पाणी पी हाथणीओ साथे फ्रीडा करी तळावनी पाळपर चळ्यो त्याथी चारे दिशा तरफ दृष्टि नासता तेणे ते सार्थ जोयो. तरत ज क्रोधघणी यमराजनी जेम ते हाथी सार्धने हणवा तेनी तरफ दोळ्यो, तेने आयतो जोइ भय पामेलो सार्थ तत्काळ नाठो ते वखते रानर्षिए अवधिज्ञानथी तेने बोध करवा लायक जाणी तेना आवयाना मार्गमां न पर्वतनी जेम स्थिर उभा रही कायोत्सर्ग कर्यां ते हाथी पण दोडवो तेनी पासे आंव्यो, पण मुनिने जोइ शांत थइ गयो अने तेमनी पासे उभो रखो ते वलते राजर्षिए कायोत्सर्ग पारी तेनो उपकार करवा माटे कलु के—" हे हाथी ! तारा मरुभूतिना गवने केम समारतो नथी ? हे बुद्धिमान ! मने-अरविंद राजाने शु उ ओळखतो नथी ? अने पूर्व भवमां अगीकार करेला श्रावकधर्मने शु तु भूली गयो ? " आ

प्रमाणे मुनिनुं वचन सांभली ते हाथीने जातिस्मरण ज्ञान थयुं, तेथी तेणे पोतानी सुंद उंची करी मस्तक पृथ्वीपर नमावी मुनिने नमस्कार कर्यो. पछी मुनिए कहेला श्रावकधर्मने अंगीकार करी शांत थयेलो हाथी पोताने स्थाने गयो. आ अति अद्भुत देखाव जोइ प्रथम नासी गयेला सार्थजनो पाछा आवी, मुनिने नमी श्रावकधर्म यास्या अने सार्थपति पण जिनधर्ममां अतिदृढ थयो. पछी अष्टापद तीर्थे जइ देवोने वांदी राजर्षिए अन्यत्र विहार कर्यो. ते हाथी पण मुनिनी जेम इयांसामितिपूर्वक चालतो, पष्टादिक तप करतो, सुकां पांदडां विगेरेथी पारणुं करतो, सूर्यना किरणोथी तपेळुं सरोवरनुं पाणी पीतो अने हाथणीओ साथे क्रीडानो त्याग करी शुभ भावना भावतो रहेवा लाग्यो.

अहीं कमठ तापस पोताना भादने हणीने शांत थयो नहीं. तेथी आर्तध्यानथी मरण पामी विध्याचळनी अटवीमां ज कुकुट जातिनो उत्कट सर्प थयो. एकदा वनमां भमतां तेणे मरुभूति हाथीने सूर्यना तापथी तपेळुं जळ पीवा मोटे सरोवरमां प्रवेश करतो जोयो. ते वखते ते हाथी दैवयोगे तेना पंकमां खुंची गयो, तेथी ते जरा पण आगळ पाछळ चाली शक्यो नहीं. ते जोइ ते सर्पे उडी तेना कुंभस्थळ उपर लंश कर्यो, तेना विपनो आवेश थवाथी पोतानो अंतसमय जाणी ते हाथीए तत्काळ अनशन ग्रहण कर्यु अने ते वेदनाने सहन करतो तथा पंचनमस्कारनुं ध्यान करतो मरण पामी सत्तर सागरोपमना जघन्य आयुष्यवालो सहस्रार नामना आठमा देवलोकरमां देव थयो. अनुक्रमे कुकुट नाग पण मरीने पांचमी नरकरमां सतर सागरोपमना उत्कृष्ट आयुष्यवालो नारकी थयो.

आ ज जंबूद्वीपमां पूर्वमहाविदेह क्षेत्रमां सुकच्छ नामना विजयमां वैताडय पर्वत उपर तिलका नामनी नगरी छे. तेमां

विद्युद्गति नामनो विद्याधर राचा हलो तेने कनकनी जेवी काठिवाळी कनकतिलका नामनी राखी हती एकदा ते मरुभूति हाथीनो जीव आठमा स्वर्गमाधी चमी तेमनो पुत्र थयो तेनु नाम किरणवेग पाडथु अनुक्रमे वृद्धि पामतो ते कुमार समग्र कळाआमां निपुण थइ यौवनवयने पाम्यो एरूदा तेना पिताए तेने राज्यपर स्थापन करी दीचा ग्रहण करी, एटले ते किरणवेग राचा न्यायथी राज्यनु प्रतिपालन करवा लाग्यो एकदा सुरयुक्त नामना गुरुना मुखधी घर्मदेशना सांभळी किरणवग राचाए प्रत्रज्या ग्रहण करी अनुक्रमे गीतार्थ थइ एकाकी विहारनो अभिग्रह धारण करी ते मुनि आकाश मार्गे पुंरुसार्थे द्वीपमा गया त्यां रुनकगिरि नामना पर्वतनी पासे कायोत्सर्गे रखा

अहीं वुणुट सर्पनो जीव नरकमांथी नीकळी ते ज कनकगिरि पर्वतना वनमां अतिविपवाळो सर्प थयो तेणे पर्वतनी पाते ममतां ध्यामां रहेला ते मुनिने नोया तेथी पूर्वभवना वेरथी क्रोध पामी ते मुनिना सर्व अगोपर डल मार्यो. ते वयते ते किरणवग मुनिए अनशन ग्रहण करी विचायुं के—“ आ सर्प मारा असातावेदनी कर्मनो चय करावनार होवाथी मारो मित्ररूप छे ' इत्यादि शुभ भायना भावी काळधर्म पामी चारमा अच्युत देवलोकना जयद्रुमावर्त नामना विमानमां याचीश सागरोपमना आयुष्यवाळ्य श्रेष्ठ देव थया पेलो सर्प ते पर्वत पासे ममतो हतो, तेवामां दावानळ लागनाथी तेमां पळी जइ मरण पामी फरीथी पांचमी नरकमां उरट्ट स्थितिवाळो नारकी थयो

आज जयद्वीपना पश्चिम महाविदेहचेत्रने विपे सुगंधि नामनी विजयमा शुभकरा नामनी नगरी छे तेमां महापराक्रमी चक्रवर्त्य नामे राचा हलो, तेने जाथ्ये बीजी लक्ष्मी ज होय तेवी लक्ष्मीवती नामनी प्रिया हती एकदा त्रिरणवेग मुनिनो



जीव स्वर्गार्थी चवी वज्रनाभ नामे तेमनो पुत्र थयो. अनुक्रमे वृद्धि पामतो ते कुमार सर्व कळाओने ग्रहण करी पवित्र  
धौवनवयने पाम्यो. त्यारे तेने राज्य सौपी वज्रनीर्ये दीक्षा ग्रहण करी. पळी वज्रनाभ राजाए चिरकाळ सुधी राज्यतुं पालन  
कर्तुं. एकदा वैराग्य पामी चक्रायुध नामना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी वज्रनाभे च्चेमंकर नामना तीर्थंकर पासे दीक्षा  
ग्रहण करी. अनुक्रमे तीत्र तपस्या करता अने परीपहोने सहन करता ते मुनि आकाशगमनादिक अनेक लब्धिओ पाम्या.  
गुरुनी आज्ञार्थी एकाकी विहार करता ते मुनि एकदा आकाशमार्गे सुकच्छ नामना विजयमां गया. त्यां विहारना क्रमधी  
एकदा भयंकर अरण्यमां रहेला ज्वलनाद्वि नामना पर्वतपर गया. तेटलामां सूर्य अस्त पाम्यो. तेथी ते पर्तनी कोइ  
गुफामां ते मुनि कायोत्सर्गे रखा. प्रातःकाळे सूर्योदय थयो त्यारे इर्यासमिति पूर्वक विहार करना लाग्या. आवा अवसरे ते सर्पने  
जीव नररुमांथी उधरी भवमां अटन करी ते ज गिरिनी पासे कुरंगक नामे भिल्ल थयो. ते एकदा मृगयाने माटे नीकळ्यो,  
तेवामां ते ज मुनिने तेणे प्रथम जोया. तेथी 'आ अपशुकन थया' एम धारी पूर्वभवना वेरने लीधे तेणे ते मुनिने तीच्छ वाण  
मार्यु. तरत ज ते महामुनि ' नमोऽर्हद्भ्यः ' एम चोलता वायना प्रहारथी पीडा पामी पृथ्वीपर वेसी गया अने तत्काळ  
अनशन ग्रहण कर्तुं. पळी सर्व जीवोने खमाची शुभध्यानथी काळधर्मे पामी ते मुनि मध्यम त्रैनेयकमां ललितांग नामे देव  
थया. अर्ही एक ज प्रहारथी मरण पामेला मुनिने जोइ कुरंगक भिल्ल पोताने महावळ्वान मानी आनंद पाम्यो. अन्यदा  
ते भिल्ल पण मरण पामी सातमी नररुमां रौरव नामना नरकावासमां नारकी थयो.

आ ज जंबूद्वीपना पूर्व महाविदेहने विणे पुराणपुर नामतुं नगर छे. तेमां कुलिशबाहु नामे राजा हतो. तेने

सुवर्शना नामनी प्रिया हती एकदा वज्रनामनो जीव श्रैवेयकथी चवी चौद महा स्वप्नोधी युचित तेमनो पुन थयो तेनु  
 नाम सुवर्णयाहु पाड्यु ते अनुक्रमे वृद्धि पामी पूर्वभवना अभ्यासथी समग्र कळाओ प्रहण करी युवावस्थाने पाम्यो  
 त्यारे राजाण वन राज्यपर स्थापन करी पोते दीचा प्रहण करी पळी सुवर्णयाहु राजा दया सहित पृथ्वीनु रचण करवा  
 लाग्यो एरुदा राजा अथक्रीडा करमा नगर बहार गयो त्यां विपरीत शिखावाळो अश्व तेने हरण करी दूर वनमां लइ  
 गयो त्यां एक सरोवर जोइ तृपातुर थयेलो अश्व पोतानी मेळे ज उभो रह्यो एटले राजाए अश्वपरथी उतरी ते अश्वने  
 नगराची पाणी पाइ पोते पण स्नान करी जळपान कर्युं पळी ते सरोवरने कांठे चणवार विश्राम लइ आगळ चालता  
 राजाए एक तपोवन जोयु तेमा प्रवेश करतां राजानु जमणु नेत्र फलक्यु, त्यारे तेखे त्रिचापुं के—“ अहीं मने कांइक  
 लाभ थवो जोइए ” एम विचारी आगळ चालता राजाए त्यां वृत्तने पाणी पाती एरु मनोहर मुनिरुम्माने तेनी सखी  
 साथे जोइ. तेथी वृत्तने आंतरे उभो रही तेणीने एकदृष्टिए जोतो राजा त्रिचार करवा लाग्यो के—“ आ कन्यान  
 विधाताए पोताना सर्व प्रयत्नथी रयी जणाय छे आ कन्या विकारोनो तो उपाध्याय छे, असराथोमां पय आनु रूप  
 नथी, परतु आनु आ रूप ययां ? अने आनु नीच जातिने उचित कर्म ययां ? ” ए प्रमाणे राजा विचार करतो हतो,  
 तेवामा तेणीना आसना सुगधमां मोह पामेलो फोइ अमर तेणीनी पास फरमा लाग्यो ते वसते तेणीए भय पामी सखीने  
 कहु के—“ हे सखी ! आ अमरथी मारु रचण कर, रचण फर ” ते सांभळी सखीए हास्यथी कहु के—“ सुवर्णयाहु  
 मिना कोण तारु रचण करवा समर्थे छे ? ” ते सांभळी असर जोइ “ सुवर्णयाहु पृथ्वीनु रचण करते सने तमने कोण

उपद्रव करे छे ? ” एम बोलतो राजा तत्काळ प्रगट थयो. तेने अरुसात् आनेलो जोइ ते वने स्त्रीओ चणवार तो चोभ पामी. पक्षी धीरजने धारण करी सखी बोली के—“ सुवर्णबाहु रक्षण करते सते तापसोने उपद्रव करवा कोइ पण समर्थ नथी. परंतु आ मारी गुग्धा सखी पोतानी पसे आवता अमरने जोइ भय पामीने ‘ मारुं रक्षण कर, रक्षण कर, ’ एम बोली छे. हे महापुरुष ! कामदेवना जेना रूपवाळा तमे कोण छो ? ते कदो. ” ते सांभळी राजाए पोते ज पोतानी ओळराण आपवी अयोग्य धारी कणुं के—“ हुं सुवर्णबाहुनो वशवतीं सेवक छुं, अने राजानी आज्ञाथी आश्रमनो उपद्रव दूर करना आव्णो छुं. परंतु हे भद्रे ! आ कमळना सरसा नेत्रवाळी कन्या अनुचित काम करवावडे क्लेश केम पामे छे ? ” त्यारे सखीए कणुं के—“ आ रत्नपुरना राजा विद्याधरेंद्रनी प्रिया रत्नावळीनी कुक्षिथी उत्पन्न थयेली पदुमा नामनी कन्या छे. आ कन्यानो जन्म थयो, ते ज वखते तेना पिता मरण पाग्या. त्यारे तेना पुत्रो राज्यने मटे परस्पर युद्ध करवा लाग्या. ते वखते रत्नावळी राणी आ बाळाने लइ अहीं पोताना भाइ गालच नामना कुळपतिनी पसे आवीने रही छे. तेथी तापसोए लालन पालन कराती आ कन्या अहीं ज वृद्धि पामीने अनुक्रमे युवावस्थाने पामी छे. अहीं मुनि-कन्याओना सहवासथी ते आतुं ज कर्म करतां शीखेली छे. एरुदा कोइ ज्ञानी साधु महाराज अहीं आव्या हता. तेने कुळपतिए ‘ आ कन्यानो वर कोण थशे ? ’ एम पूछ्युं त्यारे साधुए कणुं के—“ सुवर्णबाहु नामना चक्रवर्ती अश्वथी हरण कराइने जाते ज अहीं आवी आ कन्याने परणशे. ”

आ प्रमाणेनी हकीकत सांभळी सुवर्णबाहु राजाए हर्ष पामी विचार्युं के—“ आ अश्वे मारा उपर उपकार कयों, के

जेथी अही लावी आनो मने सगम कराव्यो " पछी राजाए तेणीने पूछ्यु के—" हे भद्रे ! कुळपति कयां छे ! तेमने जोबा माटे हु अत्यत उत्सुक छु " सखीए कहु के—" अही आवेला साधुए आने अहीथी विहार कर्यो छे, तेमनी साथे गया छे. थोडेक दूर सुधी जइ तेने वादी हमयां पाछा आवशे " आम वात चाले छे एटलामां अश्वना पगलानि अनुसरी राजानु सै-य आश्रम पामे आवी पढौंच्यु ते जोइ ते वने कन्याओए ' आ सुवर्णबाहु राजा पोते ज छ ' एम जाणी लीधु पछी ' कुळपतिना आवतां सुधी आ पद्मानी शी अवस्था थशे ? ' एम शका करती सखी तेणीने महाकष्टी आश्रममां लइ गइ पछी ते नदा नामनी तेनी सखीए आश्रममां आवेला गालवमुनिने तथा रत्नावळीने आनदथी सुवर्णबाहु राजानी सर्व वात कही वतावी ते सांभळी हर्य पामेला गालवमुनि रत्नावळी, पद्मा अने नदा सहित राजानी पामे आव्या राजाए पण मुनिनु बहुमान कयुं पछी मुनिए राजाने कहु के—" हे राजा ! ज्ञानीए आ पद्माना पति तमने कहा छे, तेथी आ मारी मायेजने तमे परखो " ते सांभळी अत्यत हर्य पामेला राजाए गांधर्वविधिथी तेणीनु पाणिप्रहरण कयुं

ते वखते त्यां विमानोवडे आकाशने आच्छादन करतो पद्मोत्तर नामनो विद्याधर राजा के जे पद्मानो सापल भाइ थतो हतो, ते आव्यो रत्नावळीना कहेवाथी तेणे सुवर्णबाहु राजाने नमस्कार करी कहु के—" हे देव ! तमारा वृत्तांत सांभळीने हु तमारी सेवा करवा आव्यो छु हे स्वामी ! तमे जाते पधारीने वेताढ्य पर्वतपर रहेला मारा रत्नपुर नगरने पवित्र करो " आयु तेनु वचन अगीकार करी रत्नावळी अने कुळपतिनी रजा लइ राजा परिवार सहित तेना

विमानमां वेडों. ते वखते पद्ममा पण मामानी तथा मातानी रजा लह पतिनी पाछळ चाली. पछी पद्मगोत्तर पद्ममा सहित ते राजाने तत्काळ चैताढय पर्गतपर पोताना नगरमां लह गयो. त्यां दिव्य रत्नना प्रासादमां ते सुवर्णबाहु राजाने उतारो आपीने सेवकनी जेम स्नान भोजनादिकवडे तेनो योग्य सत्कार कर्यो. पछी सुवर्णबाहुए त्यां रही पोताना पुण्यप्रभावथी नन्ने श्रेणिनुं साम्राज्य प्राप्त कर्धुं अने घषी विद्याधर कन्याओनुं पाणिग्रहण कर्धुं. पछी पद्ममा विगरे प्रियाओ सहित ते राजा पोताना नगरमां आव्यो. त्यां अनुक्रमे चक्रादिक रत्नो उत्पन्न थयां, तेनाथी छ खंड साधी सुवर्णबाहु राजा चक्रवर्ती थया अने छ खंडनुं चिरकाळ राज्य कर्धुं.

एकदा सुवर्णबाहु राजा पोतानी प्रियाओ सहित प्रासादनी उपर क्रीडा करता हुता, ते वखते आकाशमां देवोने जता आगता जोइ राजा त्रिस्मय पाम्या. माणसोने पूछवाथी जगन्नाथ तीर्थकरनुं आगमन सांभळी चक्रीए त्यां जइ जिनेश्वरने वांदी तेमना सुखथी मोहनो नाश करनारी देशना सांभळी. पछी चक्रवर्ती पोताने स्थाने आव्या अने धर्मचक्री पण भव्य प्राणीओने प्रबोध करता पृथ्वीपर विचरवा लाग्या एकदा जिनेश्वरनी पासे आवेला देवोने संभारता चक्रवर्तीने विचार थयो के—“ आवा देवो में पूर्वं क्याइ पण जोया छे. ” आ प्रमाणे ऊहापोह करतां तेमने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थ्युं अने तेणे पोताना पूर्वभवो जोया. तेथी मोक्षरूपी घुन्नना बीज समान वैराग्य तेमने प्राप्त थयो. एटले दीक्षा लेवानी इच्छाथी तेणे पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन कर्यो, तेवामां ते ज जगन्नाथ तीर्थकर विहार करता त्यां ज पधार्या. तेमनी पासे सुवर्णबाहु चक्रीए दीक्षा ग्रहण करी. ते अनुक्रमे गीतार्थ थइ दुस्तप तप करवा लाग्या. तेमां जिनसेवा आदिक

स्थानकोना सेवनबडे तेमणे तीर्थकर नामकर्म उपार्जन कर्तुं एकदा विहारना क्रमे चरिवन नामनी षट्ठीमा चरिमहा गिरि नामना पर्वतपर चडीं सुर्धनी समुख दृष्टि राग्नी तेओ कापोत्सर्गे रखा ते अवसरे कुरगकनो जीव नरकमांथी नीकळी ते ज वनमां सिंह थयो हतो, ते दैवयोगे भमतो भमतो त्यां आवी ऱडयो अने ते मुनींद्रने चोइ पूर्वना चैरने लीधे तेनापर अत्यत क्रोध पामी ते राजसनी जेम तेमना तरफ दोडयो ते सिंहेने आवतो जोइ मुनींश्वरे तत्काळ अनशन ग्रहण कर्तुं तेनामां ते सिंह मोटी फाल मारी गुनिना शरीरपर पडयो, एटले ते मुनि काळधर्म पामी दशमा देवलोकमा महाप्रभ नामना विमानने त्रिपे वीश सागरोपमना आयुष्यवाळा देव थया

ते सिंह पण मरीने चोथी नररुमा नारकीपणे उत्पन्न थयो त्या दश सागरोपम सुधी त्रिविध प्रहारनी वेदनाओने अशुभवी त्यांथी नीकळी चिरकाळ सुधी तिर्यचनी योनिमा भ्रमण करी ते सिंहेनो जीव कोइक गाममां त्राक्षणनो पुत्र थयो तेनो जम थया पल्ली तरत ज तेना मातापिता विगोरे सर्ग मरण पाम्या तेने कठ नागे बोलावी लोकोए दयाथो तेने उछेरी मोटो कर्णो ते अत्यत दरिद्री युगावस्थाने पाम्यो, त्पोरे माणसोनी निदाने सांभळतो ते महा कष्टथी भोजन पण पामवा लाग्यो एकदा दानभोगादिक करता घनिकोने जोइ तेने विचार थयो के-“ आ लोकोए पूर्वजन्ममां दुष्कर तप कर्णो हरो, कारण के नीज विना अन्नप्राप्ति न थाय तेम तप विना लक्ष्मी प्राप्त थाय नहीं तेथी हु पण तप करु ” एम त्रिचारी वैराग्य पामेला कंठे तापसनी दीवा ग्रहण करी अने रुदादिकनु भोजन करी ते पचाग्नि आदिक अज्ञानरुट रुखा लाग्यो, आ ज भरतक्षेत्रमा चाराणसी नामनी नगरी छे ते नित्यसखीनी जेम पासे रहेली गगनदीगढे सेनाय छे अलका

नगरीनी जेवी ते नगरीनी चोतरफ जाणे चैत्ररथ नामनुं वन आवीने रहुं होय तेम मनोहर उद्यान रहेलुं छे. ते नगरीना किह्लाने विशाल अने मोटा माणिक्यरत्नना कांगराओ छे, ते जाणे दिशारूपी लक्ष्मीना प्रयास विनाना नित्यना आदर्श होय तेवा शोभे छे. ते नगरीमां रहेला चैत्योना शिखरो उपर रहेला सुवर्णना कळशोने अतिथिनी जेम आवेला जाणी सुये पोताना क्रिखोवडे पूजे छे. ते नगरीमां धनिकना मनोहर महेलो जाणे पुण्यना उदयथी पामना लायक देवोना विमानो होय तेवा शोभे छे. देवताओ भोजनने माटे ज्यारे मागे छे त्यारे ज सुधा ( अमृत ) ने पामे छे, परंतु आ नगरीना सर्व गृहो तो प्राये करीने सुधा ( चूना ) थी लींपायेला ज छे ए आश्चर्ये छे. ते नगरीमां दुकानोनी श्रेणि अगणित करीयाणाना समूहवडे सांकडी छतां पण कुत्रिकापणनी श्रेणिनी जेम विशाल होय तेम शोभे छे. विथने उल्लंघन करे तेवी ते नगरीनी लक्ष्मी जोहने पंडितो मानता हता के—“ रोहणाचळ पर्वत उपर हवे मात्र पथ्थर ज रखा हशे अने समुद्रमां केवळ जळ ज रहुं हशे.”

ते नगरीमां कार्तिकस्वामीनी जेवा पराक्रमवाळा अश्वसेन नामे राजा हता, ते जाणे के इद्रे आवीने पृथ्वीपर वास कर्णो होय तेम शोभता हता. ते राजाने वामा नामनी राणी हती. ते गुणना समूहवडे सुंदर, शीलानिक गुणवडे शोभती अने अश्वसेन राजाने तेना प्राण करतां पण अधिक प्रिय हती. एकदा सुवर्णवाहुनो जीव त्रण ज्ञान सहित प्राणत नामना दशमा देवलोकथी चवी वामादेवीनी कुचीमां अवतर्यो. ते वखते सुते सुतेली ते मनोहर मुखवाळीए हस्ती विंगेरे चौद महा स्वप्नेने पोताना मुखमां प्रवेश करता जाया. पक्षी तत्काल जागेली तेणीने अनुक्रमे इंद्रे, राजाए अने पक्षी ज्योतिषीओए

ते स्वप्नतु फल कष्टु के—“ हे देवी ! आ महा स्वप्नोथी तमारो पुत्र जगत्पति थयो ” ते सांभळी हर्ष पामेली चामादेवीए सुखेथी गर्भ धारण कर्यो, अने काळ सपूर्ण थये श्याम कांतिवाळा तथा सर्पना चिन्हवाळा मनोहर पुत्रने जन्म आप्यो ते वखते आसनकपथी प्रभुनो जन्म जाणीने छप्पन दिक्कुमारीओए आबी वृत्तिकर्म कर्युं, अने शक्र इद्र विगरे सर्व इद्रोए अवधिज्ञानथी प्रभुनो जन्म जाणी मेरुपर्वतपर लई जई प्रभुनो जन्मोत्सव कर्यो पळी जाणे अमृततनु पान कर्युं होय तेम आनद पामेला अश्वसेन राजाए कारागृहमाथी केदीने मुक्त करी पुत्रजन्मनो महोत्सव कर्या. प्रभु गर्भमा हता त्यारे तेनी माताए अधारी रात्रिमा पण पोतानी पासे थइने जता सर्पने जोइ तत्काळ ते चात पतिने कही हती, तेतु स्मरण करी अश्वसेन राजाए ते पुत्रतु पार्श्व नाम पाडथु इद्रे आदेश केरेली पांच धात्रीओथी पालन कराता प्रभु वाळकतु रूप धारण करीने आवेला देवीनी साये क्रीडा करवा लाग्या इद्रे अगुठामां मुकेला अमृततनु पान कराता प्रभु अनुक्रमे वृद्धि पामी यौवनवयने पाग्या ते वखते प्रभुतु शरीर नव हाथतु थयु.

अकदा अश्वसेन राजा सभामां वेठा हता, ते वखते द्वारपाळनी रजाथी कोइ पुरुषे सभामां आबी राचाने कष्टु के—  
 “ हे स्वामी ! आ भरतघेत्रमां कुशस्थळ नामतु नगर छे तेमां प्रसेनजित् नामे राजा छे तेने प्रभावती नामनी युवावस्थाने पामेली मनोहर पुत्री छे खरेखर विधावाए आखा जगतनो सार लइने ज तेने वनावी लागे छे कारण के चद्र तेना सुरता दासपणाने पामे छे, मृग तेणीना नेत्रोनो दास छे, मयूर तेना केशपाशनो दास छे, अने अमृतरस तेना चाबयरसनो दास छे, अरिसो तेना कपोळनी शोमाने पामतो नथी, सुवर्णकद तेना अधरनी उपमा पामता नथी, तेना



कंठनी सुंदरता मेळववामां पांचजन्य शंख पण योग्य नथी, तेना स्तननी लक्ष्मी ग्रहण करवामां सुवर्णनो कळश पण चतुर नथी, तेनी भुजलतानी लक्ष्मी मेळववा कमळतुं नाळ पण समर्थ नथी, तेना हस्तनी कांतिना लेशने पण पल्लवो पामी शकता नथी, तेनी कटिनी शोभा ग्रहण करवामां वज्र पण मूर्ख छे, तेनी नाभिनु सदृशपणुं शीखवामां आवर्त पण समर्थ नथी, तेना जघननी तुलना करवामां रेतीवाळो नदीनो कांडो पण शक्तिमान नथी, तेना साथळनी सुंदरता मेळववामां रंभा पण अटकी जाय छे, मुगलीनी जंघा पण तेनी जंघानी शोभा ग्रहण करवामां सफळ उद्यमवाळी नथी, तेना चरणकमळनी लक्ष्मीने अरविंद पण पामी शके तेम नथी. सुवर्ण पण तेना शरीरनी कांतिना कोइपण अंशने पामतुं नथी अने तेना लावण्य गुणने जोइ अप्सराप्रो पण रसवाळी थती नथी. आची मनोहर ते कन्याने जोइ योग्य वरनी प्राप्ति माटे तेना पिताए घणा कुमारो शोध्या, परंतु कोइ पण तेने योग्य मळ्यो नथी. एकदा ते प्रभावती सखीओ साथे उद्यानमां गइ हती. त्यां किन्नरीओथी गनातुं आ गीत तेणीना यांभळवामां आव्युं के—“ रूप, लावण्य अने तेजवळे देवोनो पण तिरस्कार करनार अश्वसेन राजाना पुत्र श्रीपार्श्वकुमार चिरकाळ सुधी जय पामो. ” आवा अर्थवाळुं गीत सांभळी ते प्रभावती श्रीपार्श्वकुमारपर प्रीतिवाळी थइ. तेथी ते लज्जा अने क्रीडानो त्याग करी मात्र ते गीतने ज वारंवार सांभळवा लागीं. ते जोइ तेनी सखीओए तेने श्रीपार्श्वने विषे रागवाळी जाणी. केमके पाणीमां रहेला तेलनी जेम रागीमां रहेलो राग छानो रही शकतो नथी. पछी ते किन्नरीओ गइ त्यारे ते प्रभावती तेमनी सन्मुख त्राकशमां जोइ जरही. ते वखते सखीओ तेने महा महेनते घेर लइ गइ. परंतु तेने कोइपण ठेकाणे सुख प्राप्त थयुं नही. कामदेवरूपी अपस्मारना व्याधिथी

परमेश धरणी ते रा.पण जाणती नहोती, मात्र जम योगिनी परब्रह्मनु ध्यान करे तेम एक श्रीपार्श्वानु ज मनमां ध्यान कररा लागी सखीयोना मुखयी तेने श्रीपार्श्वने विषे श्रीतिवाळी जाणी तेना मातापिता हर्ष पाण्या अने " पुत्रीनो राग योग्य स्थान छ" एम कहेवा लाग्या पल्ली तेना मातापिता बोल्या के—" आ पुत्रीने श्रीपार्श्व पासे स्वयमरा तरीके मोकलीने आपणें तेने आनंद पमाडु ' आ धृतांत अनेक देशोना अधिपति यवन नामना महा वळ्यान राजाए पोतानी सभामां पाताना चरपुरपाना मुखयी मांभळ्यो ते वसते ते बोल्यो के—" ते प्रसेनजित् राजा मने मूर्खीने पार्श्वकुमारने पोतानी पुत्री केम आपणें ? जो ते पाते न मने नहो आपे तो हु वळारकारे तेने ग्रहण करीश " आ प्रमाणे म्हीने तत्काळ पननी तेना वेगमाळा ते यवन राजाए सैन्य सहित आवी कुशस्थळने चोतरफथी रुधुछे तेथी रात्रिना प्रारममा वीडाइ गयेंला कमळमा अमरती जेम कोइपण मनुष्यनो नगरमां प्रवेश के निर्गम थइ शकतो नधी आ धृतांत आपने जणामवा माटे पुरुपोत्तम नागना मने मणीपुत्रन प्रसेनजित् राजाए मोकळ्यो छे, ते हु रात्रिने समये गुप्त रीते नगर बहार नीरुळी अहो आब्यो छु वा हवे जे करवा लायक होय ते आप ररो प्रसेनजित् राजा आपने शरणे छे "

आ प्रमाणे तेनु वचन सांभळी अथसेन राजाना नेत्रो 'नोधयी रक्त थयां अने त दुष्ट यवन राजाने शिवा करवा माट तेणे तत्काळ प्रयाणती भेरी वगडावी ते भेरीनो शब्द सांभळी ' आ अरुस्मात् तु छे ? ' एम विचार करता श्रीपार्श्व कुभारे पिता पासे आनी कष्टु के—" हे पिता ! देवो के अमुरो मध्ये कया वळगाने आपनो अपराध कयों छे के जेथी आपो पोताने आ प्रयास ररवो पडे छे ? " ते सांभळी अथसेन राजाए त आवेला पुरुषने आगळीवडे देखाडी कष्टु के—

“ कुशस्थळना राजातुं रक्षण करवा अने यवनराजाने जीतवा जतुं छे. ” ते सांभळी पार्श्वकुमारे कळु के—“ वासने विपे परशुनी जेम ते मनुष्यरूपी कीटने विपे सुरासुरने जीतनारा आपे आ उद्यम करवो योग्य नथी, तेथी आप मने ज आज्ञा आपो अने आप आ महेलेने ज शोभावो. हुं पण तेना गर्वनो नाश करी शकीश. ” ते सांभळी पुत्रतुं बळ त्रण जगत करतां पण अधिक छे एम जाणता राजाए तेतुं वचन अंगीकार कर्तु अने सैन्य सहित तेने जत्रानी रजा आपी.

श्रीपार्श्वकुमार सैन्य सहित चाल्या, त्यारे पहेला प्रयाणमां ज इंद्रना सारथि मातलिए आवी रथमांथी उतरी प्रभुने नमस्कार करी विनंति करी के—“ हे प्रभु ! क्रीडावडे पण संग्राममां उद्यमवंत थयेला आपने जाणीने शकइंद्रे भक्तिथी आ रथ आपने माटे मोकल्यो छे, तेनो स्वीकार करो. ” ते सांभळी विविध प्रकारनां शस्त्रोथी भरेला अने पृथ्वीने नहीं स्पर्श करता ते रथ उपर आरूढ थइ सूर्यनी जेम प्रभु आकाशमार्गे चाल्या. पाछळ पृथ्वीपर चाली आवती सेनापरनी कृपाने लीधे नाना प्रयाणोवडे चालता प्रभु अनुक्रमे केटलेक दिवसे कुशस्थळ नगर पासे आवी पहाँच्या. त्यां एक उद्यानमां देवोए करेला प्रासादमां प्रभु सुखेथी रह्या. पछी प्रभुए एक दूत यवनराजा पासे मोकल्यो. तेणे जइ यवनराजाने कळु के—“ हे राजा ! श्रीपार्श्वनाथ तमने आज्ञा करे छे के-आ प्रसेनजित् राजा अमारा पिताने शरणे रह्या छे, तेथी तेना नगरनो रोध सूकी धो. कारण के पिता पोते ज अहीं आगता हता, तेमने आ कारणथी ज निषेध करीने हुं अहीं आव्यो छुं, तेथी जो तमने सुखनी डच्छा होय तो तमे तमारे स्थाने जता रहो. ” आहुं दूततुं वचन सांभळी क्रोध पामेलो यवन बोल्यो के—“ रे दूत ! तुं आ शुं बोले छे ? मारी पासे अश्वसेन के पार्श्व कइ गणतरीमां छे ? तो ते पार्श्व ज पोताने स्थाने जाय अने

पोताना शरीरनु रक्षण करे तु दूत छे तेथी तने जीवतो मूक छु अरे ! तु पण जलदी अर्हीथी जतो रहे " ते सांभळी दूते फतीथी कछु के- ' हे राजा ! अमारा स्वामी दयालु छे, तेथी कुशस्थळना राजानी जेम तारु पण रक्षण इच्छे छे, अने तेथी करीने ज मने तारी पासे बोध करवा मोकल्यो छे, तो हे जड ! बोध पास, अने अमारा स्वामीने इद्रो पण जीती शके तेम नथी, एम तु नकी जाण जेम सिंहनी साथे हरण, अर्यनी साथे अघकार, अग्निनी साथे पतंगीयु, समुद्रनी साथे कीडी, गरुडनी साथे सर्प, वज्रनी साथे पर्वत अने हाथीनी साथे घेटो युद्ध करवा शक्तिमान नथी, तेम तु पण श्रीपार्श्वनी साथे युद्ध करवा शक्तिमान नथी तेथी हे यवन ! तु तेमनी आज्ञा अगीकार कर " आ प्रमाणे दूत बोळ्यो त्यारे यवनना सैनिको तेनी साथे विपरीतपणे बोलवा लाग्या अने तेने मारवा तयार थया तेवामां तेना मत्रीए कछु के- " अरे मूढ सैनिको ! तमे श्रीपार्श्वप्रभुना दूतने मारवा इच्छो छो ते तो पोताना ज स्वामीने गळे पकडी अनर्थरूपी कुवामां नांखया जेवु करो छो इद्रो पण जेनी आज्ञाने मस्तकपर मुगटनी जेम चढावे छे, तेना दूतने मारवो ते तो दूर रहो; परन्तु तेनी हीलना पण दु ख आपनारी छे " आ प्रमाणे कही ते सुमटोने निवारी पछी मत्रीए सामवचनथी ते दूतने कछु के- " हे भद्र ! आमनो आ एक अपराध तमे माफ करजो अने प्रभुने आ वाच कहेशो नहीं श्रीपार्श्वप्रभुना चरणकमळने वांदवा माटे अमे हमणां ज आर्धीए छीए " आ प्रमाणे समजावी ते दूतने मत्रीए विदाय कर्यो पछी पोताना स्वामीना हितने इच्छता मत्रीए राजाने कछु के- " हे देव ! मविष्यनो विचार कर्यो विना सिंहनी केशवाळीने रेंचवा जेवु आवु विपरीत परिणामालु कार्य केम करो छो ? इद्रो पण जे पार्श्वप्रभुना पत्तिओ छे तेनी साथे तमारु युद्ध शी रीते होइ शके ? तेथी हजु पण कठपर कुठार धारण करीने तमे

पार्थनाथनो आश्रय करो, तेमनी पासे तमारा अपराधनी क्षमा मागो अने तेमनी आज्ञा अंगीकार करो. जो आलोक अने परलोक संबंधी खुलनी इच्छा होय तो तमारे मा कार्य करुं उचित छे. " आतुं मंत्रीनुं वचन सांभळी यवनराजा बोल्यो के- " हे मंत्री ! तमे मने ठीक बोध कर्यो. " एम कही पोताना कंठपर परशु राखी परिमार सहित ते यवनराजा श्रीपार्थ-प्रभु पासे गयो. त्यां प्रतिहार द्वारा रजा लइ सभामां जइ प्रभुने नमस्कार कर्यो. प्रभुए तेना कंठपरथी कुठार मूकावी दीधो, त्यारे फरीथी नमस्कार करी यवन राजा बोल्यो के- " हे नाथ ! तमे सीने सहन करनार छो, तेथी मारो आ अपराध क्षमा करो, मने भय पामेलाने अभयदान आपो अने मारापर प्रसन्न थइ मारी लक्ष्मीने ग्रहण करो. " श्रीपार्थनाथे त्हुं के- " हे कुशळ राजा ! तमाहं कल्याण थाओ, तमाहं राज्य तमे भोगो, भय पामशो नहीं अने फरीथी आतुं कार्य करशो नहीं. " आ प्रमाणे भगवानना वचननो तेणे अंगीकार कर्यो, एटले जिनेधरे तेतुं बहुमान कर्युं. ते यरते तरत ज कुशस्थळ पुरनो रोध दूर थयो. पछी प्रभुनी आज्ञाथी ते पुरुषोत्तमे पुरमां जइ प्रसेनजित् राजाने ते वार्ता कही प्रसन्न कर्यो.

त्यारपछी भेटनी जेम प्रभावती कन्याने साथे लइ प्रसेनजित् राजा प्रभु पासे आव्वा. अने तेमने विज्ञप्ति करी के- " हे जगत्पति ! जेम तमे अहीं आचीने मारापर अनुग्रह कर्यो तेम आ मारी पुत्रीनुं पाणिग्रहण करी मारापर अनुग्रह करो. आ मारी पुत्री तमारापर चिरकाळथी रागवाळी छे. ते वीजा वरने इच्छती नथी, वळी स्वभावथी ज तमे कृपालु छो माटे आनापर विशेष कृपावान थाओ. " ते सांभळी स्वामी बोल्या के- " हे राजा ! तूं मारा पितानी आज्ञाथी तमाहं रक्षण करवा आव्बो छूं, पण तमारी पुत्रीने परणवा आव्बो नथी, तेथी आ वार्ता फरी करशो नहीं. " ते सांभळी प्रसेनजिते

पिचार्युं के—“ आ पार्थनाथ मारा वचनयी मानथे नहीं तेथी अश्वसेन राजा पासे ज अप्रह करी हु आ वात तेने मना  
 धीर. ” पक्षी स्वामीए प्रसेनचित् साथे यन राजानी मित्राइ कराथी ते यन राजाने राजा आपी. पक्षी प्रभुए प्रसे-  
 नचित्ने राजा आपी त्यारे तेणे कबु के—“ हे स्वामी ! मारे अश्वसेन राजाने नमवा माटे आपनी साथे आवडुं छे ” प्रभुए  
 ‘ बडू मा० षणु पटले प्रसेनचित् राजा प्रभावतीने साथे लइ प्रभुनी साथे ज चाल्यो अत्रुकमे वाराणसी नगरीए जइ  
 पिताने प्रयाग करी श्रीपार्थनाथ पोताना महेलमां गया, त्यारे प्रभावती सहित प्रसेनचित् राजाए अश्वसेन राजा पासे जइ  
 तेमने प्रयाग कर्या, तरत ज अश्वसेने उसा वइ तेने गाढ आलिंगन करी पूठु के—“ तमे कुशळ छो ? अही सुधी जाले  
 केम आगु ययु ? प्रसेनचिते कयु—“ तमे नेनु रचण करनार हो, तेने अकुशळ क्याथी होय ? हे महाराजा ! हु जाले  
 अही आव्यो छु, ते तमारी पासे काइक यागना करवा आव्यो छु ते ए के—हे देव ! आ मारी प्रभावती नामनी पुत्रीने श्री  
 पार्थनाथने माट अगीकार करो हे स्वामी ! आ मारी याचना तमारी पासे निष्कळ न थाओ. ’ अश्वसेने कबु के—“ आ  
 कुमार सदा भयवस्थी विरक्त छे, तोपण तमारी प्रसन्नता माटे बळात्कारे पण तेने परखावीश ” एम रूही अश्वसेन राजा  
 तेने साथे लइ श्रीपार्थकुमार पाठे गया, अने कयु के—“ हे वत्त ! आ राजानी आ पुत्रीने तु परण हे दाधिएयना  
 समुद्र ! जो के तु बाल्यावस्थाथी ज ससारने विषे विरक्त छे, तोपण आ मारु वचन तारे मानवु पडयो ” आ प्रमाणे पि-  
 ताना अति आग्रहथी पार्थनाथे भोगकळ कर्मने भोगववा माटे प्रभावतीनु पाणिप्रहरण कयुं पक्षी क्रीडापर्वत, नदी, वाव  
 अने उद्यानादिकर्मा प्रभावतीनी साथे क्रीडा करवा प्रभुए केटलाक दिनसो निर्गमन कर्या

एकदा पार्श्वनाथ पोताना महेलना गवाक्षमां वेठा वेठा नगरीने जोता हता. ते वखते घणा लोकोने पुष्पादिक पूजा-सामग्रीने लह नगर बहार जता जोया. तेथी कुमारे सेवकोने पूछुं के—“ आजे कयो उत्सव छे के जेथी आ लोको शी-घ्रताथी नगर बहार जाय छे ? ” त्यारे कोइ सेवक वोल्थो के—“ हे स्वामी ! आजे उत्सव कांइपण नथी, परंतु आजे नगर बहार उद्यानमां कठ नामनो एक महातपस्वी तापस आवेलो छे, तेनी पूजा करवा माटे आ लोको जाय छे ” ते सांभळी स्वामी पण ते कौतुक जोवा माटे परिचार सहित उद्यानमां गया. त्यां ते कठ तापस पंचाग्नि तप करतो हतो. ते वखते अवधिज्ञानवडे प्रभुए अग्निना कुंडमां नांतेला एक लाकडानी पॉलमां एक सर्पने वळतो जोइ दयाळु होवाथी कछुं के—“ अहो ! आ तास तप करे छे, तोपण अज्ञानता होवाथी दयागुण तो छे ज नहीं. नेत्र विना मुखनी जेम दया विना धर्म शा कामनो ? दया रहित पुरुषोनो कायक्लेश पण पशुनी जेम वृथा छे. ” ते सांभळी कठ वोल्थो के—“ हे राजपुत्र ! तमारी जेवा चत्रियो तो हार्थीने शिवा आपवी ए विगरे कार्यमां ज पंडित होय छे, धर्ममां तो अमे मुनिओ ज पंडित छीए. ” ते सांभळी पशुए पोताना सेवको पासे ते कुंडमांथी सकगतुं लाकडुं बहार कडावी यतनापूर्वक तेने चीरावुं, एटले तेमांथी एक मोटो सर्प नीकळ्यो. ते सर्प अग्निनी ज्वाळाथी व्याकुळ थयेलो हतो, तोपण प्रभुं दर्शन थतां ते अंतःकरणमां अत्यंत प्रसन्न थयो. तेने प्रभुए पोताना सेवको पासे परलोकना भातारूप प्रत्याख्यान अपावुं अने पंचनमस्कार संभळव्या. प्रभु पोते तेनी सन्मुख कृपादृष्टिथी जोइ रखा, तेथी ते सर्पे पण सावधानपणे ते सर्व अंतःकरणथी अंगीकार कयुं. आ रीते धर्मना प्रभावथी ते सर्प मरीने धरखेंद्र थयो. आतुं आश्चर्य जोइ लोको प्रभुनी स्तुति करवा लाग्या के—“ अहो ! आ

स्वामीनु ज्ञान तो अद्भुत जणाय छे " पछी लोको सहित प्रभु पोताने स्थान गया आ सर्व जोइ शठ मनवाळो कठ अत्यंत लज्जा पाग्यो, अने वधारे अज्ञान तप करवा लाग्यो " देवाद्योने सन्मार्गनी प्रीति क्यांथी होय ? " अनुक्रमे ते कठ तापस मरण पासी अज्ञानतपना प्रभावथी मेघकुमार ( स्तनितकुमार ) ने विषे मेघमाळी नामनो भवनपति देव थयो

एरुदर श्रीपार्श्वनाथ स्वामी वमत ऋतुमा क्रीडा करवा माटे उद्यानमां गया त्या एक प्रासादनी भीति उपर श्रीनेमिनाथना चरित्रनु चित्र चित्तरंजु जोइ विचार्युं के— " अहो ! श्रीनेमिनाथने घन्य छे के जेणे कुमार अवस्थामा ज अत्यंत रागवाळी राजीमती कन्यानो त्याग करी दीचा ग्रहण करी हवी तो हु पण हवे सर्व सगनो त्याग करु " आ प्रमाणे प्रभुए विचार कर्यो के तरत ज लोकातिक देवोए आधी " हे स्वामी ! तीर्थ प्रवर्तवो " एम विसृति करी पछी कुचेरे पूरेला घनवडे वार्षिक दान आपी प्रभुए दीचा माटे मातापितानो आज्ञा लीधी पछी अश्वसेन विंगेरे राजाओए अने शक्र विंगेरे इद्रोए एकठा थइ श्रीपार्श्वप्रभुने दीक्षाभिषेक कर्यो पछी देवोए वहन करेली शिरिकामा आरूढ थइ प्रभुए देवदुदुभिना नाद सहिते आथमपद नामना वनमा जइ, शिरिकामांथी नीचे उतरी, वद्व अने आभूषणोनो त्याग करी मस्तकपर पचमुष्टि लोच कर्यो अने पछी इद्रे आपेळु देवदूष्य डावा रामापर धारण करी त्रीश वर्षनी वयवाळा स्वामीए त्रथमो पुरुषो सहित अष्टम तप करी सर्वविरति अगीकार करी ते वयते स्वामीने चोथु मन पर्येव ज्ञान प्राप्त थयु पछी स्वामी भारड पचीनी जेम प्रमाद रहित थइ पृथ्वीपर विचरवा लाग्या सर्व इद्रो स्वामीनो दीक्षामहोत्सव पूर्ण करी नदीधर द्वीपे जइ त्यां अष्टान्हिका उत्सव करी पोतपोताने स्थाने गया



एकदा श्री पार्श्वनाथ स्वामी विहारना क्रमथी नगरनी नजीक रहेला एक तापमना आश्रममां आव्या. ते वखते द्ये  
अस्त पाभ्यो. तेथी त्यां एक कुवाने कांठे रहेला बटवृत्तनी नीचे प्रभु नासिका उपर दृष्टि राखी प्रतिमाए उभा रला. एवा  
अवसरे ते मेघमाळी नामनो अमुर अयधिवानडे पोताना पूर्वभ्रमनो वृत्तांत जाणी तथा ते वेरलुं कारण संभारी क्रोधथी  
धमधमतो प्रभुने उपमर्ग करपा ते स्थाने आब्यो. तेणे अंकुशनी जेवा तीचण नखवाळा, भयंकर रूपवाळा अने पुंछडाना  
पछाडथी पर्ततो पण कंषे एवा घणा भिहो निकुर्व्यो. तेनाथी भगवान कांइ पण भय पाभ्या नहीं. त्यारे तेणे अत्यंत भयं-  
कर पर्तत जेवडा हाथीओ निकुर्व्यो. तेनाथी पण प्रभु चलायमान थया नहीं. त्यारे तेणे गोटा फुंफाडा मारता अने गमरा-  
जना हस्तदंड जेवा प्रचंड दृष्टिविप मर्षो निकुर्व्यो. तेमज उंचा आंकडावडे स्वस्यतानो नाश करनारा अनेक वींल्लीओ,  
आपत्तिने करनारा भल्लूक अने शूरर विगेरे आपदो तथा जाळानी जेवा भयंकर मुत्तवाळा अने भुंडनी माळाने धारण  
करनार प्रेतोने निकुर्व्यो. ते मर्ष पण प्रभुने ध्यानथी चलायमान करवा समर्थ थया नहीं. " तीचण मुरवाळी कीडीओ  
अने माकड विगेरे पण शुं वचने भेदी शके ? " त्यारपछी अत्यंत क्रोध पांमला तें मेघमाळोण गर्वीरप अने वीजळीवडे  
दिशाओमां व्यापी गयेला भेघेनी श्रेणि आकाशमां धिकुर्वो. " आ मारा पूर्वभ्रमना शत्रुने आ भयना जळवी दुवावीने  
मारी नांलुं. " एम विचारी ते वृष्टि वरसाववा लाब्यो. प्रथम मुष्टि जेनी पछी मुशक जेनी अने पछी स्तंभ जेनी धारा वरसा-  
वी वरसावीने तेणे आखी पृथी एक समुद्रगग करी दीधी, ते गगते अमुक्रमे प्रभुना कंठ सुधी ते जळ पडोच्युं. एदले प्रभु  
कंठ सुधी पाणीमां डूनी गया. तेथी तेमलुं मुग पडुमद्रहमां रहेला कमळनी जेम शोभरा लाग्युं. पछी जेटलामां ते जळ

प्रभुनी नासिका सुधी पहेंच्यु, तेंटलामा नागराज धरखेंद्रनु आसन कप्यु तरत ज अयधिवानथी प्रभुनो वृचार्त जाणी ते  
 पोतानी प्रियाओ सहित त्यां आनी प्रभुने मक्तिथी नम्यो पळी प्रभुना पने पगनी नीचे मोटा नाळवालु कमळ मूकी ते धरणें  
 द्रे पोताना शरीरबंदे प्रभुनी पीठ अने वंदे पडला दाही तेमना मस्तकपर पोताना सात फणानु छत्र कपुं तेथी त्यां रहेला  
 प्रभु पुसे हरीने ध्यानमा मग्न वया ते वखते ते धरखेंद्रनी इद्राणीओ प्रभु पासे नृत्य करवा लागी, तथा वेषु, वीणा  
 अने मृदंग विंगेरना शब्दथी सर्वे दिशाओने व्याप्त करी आ वखते मक्ति करानारा धरखेंद्र उपर तथा द्वेप करनारा ते  
 असुर उपर समताना निधानरूप स्वामी तो समान दट्टिवाळा ज हता परतु द्वेपथी अधिकाधिक वृष्टि करता ते कठ नामना  
 असुरने जोइ नागेंद्रने तेनापर क्रोध धयो, अने तेथी तेणे तिरस्कार सहित ते असुरने कहु के—“ रे दुष्ट ! पोताना ज  
 उपद्रवन माटे तें आ शु आरभ्यु छे ? हु दयाळ प्रभुनो सेवक छु, छतां ह्ये तारा अपराधने हु सहन करीश नहीं आ  
 स्वामीए ते वखते तने पापमाथी मुक्त करवा माटे उळतो सर्वे काढीने वताब्यो, तेमां तेमणे वारु शु अप्रिय कपुं ? हे पापी !  
 फारथ विनाना जगतना भिन्नरूप आ भगवाननी उपर तु विना कारणे द्वेप करे छे, तेथी ह्ये तु नथी एम समज ” आतु  
 धरखेंद्रनु वचन मांभळी भेषमाळीए नीचे दट्टि करी अने ते प्रकारे धरखेंद्रथी सेवावा प्रभुने जोया तरत ज ते भय पापी  
 विचारता लाग्यो के—“ मारी जेटली शक्ति हतीं तेंटली वधी परवतने विषे ससलानी जेम आ प्रभुने विषे निष्फळ थद  
 वळी आ भगवान एरु ३ सुप्रिथी वखने पण चूर्णे करी शके तेवा उळवान छे, छतां वमा गुणे करीने सर्वे सहन करे छे,  
 परतु आ नागेंद्रथी तो मोरे भय राखवानो ज छे हु रिखना नाथनो वेरी धयो, तेथी मारे वीजु कोइ पण शरण छे नहीं.

तेथी आ करुणाना सागरनुं ज शरण करुं." ए प्रमाणे विचारी भेवन संहरी लइ प्रभुनी पासे आवी " मारो अपराध क्षमा करो " एम नमस्कार पूर्वक कही ते असुर पोताने स्थाने गयो. नागेंद्र पण प्रभुने उपसर्ग रहित थयेला जाणी तेमने प्रणाम करी पोताने स्थाने गयो अने प्रभुए पण प्रातःकाळ थये त्यांथी अन्यत्र विहार कर्यो.

प्रभु छद्मस्थ अवस्थाए चोराशी दिवस विहार करी फरीथी तेज आश्रमना उद्यानमां आव्या. त्यां ध्यानमां रहेला प्रभुने केवळज्ञान प्राप्त थयुं. ते वखते इंद्रादिक देवोए भावी समवसरण रच्युं. त्यां पूर्व दिसा तरफना सिंहासनपर प्रभु पूर्वाभियुते बेठा अने बीजी त्रण दिशाओमां व्यंतरदेवोए प्रभुना त्रण प्रतिवित्र रल्यां. पळी सर्व सुर, असुर अने मनुष्यो आवीने योग्य स्थाने वेठा. एक एक योजन सुधीना विस्तारवाळीं वाणीविडे स्वामीए देशनानो आरंभ कर्यो. श्रीपार्श्वनाथ स्वामीना केवळज्ञानतो वृत्तांत उद्यानपालकना मुखथी जाणीने श्री अशमेन राजा अत्यंत हर्ष पायी प्रभुना दर्शन माटे अत्यंत उत्सुक थइ वामादेवी सहित त्यां आव्या अने प्रभुनी स्तुति तथा नमस्कार करी शुद्ध बुद्धिथी घर्भदेशना सांमळवा वेठा. जगदीश्वरनी ते देशना सांमळी घणा पुरयो तथा स्त्रीमोए प्रतिबोध पायी दीक्षा ग्रहण करी अने केटलाके श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. तेमांथी आर्यदत्त विगेरे दश गणधरो यया. तेओए स्वामी पासेथी त्रिपदी ग्रहण करी तत्काळ द्वादशांगी रची. ते वखते अश्वसेन राजाए हस्तीसेन नामना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी वामादेवी अने प्रभावती सहित प्रभुनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. पद्मावती, पार्श्व यच, वैरोट्या अने धरशेट्टे सर्वदा जेमनुं सांनिध्य कर्युं छे एवा श्रीपार्श्वनाथ प्रभु पृथ्वीपर विचरवा लाग्या. ते प्रभुना तीर्थमां समग्र गुणोथी शोभता सोळ हजार साधुओ, आठवीश हजार साध्वीओ, एक

लाख ने चौसठ हजार श्रावको अने त्रण लाल ने सत्तावीस हजार श्राविकाओनो परिवार थयो चोराशी दिवसे न्यून एवा सीतेर वर्ष सुधी केवली पर्योये विचरता एवा प्रभुनो ए प्रमाणे चतुर्विध सघ थयो छेवट प्रभु तेत्रीश मुनिओ सहित समे ताद्रि पर्वतपर जइ अन्नशन ग्रहण करी कायोत्सर्गे रखा एक मासनु अन्नशन पूर्ण करी हुल सो वर्षनु आयुष्य भोगी ते तेत्रीश साधुओ सहित भगवान भवोपग्राही चार अघाठी कर्मनो लप करी मोक्षपद पाग्या ते वृत्तांत अवधिज्ञानथी जाणी सर्व इद्रोए आवी भगवानना निर्वाणनो महोत्सव कयो

इति श्रीपार्श्वनाथनु सखिप्त चरित्र

आ प्रमाणे श्रीपार्श्वनाथनु चरित्र कही हवे प्रस्तुत कहे छे—

तस्स लोर्गप्पईवस्स, आसि सीसे महायसे । केसी कुमरसमणे, विज्जाचरणपारगे ॥ २ ॥

अर्थ—( लोर्गप्पईवस्स ) लोकने विषे प्रदीप समान ( तस्स ) ते श्रीपार्श्वनाथ स्वामीने ( महायसे ) मोटा यशवाला अने ( कुमरसमणे ) कुमार अवस्थामां ज साधु थयेला एवा ( केसी ) केशी नामना ( सीसे ) शिष्य ( आसि ) हुता, ते ( विज्जा चरणपारगे ) ज्ञान अने चारित्रना पारगामी हुता अही आ केशीकुमारने श्रीपार्श्वनाथना शिष्य कहा, ते तेमना सतानमां थयेला जाणवा, परणु तेमना सादात् शिष्य नहीं केमके ते प्रभुना जो हस्तदीक्षित शिष्य होय तो श्रीमहावीर स्वामीना तीर्थनी प्रवृत्ति थइ त्यां सुधी ते होइ शके नहीं २

ओहिनाणसुए बुद्धे, सीससंघसमाउले । गामाणुगामं रीयंते, सावत्थि नगरिमागए ॥ ३ ॥

अर्थ—( ओहिनाणसुए ) अवधिज्ञान अने श्रुतज्ञानवडे ( बुद्धे ) तत्त्वना जाण अर्थोत् मति, श्रुत अने अवधिज्ञान-वाळा तथा ( सीससंघसमाउले ) शिष्यना समूहवडे परिशेला एवा ते केशीकुमार ( गामाणुगामं ) एक गामथी वीजे गाम ( रीयंते ) विहार करता अनुक्रमे ( सावत्थि ) थावस्ति नामनी ( नगरिं ) नगरीने विषे ( आगए ) आव्या. ३.

तिट्ठुअं नाँस उज्जाणं, तैम्मी नयँरमंडले । फाँसुए सिज्जसंथारे, तत्थँ वासंसुवागीँए ॥ ४ ॥

अर्थ—( तम्मी ) ते थावस्ति नगरीना ( नयरमंडले ) नगर बहारना प्रदेशमां ( तिट्ठुअं नाम) तिट्ठुअं नामतुं ( उज्जाणं ) उद्यान हतुं, ( तत्थ ) ते उद्यानमां ( फाँसुए ) प्रायुअणु एटले साभाविक अने प्रागंतुरु जीवोथी रहित एवा ( सिज्जसंथारे ) शय्यासंस्तारकने विषे ( वासं उवागए ) वासने पामता हवा-निवासस्थानने करता हवा. शय्या एटले वसति-उपाश्रय, तेने विषे जे शिला फलकादिक संस्तारु, तेने विषे निवास कर्यो.

आ अवसरे जे थयुं ते कहे छे.—

अह तेणेव कालेणं, धम्मतिथयरे जिणे । भयवं वद्धमाणु ति, सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥ ५ ॥

अर्थ—( अह ) हवे ( तेणेव ) ते ज ( कालेणं ) काले ( धम्मतिथयरे ) धर्मरूपी तीर्थने करनारा ( जिणे ) राग-द्वेषने जीतनारा ( भयव ) भगवान ( वद्धमाणु ति ) वर्धमान एवा नामे ( सव्वलोगम्मि ) सर्व लोकने विषे ( विस्सुए )

विथुत एटले प्रसिद्ध हता ५

तस्स लोगेट्ठईयस्स, आसि सीसे महायैसे । भयैव गोअमे नाम, विजांचरणपारगे ॥ ६ ॥

अर्थ—( लोमप्पईयस्स ) लोकने विपे प्रदीप समान एवा ( तस्स ) ते वर्धमान स्वामीने ( महायसे ) मोटा यथवाळा ( भयव ) भगवान ( गोअमे नाम ) गौतम नामना ( सीसे ) शिष्य ( आसि ) हता, ते ( विजाचरणपारगे ) ज्ञान अने चारित्रना पारगामी हता ५

वारसगण्डि बुद्धे, सीससघसमाउले । गामाणुगाम रीअते, से वि सावत्थिमागए ॥ ७ ॥

अर्थ—( पारसगण्डि ) द्वादशांगीने जाणनारा, ( बुद्धे ) तत्त्वने जाणनारा, ( सीससघसमाउले ) शिष्यना समूहबडे सहित तथा ( गामाणुगाम ) एक गामथी जीजे गाम ( रीअते ) निहार करता एवा ( से वि ) ते गौतमस्वामी पण ( सावत्थि ) श्रावस्ति नगरी प्रत्ये ( आगए ) आव्या ७

कौटुग नामं उज्जीण, तेम्मी नैयैरमडले । फाँसुए सिजसथारे, तत्थं रीसमुंवागए ॥ ८ ॥

अर्थ—( तम्मी ) ते श्रावस्ति नगरीना ( नयरमडले ) नगरना बहारना प्रदेशमां ( कौटुग नाम ) कोटक नामनु ( उज्जाण ) उद्यान हतु, ( तत्थ ) ते उद्यानमां ( फाँसुए ) प्रासुक एवा ( सिजसथारे ) शय्यासस्ताररुने विपे ( वास उवा गए ) वासने पामता हवा-रहिता हवा ८

त्यारपणी श्रुं थयुं ? ते कहे छे,—

कैसी कुमरसमणे, गोअमे अ महाँयसे । उँभओ तर्थ विहँरिसु, अँछीणा सुँसँमाहिआ ॥ ९ ॥  
अर्थ—( कैसी ) केशी नामना ( कुमारसमणे ) कुमार साधु ( गोअमे अ ) तथा गौतमस्वामी ( उभओ ) ए वने ( महायसे ) मोटा यशवाळा तथा ( अल्लीणा ) मन, वचन अने कायगुणिमां लीन थयेला तथा ( सुसमाहिआ ) सारी समाधिवाळा सता ( तत्थ ) ते पोतपोताना उद्यानमां ( विहँरिसु ) विचरता हता. ६.

उँभओ सिस्सँसँघाणं, संजँयाण तवँस्सिणं । तर्थ चिँता समुप्पँना, गुणँवँताण ताँइणं ॥ १० ॥

अर्थ—( तत्थ ) त्यां श्रावस्ति नगरीना उद्यानमां ( उभओ ) केशीकुमार अने गौतमस्वामी ए वनेना ( सिस्ससवाणं ) शिष्यनो समूह के जेओ ( संजयाण ) संयमने धारण करनारा, ( तवस्सिणं ) तपस्वी, ( गुणवंताण ) गुणवान अने ( ताइणं ) छ जीव निकायना रक्षण करनार हता. तेमांथी केशीकुमारना मुनियोने ( चिंता ) विचार ( समुप्पना ) उत्पन्न थयो. एक बीजाने परस्पर जोवाथी हवे कहे छे तेवो विचार उत्पन्न थयो. १०.

शो विचार थयो ? ते कहे छे,—

केरिसो वा ईमो धँम्मो ?, ईमो धँम्मो व केरिसो ? । आयाग्धम्मप्पणिही, ईमा वा सा व 'केरिसी ? ॥ ११ ॥

अर्थ—( इमो ) आ अमारो ( धम्मो ) महाव्रतरूप धर्म ( केरिसो वा ) केवो छे ? अने ( इमो ) आ प्रत्यक्ष देखाता

गणधरना शिष्योनो ( धम्मो व ) धर्म ( हेरिगो ) केना प्रकारनो छे ? तथा ( इमा ग ) आ ज्जमारा सन्धी ( आयासधम्मप्पसिद्दी ) आचार एटले वेप धारण करवारूप वाल क्रियानो समूह, ते रूप धर्मनी व्यवस्था केवी छे ? ( सा व ) अने आ गणधरना शिष्योना बाद आचाररूप धर्मनी व्यवस्था ( केरिसी ) केवी छे ? अर्थात् ज्जमारी अने तेमनो धर्म श्रीसर्वज्ञे ज कहेलो छे, छता ते धर्ममां अने तना साधनोमां घणो तफावत देखाय छे, तेनु कारण शु हरो ? ते असे चाणवाइच्छीए छीए ११

त ज निजाने प्रगट रुता सता कहे छे —

चाउज्जामो अ जो धम्मो, जो ईमो पंचसिखओ । देसिओ वंछमाणेण, पैसेण य महामुणी ॥ १२ ॥

अर्थ—( ना ) जे आ ज्जमारी ( चाउज्जामो अ ) चार महाव्रतवाळो ( धम्मो ) धर्म ( महागुणी ) महागुनि ( पासेण य ) पार्थनायस्सामीए ( देसिओ ) कहेलो छे, अने ( जो ) जे ( इमो ) आ गौतम गणधरना शिष्योनो ( पंचसिखओ ) पांच शिष्यागळो एटले पचमहाव्रतवाळो धर्म महागुनि ( वंछमाणेण ) वर्धमानस्वामीए कहेलो छे आ वने प्रकारनो जुदो जुदा धर्म कहैवानु तु कारण हरो ? ( आ सुत्रवडे धर्मना विषयवाळो सशय प्रगट कयो छे. ) १२

हवे आगाना विषयवाळो सशय प्रगट करे छे —

अचेलगो अ जो धम्मो, जो ईमो संतरुत्तरो । एगकज्जपवन्नाण, विससे किं नु कैरण ? ॥ १३ ॥



अर्थ—( अ ) तथा ( जो ) जे ( अचेलगो ) अचेलक एटले वस्तु रहित अर्थात् प्रमाणोपेत, श्वेत, जीर्णप्राय अने अल्प मूल्यवाळें वस्तु धारण करवुं एवो ( धम्मो ) धर्म श्रीवर्धमानस्वामीए कखो छे, अने ( जो इमो ) जे आ आमरो ( संतरुत्तरो ) सांतर एटले श्रीमहावीरस्वामीना शिष्यनी अपेचाए अंतर सहित अर्थात् विशेष प्रकारना प्रमाण अने वर्णवाळो तथा उत्तर एटले मोटा मूल्यवडे प्रधान—श्रेष्ठ एवा वस्तुवाळो धर्म श्रीपार्धनाथस्वामीए कखो छे. तो ( एगकज-पवनायां ) मोक्षरूप एक ज कार्यने माटे प्रवर्तला ते वने तीर्थकरणे ( विसेसे ) आवो विशेष-फेरफार करवामां ( किं नु कारण ) शुं कारण हरो ? १३.

आ प्रमाणे गौतमस्वामीना साधुओने पण संशय थयो. एटले वनेना साधुओने संशय उत्पन्न थवाथी केशी अने गौतमस्वामीए शुं कर्धुं ? ते कहे छे.—

अहं ते तैत्थ सीसाणं, विष्ठाया पवित्राकिअं । समागमे कयमई, उभओ केसिगोअसा ॥ १४ ॥

अर्थ—( अह ) तयारपछी ( तत्थ ) त्यां आवस्तिनगरीमां ( सीसाणं ) साधुओना आया प्रकारना ( पवित्राकिअं ) वितर्कने ( विष्ठाया ) जाणीने ( ते ) ते ( केसिगोअसा ) केशी अने गौतम ( उभओ ) वने जणा ( समागमे ) परस्पर समागम करवामां ( कयमई ) करी छे मति जेमध्ये एवा थया-परस्पर मळवानी इच्छावाळा थया. १४.

गौअमो पडिह्वणू, सीसंसंघसमाउले । जिहं कुलमविर्वलंतो, तिदुअं वणमार्गओ ॥ १५ ॥

अर्थ—त्यारपद्धी ( पडिरुवण्णू ) यथायोग्य विनयने आपनार ( गोअमो ) गौतमस्वामी ( जिठ कुल ) पार्श्वनाथना  
मठानने प्रथम थपेल होवाथी आ मोडु इठ छे एम ( अयिसयतो ) अपेवा सता-चाणता सता ( भीसमयसमाउलो ) शिष्योना  
गमूइ सहित ( तिटुम ) तिटुक नामना ( वण ) उद्यानमां ( आगथो ) आब्या १५

केसी कुमारसमणे, गोअम दिसेसमार्गय । पडिरूव पडिर्वति, संम सपेडियज्जइ ॥ १६ ॥

अर्थ—( कमी ) केगी नामना ( कुमारसमणे ) इमार साधु ( गोअम ) गौतमने ( आगय ) आपेला ( दिस्त )  
चोइने ( सम्म ) सम्परु प्रहारे ( पडिरूव ) अतिथिने योग्य एगी ( पडियति ) मेयाने ( सपडियज्जइ ) सारी रीने  
काला हवा १६

ते तेयाने ज वतार छे —

पैलाल फैसुअ तंतय, पंचम कुंसतणानि अ । गोअमस्त थिसिज्जाए, खिंय सपेणामए ॥ १७ ॥

अर्थ—( तय ) त्यो तिटुक वनमां ( फासुथ ) प्रासुरु—अवित ( पलाल ) पराळ ( अ ) तथा ( यम ) पंचमा  
( इस्तणानि ) कुश चाविना ठण ( गोअमस्म ) गौतमने ( थिसिज्जाए ) चेतवा भाटे ( खिंय ) शीघ्रपणे ( यपणामए )  
बेसीकुमार आभ्यां अहीं पराळना चार भेदनी अपेवाए वृणने पांचसु गणावु छे तेथी ' पंचम ' शब्द लग्णो छे ते  
विषे वसु छे के—

“ तद्यपंचगं पुण भण्डिअं, जिणेहि कम्मट्ठगंठिमहणेहि । साली १ वीही २ कोइम ३, रालय ४ रणे तयाइं ५ च ॥ ”  
अर्थ—“ आठे कर्मनी ग्रंथिने मथन करनारा लिनैथरोए पांच प्रकारना वृण कया छे,—शाली १, व्रीहि २, कोदरां ३, रालक ४ अने अरण्यना वृण ५. ”

आमां प्रथमना चार भेद परालनी जातिना छे अने पांचमो भेद वृणनो छे तेथी पंचम शब्द कयो छे. १७.  
ते वने साथे वेठा ते वसते केना शोभता हता ? ते कहे छे.—

केसी कुमारसमणे, गौअसे अ महायसे । उभओ निसंजा सीहंति, चंदसूरसमप्यहा ॥ १८ ॥

अर्थ—( महायसे ) महा गशवाळा ( केसी कुमारसमणे ) केशीकुमार साधु ( अ ) तथा ( गोअसे ) गौतम ( उभओ ) ए वने ( निसजा ) वेठा सता ( चंदसूरसमप्यहा ) चंद्र अने सूर्य जेवी कांतिवाळा ( सोहंति ) शोभता हता. १८.

तेमना समागम वसते जे थयुं ते कहे छे.—

सैमागया व्हू तैत्थ, पौसंडा कोउगा मिआ । गिहंत्थाणमणेगाओ, साहस्सीओ संसागया ॥ १९ ॥

अर्थ—( तत्थ ) त्यां तिट्ठक उद्यानमां ( कोउगा ) कौतुकथी ( मिआ ) मृगनी जेवा मृग एटले अज्ञानी एवा ( व्हू )

घणा ( पासडा ) पाखडीओ एटले अन्यदर्शनी साधुओ ( समागया ) आव्या तथा ( अयोगाओ ) अनेक ( साहस्सीओ ) हजारो ( गिहत्याण ) गृहस्थीओ ( समागया ) आव्या १६

देवदानवगधन्वा, जम्बरकखसकिन्नरा । अदिस्साण च भूआण, आसि तत्थ समागमो ॥२०॥

अर्थ—तथा ( देवदानवगधन्वा ) देव, दानव अने गधर्वो, तथा ( जम्बरकखसकिन्नरा ) यक्ष, राक्षस अने किन्नरो पण आव्या ( य ) तथा ( अदिस्साण ) अदृश्य एवा ( भूआण ) भूतेनो-व्यतरोनो पण ( तत्थ ) त्यां ( समागमो ) समागम ( आसि ) थयो २०

हवे ते वने धुनिओनी वातचीत केची रीते थइ ? ते कहे छे —

पुच्छामि ते महाभाग !, केसी गोअममब्बवी । तओ केसी बुवत तु, गोअमो ईणमब्बवी ॥२१॥

अर्थ—( केसी ) केशीकुमार ( गोअम ) गौतम गणधरने ( अब्बवी ) कटु के—( महाभाग ) हे महा भाग्यवान ! ( ते ) तमने ( पुच्छामि ) हु पूछ छु ( तओ ) त्वापधी ( बुवत ) आ प्रमाणे बोलता एवा ( केसी ) केशीकुमारने ( तु ) पुन ( गोअमो ) गौतमस्वामी ( इण ) आ प्रमाणे ( अब्बवी ) कहेता हवा २१

पुच्छ भते ! जहिच्छ ते, केसी गोअममब्बवी । तओ केसी अणुणाए, गोअम ईणमब्बवी ॥२२॥

अर्थ—( भते ) हे पूज्य ! ( जहिच्छ ) जेम तमारी इच्छा होय तेम ( ते ) तमे ( पुच्छ ) पूछो ए प्रमाणे ( केसी )

केशीकुमारने ( गोअमं ) गौतमस्वामी ( अब्यवी ) कहेता हवा. ( तथो ) त्यारे ( केसी ) केशीकुमार ( अणुष्णाए ) गौतम-  
स्वामीनी आझाए करीने ( गोअमं ) गौतमस्वामी प्रत्ये ( इणं ) आ ग्रमाणे ( अब्यवी ) कहेता हवा—पूछता हवा. २२.  
केशीकुमारे गौतमस्वामीने जे पूछथुं ते कहे छे.—

चाउज्जामो अ जो धम्मो, जो इमो पंचसिखिओ । देसिओ वंछमाणेणं, पासेण य महामुणी ॥२३॥  
अर्थ—( जो ) जे आ अमारो ( चाउज्जामो अ ) अहिंसा, अनृत, अस्तेय अने अपरिग्रह ए चार महाव्रतवाळो ( ध-  
म्मो ) धर्म ( महामुणी ) महामुनि ( पासेण य ) श्रीपार्श्वनाथ स्वामीए ( देसिओ ) कळो छे, तथा ( जो इमो ) जे आ  
तमारो ( पंचसिखिओ ) उपरना चार तथा ब्रह्मचर्य ए पांच शिचानाळो एटले पांच महाव्रतरूप धर्म ( वद्वमाणेणं ) श्री  
वर्धमानस्वामीए कळो छे. २३.

एगकज्जपवन्नाणं, विससे किं नु कारणं ? । धम्ममे दुविहे मेहोवी !, कंहं विपंचओ नं ते ? ॥२४॥  
अर्थ—तो ( एगकज्जपवन्नाणं ) मोक्षरूपी एक ज कार्यने माटे प्रवर्तला ते वने जिनेधरोने ( विससे ) आबो विशेष  
—भेद करवामां ( किं नु ) थुं ( कारणं ) कारण हशे ? ( मेहावी ) हे बुद्धिमान ! ( दुविहे ) आ रीते वे प्रकारे ( धम्ममे )  
धर्म कहे सते ( ते ) तमने ( विपचओ ) अविश्वाम ( कंहं ) केम ( न ) यतो नधी ? वनेनुं सर्नज्ञपणं तुल्य छे, छतां आबो  
मतभेद केम थाय ? २४.

ततो केसिं लुवत तु, गोअमो ईणमर्ब्वी । पण्णा संमिखए धम्म-तत्त त्तत्रिणिच्छय ॥ २५ ॥

अर्थ—( तत्रो ) त्वापत्ती ( लुवत तु ) आ प्रमाणे चोलता एवा ( केसि ) केशीकुमार प्रत्ये ( गोअमो ) गौतम गणधर ( ईण ) आ प्रमाणे ( अन्वची ) कहेता हया, के ( पण्णा ) बुद्धि ( तत्तत्रिणिच्छय ) जीयादिक तत्त्वो नो निश्चय करार ( धम्मतत्त ) धर्मना तत्त्वने ( समिखए ) जुए छे अर्थात् माग चाम्यनु भवथ करवायी ज अर्थनो निर्णय थइ शक तो नथी परतु बुद्धिथी ज निर्णय थाय छे २५

तेवी करीने—

पुरिमा उज्जुजडा उ, वैकजडा यं पच्छिमा । मज्झिमा उज्जुपणा उ, तेणं धम्मो दुहा कए ॥ २६ ॥

अर्थ—( उ ) जे कारण माटे ( पुरिमा ) पहेला तीर्थकरना मुनिओ ( उज्जुजडा ) सरळपणाए करीने ऋजु अनेबोध पमाडवाने दुस्कर होवार्थी नड हता, ( य ) तथा ( पच्छिमा ) छेन्ना तीर्थकरना साधुओ ( वैकजडा ) विपरीत प्रकृति हो वार्थी वक्र अने पोताना बुविरूपवडे सत्य अर्थ जाणवार्थ होवार्थी जड छे, ( उ ) तथा ( मज्झिमा ) मध्यमना पावीश तीर्थकरोना साधुओ ( उज्जुपणा ) ऋजु एटले सरळ प्रकृतियाळा अने प्राप्त एटले बुद्धिमान हता, ( तेण ) ते कारण माटे एक कार्यमा न प्रत्यर्था छर्ता ( धम्मो ) धर्म ( दुहा ) वे प्रकारे ( कए ) कर्यो छे-कबो छे, २६

अही केशीकुमार शका करे के—“ जो के प्रथमादिक प्रमुना मुनिओ एवा प्रकारना हता, तोपण आ रीते वे प्रकारनो

धर्म करवानुं शुं कारण ?” ते उपर कहे छे.—

धुरिमाणं दुर्विवसोज्जो उ, चरिमाणं दुरणुपालओ । कप्पो मञ्जिमगाणं तु, सुविसोज्जो सुपालओ ॥२७॥

अर्थ—( पुरिमाणं ) पहला तीर्थकरना साधुओने ( कप्पो ) आ साधुधर्मनो कल्प एटले आचार ( दुर्विसोज्जो उ ) दुर्विशोध्य एटले दुःखे करीने निर्मळ करी शकाय तेवो अर्थात् जाणी शकाय तेवो छे, कारण के तेओ ऋजुजड होवाथी गुरुए कखा छतां तेनी अर्थ सम्यक् प्रकारे जाणी शके नहीं. परंतु जो जाणे तो पछी पाळी शके खरा. तथा ( चरिमाणं ) छेला तीर्थकरना साधुओने ते कल्प ( दुरणुपालओ ) दुःखे करीने पाळी शकाय तेवो छे, कारण के तेओ कोइपण रीते जाणी शके छे, परंतु ऋजुजड होनाथी नरावर पाळी शकता नथी. ( तु ) तथा ( मञ्जिमगाणं ) मध्यना चावीश तीर्थकरोना साधुओने ते कल्प ( सुविसोज्जो ) सारी रीते शोधी शकाय—जाणी शकाय तेवो अने ( सुपालओ ) सांगी रीते पाळी शकाय तेवो छे. कारण के तेओ ऋजुप्राज्ञ होवाथी सुखे करीने यथार्थपणे जाणी शके छे अने ते ज प्रमाणे पाळी पण शके छे. तेथी तेओ चार महाव्रतोवाळो धर्म कया छतां पण पांचमा व्रतने जाणनामां अने पाळवागां समर्थ छे. कहुं छे के—“ स्त्रीनो परिग्रह कर्था विना तेनो भोग थह शकतो नथी, तेथी परिग्रहनी विरतिमां भैथुननी पण विरति छानी जाय ज छे. ” ए प्रमाणेनी बुद्धिथी चावीश तीर्थकरोना साधुओ ज.णीने ते प्रमाणे पाळे छे. आवी अपेक्षाथी श्रीपार्थनाथस्वामीए चार महाव्रतो कखां अने पहिला छेला तीर्थकरना साधुओ तेवा ऋजुप्राज्ञ नहीं होनाथी श्रीऋषभदेवे अने श्रीमहावीरस्वामीए पांच महाव्रतो कखां छे. विचित्र बुद्धिवाला

शिष्योना उपर अनुग्रह करवानी बुद्धिही ज वे प्रकारनो धर्म कखो छे, पण तत्त्वही विचार करीए तो ए वे प्रकारनो धर्म छे ज नहीं—एक ज प्रकारनो छे अहीं प्रसगने लीये ज पहेला तीर्थंकर सवधी वात कही छे २७

वे सांभळी केशीहुमारे कणु —

साहुं गांअंस ! पण्णा ते<sup>२</sup>, छिण्णो मे<sup>३</sup> सससओ ईमो । अन्नो विसससओ मज्झ, <sup>१२</sup> त <sup>१३</sup> मे वहेसु गोअमा ! ॥२८॥

अर्थ—( गोअम ) हे गौतम ! ( ते ) तमारी ( पणा ) बुद्धि ( साहु ) घणी सारी छे, तेथी ( इमो ) आ ( मे ) मारो ( मससओ ) सशय तो ( छिण्णो ) तमे छेद्यो छे वळी ( अन्नो वि ) बीजो पण ( मज्झ ) मने ( सससओ ) सशय छे ( त ) तेने-तेना ममाधानने पण ( गोअमा ) हे गौतम ! तमे ( मे ) मने ( कहेसु ) कही

आ सर्व केशीहुमारनु कहेसु शिष्यनी अपेचाथी छे अर्थात् शिष्यवर्गने समजाववा माटे छे. कारण के पोते तो नण गान सहित छे तेथी तन तो आवो सशय होय ज नहीं २८.

अंचेलगो अ्र जो धम्मो, जो ईमो सतरुत्तरो । देसिओ वद्धमाणेण, पीसेण य महोयसा ॥२९॥

अर्थ—( अ ) तथा ( जो ) जे आ ( अंचेलगो ) अंचेलक एटले वल्ल रहित अर्थात् प्रमाणोपेत, श्वेत, जीर्णप्राय अने अन्य मूग्यवाल्ल यए धारण करबु एवो ( धम्मो ) साधुनो धर्म ( महायसा ) मोटा यशवाळ ( वद्धमाणेण ) श्री वर्धमानस्वामीए ( देसिओ ) कखो छे, तथा ( जो इमो ) जे आ अमारो ( सतरुत्तरो ) सांतर एटले श्रीमहावीरस्वामीना



शिष्यनी अपेक्षाएं अंतर सहित अर्थात् विशेष प्रकारना प्रमाण अने वर्णवाळा-गंमे तेवा प्रमाणवाळा अने जूदा जूदा रंगवाळा अने उत्तर एटले घणा मूल्यवडे श्रेष्ठ एवा वस्त्रवाळो धर्म ( पासेण थ ) श्रीपार्श्वनाथस्वामीए कहेलो छे. २६.  
एगैकज्जप्यवन्नाणं, विसैसे किं नु कार्रणं ? । लिंगे दुविहे मेहावी !, कंहं विधेपच्चओ न ते ? ॥३०॥

अर्थ—( एगकज्जप्यवन्नाणं ) मोक्षरूपी एक ज कार्य साधवामां प्रवर्तेला ते वन्ने तीर्थकारोने ( विसैसे ) आचो विशेष-भेद करवामां ( किं नु कार्रणं ) शुं करारण हशे ? ( मेहावी ) हे बुद्धिमान ! ( दुविहे ) अचेलक अने सचेलक एवा वे प्रकारना ( लिंगे ) लिंग-वेपने विपे ( ते ) तमने ( विप्यचओ ) अविश्वाय ( कंहं ) केम ( न ) नथी थतो ? शंका केम नथी थती ? ३०.  
केसिमिवं बुवंतं तु, गोअमं इणमब्धवी । विण्णणेण सर्मागम्म, धम्मसाहणमिच्छिअं ॥ ३१ ॥

अर्थ—( एवं ) ए प्रमाणे ( बुवंतं तु ) कहेता-पूछता एवा ( केमिं ) केशीकुमारने ( गोअमं ) गौतम गणधर ( इणं ) आ प्रमाणे ( अब्धवी ) कहेता हवा-उत्तर देता हना, के—( विण्णणेण ) केमज्ञानवडे ( समागम्म ) जे जेने उचित होय ते तेज प्रमाणे जाणीने ते वन्ने तीर्थकारोए ( धम्मसाहणं ) धर्मनुं साधन एटले धर्मना उपकरणे ( इच्छिअं ) इच्छया छे-कणा छे. पहेला अने छेज्जला तीर्थकरना साधुने जो पंचवर्णना वस्त्रादिकनी अनुज्ञा आपी होत तो तेओ ऋजुजड अने वक्रजड होवाथी वस्त्रने रंगवा विगरे कार्यमां प्रवृत्ति करत. तेथी तेमने तेवी अनुज्ञा आपी नहीं. अने श्रीपार्श्वनाथस्वामीना शिष्यो तो ऋजुप्राज्ञ होवाथी तेओने रंगेलां वस्त्रोनी पण अनुज्ञा आपी छे. ३१.

तेम ज वकी —

पञ्चयैत्य चं लोगंस्त, नाणाविहविगप्पण । जत्तैथ गहणत्थ च, लोए लिगप्पओअण ॥ ३२ ॥

अर्थ—( च ) तथा वकी ( लोगस्त ) लोकना ( पचयत्थ ) विश्वासने माटे ( नाणाविहविगप्पण ) नाना प्रकारना उपकरणनी रूपना करेली छे एटले के रजोहरणादिक त्रिविध प्रकारना उपकरण नियमे करीने यतिओने विपे ज सभवे छे, तेथी लोगने ते उपकरण जोइ ' आ माधु छे ' एम विश्वास आवे छे जो ए रीते नियमित उपकरण न होय तो बीजा पण कोइ इच्छा प्रमाणे वेप धारण करीने ' अमे साधु छीए ' एम पूजावा मनावा माटे लोको पासे पोतानी प्रसिद्धि करे, अने तेम करमाथी सय मुनिओने विपे पण लोकनी प्रतीतिमा भग पडे माटे नियमित उपकरणमां फेरकार कहल नथी ते तो घन्नेने एक सरखा ज राख्ना योग्य छे तथा ( जत्तथ ) यात्रा एटले समयना निर्वाहने माटे ( गहणत्थ च ) तथा पोताना ज्ञानने माटे पण ( लोए ) लोकमा ( लिगप्पओअण ) वेपनु प्रयोजन छे एटले ते प्रमाणे वर्षाकल्पादिक राख्नामां न आवे तो वर्षाकालमा समयनी बाधा थाय, तेथी वेपनी जरूर छे, तेमज रुदाचित् मनना परिणाम चारित्रपरथी पडी जाय तोपण ' हु मुनि छु ' एम पोताने मुनिपणाना ज्ञानने माटे पण वेपनी जरूर छे ३२

अंह भवे पैइणा उं, मोर्वखसब्भूअसाहणो । नाण च दसण च्च, चरित्त च्च निट्ठए ॥ ३३ ॥

अर्थ—( अह ) हमे ( निट्ठए ) निश्चय नयना मते तो ( नाण च ) वान, ( दसण च्च ) दर्शन अने ( चरित्त

चेप ) चारित्र ज ( मोक्खसब्भूअसाहयो ) मोचनां सत्य साधनो छे, ए प्रमाणे श्रीपार्श्वनाथस्वामी अने वर्धमानस्वामीनी (पहणा) एक सरखी प्रतिज्ञा-अंगीकार (भवे उ) होय ज-छे ज. भरतचक्री विगेरेने वेप विना पण केवलज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं एम संभळाय छे, तेथी मोचनुं कारण तत्त्वथी तो ज्ञान, दर्शन अने चारित्र छे, पण वेप नथी. तेथी वेपनी भिन्नता जोवार्थी विज्ञानीअने तेमां कांइ अविश्वास थतो नथी. वेप तो मात्र व्यवहार नयनी अपेक्षाए ज छे. ३३.

**साँहु गोअंम ! पण्यो ते, छिर्णो मे संसओ इमो । अन्नो विसंसओ मज्झं, तं मे कहसुं गोअंमा ॥३४॥**

अर्थ—( गोअम ) हे गौतम ! ( ते ) तमारी ( पणा ) बुद्धि ( साहु ) बहु सारी छे, तेथी ( इमो ) आ ( मे ) मारो ( संसओ ) संशय पण ( छिणो ) तम छेद्यो छे. हजु ( अन्नो वि ) बीजो पण ( मज्झं ) मने ( संसओ ) संशय छे, ( तं ) ते ( मे ) मारा संशयने ( गोअमा ) हे गौतम गणधर ! ( कहसु ) तमे कहो. ते बीजा पण मारा संशयने तमे छेदो. आ प्रमाणे महाव्रत संबंधी तथा वेप संबंधी शिष्योना संशयने दूर करी हवे ते शिष्योने ज जणाववा माटे केशीकुमार पोते जाणता हता तोपण नीचिनो बीजो प्रश्न करे छे. ३४.

**अणेगाण सहस्साणं, मज्झे चिट्ठसि गोअमा ! । ते अ ते अभिगच्छंति, कंहं ते निज्जिअं तुंमे ? ॥३५॥**

अर्थ—( गोअमा ) हे गौतम ! ( अणेगाण ) अनेक ( सहस्साणं ) हजारो शत्रुओनी ( मज्जे ) मध्ये ( चिट्ठसि ) तमे रहो छो. ( ते अ ) अने वळी ते शत्रुओ ( ते ) तमारी तरफ ( अभिगच्छंति ) तमने जीतवा माटे दोडे छे, छतां ( ते )

ते शत्रुओंने ( तुमने ) तमे ( कह ) शी रीते ( निजिआ ) नीत्या ? जीती लीथा ? ते कहो. ३५

हवे गौतमस्वामी उत्तर आपे छे —

एगे जिंए जिआ पचै, पचै जिंए जिंआ दसं । दसंहा उ जिंयिंता ण, सवंसत्तु जिंयिंमंहे ॥ ३६ ॥

अर्थ—( एगे ) एक शत्रु ( जिंए ) जीताये सते ( पच ) पांचे शत्रु ( जिआ ) जीताया एम जाणतु, तथा ( पच ) पांच शत्रु ( जिंए ) जीताये सते ( दस ) दशे शत्रु ( जिआ ) जीताया जाणवा तथा ( दसहा उ ) दश प्रकाराना शत्रुने ( जिंयिंता ण ) जीतीने ( सव्वसत्तु ) सर्व शत्रुओंने ( अहं ) हु ( जिंयामि ) जीतु छु ३६.

ते सांभळीने पछी—

सेत्तु अ ईइ के वुत्ते ? , केसी गोअममव्वंवी । तओ केसीं वुवत तु, गोअमो ईणमव्वंवी ॥ ३७ ॥

अर्थ—तुमने १-५-१० विगरे ( सत्तु अ ) शत्रुओं ( के ) कया ( वुत्ते ) कहा छे ?-कोने कहो छो ? ( ईइ ) ए प्रमाणे ( कसी ) केशीकुमार ( गोअम ) गौतमस्वामीने ( अन्ववी ) कहेता हवा ( तओ ) त्थारपछी ( वुवत तु ) ए प्रमाणे बोलता हवा ( केसीं ) केशीकुमार प्रत्ये ( गोअमो ) गौतमस्वामी ( इण ) आ प्रमाणे ( अन्ववी ) बोलता हवा—कहेता हवा ३७

एगएपा अजिंए सत्तु, कंसाया इदिंआणि श्रं । ते जिंणीत्तु अहाणाय, तिंहरामि अंहे मुंणी । ॥३८॥

अर्थ—( एगव्या ) एक आत्मा एटले जीव के मन ( अजिए ) नहीं जीतायो सतो ( सत्तु ) शत्रुरूप छे, तथा ( कसाया ) चारे कपायो नहीं जीत्या सता शत्रुरूप छे, आ रीते मन अने कपायो मळीने पांच शत्रु छे. ( अ ) तथा ( इदिआणि ) पांच इद्रियो नहीं जीत्या सता शत्रुरूप छे, आ सर्व मळीने दश शत्रु थया. ( ते ) ते सर्व शत्रुओने ( जहाणायं ) शास्त्रमां कहेली नीतिवडे ( जिणीत्तु ) जीतीने ( मुणी ) हे केशीकुमार मुनि ! ( अहं ) हुं ( विहरामि ) विचरं छुं, एटले ते शत्रुओनी मध्ये रखा छतां पण अप्रतिवद्ध विहारे करीने हुं विचरं छुं. ३८.  
आ प्रमाणे गौतमस्वामीए कहुं त्यारे केशीकुमार फरीथी बोल्या के—

साहु गोअम ! पसा ते, छिन्नो मे संसओ ईसो !

अन्नो वि संसओ संज्झं, तं मे कँहसु गोअसा ! ॥ ३९ ॥

अर्थ—( गोअग ) हे गौतम गणधर ! ( ते पसा ) तमारी बुद्धि ( साहु ) बहु सारी छे, तेथी ( इसो ) आ ( मे संसओ ) मारो संशय पण ( छिन्नो ) तमे छेद्यो छे. ( अन्नो वि ) हजु चीजो पण ( मज्झं ) मने ( संसओ ) संशय छे, ( तं मे ) ते मारा संशयने ( गोअसा ) हे गौतम गणधर ! ( कहसु ) तमे कहो-छेदो. ३९.  
“दीसंति बहवो लोए, पासबद्धा सरीरियो । सुक्कापासो लँहूभूओ, कँहं तं विहरसी सुगी ? ॥४०॥

अर्थ—( लोए ) लोकरने विषे ( पासबद्धा ) पाशथी एटले रागद्वेषरूपी पाशथी बंधायेला ( सरीरियो ) प्राणीओ

( बहवो ) घणा ( दीप्तति ) देखाय छे, तो ( मुष्णी ) हे गौतम मुनि ! ( व ) तमे ( मुक्कपासो ) ते पाशथी मुक्त अने ( लहूभूओ ) लघु एटले वायु, तेनी जेवा यया सता ( कद् ) केवी रीते ( विहरसी ) सर्वत्र अप्रतिबद्धपणे विचरो छो ? ४०

त्यारे गौतमस्वामी बोल्या के —

'ते पासे सन्वसो छिंत्ता, निहत्तूण उवायओ । मुंक्कपासो लहूभूओ, विहरामि अह मुंणी । ॥ ४१ ॥

अर्थ—( ते ) ते ( सन्वसो ) सर्व ( पासे ) पाशोने ( छिंत्ता ) छेदीने तथा ( उवायओ ) सत्य मायाना अभ्यासरूप उपायथी ( निहत्तूण ) हर्षीने एटले फरीथा तेनो बध न थाय एवी रीते तेमनो विनाश करीने ( अह ) द्रु ( मुंणी ) हे केरीकुमार मुनि ! ( मुक्कपासो ) पाशथी मुक्त अने ( लहूभूओ ) वायुनी जेवो लघु थयो सतो ( विहरामि ) विचर छु ४१.

पासा य इति के बुंत्ता ?, केसी गौअममब्बवी । तओ केसीं बुवत तु, गोथ्रमो ईणमब्बवी ॥४२॥

अर्थ—( पासा य ) पाशो ( के बुत्ता ) तमे कया कया ? एटले तमे कोने पासला कया ? ( इति ) ए प्रमाणे ( केसी ) केरीकुमार मुनि ( गोअम ) गौतम गणधरने ( अब्बवी ) कहेता हवा ( तओ ) तयारपछी ( बुवत तु ) ए प्रमाणे बोलता एवा ( केसीं ) केरीकुमारने ( गोअमो ) गौतमस्वामी ( इय ) आ प्रमाणे ( अब्बवी ) कहेता हवा. ४२.

रागदोसादञ्चो तिठ्वा, नेहपासा भयंकरा । तं छिदिन्तु जहाणायं, विहरामि जहकमं ॥ ४३ ॥

अर्थ—( रागदोसादञ्चो ) राग अने द्वेष विगरे ( तिठ्वा ) तीव्र अने ( भयंकरा ) भयंकर एवा ( नेहपासा ) स्नेह-पाशो कहेला छे, ( ते ) ते पाशोने ( जहाणायं ) शास्त्रमां कहेली नीति प्रमाणे ( छिदिन्तु ) छेदीने ( जहकमं ) यथाक्रम एटले साधुना आचारमां कहेला क्रम प्रमाणे ( विहरामि ) हुं विचरं छुं. ४३.

ते सांभळी केशीकुमार वोन्या.—

साहु गौअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसंओ ईमो । अन्नो वि संसंओ मंज्झं, तं मे कंहेसु गोअंसा !

अर्थ—( गोअम ) हे गौतम गणधर ! ( ते पण्णा ) तमारी बुद्धि ( साहु ) घणी सारी छे, तेथी ( इमो ) आ ( मे ) मारो ( संसंओ ) संशय पण ( छिन्नो ) तमे छेद्यो छे. वळी ( अन्नो वि ) चीजो पण ( मज्झं ) मने ( संसंओ ) संशय छे, ( तं मे ते मारा संशयने ( गोअमा ) हे गौतम गणधर ! ( कंहेसु ) तमे कहो-छेदो. ४४.

अंतोहिअयसंभूआ, लया चिट्ठइ गौअमा ! फलेइ विसंभवलीणं, सा उ उच्चरिआ कंहं ? ॥ ४५ ॥

अर्थ—( गोअमा ) हे गौतम गणधर ! ( अंतोहिअयसंभूआ ) हृदयनी अंदर उत्पन्न थयेली ( लया ) जे लता ( चिट्ठइ ) रहेली छे, तथा जे लता ( विसंभवलीणं ) विपनी जेवा भक्षण करवा लायक एटले परिणामे दारुण एवा विप फळोने ( फलेइ ) फळे छे-उत्पन्न करे छे, ( सा उ ) ते लता तमे ( कंहं ) केथी रीते ( उच्चरिआ ) उखेडी नांली ? ४५.

त्यारे गौतमस्वामी चोल्या —

'त लत सवसो छित्ता, उद्धरित्तु समूलिअ । विहरामि जहानाय, मुंकोमि विसंभवखण ॥ ४६ ॥  
अर्थ—( व ) ते ( लत ) लताने ( सवसो ) सर्वथा ( छित्ता ) छेदीने तथा ( समूलिअ ) मूळ सहित ( उद्धरित्तु )  
उखेडी नारिने ( जहानाय ) शास्त्रमां कहेली नीति प्रमाणे ( विहरामि ) दु विचरु छु अने ( विसंभवखण ) विलप  
कर्मरूपी विपफळना भक्षणी ( मुंकोमि ) दु मुक्त थयो छु ४६.

लैया य इति का बुत्ता ? केमी गौअममब्बवी । केसिमेव बुवत तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ४७ ॥  
अर्थ—( लया य ) वळी लता ते ( का बुत्ता ) कइ कही छे ? ( इति ) ए प्रमाणे ( केमी ) केशीकुमार ( गोअम )  
गौतम गणधरने ( अन्वी ) कहेता हया-पूछता हया ( एव ) ए प्रमाणे ( बुवत तु ) कहेता एवा ( केसी ) केशीकुमारने  
( गोअमो ) गौतमस्वामी ( इण ) आ प्रमाणे ( अन्वी ) कहेता हवा ४७

भवतणहा लैया बुत्ता, भीमा भीमफलोदया । तमुद्धित्तु जहानाय, विहरामि महामुणी ! ॥ ४८ ॥  
अर्थ—( भवतणहा ) सतारने विपे जे तूष्णा-लोभ ते ज ( भीमा ) भयकर अने ( भीमफलोदया ) भयकर फळना  
उदयवाळी ( लया ) लता ( बुत्ता ) कहेली छे ( व ) ते लताने ( जहानाय ) शास्त्रमां कहेली नीति प्रमाणे ( उद्धित्तु )  
उखेडी नारिने ( महामुणी ) हे केशी महामुनि ! ( विहरामि ) दु विचरु छु ४८



साहु गोअम ! पसा ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ भज्जं, तं मे कहसु गोअमा ! ॥४९॥

अर्थ—प्रथमनी जेम जाणवो. ४६.

संपज्जलिआ घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोअमा ! जे डहंति संरीरत्था, कंहं विज्झाविआ तुमे ? ॥५०॥

अर्थ—( गोअमा ) हे गौतम गणधर ! ( संपज्जलिआ ) अत्यंत जाज्वल्यमान अने ए ज कारणथी ( घोरा ) घोर-भयंकर एवा ( अग्गी ) अग्निओ ( चिट्ठइ ) रहेला छे, के ( जे ) जे अग्निओ ( संरीरत्था ) शरीरमां रखा थका ( डहंति ) बाले छे-परिताप उपजावे छे, तेमने ( तुमे ) तमे ( कंहं ) केवी रीते ( विज्झाविआ ) बुझव्या-शांत कर्या ? ५०.

त्यारे गौतमस्वामी बोल्या.—

महामेहप्पसूआओ, गिज्झ चारि जैलोत्तमं । सिंचामि सययं ते उ, सिंचा नो अ दहंति मे ॥५१॥

अर्थ—( महामेहप्पसूआओ ) महामेघथकी उत्पन्न थयेला प्रवाहथी ( जलोत्तमं ) सर्व जळमां प्रधान एवुं ( चारि ) जळ ( गिज्झ ) ग्रहण करीने ( ते उ ) ते अग्निओने ( सययं ) निरंतर ( सिंचामि ) हुं छांडुं छुं-शांत करुं छुं. ( सिंचा ) अने ते जळवडे सींव्या एवा ते अग्निओ ( मे ) मने ( नो अ दहंति ) नथी ज बाळता. ५१.

अग्गी अ ईइ के बुत्ते ?, केसी गोअममब्बवी । तओ केसीं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ५२ ॥

अर्थ—( अग्गी अ ) वळी अग्नि ते ( के बुत्ते ) कया कया छे ? ( इइ ) ए प्रमाणे ( केसी गोअममब्बवी ) केशीकुमार

गौतमस्वामिने कहेता-पूछता हवा ( तथा ) त्यारे ( बुवत तु ) ए प्रमाणे बोलता एवा ( केशी ) केशीकुमारने ( गोअमो इण अण्वयी ) गौतमस्वामी या प्रमाणे कहेता हवा. अहीं अग्निना सवधर्मा प्रश्न कर्यो, तेना उपलक्षणधी तेने बुझावनार महामेधादिक सवधी पण प्रश्न कर्या एम समजवु ५२

कसाया अग्निगणो वुत्ता, सुअसीलतओ जल । सुअधाराभिहया सर्ता, भिन्ना इ न ड्हति मे ॥५३॥

अर्थ—( कसाया ) कपायो परिताप उपजावनार होवाधी तथा शोषण करनार होवाधी ( अग्निगणो ) अग्निओ ( बुत्ता ) कला छे, तथा ( सुअसीलतओ ) थुत एटले कपायने शमाववाना कारणभूत थुतने विपे रहेला उपदेशो, शीळ एटले पाच महान्तो अने चार प्रकारनो तप, ते ( जल ) जळ कहेलु छे उपलक्षणधी चगतने आनददायक एवा तीर्थकरने महामेघरूप कसा छे, अने तेमनाधी उत्पन्न थयेला आगमने जठना प्रवाहरूप कहेलो छे तेधी करीने ( सुअधाराभिहया ) थुतनी तथा उपलक्षणधी शीळ अने तपनी धारावडे दणायेला अने ( भिन्ना इ ) भेदाया ( सर्ता ) सर्ता ते अग्निओ ( मे ) मने ( न ड्हति ) वाळता नथी ५२

साहु गोअम ! पणना ते, छिन्नो मे ससओ इमो । अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोअमा ! ॥५४॥

अर्थ—पूर्वनी नेम नाणवो ५३

अय साहसिओ भीमो, डुट्टस्सो परिधाइ । जसि गोअम । मारूढो, कंह तेण न हीरंसि ? ॥५५॥

अर्थ—( अयं ) आ प्रत्यक्ष देखातो, ( साहसिभ्यो ) साहसिक एटले विचार कर्षो विना ज प्रवर्ततो, ( भीमो ) भयं-  
कर अने ( दुडुस्सो ) दुष्ट एवो अश्व ( परिधावह ) दोडे छे, के ( जंसि ) जेना उपर ( मारुढो ) आरुढ थयेला एवा तमे  
( गोअम ) हे गौतम गणधर ! ( तेण ) ते अश्वथी ( कहं ) केम ( न हीरसि ) हरण कराता नथी-ते अश्व तमने केम उ-  
न्मार्गे लइ जतो नथी ? . ५५.

त्यारे गौतमस्वामी बोल्या,—

पहावंतं निगिण्हामि, सुअरस्सीसमाहितं । न मे गच्छइ उम्मगं, मगं च पंडिवज्जइ ॥ ५६ ॥

अर्थ—( सुअरस्सीसमाहितं ) श्रुतरूपी रश्मि एटले दोरुडावडे बांधेला ते दुष्ट अश्वने हुं ( पहावंतं ) उन्मार्गे दोडता  
एवाने (निगिण्हामि) पकडी राखुं छुं, तेथी ( मे ) मारो ते अश्व ( उम्मगं ) उन्मार्गे ( न गच्छइ ) जतो नथी, ( मगं च )  
अने मार्गने एटले सन्मार्गने ( पंडिवज्जइ ) अंगीकार करे छे-सन्मार्गे चाले छे. ५६.

आसे अ इति के बुत्ते?, केसी गोअममब्बवी । 'केसीमेव बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ५७ ॥

अर्थ—( आसे अ ) वळी अश्व ते ( के बुत्ते ) कयो कयो छे ? ( इति ) ए प्रमाणे ( केसी ) केशीकुमार ( गोअमं )  
गौतम गणधर प्रत्ये ( अब्बवी ) कहेता हवा-पूछता हवा ( एवं बुवंतं तु ) ए प्रमाणे कहेता एवा ( केसी ) केशीकुमार  
प्रत्ये ( गोअमो ) गौतमस्वामी ( इणं अब्बवी ) आ प्रमाणे उत्तर कहेता हवा. ५७.

मणो साहासिओ भीमो, दुट्टस्सो परिधावइ । तं सेम्म निगिण्हामि, धम्मसिम्खाइ कथग ॥५८॥  
 अर्थ—हे केशी मुनि ! ( मयो ) मन्तुपी ( साहसिओ ) साहसिक अने ( भीमो ) मयकर एवो ( दुट्टस्सो ) दुष्ट  
 अथ ( परिधावइ ) आम तेम दोढे छे ( त ) तेने ( धम्मसिम्खाइ ) धर्मरूप शिखावडे ( कथग ) जातिवत अश्वनी जेम  
 ( सम्म ) सम्यक् प्रकारे ( निगिण्हामि ) इ निग्रह करु छे—नियममां राउ छु ५८  
 साहु गोअम ! पणा ते, छिन्नो मे ससओ इमो । अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोअमा ! ॥५९॥

अर्थ—पूर्वनी जेम नाथवो ५९

कुप्पहा धहवो लोपं, जेहिं नासनि जलुणो । अर्द्धाणे कह वेदतो, ' त नं नंस्ससि गोअमा ! ॥६०॥  
 अर्थ—( लोप ) लोपन यिये ( कुप्पहा ) कुमार्गो ( धहवो ) घया छे, के ( जेहिं ) जे कुमार्गाए करीने ( जलुणो )  
 प्राणीओ ( नामति ) नाश पांमे छे एटले सन्मार्गधी भए थाय छे, तो ( गोअमा ) हे गौतम पुनीश्वर ! ( अर्द्धाणे ) सन्मा  
 र्गमां ( बट्टतो ) वर्तना एवा ( त ) तमे ( कह ) केम ( न नस्ससि ) नाश पांमता नथी ? भए थता नथी ? ३०  
 ' जे अ मग्गेण गर्च्छति, जे अ उम्मग्गपट्टिआ । ते सव्वे विडेआ मज्झ, तो नं नंस्सामहे मुणी ! ॥६१॥

अर्थ—( मुणी ) हे केशी मुनि ! ( जे अ ) जेओ ( मग्गेण ) सन्मार्गे ( गर्च्छति ) जाय छे, ( जे अ ) तथा जेओ  
 ( उम्मग्गपट्टिआ ) उन्मार्ग चालागारा छे, ( ते सव्वे ) ते सर्व प्राणीओ ( मज्झ ) मारा ( विडेआ ) चाखेला छे एटले ते

सर्वेने हूं जाणुं छु अर्थात् मार्ग अने उन्मार्गना स्वरूपने हूं जाणुं छुं. ( तो ) तेथी ( अहं ) हूं ( न नस्सामि ) नाश पावतो नथी-सन्मार्गथी अष्ट थतो नथी. ६१.

गगने अ इति के वुत्ते, केली गोअममब्बवी । तओ केलीं वुत्तंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥६२॥

अर्थ—( गगने ) मार्ग ( अ ) अने उन्मार्ग कोने कही छो ? वाकीनो अर्थ पूर्ववत् जाणवो. ६२.

कुप्पावयणपासंडी, संव्हे उम्मगगपट्टिआ । सम्मगं तु जिणैक्खायं, एस्स मग्गे हिं उत्तमे ॥६३॥

अर्थ—( कुप्पावयणपासंडी ) कुप्रवचनना पासंडीओ एटले एकांतवादी कपिलादिकना दर्शनवाळा ( संव्हे ) सर्वे ( उम्मगगपट्टिआ ) उन्मार्गे चालनारा छे, ( तु ) पुनः ( जिणैक्खायं ) जितेश्वरे कहेलो जे मार्ग तेज ( सम्मगं ) सन्मार्ग छे, माटे ( एस्स ) आ ( मग्गे हिं ) मार्ग ज ( उत्तमे ) उत्तम छे. ६३.

साहु गोअम ! पपगा ते, छिन्नो भे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयसा ! ॥६४॥

अर्थ—पूर्ववत् जाणवो. ६४.

महाउदगवेगेणं, वुञ्जमाणाण पाण्णिणं । संरणं गई पईट्टा य, दीवं कं मन्नंसी मुण्णी ! ॥६५॥

अर्थ—( मुण्णी ) हे गौतम मुनि ! ( महाउदगवेगेणं ) मोटा जळना प्रवाहवडे ( वुञ्जमाणाण ) तणाता एवा ( पाण्णिणं ) प्राणीओने ( संरणं ) शरणरूप, ( गई ) गति एटले आधार भूमिरूप, ( पईट्टा य ) अने प्रतिष्ठा एटले स्थिर रहेवना

हेतुरूप ( दीव ) द्वीप ( रु ) कोने ( मनमी ) तमे मानो छो ? ६५

गौतमस्वामी नराच आपे छे —

अस्थि पैगो महादीवो, वारिमज्जे महालओ । महाउदगवेगस्स, गति तत्थ ने विज्जई ॥६६॥  
अर्थ—( वारिमज्जे ) जळनी मध्ये ( महालओ ) मोटो ( एगो ) एरु ( महादीपो ) महाद्वीप ( अस्थि ) छे ( तत्थ )  
तेमां ( महाउदगवेगस्स ) महाचळना वेगनी-प्रवाहनी ( गति ) गति ( न विज्जई ) प्रगर्तती नथी ६६.

दीवे अ इइ के बुत्ते, केसी गोअममच्चवी । केसीमेव बुवत्त तु, गोअमो इणमच्चवी ॥६७॥

अर्थ—( दीवे ) द्वीप कोने कहाए ? चाकीनो अर्थ पूर्ववत् द्वीपना उपलक्षणथी ते जळमां रहेलो होवाथी जळना  
प्रवाहनी प्रश्न पण ज गी लेगो. ६७

जराधरणवेगेण, बुज्झमाणाण पाणिण । धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तम ॥ ६८ ॥

अर्थ—( जराधरणवेगेण ) जरा अने मरणरूपी जळना वेगवळे ( बुज्झमाणाण ) चहन कराता-तथाता ( पाणिण )  
प्राणीअने ( धम्मो ) धर्म न ( पइट्ठा य ) स्थिर रहेवाना हेतुरूप, ( गई ) गति-आधाररूप अने ( उत्तम ) उत्तम ( सरण )  
शरणरूप ( दीवो ) द्वीप छे कारण के ते धर्म ज ससाररूपी समुद्रमां द्वीपरूपे रहेलो छे. ते मुक्तिनु कारण होवाथी  
नरा अने मरणरूप चळनो वेग तेने पहुँची शकतो नथी. ६८

साहु गोअम ! पछा ते, छिन्नो मे संसथ्रो इमो । अन्नो वि संसथ्रो मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ॥६९॥  
अर्थ—पूर्ववत्. ६६.

अण्वंसि महोहंसि, नावा विप्परिधावइ । जंसि गोअम ! मारुढो, केहं पारं गंमिस्ससि ? ॥ ७० ॥  
अर्थ—( महोहंसि ) मोटा प्रवाहवाळा ( अण्वंसि ) समुद्रने विपे ( नावा ) वहाण ( विप्परिधावइ ) विशेषे करीने  
आमतेम दोडे छे, बराबर सीधा चाली शकता नथी तो ( जंसि ) जे वहाणपर एटले ते वहाणपर ( मारुढो ) आरुढ  
थयेला तमे ( गोअम ) हे गौतम मुनि ! ( पारं ) ते समुद्रना पारने ( कं ) केवी रीते ( गमिस्ससि ) पामशो ? ७०.  
गौतमस्वामी जवाच आपे छे.—

जा उ अस्साविणी नावा, नं सा पारस्स गामिणी ।

जा निरंस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥ ७१ ॥

अर्थ—( जा उ ) जे ( नावा ) नौका ( अस्साविणी ) आश्रववाळी-अंदर जळ आवी शके तेवी होय छे-जेमां  
पाणी भराहुं होय छे, ( सा ) ते ( पारस्स ) समुद्रना पारने ( गामिणी ) पामनारी ( न ) धती नथी, पण ( जा ) जे  
( नावा ) नावा ( निरंस्साविणी ) आश्रव रहित-अंदर जळ न आवी शके तेवी होय छे ( सा उ ) ते नावा ( पारस्स )  
समुद्रना पारने ( गामिणी ) पामनारी थाय छे. तेथी हूं आश्रव रहित नावापर आरुढ थइ समुद्रना पारने पामीश. ७१.

नावा अ इति का बुत्ता ? , केसी गोअममब्बवी । केसीमेव बुवत तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ७२ ॥  
अर्थ—पूर्ववत् जाणवो, अहीं केवी नावा ? एवो प्रश्न कर्णो छे तेथी ते साये तरनारनो अने तरवा लायक समुद्रनो  
पण प्रश्न कर्णो ज छे एम जाणतु ७२

संसीरमंडु नेव सि, जीवो बुच्चइ नेविओ । संसारो अणुवो बुत्तो, ' ज तरति महेसिणो ॥ ७३ ॥  
अर्थ—( सरीर ) शरीर रूप ( नाव सि ) नावा छे एम ( आहु ) कष्टु छे, कारण के आश्रयद्वारनो रोध करी ज्ञान,  
दर्शन अने चारित्ररूप त्रण रत्ननी आराधना करवाथी ते शरीर ज संसारसागरने तारे छे तथा ( जीवो ) जीव ( नाविओ)  
नाधिक-तरनार ( बुच्चइ ) कहेवाम छे केमके ते जीव ज भवसागरने तरनार छे तथा ( संसारो ) आ चार गविरूप संसार  
( अणुवो ) समुद्र ( बुत्तो ) कल्लो छे केमके तरयथी ते संसार ज समुद्रनी जेम तरवा लायक छे ( ज ) के जे संसारसागरने  
( महेसिणो ) महर्षिओ ज ( तरति ) तरे छे-तरी शके छे ७३

साहु गोअम ! पणा ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झ, त मे कहसु गोअमा ! ॥ ७४ ॥  
अर्थ—पूर्ववत् ७४.

अधयारे तैमे धोरे, चिंटुति पाणिणो धहु । को कंरिस्सति उज्जोअ, संवलोअम्मि पाणिण ? ॥ ७५ ॥  
अर्थ—( अधयारे ) प्राणीने अध करनार अने ( धोरे ) घोर एवा ( तमे ) अधारामां ( वहु ) घणा ( पाणिणो )



प्राणीओ ( चिह्नति ) रहेला छे, तो ( सव्वलोअम्मि ) सर्व लोकने विपे ( पाणिणं ) प्राणीओने ( को ) कोण-कयो पदार्थ ( उज्जोअं ) उद्योतने-प्रकाशने ( करिस्सति ) करशे ? ७५.

श्री गौतमस्वामी जवाब आपे छे,—

\*उग्गओ विमलो भाणू, सव्वलोअप्पहंकरो । सो करिस्सति उज्जोअं, सव्वलोअम्मि पाणिणं ॥७६॥  
अर्थ—( सव्वलोअप्पहंकरो ) सर्व लोकमां प्रकाश करनार ( विमलो ) निर्मल ( भाणू ) सूर्य ( उग्गओ ) उदय पाम्यो छे, ( सो ) ते सूर्य ( सव्वलोअम्मि ) सर्व लोकमां ( पाणिणं ) प्राणीओने ( उज्जोअं ) उद्योत-प्रकाश ( करिस्सति ) करशे. ७६.

भाणू अ इइ के वुत्ते ? , केसी गोअममब्ववी । केसीमेवं वुवंतं तु, गोअमो इणमब्ववी ॥ ७७ ॥  
अर्थ—अहीं सूर्य कोने कहो छो ? एम प्रश्न कर्यो छे, बाकी पूर्ववत्. ७७.

\*उग्गओ खीणंससारो, सव्वण्णू जिणभवखरो । सो करिस्सइ उज्जोअं, सव्वलोअम्मि पाणिणं ॥ ७८ ॥  
अर्थ—( खीणंससारो ) क्षीण थयो छे संसार जेनो तथा ( सव्वण्णू ) सर्व पदार्थने जाणनार एवो ( जिणभवखरो ) जिनेश्वरूपी भास्कर-सूर्य ( उग्गओ ) उदय पाम्यो छे, ( सो ) ते सूर्य ( सव्वलोअम्मि ) सर्व लोकने विपे ( पाणिणं ) प्राणीओने ( उज्जोअं ) उद्योत-मोहरूपी अंधकारनो नाश करी सर्व वस्तुनो प्रकाश ( करिस्सइ ) करशे. ७८.



ठाणे अ इइ के वुत्ते? केसी गोअममव्ववी । केसीमिवं बुवंतं तु, गोअमो इणमव्ववी ॥ ८२ ॥

अर्थ—आमां ते स्थान कथुं ? एम प्रश्न कर्यो छे. चाकी पूर्ववत्. ८२.

निंवाणं ति अवाहं ति, सिद्धि लोअगमेव य । खेमं सिंमणोवाहं, जं चरंति मेहेसिणो ॥ ८३ ॥

अर्थ—( निंवाणं ति ) संतापना अभावथी प्राणीओ शीतल थाय जेने विपे ते निर्वाण ए प्रमाणे कहेवाय छे, ( अवाहं ति ) बाधा नथी जेने विपे ते अघाध एवे नामे कहेवाय छे, ( सिद्धि ) अरण कर्या विना सर्व कार्यों जेने विपे सिद्ध थाय ते सिद्धि एवे नामे कहेवाय छे, ( लोअगमेव य ) लोकना अग्रभागने विपे रहेल होवाथी लोकाग्र एम कहेवाय छे, ( खेमं ) शाश्वत सुस करनार होवाथी खेम एम कहेवाय छे, ( सिंमं ) उपद्रव नहीं होवाथी शिव एवे नामे कहेवाय छे, तथा ( अणावाहं ) बाधा पीडा रहित होवाथी जे स्थान अनावाध एवुं कहेवाय छे, तथा ( जं ) जे स्थानने विपे ( मेहेसिणो ) महर्षिओ ( चरंति ) जाय छे. अहीं ज्यां न होय त्यां 'इति' शब्दनो अध्याहार राखी अर्थ करवो. ८३.

'तं ठाणं सासयंवासं, लोअगमि ठुरारुहं । जं संपत्ता नं सोअंति, भवोहंतकरा सुंणी ॥ ८४ ॥

अर्थ—( तं ठाणं ) ते स्थान ( सासयंवासं ) शाश्वत निवासवाळ तथा ( लोअगमि ) लोकना अग्र भागने विपे ( ठुरारुहं ) दुःखे करीने चडी शकाय तेवुं कळुं छे. ( भवोहंतकरा ) भवना समूहनो अंत करनारा ( सुणी ) मुनिओ ( जं संपत्ता ) जे स्थानने पाम्या सत्ता ( न सोअंति ) शोक करता नथी—कोइ जातनो शोक करवापणुं रहेतुं ज नथी. ८४.

सौहृ गोअम ! पैणणा 'ते, छिन्नो मे संसओ ईमो । नमो ते" संसयातीत ! संवसुत्तमहोदधी ! ॥ ८५ ॥  
 अर्थ—( गोअम ) हे गौतम गणधर ! ( ते ) तमारी ( पणा ) बुद्धि ( साह ) बहु सारी छे, ( इमो ) आ ( मे  
 संसओ ) मारा सशय पण ( छिन्नो ) तमे छेद्यो छे ( संसयातीत ) हे सशय रहित ! ( संवसुत्तमहोदधी ) हे सर्व श्रुतना  
 माटा समुद्र ! ( ते नमो ) तमने नमस्कार छे ८५.

पत्नी केशीकुमारं शु कयुं ? ते कवे छे —

एव तु संसए छिन्ने, केसो धोरपरकमे । अभिवदिचा तिरसा, गौअम तु महायस ॥ ८६ ॥

अर्थ—( एव तु ) आ अनुक्रमे ( संसए ) सशय ( छिन्ने ) छेदाये सते एटले सर्व सशया छेदाये सते ( धोरपरकमे )  
 धोर पराक्रमनाढा ( केसो ) केशीकुमार ( महायस ) महा यशवाळा ( गोअम तु ) गौतम गणधरने ( तिरसा ) मस्तकनाडे  
 ( अभिवदिचा ) वदना करीने ८६

पंचमहव्ययधम्म, पडिर्वज्जइ भावथो । पुरिमस्स पंचिउमम्मि, मंगे तंतथ सुहावहे ॥ ८७ ॥

अर्थ—( भावथो ) भावथो ( पुरिमस्स ) प्रथम जिनेश्वरे मानेला-प्रथम जिनेश्वरे पण प्रवर्तविला एवा ( तत्य सुहावहे )  
 ते सुखकारक ( पंचिउमम्मि मंगे ) छेद्वा तीर्थकरना प्रवर्तविला मार्गमा-तीर्थमां ( पंचमहव्ययधम्म ) पांच महात्रतरूप  
 धर्मेने ( पडिर्वज्जइ ) अगीकार कर्यो ८७

हवे आ अध्ययनेन समाप्त करता महापुरुषना संगतुं फल कहे छे. —

केसिगोअमओ णिंचं, तम्मि आसि समागमे । सुअसीलसमुक्करिसो, महत्थत्थविणिच्छओ ॥ ८८ ॥

अर्थ—( तम्मि ) ते नगरीमां ( णिंचं ) हमेशां ( केसिगोअमओ ) केशीकुमार अने गौतमस्वामीनो ( समागमे ) समागम ( आसि ) थया क्यो, तेथी ( सुअसीलसमुक्करिसो ) श्रुत अने शीलनो एटले ज्ञान अने चारित्रनो उत्कर्ष थयो, तथा ( महत्थत्थविणिच्छओ ) महार्थ एटले मुक्तिना साधनपणाए करीने महा प्रयोजनवाला जे शिचा अने त्रत विगरे अर्थी तेनो निश्चय पण थयो, अर्थीव् शिचा, त्रत अने तत्तो विगरे पदार्थेनो निश्चय थयो. अहीं केशीकुमार तथा गौतमस्वामीने तो अर्थनो निश्चय हतो ज. पण तेमना शिष्योने अर्थनिश्चय थयो एम जाणनातुं छे. ८८.

तोसिसा परिसा संव्वा, संमगं समुवट्टिआ । संधुआ ते पंसीअंतु, भयंवं केसीगोअम त्ति' वेमि ॥ ८९ ॥

अर्थ—आ रीते ( तोसिसा ) प्रसन्न थयेली ( संव्वा ) सर्व ( परिसा ) पर्यदा ( मम्मगं ) सन्मार्गने एटले मुक्ति-मार्गने आराधवा ( समुवट्टिआ ) सावधान थइ. ( ते ) ते ( भयं ) पूज्य अने ज्ञानवंत एवा ( केसीगोअम ) केशीकुमार अने गौतमस्वामी ( संधुआ ) पर्यदाए स्तुति कराया सता ( पंसीअंतु ) सत्पुरुषो उपर प्रसन्न थाओ. ( त्ति वेमि ) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबुखामीने कहुं. ८९.

इति त्रयोविंशमध्ययनम्. २३.

## अथ प्रवचनमातृ नामनुं चोवीशामु अध्ययन २४

त्रेवीशमा अध्ययनमां कष्टु के—वीनाओना मननी शकाने केसीकुमार थने गौतमस्वामीनी जेम दूर करवी ते शकानु निगारण तो भापासमितिरूप वांग्योगे करीने थइ शके छे, अने भापासमिति अष्टप्रवचन मातानी मध्य आवे छे, तेथी अहाँ अष्टप्रवचन मातानु स्वरूप कहे छे—

अट्टपंचयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य । पचेव य ममीईओ, तओ गुत्तिओ आहिंआ ॥ १ ॥

अर्थ—( अट्टपंचयणमायाओ ) प्रवचननी माताओ आठ छे ( समिई ) समिति ( तहेव य ) तथा ( गुत्ती ) गुप्ति तेमां ( समीईओ ) समितिओ ( पचेव य ) पांच ज छे अने ( गुत्तिओ ) गुप्तिओ ( तओ ) त्रण ( आहिंआ ) कहेली छे ।  
ते आठेनां नाम कहे छे—

ईरिंआ भासेसणादाणे, उंचारे समिई ईअ । मणगुत्ती वंयगुत्ती, कांयगुत्ति अ अट्टमा ॥ २ ॥

अर्थ—( ईरिंआ ) इयाँ एटले गमन, ( भासा ) भापा, ( एसणा ) एषणा एटले अत्रादिकनी गवेपणा, ( आदाणे ) आदान एटले पात्रादिकनु ग्रहण, तथा ( उंचारे ) उचारादिकनु परिष्ठापन ( इअ ) ए पांच ज ( समिई ) समिति छे तथा ( मणगुत्ती ) मनगुप्ति एटले मननी शुभ कार्यमां प्रवृत्ति अने अशुभ कार्यथी नियुत्ति, ( वयगुत्ती ) ए ज रीते वचनगुप्ति ( अ ) तथा ( अट्टमा ) आठमी ( कायगुत्ति ) कायगुप्ति छे २

ते आठेचुं निगमन करे छे.—समाप्ति करे छे.

एआओ अट्टु सैमिईओ, समासेण विआहिआ। दुवालसंगं जिणवलायं, मांयं जैत्थ उं पेत्रयणं ॥३॥

अर्थ—( एआओ ) आ ( अट्टु ) आठ ( समिईओ ) समितिओ ( समासेण ) संघेपे करीने ( विआहिआ ) कही छे, ( जत्थ ) जेने विषे ( जिणवलायं ) जिनेथरे कहेलुं ( दुवालसंगं ) द्वादशांगरूप ( पनयणं ) प्रवचन ( मांयं उ ) समायेलुंज छे. अही समिति शब्दनो अर्थ आ प्रमाणे छे—सम्-सम्पक् एटले जिनेधरना वचनने अनुसार इति एटले आत्मानी जे चेष्टा ते समिति. आवा शब्दार्थ प्रमाणे गुप्तिओ पण समिति ज कही सकाय छे, तेथी अही आठेने समिति कही छे, छतां पांच समिति अने त्रण गुप्ति एम भेदवडे जे कहेवामां आवे छे तेचुं कारण ए जे समितिओ प्रवृत्तिरूपे होय छे अने गुप्तिओ प्रवृत्ति अने निवृत्ति वनेरूपे होय छे एम जगाववा माटे कथंचित् वनेनो भेद कहेवामां आवे छे. आ आठ समितिओ चारित्ररूप ज छे, अने ज्ञान तथा दर्शन विना चारित्र होइ शक्नुं नथी, अने ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र ए त्रण सिनाय चीजो कोइ पण विषय द्वादशांगीमां नथी, तेथी आ आठ समितिने विषे प्रवचन समायेलुं ज छे. एम कलुं ते योग्य ज छे. ३.

हवे प्रथम ईयांसमितितुं स्वरूप कहे छे.—

आलंबणेण कालेण, मंगेण जयणाइ अं । चउकारणपरिसुद्धं, संजए ईरिअं रिणं ॥ ४ ॥

अर्थ—( संजए ) साधुए ( आलंबणेण ) आलंबन, ( कालेण ) काल, ( मंगेण ) मार्ग ( अ ) अने ( जयणाइ )

यतना ( चउकारणपरिसुद्ध ) ए चार कारणे करीने शुद्ध एवी ( इरिचं ) इयो एटले गति ( रिए ) करवी जोइए. ४

ते आलवनादिकनु ज स्वरूप कहे छे —

तैरथ आलवण नाण, दसैण चरण तहा । काले अ दिवसे तुंत्ते, मंगे उंप्पहवजिए ॥ ५ ॥

अर्थ—( तथ ) तेमा एटले ते आलवनादिकमां ( नाण ) ज्ञान, ( दसण ) दर्शन ( तहा ) तथा ( चरण ) चारि, ए चण ( आलवण ) आलवन रुहेवाय छे कारण के ए चणने आर्थने ज जिनेश्वरे गमन करवानी आज्ञा आपेली छे तमा ज्ञान एटले सत्र, अर्थ अने यत्रार्थ वचेरूप आगम, दर्शन एटले सम्यक्त्व अने चरण एटले चारि 'तहा'-तथा शब्द आप्यो छे ते वे सयोगीया अने चण आदि सयोगीया भांगाने सूचववा माटे छे एटले के ज्ञानादिक एक एकने अने वन्ने आदिने आर्थने पण गमन करवानी अनुज्ञा आपेली छे ( थ ) तथा ( दिवसे ) दिवस ए ( काले ) काळ (युचे) कायो छे एटले साधुने गमन करवानो काळ दिवस कह्यो छे, पण रात्रिए ईर्यानी शुद्धि थइ शके नहीं, तेथी रात्रिनो काळ कह्यो नथी तथा ( मंगे ) मार्ग ते ( उप्पहवजिए ) उन्मार्गने बर्जाने कह्यो छे, उन्मार्गे जगधी आत्मानी विराधना विंगेरे दोपो लागे छे माट सारा मार्गे-राजमार्गे चालवु ५.

हवे यतनारूप चोथो भेद ने तेना चार प्रकार कहे छे —

दंभवओ खेत्तओ चव, कालओ भोवओ तहा । जयणा चंडडिहा वुत्ता, ते "मे किंत्तयओ सुंण ॥६॥



अर्थ—(दम्बओ) द्रव्यथी (खेतओ चेष) चैत्रथी तथा (कालओ) काळथी (तहा) तथा (भावओ) भावथी एम (चउव्विहा) चार प्रकारे (जयणा) यतना (युत्ता) कही छे, (तं) ते यतनाने (किचयओ) कहेता एवा (मे) दव्वओ चर्मवुत्ता पेहे, जुगमित्तं तु खेत्तओ । कालओ जाव रीएजा, उवउत्ते अ भावओ ॥ ७ ॥

अर्थ—(चम्बुसा) चञ्चुण्डे (पेहे) जे जीवादिक पदार्थने जोवा-जोइने चालुं ते (दम्बओ) द्रव्यथी यतना कहेवाय छे, (जुगमित्तं तु) तथा युगप्रमाण एटले साटात्रण हाथ प्रमाण चैत्रने जोतां चालुं ते (सेचओ) चैत्रथी यतना (कालओ) काळथी यतना कहेनाय छे, (जाव रीएजा) ज्यांसुधी चाले त्यांसुधीना प्रमाणवाळी एटले तेटला काळना प्रमाणवाळी जे यतना ते भावथी यतना कहेवाय छे, (उवउत्ते अ) तथा उपयुक्त एटले सावधान एवो सतो जे चाले ते (भावओ)

हवे यतनाना चोथा भेद उपयोगने ज स्पष्ट रीते कहे छे.—

इदिअरथे विवञ्जित्ता, सज्झायं चैवं पंचहा । तंमुत्ती तपपुरकारे, संजए ईरिअं रिं ॥८॥

अर्थ—(इदिअरथे) इन्द्रियोना शब्दादिक विषयाने (चैव) तथा (पंचहा) पांच प्रकारना (सज्झायं) स्वाध्यायने (विवञ्जित्ता) वर्जाने कारण के स्वाध्याय पण गमन करती बलते उपयोगनो विनाश करे छे तेथी स्वाध्यायने पण वर्जाने

( तम्बुची ) ते ईर्यानि विपे ज मूर्ति एटले व्यापार कातु छे शरीर चेतु एवो अने ( तप्पुरकारे ) ते ईर्यानि ज आगळ करे एटले उपयोगमां मुख्यपये अर्गीकार करे एवो अर्थात् काया अने मननु तेमा ज एकाग्रपणु राखतो एवो ( सजए ) साधु ( इरिअ ) गतिने ( रिए ) करे ८

हवे वीनी मायासमिति कहे छे —

कीहे माणे अ मांवाए लोभे अ उवंउत्तया । होसे भयमोहरिए, विक्हासु तंहेव य ॥ ९ ॥

एंआइ अट्टु ठांणाइ, परिविज्जित्तु सजए । असात्रज मिअ काले, भास भासिज्ज पणव ॥ १० ॥

अर्थ—( कोहे ) क्रोधने विपे, ( माणे अ ) मानने विपे, ( मायाए ) मायाने विपे, ( लोभे अ ) लोभने विपे, ( हासे ) हास्यने विपे, ( भयमोहरिए ) भयने विपे, मौखर्यने विपे, ( वंहेव य ) तेम ज वली ( विक्हासु ) विकथाने विपे ( उवउत्तया ) उपयोग राखवो, ( एआइ ) ए ( अट्टु ठाणाइ ) आठ स्थानकोने ( परिविज्जित्तु ) सर्वथा वर्जाने ( पणव ) बुद्धिमान ( सजए ) साधुए ( काले ) बोलयाने वएते ( असायज्ज ) पाप रहित-निर्दोष अने ( मिअ ) परिमित एटले कार्य जेटली ज ( भास ) मापा ( मासिज्ज ) बोलवी जो क्रोधादिकमां उपयोग होय तो प्राये शुभ मापा बोलावी नथी तेथी बोलवी वसते क्रोधादिकनो अवरय त्याग करवो जोइए ६-१०

हवे वीनी एपणासमिति कहे छे —

गवैसणाए गहणे अ, परिभोगेसणा थै जा । आहारोवहिसेजाए, एए तिष्ठिणं वि सोहँए ॥११॥

अर्थ—( गवैसणाए ) गायनी जेवी एषणा एटले शुद्ध आहारनुं जोहुं ते गवैषणा कहेवाय छे, अहीं एषणा शब्द जोडवाथी गवैषणाने विषे जे एषणा ते गवैषणैषणा एटले गायनी जेम विशुद्ध आहार जोवामां एषणा-विचार करवो ते. ( गहणे अ ) तथा ग्रहण एटले विशुद्ध आहारनुं ग्रहण, अहीं पण एषणा शब्द जोडवाथी ग्रहणने विषे जे एषणा-विचार ते ग्रहणैषणा कहेवाय छे, ( य ) तथा ( जा ) जे ( परिभोगेसणा ) परिभोग एटले मंडळीने विषे भोजननो समय, तेने विषे जे एषणा-विचार ते परिभोगैषणा कहेवाय छे. ( एए तिष्ठि वि ) आ त्रण प्रकारनी एषणा ( आहारोवहिसेजाए ) आहार, उपाधि-वस्त्र पात्रादिक अने शय्या-उपाश्रय संस्तारकादिक ए त्रणेने विषे ( सोहँए ) शोधवानी छे. अर्थात् एकला आहारने विषे ज शोधवानी छे एम नथी. ११.

ते एषणानी शुद्धि केवी रीते करवी ? ते कहे छे.—

उग्गमुँप्पायणं पैढमे, बीएँ सोहिँज्जँ एँसणं ।

परिभोगम्मि चंडकं, विसोहिँज्जं जयं जई ॥ १२ ॥

अर्थ—( जयं ) यतना करता ( जई ) साधुए ( पढमे ) पहेली गवैषणामां ( उग्गमुँप्पायणं ) आधाकर्मादिक सोळ उद्गमना अने धात्री आदि सोळ उत्पादनाना दोषोने शोधवाना छे, तथा ( बीए ) बीजी ग्रहणैषणामां ( एँसणं ) शंकि-

તાદિક દશ ણ્યના દોષને ( સોહિજ ) શોધવાના છે, તથા ( પરિમોગમ્મિ ) પરિમોગેપણને વિષે ( ચડક ) સયોજના, પ્રમાણ, અગારધૂમ અને કારણ એ ચાર વાવત(વિસોહિજ) શોધવાની છે અહીં અગાર દોષ અને ધૂમ દોષ વચ્ચે જૂદા લઈએ તો પરિમો ગેપણના પાંચ દોષો થવાથી કુલ સુહતાલીશ દોષો થાય છે, પરંતુ અહીં અગાર અને ધૂમ એ વચ્ચે દોષો મોહનીયકર્મમાં અતર્ગત હોવાથી વચ્ચે મઠીને એક જ દોષ કહ્યો છે ૧૨

હવે ચોથી આદાનનિષેષ સમિતિ કહે છે —

ઓહોર્વેદોવગ્ગહિઞ, મહંગ દુવિહ મુળી । ગિર્ષહત્તો નિવિલ્લવતો અ, પેઝિજા ઇમ વિહિ ॥ ૧૩ ॥

અર્થ—( ઓહોવહોવગ્ગહિઞ ) અહીં અતુક્રમે ઓષ, ઉપધિ, ઓષગ્રહિક એમ ૭૪ શબ્દો રહેલા છે, તેમાં મધ્યે રહેલો ઉપધિ શબ્દ હમરકમણિના ન્યાયવડે વચ્ચે શબ્દ સાથે જોડાય છે, તેથી રજોહરણાદિક ઓષોપધિ અને દઢાદિક ઓષગ્રહિકોપધિ એમ ( દુવિહ ) વે પ્રકારના ( મહંગ ) માંડક એટલે ઉપકરણને ( ગિર્ષહત્તો ) ગ્રહણ કરવા ( નિવિલ્લવતો અ ) અને મૂકતા એવા ( મુળી ) મુનિએ ( ઇમ ) આ આગઠ કહેવાશે તે ( વિહિ ) વિધિ ( પેઝિજા ) પ્રયુત્તવાનો છે— કરવાનો છે. ૧૩

૧ લક્ષ્મીવિનયની ટીકામા ૪૭ દોષોની બ્યાલ્યા વિસ્તારથી આપી છે, તેમા પરિમોગને વિષે પાંચ દોષ ન કરવાના કહેલા છે એટલે ૧૬-૧૬-૧૦-૬ મઠી ૪૭ થાય છે

ते ज विधिने कहे छे.—

चर्मखुसा पडिलेहिता, पर्माजिज जयं जई । आइए निर्विखविजा वां, दुहओ वि समिए संया ॥१४॥

अर्थ—( समिए ) समितिवाळा अने ( जयं ) यतनावाळा ( जई ) मुनिए ( दुहओ वि ) औधिक अने औपग्रहिक ए वने प्रकारना उपधिने ( संया ) सदा ( चर्मखुसा ) प्रथम चतुवडे ( पडिलेहिता ) पडिलेहख करीने एटले जोइने ( पर्माजिज ) रजोहरणादिकवडे प्रमार्जन करवी अने पछी ( आइए ) ते उपधिने ग्रहण करवी ( वा ) अथवा ( निर्विखविजा ) मूकवी. १४.

हवे पांचमी परिष्ठापनासमित्तिने कहे छे.—

उचारं पासवणं, खेलं सिंघाण जल्लिअं । आहारं उवहिं देहं, अन्नं वावि तहाविहं ॥ १५ ॥

अर्थ—( उचारं ) उचार-पुरीप, ( पासवणं ) प्रश्रवण-मूत्र, ( खेलं ) मुखनो चळवो, ( सिंघाण ) नासिकानो श्लेष्म, ( जल्लिअं ) शरीरनो मळ, ( आहारं ) अन्नादिक आहार, ( उवहिं ) वने प्रकारनी उपधि, ( देहं ) शरीर, ( अन्नं वावि ) अथवा वीजुं छाण विगेरे ( तहाविहं ) तेवा प्रकारनुं के जे परिष्ठापना एटले परठवचाने लायक होय ते सर्व स्थंडिलमां वोसराववुं-तजनुं, ए प्रमाणे क्रियापदनो संबंध अढारभी गाथामां आवशे तेनी साथे करवो. १५.

अहीं जे स्थंडिलमां वोसराववावुं कलुं ते स्थंडिलना दश विशेषणो छे. तेमां पहेला विशेषणमां अनापात अने

असलोक ए चे शब्दो छे, तेना भांगानो रचना प्रथम बताने छे, पछी तेना उपलक्षणथी दशो विशेषणोना भांगा समनी लेवा.  
अणवावायमसलोए, अणवाए चैव होइ सलोए । अणवायमसलोए, आवाए चैव सलोए ॥१६॥

अर्थ—( अणवाय असलाए ) ज्यां स्वपच एटले साधु के परपच एटले गृहस्थीयोनी जा—आन थती न होय ते अनापात स्थडिल कहेवाय छे, तथा ज्यां स्वपच के परपच दूरी पण जोइ न शके ते असलोक स्थडिल कहेवाय छे ए पहेलो भांगो थयो ? ( चैव ) तथा ( अणवाए ) अनापात अने ( मलोए ) होइ छे एटले ज्यां जाव आव नथी पण सलोक छे ते अनापात सलोक स्थडित कहेवाय छे, ए वीजो भांगो थयो २ तथा ( अवाय असलोए ) आपात अने असलोक एटले ज्यां जाव आव होय पण सलोक न होय ते आपात असलोक स्थडित कहेवाय छे, ए वीजो भांगो ३ ( चैव ) तथा ( आनाए ) आपात अने ( सलोए ) सलोक एटले ज्यां ना—आव होय अने सलोक पण होय ते आपात सलोक स्थडिल कहेवाय छे, ए चोथो भांगो थयो ४ १६

हवे ते दश विशेषणा जणानवा माटे केवा स्थडिलमा उचारादिक चोसराबु ? ते कहे छे —

अणवायमसलोए १, परस्सणुत्रघाइए २ । समे ३ अञ्जुसिरे ४ आवि, अचिरकालकयम्मि अ ५ ॥१७॥  
विच्छिणणे ६ दूरमोगाढे ७, नासन्ने ८ विलज्जिए ९ । तसपाणवीशरहिए १०, उच्चाराईणि ११ ॥१८॥

अर्थ—( परस्स ) वीजानो एटले स्वपच के परपचनो ( अणवाय असलोए ) आपात—जा—आन न होय अने सलोक